प्रकाशक
अशोका पब्लिकेशन्स
रामपुरा कोटा–१

प्रथम संस्करण : मार्च १९६८
मूल्य ७·९५

मुद्रक :
मुरलीलाल गुप्त
स्वदेश प्रिंटर्स,
तेलीपाड़ा, जयपुर

प्राक्कथन

अशोक शिक्षा प्रदीपिका का प्रथम संस्करण आपके समक्ष है। प्रस्तुत पुस्तक के अंतर्गत शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा सिद्धान्त, स्वास्थ्य शिक्षा, शाला संगठन एवम् भारतीय शिक्षा की प्रमुख समस्याओं को समाहित किया गया है। यद्यपि इस पुस्तक को अपने में सम्पूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है तथापि समयाभाव के कारण कुछ कमी रह सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक की भाषा सरल एवम् सुगम है। इस पुस्तक का गठन बी. एड परीक्षार्थियों की मानसिक आवश्यकतानुसार किया गया है एवम् सामयिक तथ्यों, विचारों तथा अनुसन्धानों को प्राथमिकता दी गई है। यदि हमारा यह प्रयास परीक्षार्थियों के काम आ सका तो हम अपने को धन्य समझेंगे।

हम उन शिक्षा शास्त्रियों, मनोविज्ञानिकों एवं विचारकों के आभारी हैं जिनके बहुमूल्य विचारों एवम् अनुसन्धानों को इस पुस्तक में स्थान दिया गया है।

अन्त में हम प्रकाशक महोदय के प्रति भी आभारी हैं जिनके अथक प्रयास से यह पुस्तक समय पर प्रकाशित हो सकी।

होली मार्च १५, १९६८ — शर्मा और सैनी

विषय-सूची

शिक्षा मनोविज्ञान
EDUCATION PSYCHOLOGY

शिक्षा सिद्धान्त

शिक्षा मनोविज्ञान

EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

EDUCATIONAL PSYCHOLOGY
शिक्षा मनोविज्ञान

Q. No 1.

What is Education ? How has the growth of Psychology affected the education of the child ?

शिक्षा क्या है ? मनोविज्ञान के विकास ने बालक की शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

(राजस्थान विश्वविद्यालय बी. एड. १९६३)

उत्तर—

What is Education ?
शिक्षा क्या है ?

शिक्षा शब्द अंग्रेजी शब्द (Education) का हिन्दी रूपान्तर है। आधुनिक समय मे शिक्षा का अर्थ अत्यन्त विस्तृत हो गया है। कालसनिक के मतानुसार शिक्षा मानव की शक्तियो अथवा अन्तर्निहित योग्यताओं का विकास है।

"Education is the development of human powers or pontentialties."
—Kolesnik

जेम्स के मतानुसार शिक्षा अर्जित आदतो का सगठित रूप है जो कि व्यक्ति को उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण के योग्य बनाती है।

"Education is the organization of acquired habits of action such as will fit the individual to his physical and social environment."
—James

ट्रो के मतानुसार शिक्षा वास्तव में सीमित वातावरण के अन्तर्गत मानव के विकास की क्रिया है।

Education is essentially human development in a controlled environment.
—Trow

नन् के मतानुसार शिक्षा व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास है जिसके द्वारा वह अपनी पूर्ण क्षमता के अनुसार मानवीय जीवन को मौलिक योग प्रदान कर सके।

'Education is the complete development of individuality so that he can make an original contribution to human life according to his best capacity.
—Nunn

जान ड्यूवी के मतानुसार शिक्षा व्यक्ति की उन समस्त क्षमताओं का विकास

है जो उसे अपने वातावरण पर नियन्त्रण और सम्भावनाओं को पूर्ण करने क्षमता प्रदान करता है।

'Education is the development of all those capacities in t individual which will enable him to control his environment a fulfil his possibilities.' —John De

प्रोफेसर होर्न ने शिक्षा की व्याख्या करते हुए बताया शिक्षा शारीरिक ए मानसिक रूप से विकसित चेतन व्यक्ति का उसके बौद्धिक एवं भावनात्मक वाताव के साथ सर्वश्रेष्ठ समायोजन है।

'Education is the superior adjustment of a physically a mentally developed conscious human being to his intellectu emotional and volitional environment.' —Prof. Hor

रेमन्ट के अनुसार शिक्षा विकास की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति का सम्पू मार्ग अन्तर्निहित रहता है तथा जो शैशवावस्था से परिपक्वावस्था तक शनैः श स्वयं को भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ब लेता है।

'......as a process of development in which consists t passage of human being from infancy to maturity, the process which he adapts himself gradually in various ways to his physic social and spiritual environment. —Rayma

यदि उपरोक्त समस्त परिभाषाओं का विश्लेषण किया जाये तो शि व्यक्ति को उसके सम्पूर्ण वातावरण में समायोजन करने की क्षमता प्रदान कर है। शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य में समाजोपयोगी व्यवहार परिवर्तन लाना है, अर्था शिक्षा व्यक्ति को अन्तर्निहित शक्तियों का प्रस्फुटन है जो सदैव समाज को भला चाहता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी योग्यताओं की अभिवृद्धि करता है. शिक्षा के अभाव में व्यक्ति केवल एक पशु है।

How has the growth of Psychology affected the education of child ?

मनोविज्ञान के विकास ने बालक की शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

मनोविज्ञान के क्रमिक विकास ने बालक की शिक्षा को अत्यधिक प्रभावित किया है। मनोविज्ञान की सहायता से ही हम शैक्षिक मूल्यों की प्राप्ति कर सकते हैं क्योंकि मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है और शिक्षा व्यक्ति की योग्यताओं को परिमार्जित करती है। जब तक हम बालक के व्यवहार को समझने प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक उचित शिक्षा का दिया जाना कठिन ही नहीं बल्कि

असम्भव है। मनोविज्ञान ही हमें बालक की रुचि, अभिवृत्ति, योग्यता सृजनात्मकता का सही दिग्दर्शन कराती है।

मनोविज्ञान के विकास ने बालक की शिक्षा को अत्यन्त प्रभावित किया है। एक समय था जबकि बालक को कठोर अनुशासन में रक्खा जाता था और डंडे के सहारे से शिक्षा प्रदान करना ही श्रेयस्कर समझा जाता था। बालक को पाठ्यक्रम के अनुसार बनाया जाता था एवं निरर्थक और अरुचिकर ज्ञान को मस्तिष्क में ठूँसने का प्रयास किया जाता था। डेविस के मतानुसार मनोविज्ञान ने छात्रों की योग्यताओं और भेदों को विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के द्वारा समझने में महत्वपूर्ण योग प्रदान किया है। इसकी प्रत्यक्ष देन छात्रों के विकास और परिपक्वता को समझाने में रही है।

"Psychology has made distinct contribution to education through its analysis of pupils potentialities and difference as revealed by means of various types of psychological tests. It has also contributed directly to a knowledge of pupil growth and maturation during the school years." —Davis

यदि हम बालक की सम्पूर्ण शिक्षा पर दृष्टिपात करें तो यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान के विकास ने शिक्षा को सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक दोनों ही प्रकार से प्रभावित किया है। यही एक मात्र कारण है कि शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग अधिकाधिक हो रहा है और शिक्षा के वांछित मूल्यों की प्राप्ति भी हो रही है। बालक की शिक्षा पर मनोविज्ञान के विकास का निम्नलिखित रूप से प्रभाव पड़ा है :—

1. Child-Centred Education

बाल केन्द्रित शिक्षा —

एक समय था जबकि शिक्षा अध्यापक और पाठ्यक्रम केन्द्रित थी। उस शिक्षा में बालक को न्यूनतम स्थान दिया जाता था तथा निरर्थक तथ्यों एवम् विषयों को रटने के लिए बाध्य किया जाता था। परन्तु आज मनोविज्ञान का सर्वोपरि प्रभाव यह है कि शिक्षा बालकेन्द्रित है। समस्त शिक्षा बालक की रुचि, योग्यता, अभिवृत्ति, रुझान एवम् मानसिक अवस्था पर अवलम्बित है। मनोविज्ञान के विकास का अन्य प्रभाव यह भी है कि यह बालकों को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में विभाजित कर देती है। बालकों को मानसिक स्तर के आधार पर शिक्षा प्रदान की जाने लगी है परन्तु भारत में अभी इस दिशा में विशेष कार्य नहीं हुआ है।

2. Education based on Learning Methods

सीखने की विधियों पर आधारित शिक्षा

मनोविज्ञान ने शिक्षा को सही सीखने के सिद्धान्त प्रदान करके प्रभावित किया

है। पहले अध्यापक बालकों को शारीरिक दंड देना ही अपना कर्त्तव्य समझते परन्तु आज अध्यापक अनेकों उपकमों एवम् विधियों की सहायता से पाठ को रुचि बनाने का प्रयास करता है। सीखने के नियमों पर जो मनोवैज्ञानिक अनुसंधान हुए उनसे यह सिद्ध होता है कि इन विधियों के द्वारा शिक्षण सरल हो सकता है। इ दृष्टि से थार्नडाइक के सीखने के नियम बहुत महत्वपूर्ण हैं।

3. Child and Curriculum

बालक और पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम को मनोविज्ञान ने अत्यन्त प्रभावित किया है। एक समय जबकि पाठ्यक्रम बनाते समय बालक का ध्यान नहीं रखा जाता था अथवा बाल के बौद्धिक स्तर के स्थान पर वास्तविक आयु को ही पाठ्यक्रम का आधार समझ जाता था। परन्तु मनोविज्ञान के उत्तरोत्तर विकास ने शिक्षा को वास्तविकता प्रदा की है। प्रतिभाशाली बालकों के पाठ्यक्रम में इस प्रकार होने लगा है जबकि पहले हम इस दिशा में सोच भी नहीं सकते थे क्योंकि मनोविज्ञान का विकास कम था बालकों के अपराधी और पलायनशील होने का सबसे बड़ा कारण निरर्थक और अरुचिकर पाठ्यक्रम होता है। यदि पाठ्यक्रम को बालक के लिए बनाया गया है तो शिक्षा सार्थक है और यदि बालक को पाठ्यक्रम के लिए बनाया गया है यह शिक्षा निरर्थक है। सार्थकता मनोविज्ञान के क्षेत्र में होने वाले अनुसन्धानों से ही प्राप्त की जा सकती है।

4. Place for Curricular Activities

पाठ्यसहगामी क्रियाओं के लिए स्थान

आज शिक्षा केवल बौद्धिक स्तर तक ही सीमित नहीं है बल्कि बौद्धिक विकास के साथ-साथ बालक का संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक विकास होना भी अनिवार्य है। अब यह अत्यन्त आवश्यक है कि पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अन्य व्यावहारिक ज्ञान भी अनिवार्य है। बालकों की शिक्षा को रुचिकर बनाने के लिए यह आवश्यक है कि अनेकों क्रियाओं को स्थान दिया जाए। पाठ्यसहगामी क्रियाएं मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए अनुसन्धानों की ही देन हैं।

मनोविज्ञान का बालक की शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा का उद्देश्य सम्पूर्ण बालक विकास है और सम्पूर्ण बालक का अध्ययन किसी न किसी प्रकार के मनोविज्ञान से सम्बन्धित है। मनोविज्ञान के बिना शिक्षा [illegible] अधूरी है। मनोविज्ञान के [illegible] विकास ने बालक की शिक्षा को केवल प्रभावित ही नहीं किया है बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा को मनोवैज्ञानिक बना दिया है। अन्त में हम यह कहते हैं कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण पूर्ण विकास है और इसके [illegible] का [illegible] मनोविज्ञान द्वारा ही जाना जा सकता है। इसीलिए हम [illegible] में [illegible] कि शिक्षा व मनोविज्ञान का [illegible] विकास

है–"Education had captured psychology" कहने का तात्पर्य यह है कि आज हमारी शिक्षा का मनोवैज्ञानीकरण (psychologise) हो गया है क्योंकि मनोविज्ञान की सहायता से हम शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।

Q. No. 2.

'शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक के पूर्ण कार्य को उसकी समस्त जटिलता समझाने के लिए बेहतर एक पृष्ठभूमि देने में सहायता करता है।'–स्किनर। विवेचना कीजिए।

(आगरा एम. ए. 1963)

What is Edu a.ional Psychology ? Why must teacher know it ?

शिक्षा मनोविज्ञान क्या है ? एक अध्यापक को उसका ज्ञान क्यों आवश्यक है ?

(राजस्थान 1964)

Discuss the relationship between Psychology and Education. In what ways can the knowledge of modern psychology be helpful to the teacher in dealing with difficult problems in the class-room.

मनोविज्ञान और शिक्षा के पारस्परिक सम्बन्धों का स्पष्टीकरण दो। आधुनिक मनोविज्ञान का ज्ञान एक अध्यापक के लिए कक्षा की कठिन समस्याओं के सुलझाने में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकता है ?

(आगरा 1955)

In what ways does psychology help a teacher to be a better teacher ? Explain fully and support your answer with concrete examples.

मनोविज्ञान एक अध्यापक को कुशल अध्यापक बनाने में कैसे सहायक हो सकता है। उदाहरणों द्वारा अपने कथन की पुष्टि करो।

(आगरा 1959, 1962 पंजाब 1951, 1952)

उत्तर

What is Educational Psychology ?
शिक्षा मनोविज्ञान क्या है ?

साधारणतया मनोविज्ञान की वह शाखा जो शिक्षा से सम्बन्धित हो, शिक्षा मनोविज्ञान कहलाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मनोवैज्ञानिक परिवेश में शिक्षा प्रक्रिया का अध्ययन ही शिक्षा मनोविज्ञान है। इसके अन्तर्गत हम बालकों की उन समस्त दशाओं का अध्ययन करते हैं जो उसकी शैक्षिक अनुभूति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालती है। संक्षेप में कह सकते हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान छात्रों के शैक्षिक व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करता है।

"Educational Psychology studies the educational behaviour of the child.'

कालसनिक के मतानुसार शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के सिद्धान्तों और अन्वेषणों का प्रयोग है ।

Educational Psychology is the application of the finding and theories of psychology in the field of education. —Kolesnik

स्किनर के शब्दों में शिक्षा मनोविज्ञान मानव व्यवहार का शैक्षिक स्थितियों में अध्ययन करता है । इसका यह अर्थ है कि शिक्षा मनोविज्ञान मानवीय व्यवहार अथवा मानवीय व्यक्तित्व–उसके विकास, निर्देशन और शैक्षिक सामाजिक प्रक्रिया से सम्बन्धित है ।

Educational Psychology deal with the behaviour of human beings in educational situations. This means that educational psychology is concerned with the study of human behaviour or human personality—its growth, development and guidance under the social process of education. —Skinner

स्टीफन के अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन है ।

"Educational psychology is the systematic study of educational growth." —Stephon

उपरोक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा किन्हीं निश्चित शब्दों द्वारा नहीं की जा सकती । मूल तथ्य केवल यही है कि शिक्षा मनोविज्ञान स्वयं एक विज्ञान है जो व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार का शैक्षिक स्थितियों में क्रमबद्ध रूप में वास्तविक अध्ययन करता है ।

Educational psychology is itself a science which studies whole behaviour of human in educational circumstances

Why must a teacher know Educational Psychology
अध्यापक को शिक्षा मनोविज्ञान का जानना क्यों आवश्यक है ?

जैसा कि हम पहले ज्ञात कर चुके हैं कि आज शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण-रूपेण परिवर्तित हो गया है और इस परिवर्तन का एक मात्र कारण शिक्षा का मनोवैज्ञानिकरण है । [illegible] यह [illegible] आवश्यक है कि छात्र का शिक्षक यह [illegible] का मनोविज्ञान क्या है । शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के द्वारा ही अध्यापक [illegible] है कि उनकी रुचियाँ, क्षमताएँ एवं आवश्यकताएँ [illegible] है । [illegible] सामग्री [illegible] निम्न [illegible] शिक्षक को शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान [illegible] है—

1. बालक की मानसिक योग्यता को जानने के लिए

To understand the mental ability of child

अध्यापक का सबसे पहला कार्य यह है कि वह बालक के मानसिक स्तर को जाने। यदि अध्यापक ज्ञान को ठूंसने का प्रयत्न करेगा तो वह निरर्थक ही होगा। अतः अध्यापक के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि बालक की क्षमता को सर्वोपरि स्थान दे। यदि कक्षा की औसत मानसिक योग्यता अधिक है तो अध्यापक के लिए यह आवश्यक होगा कि वह अपने शिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाये जिससे बालकों की रुचि पाठ में हो सके। यदि अध्यापक महत्वपूर्ण तथ्यों के द्वारा पाठ को अधिक रुचिप्रद नहीं बनायेगा तो कुशाग्र बुद्धि वाले छात्र पठन में रुचि न दिखाकर कक्षा से बाहर घूमना ही पसन्द करेंगे, फलस्वरूप प्रतिभाशाली छात्र अपराधी हो सकते हैं। इसी प्रकार यदि बालक मन्द बुद्धि है और अध्यापक का स्तर ऊँचा है तो भी वह बालक अपने को कक्षा में असुरक्षित महसूस करेगा जिसके कारण उसमें हीन भावना आ सकती है। इसीलिए अध्यापक को चाहिए कि वह बालक की मानसिक योग्यता के अनुरूप ही शिक्षण करे।

2. सीखने की प्रक्रिया जानने के लिए

To know the learning process

सफल अध्यापक के लिए सीखने की प्रक्रिया का जानना भी आवश्यक है। सीखने का मनोविज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान से ही जाना जा सकता है। शिक्षण को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिए सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया का जानना नितान्त आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान में सीखने की प्रक्रिया पर बहुत से महत्वपूर्ण अनुसंधान हुए हैं। अध्यापक इन अनुसंधानों से पर्याप्त मात्रा में लाभ उठा सकता है। एक अध्यापक को सीखने के नियमों का जानना अत्यन्त आवश्यक है। सीखने के तत्व जैसे छात्र, सीखने की परिस्थिति, पाठ्यक्रम आदि महत्वपूर्ण तथ्यों को सदैव ध्यान में रखा जाना नितान्त आवश्यक है। सभी कक्षाओं में एक ही प्रकार की सीखने की विधि काम में नहीं लाई जा सकती उदाहरणार्थ छोटी कक्षाओं में खेल द्वारा सीखने की अच्छी क्रिया हो सकती है, इसी प्रकार शिक्षण को अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनेकों महत्वपूर्ण विधियों का तथा दृश्य-श्रव्य-सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान ने इस सम्बन्ध में पर्याप्त मात्रा में सामग्री प्रस्तुत की है जो शिक्षक के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

3. छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को समझने के लिए

To understand the physical and mental health of the child.

किसी भी पेशे में आने से पूर्व उसमें सम्बन्धित आन्तरिक पक्ष को समझना नितान्त आवश्यक है। एक शिक्षक जिसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध अपने छात्रों से होता और जिस पर यह सम्पूर्ण पेशा अवलम्बित करता है, उसके लिए आवश्यक है कि

वह अपने छात्रों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को समझे। सफल शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह पलायनशील, अपराधी, झगड़ालू बालकों को समझे। केवल मात्र कक्षा में आकर पुस्तकीय तथ्यों को स्पष्ट करने मात्र से ही शिक्षण पूर्ण नहीं होता। पहले शिक्षक को अपने विद्यार्थी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को देखना है तत्पश्चात् ही वह अपना कार्य पूर्ण कर सकता है। विदेशों में मानसिक और शारीरिक रूप से अस्वस्थ बालकों के लिए चिकित्सालय होते हैं परन्तु हमारे देश में अभी यह सब व्यवस्था नहीं है, अत: अध्यापक का यह पावन कर्तव्य है कि वह अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को समझने का प्रयास करें। बहुत सी समस्याओं का समाधान अध्यापक द्वारा सहानुभूति के शब्दों द्वारा ही हो सकता है। इसलिए अध्यापक को बालक की पूर्ण मनोवैज्ञानिक जानकारी होनी चाहिए। यदि छात्र शारीरिक और मानसिक रोगों से पीड़ित हैं तो पढ़ने में उनकी रुचि का अभाव होगा और अध्यापक का सम्पूर्ण प्रयास निरर्थक ही होगा।

4. अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य

Mental health of the teacher.

अमरीका तथा इङ्गलैण्ड के मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों से यह सिद्ध हो चुका है कि अनेकों अध्यापक मानसिक रोगग्रस्त होते हैं। अध्यापिकाओं की संख्या इसमें अधिक होती है। यदि अध्यापक ही मानसिक रोग से ग्रस्त है तो वह अपने छात्रों पर कुप्रभाव ही डालेगा। भारतवर्ष में तो अध्यापक के मानसिक रूप से रोगी होने के और भी अधिक अवसर हैं क्योंकि उसे वेतन कम मिलता है और मर्यादा पालन आवश्यक होता है। इन समस्त सीमित सामाजिक मर्यादाओं के रहते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि अध्यापक अपने को स्वस्थ रखने का प्रयास करे क्योंकि अध्यापक का व्यक्तित्व ही बालक को बना सकता है और बिगाड़ सकता है। अध्यापक के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि वह सहानुभूतिपूर्ण, शिक्षण में सक्रिय, बालकों का मित्र, सन्तुलित और अपने विषय का ज्ञाता हो। यह तभी सम्भव है जबकि वह मानसिक रूप से स्वस्थ हो अन्यथा वह शिक्षण कार्य ठीक नहीं कर सकता।

5. शिक्षण विधियों का ज्ञान

Knowledge of Methods of Teaching.

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक के लिए शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति करने का ढंग बताता है। यह अध्यापक को सीखने के नियम, विभिन्न विधियाँ, मूल्यांकन और परीक्षण (Evaluation and Measurement) आदि अनेकों तत्व प्रदान करता है, परन्तु अध्यापक का व्यक्तित्व उसके शिक्षण से आँका जाता है न कि उसके रूप और रंग से। शिक्षण अध्यापक द्वारा प्रयुक्त विधि पर अवलम्बित है। और विधि

का वास्तविक ज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान प्रदान करता है । शिक्षा मनोविज्ञान ही शिक्षण विधियों का वैज्ञानिक आधार है और यही मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करता है। इससे यह पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि मनोविज्ञान का ज्ञान एक शिक्षक के लिए कितना आवश्यक है। शिक्षक स्वयं शिक्षा रूपी भवन की आधारशिला है जो नित्य भारत के भावी नागरिकों का गठन करता है । जनतन्त्रीय देश में अध्यापक एक क्रियाशील व्यक्ति के रूप में बालक के समक्ष प्रस्तुत होता है—वह बालकों के भावी जीवन को अपने हाथ से सँवारता है। इसका व्यवहारिक पक्ष अध्यापक तभी देख सकता है जबकि वह स्वयं एक मनोवैज्ञानिक हो और प्रशिक्षण महाविद्यालयों में मनोविज्ञान का ज्ञान इसीलिए आवश्यक है जिससे वे शाला, छात्र और सम्पूर्ण शिक्षा को समझ सकें ।

Q. No. 3.

Explain the scope of Educational Psychology, bringing out clearly the impact of Psychology on Education.

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र बताइये साथ ही शिक्षा पर मनोविज्ञान के प्रभाव की विवेचना कीजिए ।

(राजस्थान 1965)

अथवा

Discuss the nature and scope of Edudcational Psychology.

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति और विषय विस्तार की विवेचना कीजिए ।

(बड़ौदा एम. ए 1959, कर्नाटक 1962)

अथवा

Describe the nature of Edrcational Psychology and sayhow it can influence educational practice.

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति की विवेचना कीजिए और बताइए कि यह शैक्षिक अभ्यास को किस प्रकार प्रभावित कर सकती है।

(पूना 1959)

अथवा

Define the province of Educational Psychology. In what sense is Educational Psychology an applied branch of psychology.

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र की परिभाषा कीजिए । किस अर्थ में शिक्षा मनोविज्ञान की एक व्यवहारिक शाखा है ।

(आगरा एम. ए. 1961)

अथवा

What is the proper subject matter of educational psychology.

शिक्षा मनोविज्ञान की उचित विषय सामग्री क्या है ?

अथवा

Define the scope of educational psychology and show how it science affects educational practice ?

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र की परिभाषा दीजिए और स्पष्ट कीजिए । यह विज्ञान शैक्षिक अभ्यास को किस प्रकार से प्रभावित करता है ?

(पूना 1960, गुजरात 1958

उत्तर

Nature of Educational Psychology
शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

शिक्षा मनोविज्ञान की एक शाखा है जो शिक्षा का मनोवैज्ञानिकरण करता है। जबसे शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रयोग होने लगा तब से इस विज्ञान का शुभारम्भ हुआ। शिक्षा मनोवैज्ञानिक स्वयं एक वैज्ञानिक है और शिक्षा मनोविज्ञान एक विज्ञान है। अन्य विज्ञानों के समान यह भी शैक्षिक भविष्यवाणी कर सकता है और अपने प्रयोगों के द्वारा शिक्षा की वास्तविक परिस्थितियों का दिग्दर्शन करा सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ वैज्ञानिक नियमों पर आधारित हैं और इसकी प्रकृति भी वैज्ञानिक है।

Scope of Educational Psychology
शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

शिक्षा मनोविज्ञान एक नवनिर्मित विषय है जिसका इतिहास केवल पचास वर्ष पुराना ही है। यदि हम इसके इतिहास पर एक दृष्टि डालें तो इसका आरम्भ यूरोपियन मनोवैज्ञानिकों से होता है जिसमें (Froebal) और पेस्तालोजी (Pestalozzi) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन् १९४५ में अमरीकन वैज्ञानिक परिषद के शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने सर्वप्रथम इसके क्षेत्र के विषय में कार्य प्रारम्भ किया। १९५४ में एक प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया जिसमें शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र निर्धारित किया गया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र अभी पूर्णरूपेण निश्चित नहीं हो पाया है परन्तु फिर भी मनोविज्ञान के विषय विस्तार के अन्तर्गत हम निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन कर सकते हैं:—

मानव विकास की प्रक्रिया

Process of Human Development.

शिक्षा मनोविज्ञान में मानव विकास प्रक्रियों का अध्ययन किया जाता है। . से लेकर प्रौढ़ावस्था तक विकास की विभिन्न सीढ़ियों को पार करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान में हम विकास क्या है; मानव विकास के विभिन्न सोपान (Stages), जैसे शैशवावस्था (Infancy), बाल्यावस्था (Childhood), किशोरावस्था (Adolescence), प्रौढ़ावस्था (Adulthood), आदि का; मानव विकास के विभिन्न सिद्धान्त (Principles) विकास की विभिन्न अवस्थाओं जैसे बौद्धिक और मानसिक विकास (Intellectual and Mental Development), नैतिकता और सौन्दर्यात्मकता का विकास (Development of Moral and Aesthetic Sense), संवेगात्मक एवम् चरित्र विकास (Emotional and Character development), तथा सामाजिक विकास (Social Development), आदि का अध्ययन करते हैं। एक अध्यापक के लिए यह सब जानना नितान्त आवश्यक है इसलिए मानव विकास की प्रक्रिया शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र मे सम्मिलित है।

2. सीखने की प्रक्रिया
Learning Process

शिक्षा मनोविज्ञान मे सीखने की प्रक्रिया का विशेष महत्व है क्योंकि सीखने पर ही उसका भावी जीवन अवलम्बित है। इसके अन्तर्गत सीखना (Maturation & Learning), सीखने की प्रक्रिया (Process of Learning, सीखने की प्रक्रिया (Plateau of Learning), सीखने का वक्र (Learning Curve), सीखने के सिद्धान्त (Theories of Learning) सीखने का स्थानान्तरण (Transfer of Learning), और सीखने की प्रक्रिया और अध्यापक (Learning process and teacher) आदि का विधिवत् अध्ययन करते हैं। संक्षेप मे हम शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

3. स्मृति और भूल का अध्ययन
Study of Memory and Forgetting

शिक्षा मनोविज्ञान मे हम स्मृति और प्रक्रियाओं जैसे सीखना (Learning), धारणा (Retention), प्रत्यास्मरण (Recall) तथा प्रत्यभिज्ञा (Recognition), आदि का अध्ययन करते हैं। छात्रों मे किस प्रकार की स्मृति है अर्थात् उनमें शीघ्र पहचान करने की धारणा (Good retention) शीघ्र पुनः स्मरण (Repidity in Recall) तथा शिक्षण मे पुनः स्मरण का प्रयोग (Serviceableness of Recall) की योग्यता का क्या स्तर है आदि इन तथ्यो का अध्ययन भी होता है। भूल (Forgetting) तथा उसके कारण आदि भी शिक्षा मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र मे आते हैं।

4. समायोजन और मानसिक स्वास्थ्य
Adjustment and Mental Hygiene

शिक्षक और छात्र दोनो के लिए समायोजन और मानसिक स्वास्थ्य आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान यह बताता है कि संवेगात्मक कुसमायोजन

(Emotional Maladjustment) की रोकथाम (Prevention) किस प्रकार की जाये जिससे व्यक्ति पूर्ण कुशलता और योग्यता से कार्य कर सके। शि शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए मानसिक आरोग्य का मूल्य है। मा मानसिक आरोग्य की महत्ता, किशोरावस्था जो स्वयं में एक विशेष अवस्था है लिए मानसिक स्वास्थ्य का संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा मनो कुसमायोजन और मानसिक अस्वस्थता के दुष्परिणामों से सचेत करता है शिक्षकों व छात्रों को समायोजित एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहने की प्रे देता है।

5. विशिष्ट बालकों एवं उनकी शिक्षा का अध्ययन
   Study of Exceptional Children and their Education.

शिक्षा मनोविज्ञान केवल सामान्य बालकों की शिक्षा व्यवस्था पर ही प्र नहीं डालता बल्कि सभी प्रकार के बालकों जैसे असामान्य बालक (Abnor child), शारीरिक दोषयुक्त बालक (Child having physical defects) मान दोषयुक्त बालक (Child having mental defects), चरित्र भ्रष्ट ब (Characterless child), पिछड़ा हुआ बालक (Backward child), प्रति शाली बालक (Gifted child), सृजनात्मक बालक (Creative child) । सभी पर प्रकाश डालता है। इसके अतिरिक्त इनके लिए किस प्रकार की शि व्यवस्था हो यह सभी शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में सम्मिलित है।

6. मापन और मूल्यांकन
   Measurement and Evaluation.

शिक्षा मनोविज्ञान में बुद्धि मापन, व्यक्तित्व की मापन विधियाँ (Meth of Assessment of Personality), ज्ञानोपार्जन परीक्षण (Achievem Test), योग्यता, रुचि और अभिरुचि परीक्षण (Abilities, Interest and Ap tudes Test), मापन सिद्धांत (Principles of Measurement) तथा मापन परिणामों का शिक्षा में सदुपयोग आदि का अध्ययन किया जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है। इसमें अनेकों अनुसन्धान हो रहे हैं और निकट भविष्य में इसका विषय विस्तार और भी हो जायेगा।

मनोविज्ञान का शिक्षा पर प्रभाव
Impact of Psychology on Education

मनोविज्ञान के प्रभाव से शिक्षा में एक नवीन क्रान्ति आ गई है। के प्रभाव से सम्पूर्ण शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन आ गया है। आज रूपेण बालकेन्द्रित हो गई है। और बालक की योग्यता एवं रुचि के आधार

The aims are determined by the philosophy of education the methods must be devised by a science of education which has to be psychological.

—James Drever

Q. No. 4.

(A) What is the difference between Psychology and Educational Psychology ? Give Examples to show this difference.

मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान में क्या भेद है ? उदाहरण देकर यह भेद बताओ।

(राजस्थान 1967)

उत्तर

मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान में अन्तर
Defference between Psychology and Education Psychology.

इसमे कोई सन्देह नही कि शिक्षा मनोविज्ञान की एक शाखा है परन्तु दोनों में पर्याप्त रूप से भिन्नता है। मनोविज्ञान सामान्य रूप से व्यक्ति की अनुभूतियों एवं व्यवहारों का अध्ययन करता है जबकि शिक्षा मनोविज्ञान छात्र की अनुभूतियों और व्यवहारों का अध्ययन करता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा से सम्बन्धित समस्त व्यवहार और व्यक्तित्व का अध्ययन करता है। सबसे पहला भेद जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण है वह यह कि शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा से सम्बन्धित समस्त व्यवहारों और अनुभूतियों से सम्बन्धित है जबकि मनोविज्ञान सभी सामान्य व्यक्तियों की अनुभूतियों और व्यवहारो से सम्बन्धित है। उदाहरणार्थ शिक्षा मनोविज्ञान केवल उन्हीं व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन करता है जो शिक्षा प्रदान करते हैं और मुख्यतः जो शिक्षा प्राप्त करते हैं जैसे एक सफल अध्यापक के लिए मानसिक रूप से स्वस्थ होना क्यों आवश्यक है ? एक बालक जो कि कक्षा आठ में पढ़ता है वह गणित मे कमजोर क्यों है ? इस प्रकार के बालक के साथ किन निदानात्मक पक्षों को रखा जाये जिससे गणित उसके लिए रुचिकर बने। गणित का अध्यापक इस बालक के साथ कैसा व्यवहार करता है ? यह बालक गणित के अतिरिक्त अन्य विषयों मे सामान्य क्यों है ? ये कुछ प्रश्न हैं जिनका उत्तर हमें केवल शिक्षा मनोविज्ञान ही प्रदान करता है न कि सामान्य मनोविज्ञान। सामान्य मनोविज्ञान को शिक्षा के क्षेत्र मे हो रहे वांछित व्यवहार से कोई सरोकार नहीं। वह तो समस्त मानवीय अनुभव एवं व्यवहार का अध्ययन है।

मनोविज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान के भेद को स्पष्ट करते हुए मेहरा का कहना है कि शिक्षा मनोविज्ञान अनेकों शैक्षिक समस्याओं शैक्षिक कार्यक्रमों के

सम्बन्धित है यद्यपि सामान्य मनोविज्ञान का इन सब बातों से कोई सरोकार नहीं उदाहरणार्थ स्कूल विषयों का शिक्षण, नवीन कार्यक्रम तथा योजनाओं का संचालन, शैक्षिक कठिनाइयों की पहचान और निदान, नवीन मूल्यांकन विधि, नर्सरी शिक्षा व्यवस्था, व्यस्क (प्रौढ़) शिक्षा, शैक्षिक निर्देशन आदि में सुधार- ये शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के उदाहरण हैं जिनका उल्लेख सामान्य मनोविज्ञान में नहीं।

"Educational Psychology is, however, not confined to the verification of application of principles to education. It has built up in several areas programs of study of educational problems which general psychology does not deal within any comprehensive way. Such, areas as the teaching of the school subjects, and especially the conducting of the newer types of activity programs and projects, the diagnosis and remediation of educational difficulties, the newer types of evaluation of educational attainments, the improvement of practices in nursery school, adult education, and educational guidence these are examples of fields of specialization for educational psychology."

—Gates and others.

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान और मनोविज्ञान दोनों एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं। दोनों विषयों को एक मान लेना भूल है। मनोविज्ञान का क्षेत्र विस्तृत है और शिक्षा मनोविज्ञान केवल शैक्षिक क्षेत्र से ही सम्बन्धित है। मनोविज्ञान मानव के सम्पूर्ण वातावरण का अध्ययन करता है जो शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इनका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी इन दोनों में भिन्नताएँ हैं जो एक दूसरे से पृथक कर देती हैं।

Q. No. 4. (B)

Why should a teacher study Educational Psychology ? Explain with specific examples the use of the knowledge of Educational Psychology to the teacher in his work.

एक अध्यापक को मनोविज्ञान पढ़ने की आवश्यकता क्यों है ? उदाहरण देकर बताएँ कि शिक्षक मनोविज्ञान के ज्ञान का अपने कार्य में कैसे प्रयोग करता है ?

उत्तर

इस प्रश्न के उत्तर के लिए प्रश्न नं० २ देखें।

अध्याय २

विकास की प्रक्रिया

(Process of Development)

Q. No. 5.

(A) Describe the physical, mental and emotional characteristic of adolescents.

किशोरावस्था में शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकासों का वर्णन करें।

(B) Should we have co-educational schools for adolescent boys and girls ? If so, why ? If not, why not ?

क्या हमें किशोरावस्था के लड़के और लड़कियों के लिए सहशिक्षा स्कूल खोलने चाहिएं ? यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों नहीं ? (राज० १६६५)

उत्तर

सम्पूर्ण जीवन में किशोरावस्था का विशेष महत्व है। यह अवस्था जीवन का वह समय है जो भावी जीवन के लिए सम्भावनाएं प्रदान करता है। इस अवस्था में एक किशोर अपने अनुभवों के द्वारा नवीन जीवन में पदार्पण करता है। प्रत्येक प्रगतिशील देश में किशोरों का विशेष महत्व है। आज के किशोर ही कल के भावी नागरिक हैं। अतः भारत में विशेषरूप से स्वतन्त्रता के पश्चात् यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि मनोविज्ञान के क्षेत्र में किशोरों की समस्त विकास अवस्थाओं एवं समस्याओं का अध्ययन किया जाये। यदि इनके जीवन की प्रत्येक अवस्था का विशेषरूप से अध्ययन नहीं किया गया तो देश के भविष्य को समझना अत्यन्त कठिन हो जायेगा।

शारीरिक विकास
Physical Devolopment

किशोरावस्था शारीरिक परिवर्तन का समय है। शारीरिक परिवर्तन ही समस्त विकासक्रमों की आधारशिला है। किशोरावस्था में शारीरिक विकास की दो अवस्थाएं होती हैं प्रथम सचयी अवस्था और द्वितीय परिपक्व अवस्था। दोनों ही अवस्थाओं में शारीरिक विकास का ठीक होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि किशोर के शारीरिक विकास में कहीं भी किसी प्रकार की कमी रही तो वह समाज में [illegible] के आनन्द से वंचित रह सकता है।

किशोरावस्था में शारीरिक विकास निम्नलिखित प्रकार से होता है :—

ऊँचाई और भार
Height & Weight

प्रारम्भिक किशोरावस्था में विकास की गति तेज होती है। १२ से १४ वर्ष की आयु में ऊँचाई और भार में पर्याप्त वृद्धि होती है। १५ से १८ वर्ष की आयु में वृद्धि की गति धीमी होती है। किशोरियों में ऊँचाई और भार की वृद्धि किशोरावस्था के प्रारम्भिक वर्षों मे होती है परन्तु मध्य किशोरावस्था में वृद्धि की गति मन्द होती है। ११ से १३ की अवस्था मे किशोरियों का भार सात पौंड बढ़ जाता है। १८ वर्ष की आयु तक किशोर की लम्बाई किशोरी की अपेक्षा करीब छः इन्च अधिक हो जाती है और भार में भी किशोर किशोरी की अपेक्षा बीस पौंड अधिक हो जाता है।

किशोरावस्था के प्रारम्भ से अन्त तक एक किशोर सामान्यतया भार में काफी वृद्धि करता है। हड्डियों की लम्बाई बढ़ने के साथ-साथ किशोरावस्था में वजन की वृद्धि भी होती है और शरीर के आन्तरिक भागों स्नायु तथा पिंडों की क्रियात्मक जटिलता बढ़ जाती है।

दाँतों का विकास
Growth of Teeth

किशोरावस्था के प्रारम्भ होने तक स्थायी दाँत निकल आते हैं। दाँतों के निकलने में वैयक्तिक भिन्नता पर्याप्त मात्रा मे रहती है।

विवेक दाँत (Wisdom teeth) जिसे हम अक्कल दाढ़ के नाम से पुकारते हैं वह २० और २५ वर्ष की आयु में निकलती है। विवेक दाँत का निकलना कष्टदायक होता है जिसके कारण संवेगात्मक कठिनाई उपस्थित हो जाती है।

लड़कियों मे शारीरिक परिपक्वता के शीघ्र हो जाने के कारण दाँतों का विकास भी लड़कों की अपेक्षा शीघ्र होता है यही कारण है कि प्रत्येक आयु मे लड़कियों के दाँतों की सख्या अधिक होती है।[1]

हाथ और पैर का विकास
Growth of Hand and Leg

जन्म से ही प्रत्येक उंगली में छोटी-छोटी तीन हड्डियाँ होती हैं। अंगूठे मे दो छोटी हड्डियाँ होती हैं। अंगूठे की ये दो छोटी हड्डियाँ एक बड़ी हड्डी से मिली होती है जो कलाई से जुड़ी होती है। कलाई मे छोटी-छोटी आठ हड्डियाँ होती है जो

1. P. Cattell, "Dentition as a Measure of Skeletal Growth," Harvard Monographs in Education, No. 9, 1938, p. 91.

यौन परिपक्वता

Sex Maturity

किशोरावस्था में यौन अपनी परिपक्व अवस्था में होता है। किशोरावस्था वह काल है जब किशोर की यौन ग्रन्थियों में शुक्रस्राव होने लगता है और किशोरी के अण्ड से मिलकर गर्भाधान करने की योग्यता आ जाती है। इस अवस्था में यौन परिपक्वता के लक्षण दिखाई देने लगते हैं—किशोरियों में रजस्राव होने लगता है और किशोरों में शुक्रस्राव की क्षमता आ जाती है।

लिङ्ग का विकास

Growth of Penis

लिङ्ग का विकास एक वर्ष से तीन वर्ष तक बहुत तेजी से होता है परन्तु बाल्यावस्था में विकास की गति धीमी होती है। बारह से पन्द्रह वर्ष तक फिर इसका विकास काल प्रारम्भ होता है और सोलह-सत्तरह वर्ष की अवस्था में पूर्ण परिपक्व हो जाता है। तेरह वर्ष की अवस्था में लिङ्ग के चारों ओर बाल उगने प्रारम्भ हो जाते हैं। जैसे-जैसे लिङ्ग का विकास होता है वैसे वैसे वीर्य का बनना भी प्रारम्भ हो जाता है। धीरे-धीरे अण्डकोष भी विकसित होते रहते हैं। बायाँ अण्डकोष दायें अण्डकोष की अपेक्षा कुछ बड़ा होता है। जब लिङ्ग पूर्णरूपेण परिपक्व हो जाता है तो सामान्यतः स्वप्न दोष होने लगते हैं। स्वप्न दोष एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। भारतवर्ष क्योंकि गर्म देश है, यहाँ स्वप्न दोष सामान्यतः साढ़े ग्यारह से चौदह वर्ष की आयु में प्रारम्भ हो जाता है परन्तु यह पूर्णरूपेण वैयक्तिक भिन्नता पर निर्भर करता है। पश्चिमी देशों में बारह से सोलह वर्ष की अवस्था में स्वप्न दोष होना प्रारम्भ हो जाता है।[1] इस आयु में हस्तमैथुन और सम्भोग की क्रियाएँ भी प्रारम्भ हो जाती हैं। वीर्य का आभास किशोर को तभी होता है जबकि या तो सोते समय उसके कपड़ों पर वीर्य फैल जाये अथवा कामोत्तेजना के कारण हस्तमैथुन करे।[2]

गर्भाशय का विकास

Growth of Uterus

गर्भाशय में दो अण्डाशय होते हैं। बाल्यावस्था में ये अण्डाशय छोटे होते हैं। ग्यारह से सत्तरह की अवस्था में जलस्रोत होना प्रारम्भ हो जाता है। ग्यारह वर्ष की अवस्था में गर्भाशय का भार ५·२ ग्राम होता है परन्तु सोलह वर्ष की अवस्था

1. G. V. Ramsey, "The Sexual Development of Boys", American Journal of Psychology, p 217.

2. A. C. Kinsey, W. B. Pomeroy, C. E. Martin, Sexual Behaviour in the Human Male, 1948, p.

में ४३ ग्राम हो जाता है ।[1] यौवन का प्रारम्भ सामान्यरूप से मासिक धर्म से मा जाता है । भारतवर्ष में सामान्यतः १३ वर्ष से और पश्चिमी देशों में । वर्ष से मासिक धर्म प्रारम्भ हो जाता है । मासिक धर्म एक प्राकृतिक प्रक्रिया है इसको अंग्रेजी में Menstruation कहते हैं जो कि लेटिन शब्द Menses से ब है जिसका अर्थ होता है मास (Month) यह नहीं कह जा सकता कि मासिक ध कितने दिनों के पश्चात् होता है परन्तु सामान्य रूप से २५ दिनों से लेकर ३१ दि के पश्चात मासिक धर्म होता है ।

मासिक धर्म का प्रारम्भ कुछ कष्टदायक होता है जिससे सिर में दर्द, पीठ दर्द अथवा पेट में दर्द हो जाया करता है जिसके कारण संवेगात्मक अस्थिरता । होना स्वाभाविक है । जिस दिन मासिक धर्म प्रारम्भ होता है, रक्त स्राव काफी । जाता है और दूसरे दिन स्थिति सामान्य हो जाती है ।

यौन विशेषताएं

Sex Charcteristics

(१) किशोर (Adolescent Boy) :—आवाज में परिवर्तन, गुप्त अंगों बालों का उगना, बगल में बाल तथा सम्पूर्ण शरीर में बाल आने लगते हैं । कं चौड़े होने लगते हैं । दाढ़ी मूछ आने लगती हैं ।

(२) किशोरी (Adolesent Girl)—गुप्त अंगों पर बाल आने लगते बगल के नीचे बाल आने लगते हैं । शरीर पर बालों के रुएं आने लगते हैं । आवा पतली हो जाती है । कंधे चौड़े होने लगते हैं । स्तन बढ़ने लगते हैं । मासिक-धर्म प्रारम्भ हो जाता है ।

मानसिक विकास

Mental Development

किशोरावस्था में मानसिक विकास से आत्मज्ञान (Self Consciousness) प्रारम्भ होने लगता है । बाल्यावस्था की अपेक्षा मानसिक विकास किशोरावस्था में तेजी से होता है । किशोरावस्था में मानसिक विकास के रूप निम्न लिखित हैं—

(१) स्मृति

Memery

किशोरावस्था में स्मरण करने की योग्यता बढ़ जाती है । एक पुरानी कहावत के अनुसार बालकों में किशोरों की अपेक्षा स्मरण करने की शक्ति अधिक होती है, परन्तु यह मत भ्रमात्मक है क्योंकि किशोर एक बालक की अपेक्षा अधिक स्मरण कर सकता है । परन्तु उसके स्मरण करने की रीति में बालक की अपेक्षा

1. W. W. Greulch, 'Physical Changes in Adolescence', Forty three Yearbook, p. 8.

कुछ परिवर्तन होगा क्योंकि किशोर तार्किक ढग से स्मरण करेगा जबकि बालक बिना तर्क के स्मरण करना प्रारम्भ कर देगा ।

हमारी आज की शिक्षा व्यवस्था मे भी कठस्थ करने पर बल नही दिया जाता। आज शिक्षा को अधिक से अधिक रोचक और स्वाभाविक बनाने का प्रयास किया जा रहा है अतः बलपूर्वक कंठस्थ करने की क्रिया को बहुत अच्छा नही समझा जाता। इसके अतिरिक्त किशोरावस्था मे स्मृति से सम्बन्धित मनोवैज्ञानिक अध्ययन १९२५ से पूर्व ही अधिक हुए हैं। एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार जिसमे सात साल के बच्चों से लेकर अट्ठारह वर्ष के बच्चो को सम्मिलित किया गया, सात वर्ष के बालकों ने सामान्यतः कविता की ९·८ पंक्तियाँ कठस्थ की, जबकि अट्ठारह वर्ष के बालकों ने २२·४ पंक्तियाँ कठस्थ की ।[1] इन तथ्यो के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आयु के बढने के साथ साथ स्मरण करने की योग्यता का विकास होता है ।

(२) कल्पना

Imagination

यद्यपि कल्पना का मापन अत्यन्त कठिन है तथापि यह निसन्देह कहा जा सकता है कि किशोरावस्था में कल्पना शक्ति का विकास होता है। प्रारम्भिक की लड़कियों को किशोर लड़कियों को काल्पनिक कहानियाँ लिखने को कहा गया। उन्हें ये कहानियाँ दिये हुए चित्रों के आधार पर बनानी थी। ४४ प्रतिशत लड़कियों ने कल्पना शक्ति का प्रदर्शन नही किया परन्तु ५६ प्रतिशत बालिकाओं ने वास्तविक कहानियों के आधार पर कुछ काल्पनिक शक्ति का प्रदर्शन किया जिसमे से ६ प्रतिशत ने तो उच्च कोटि की काल्पनिक कहानियाँ लिखी इससे यह स्पष्ट होता है कि किशोवस्था में कल्पना शक्ति का विकास होता है ।[2]

(३) तर्क

Reasoning

किशोरावस्था में तार्किक शक्ति पर्याप्त रूप से विकसित होती है। किशोर किसी भी बात को अनायास नहीं मानता उसके सम्बन्ध में वह विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछता है। किशोर लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक तार्किक होती हैं ।

---

1. W. H. Pyle, Nature and Development of Learning Capacity, Warwick & York, 1925, p. 119

2. M. D. Verhon, "the Development of Imaginative Construction in Children," British Journal of Psychology 1948, p. 108.

(४) बौद्धिक रुचियाँ
Intellectual Interests

किशोर लड़के और लड़कियों की अनेकों रुचि होती है, परन्तु बालकों के विशिष्ट रुचियाँ जन्मजात नहीं होती हैं। वे विशिष्ट वातावरण सम्बन्धी अवसरों से सन्तुष्टि का साधन चुनते हैं।

Children are not born with propensities toward specific interests. They select their sources of satisfaction from environmental pportunities.[1]

हम उसी कार्य में आनन्द लेते हैं जिसमें रुचि रखते हैं, जिस कार्य में रुचि नहीं होती उसे हम नहीं करते। इसीलिए रुचियों का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है। रुचियाँ हमारे तनाव को कम करती हैं एवम् सन्तुष्टि प्रदान करती हैं। हम उसी में रुचि रखते हैं जिससे हमारी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि प्राप्त होती है, जब सन्तुष्टि प्राप्त होती है तो उस कार्य में हमारी रुचि कम हो जाती है परन्तु बौद्धिक उत्सुकता में, जहाँ हम अधिक सीखना चाहते हैं वहाँ हमारी रुचि में वृद्धि होती है।

We are interested in what satisfies our needs, and when the need is satisfied, interest in it ceases unless we wish to learn more about it as a matter of intellectual curiosity.[2]

किशोरावस्था में निम्नलिखित रुचियों का विकास होता है:—

(अ) खेल में रुचि
Interest in Games

किशोरावस्था में शारीरिक विकास अपने पूर्ण वेग में होता है। किशोर हॉकी, फुटबाल, क्रिकेट, वॉलीबाल, कबड्डी, बैडमिन्टन, टेनिस आदि खेल अपना पसन्द करते हैं, पर उनके वातावरण पर अधिक निर्भर करता है। गाँवों में किशोर [illegible], कबड्डी, हॉकी आदि पसन्द करते हैं। शहरों में किशोर क्रिकेट, टेनिस, बैडमिन्टन, हॉकी आदि अधिक पसन्द करते हैं। प्रारम्भिक किशोरावस्था में [illegible] के समान ही खेल पसन्द करते हैं परन्तु धीरे-धीरे खेलों में रुचि कम हो जाती है और [illegible] आदि में रुचि होने लगती है।

(ब) पढ़ने में रुचि
Interest in Reading

किशोरावस्था में पढ़ने का बहुत महत्व है। यह किशोर कितना अधिक

---

1. [illegible] Educational Psychology Mc Graw Hill Book Co., [illegible]
2. [illegible], Educational Psychology, Macmillan Co.,

पढ़ने में रुचि रखेगा उतनी ही कम समस्याएँ उसके सम्मुख आयेंगी। ब्रूकम के मतानुसार किशोर के आन्तरिक जीवन में पढ़ने से सुरक्षा और आत्म-ज्ञान आता है, परिवार और साथियों में साथ पारस्परिक सम्बन्ध अच्छे होते हैं, व्यवहार में परिवर्तन होता है, नवीन विचार तथा जीवन के क्रियाकलापों के प्रति प्रशंसात्मक भावनाएँ बढ़ती हैं।

प्रश्न उपस्थित होता है कि किशोरावस्था मे कैसी पुस्तकें पढी जायें ? यह बहुत कुछ माता पिता एवम् अध्यापको पर निर्भर करता है। पुस्तक पढ़ने की अभिलाषा तो प्रत्येक किशोर मे होती है परन्तु सही पुस्तक का चयन कराना अभिभावकों का काम है। आजकल तो पुस्तकों की सहायता से बालापराध को दूर किया जाने लगा है[1] जिससे उनमें नवीन विचार, नवीन आशाएँ तथा नवीन कल्पनाएँ आ सकें जिससे वे नये जीवन का आरम्भ कर सकें।

कौन किशोर किस प्रकार की किताब पढ़ता है यह उसके मानसिक स्तर पर बहुत निर्भर करता है। सामान्यतः किशोर साहसिक कहानियाँ और किशोरियाँ प्रेम पुस्तकें पढ़ना अधिक पसन्द करते हैं। किशोरावस्था मे दैनिक और साप्ताहिक पत्रों को पढने की रुचि भी पाई जाती है, सिनेमा की साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएँ भी इस अवस्था मे अधिक पढी जाती हैं।

(ख) चलचित्रों में रुचि
Intertest in motion Pictures

किशोरावस्था में चलचित्रों का विशेष महत्व है। चलचित्रों से बालकों की अभिवृत्ति एवम् व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है। अमेरिका में नीग्रो के प्रति बालकों की अभिवृत्ति परिवर्तन करने हेतु चलचित्रों का प्रयोग किया जाने लगा है। भारतवर्ष मे भी प्रमुख सामाजिक समस्याओं मे किशोरों के योगदान सम्बन्धी कुछ चलचित्र बनाये जा सकते हैं। भाषा समस्या जैसी समस्याओं के प्रति किशोरों मे अन्तर्दृष्टि उत्पन्न की जा सकती है जो राष्ट्रीय एकता के लिए नितान्त आवश्यक है। पश्चिमी देशों मे इससे सम्बन्धित अनेकों अनुसन्धान हुए हैं।

हमें अपने किशोर और किशोरियों की छिपी हुई शक्ति को विध्वंसक कार्यों की अपेक्षा सृजनात्मक कार्यों में लगानी है इसके दृष्टिकोण से चलचित्र पर्याप्त रूप से सहायक हो सकते हैं। चलचित्रों के द्वारा सामान्य जनता की उत्सुकता, इच्छायें एवं रुचियाँ प्रदर्शित की जाती हैं, जिसका सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक लाभ यह है

1. J. Paulson, "Psychotherapeutic value of Books in Treatment and prevention of Delinquency," American Journal of Psychotherapy. 1, 1947, p. 71.

कि इसमें अचेतन को प्रभावित किया जा सकता है। नायक और नायिका के चरित्र एवं कर्मों से किशोर और किशोरियाँ अपने आपको सम्बन्धित करने का प्रयास करते हैं; कहने का तात्पर्य यह है कि उच्च स्तर के चलचित्रों से हम अपने बालकों की सहायता कर सकते हैं क्योंकि बालकों में चलचित्र देखने की रुचि होती है।

संवेगात्मक विकास
Emotional Development

सामान्य रूप से प्राणी की उत्तेजना अवस्था ही संवेग है। An emotion is "Stirred up state of the entire organism."[1] संवेग वह अनुभव है मानवीय प्रक्रिया को प्रभावित करता है। किशोरावस्था में संवेगों का विशेष मह है क्योंकि यह अवस्था बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के बीच की अवस्था है य कारण है कि किशोर अनेकों संवेगात्मक कठिनाइयों से ग्रस्त रहता है। किशोराव में निम्नलिखित संवेग विकसित होते हैं—

(१) उत्कण्ठा
Anxiety

उत्कण्ठा की परिभाषा करना कठिन है क्योंकि मनोवैज्ञानिकों की इ सम्बन्ध में अनेकों धारणायें हैं परन्तु फिर भी यह अनेकों संवेगों जैसे डर, क्रोध शोक, खेद, सन्ताप, व्यथा, यातना (Distress), आपत्ति अथवा अनिष्ट (Foreboding), चिड़चिड़ापन (Irritability) आदि का परिणाम है।

किशोरावस्था में अनेकों कारणों से उत्कण्ठा विकसित होती है। मृत्यु, अन्धकार, अस्वस्थता, जीवन की अनेकों कठिनाइयाँ, आन्तरिक संघर्ष आदि के कारण किशोरावस्था में उत्कण्ठा जाग्रत हो जाती है। किशोरावस्था में उत्कण्ठा का कारण शारीरिक विकास भी है। बोनर ने हाईस्कूल के छात्रों से उनकी विशिष्ट समस्याओं के विषय में पूछा। छात्रों ने नौकरी, युद्ध, शाला, सामाजिक समस्याओं को बताया।[2] कहने का तात्पर्य यह कि किशोरावस्था में अनेकों उत्कण्ठायें होती हैं और इन समस्त उत्कण्ठाओं के समाधान की अत्यन्त आवश्यकता है जिससे किशोर और किशोरियों को समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयों से बचाया जा सके।

(२) क्रोध
Anger

किशोरावस्था में क्रोध बहुत अधिक आता है। जब इच्छा पूर्ण नहीं होती तो किशोर के क्रोध के भाजन उसके माता-पिता, भाई-बहन, अध्यापक, समाज हो जाते

1. L. Cole, Psychology of Adolescence, Holt Rinehart and Winston New York, 1961, p. 260.

2. H. S. Bonar, High School Pupils List Their Anxieties, Review, 50, 1942, p. 512-515.

है। हिक्स और हेस्[1] ने माध्यमिक स्तर के ढाईसौ बालकों, जिनकी आयु ग्यारह से सोलह वर्ष के बीच थी उनके क्रुद्ध होने के अवसरों की जांच की और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बालक तभी क्रुद्ध होते हैं जबकि उन्हें कोई सताता है, उनसे झूठ बोलता है, उनके ऊपर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न करता है आदि। ब्लाक[2] ने उच्च शाला के छात्रों का उनकी माताओं से संघर्ष करने के कारणों का पता लगाया। माताओं और बालकों के संघर्ष का कारण माताओं द्वारा बालकों पर अत्यधिक निगरानी रखना था। ठीक क्या है? यह भी विवाद का कारण था।

(३) चिन्ता
Worry

स्केलेरियो[3] के अनुसार बारह से चौदह वर्ष की अवस्था तक भविष्य और अध्ययन सम्बन्धी चिन्ता रहती है। पन्द्रह से सतरह वर्ष की अवस्था भविष्य, प्रेमी अथवा प्रेमिका की चिन्ता रहती है। अट्ठारह वर्ष से बाईस की आयु में विवाह की चिन्ता रहती है।

किशोरावस्था में अनेकों चिन्ताएँ हो जाती हैं। इसका एक मात्र कारण यह है कि इस अवस्था में लड़की अपने को पूर्ण युवती और लड़का अपने को पूर्ण युवक महसूस करने लगता है। दोनों अपने माता-पिता की देख-रेख से पृथक संसार बनाने के इच्छुक रहते हैं। इसी कारण भावी जीवन की समस्या चिन्तित करती रहती है। प्रारम्भिक किशोरावस्था मे बालक शाला के कामो से भी चिन्तित रहते हैं।

(४) डर
Fear

बाल्यावस्था के समान किशोरावस्था में भी डर की भावना होती है। अन्तर केवल इतना है कि छोटे बच्चों के डर का कारण किशोरों से पृथक होता है। किशोरावस्था में सामाजिक स्थिति का डर विशेष रूप से होता है। साथियों मे, कक्षा मे, परिवार में एक किशोर का क्या स्थान है यह एक विशेष स्थिति होती है जिसका किशोर विशेष ध्यान रखता है। अपने साथियों मे उसे तिरस्कृत की भावना का डर सदैव रहता है। माता-पिता की डाँट का डर भी किशोरावस्था मे देखा गया है। डर का अन्य कारण व्यक्तित्व समस्याएँ भी होती हैं।

---

1. I A Hicks, M. Hayes, Study of the characteristics of 250 Junior High-school children, child development, 1938, p. 219-242.

2. V. L. Block, Conflicts of Adolescents with their Mothers, Journal of Abnormal & Social Psychology, 1937, 32, p. 193-206.

3. G. Sakellarion, Anxieties and complexes of Greek Youth, Psychological Abstracts, 14, No. 621, 1940.

है। हिक्स और हेस[1] ने माध्यमिक स्तर के ढाईसौ बालकों, जिनकी आयु ग्यारह और सोलह वर्ष के बीच थी उनके क्रुद्ध होने के अवसरों की जाँच की और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि बालक तभी क्रुद्ध होते हैं जबकि उन्हें कोई सताता है, उनसे झूठ बोलता है, उनके ऊपर अपना अधिकार जमाने का प्रयत्न करता है आदि। ब्लाक[2] ने उच्च शाला के छात्रों का उनकी माताओं से संघर्ष करने के कारणों का पता लगाया। माताओं और बालकों के संघर्ष का कारण माताओं द्वारा बालकों पर अत्यधिक निगरानी रखना था। ठीक क्या है ? यह भी विवाद का कारण था।

(३) चिन्ता
Worry

सेकेलैरिया[3] के अनुसार बारह से चौदह वर्ष की अवस्था तक भविष्य और अध्ययन सम्बन्धी चिन्ता रहती है। पन्द्रह से सतरह वर्ष की अवस्था भविष्य, प्रेमी अथवा प्रेमिका की चिन्ता रहती है। अट्ठारह वर्ष से बाईस की आयु में विवाह की चिन्ता रहती है।

किशोरावस्था में अनेकों चिन्ताएँ हो जाती हैं। इसका एक मात्र कारण यह है कि इस अवस्था में लड़की अपने को पूर्ण युवती और लड़का अपने को पूर्ण युवक महसूस करने लगता है। दोनो अपने माता-पिता की देख-रेख से पृथक संसार बनाने के इच्छुक रहते हैं। इसी कारण भावी जीवन की समस्या चिन्तित करती रहती है। प्रारम्भिक किशोरावस्था में बालक शाला के कामों से भी चिन्तित रहते हैं।

(४) डर
Fear

बाल्यावस्था के समान किशोरावस्था में भी डर की भावना होती है। अन्तर केवल इतना है कि छोटे बच्चों के डर का कारण किशोरों से पृथक होता है। किशोरावस्था में सामाजिक स्थिति का डर विशेष रूप से होता है। साथियों में, कक्षा में, परिवार में एक किशोर का क्या स्थान है यह एक विशेष स्थिति होती है जिसका किशोर विशेष ध्यान रखता है। अपने साथियों में उसे तिरस्कृत की भावना का डर सदैव रहता है। माता-पिता की डाँट का डर भी किशोरावस्था में देखा गया है। डर का अन्य कारण व्यक्तित्व समस्याएँ भी होती हैं।

---

1. J A. Hicks, M. Hayes, Study of the characteristics of 250 Junior High-school children, child development, 1938, p. 219-242.

2. V. L. Block, Conflicts of Adolescents with their Mothers, Journal of Abnormal & Social Psychology, 1937, 32, p. 193-206.

3. G. Sakellarion, Anxieties and complexes of Greek Youth, Psychological Abstracts, 14, No. 621, 1940.

(५) प्रेम

Love

किशोरावस्था में प्रेम का संवेग के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। इस अ में प्रायः लड़के लड़कियों के प्रति और लड़कियाँ लड़कों के प्रति आकर्षित ह और आकर्षण का कारण प्रेम-भावना होना है। किशोरावस्था में प्रेम अधिक स होता है तथा आजीवन रखने का प्रयास किया जाता है।

किशोरावस्था में यह अभिलाषा अत्यन्त बलवती होती है कि कोई प्यार करे तथा वह भी किसी को प्यार करे। इस अवस्था में काम प्रवृत्ति (S पूर्ण परिपक्वता पर होती है इसी कारण विषमलिंगीय प्रेम होना स्वाभावि अध्यापकों तथा माता-पिता का कर्त्तव्य है कि वे प्रेम के वास्तविक अर्थ से ब को परिचित करायें एवं उन्हें प्रेम प्रदान करें जिससे वे जीवन में समायोजित हे

Q. No. 5.

(B) Should we have co-educational schools for adolescen and girls ? If so why ? If not, why not ?

क्या हमें किशोरावस्था के लड़कों और लड़कियों के लिए सह शिक्षा educational) स्कूल खोलने चाहिए ? यदि हाँ तो क्यों ? यदि न क्यों नहीं ? (राजस्थान

Answer

किशोरावस्था में बालक और बालिकाओं को सह शिक्षा दी जाये पृथक शिक्षा दी जाये यह एक विचारणीय प्रश्न है। कुछ लोग सह शिक्षा मे हैं और कुछ विपक्ष में। अनेकों शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का मत है कि किशोर मे लड़के और लड़कियो को एक साथ ही शिक्षा प्रदान की जाये और उन्हें मिलने जुलने का अवसर प्रदान किया जाये। इसके विपरीत जो सहशिक्षा में नहीं हैं उनका विचार है कि सह शिक्षा से किशोरावस्था में चरित्र भग हं का भय रहता है।

हमारी अपनी निश्चित राय है कि किशोरावस्था मे सह शिक्षा का होना चाहिये। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

१. सह शिक्षा से किशोर युवक एवं युवतियों का यौन सम्बन्धी दृष्टिकोण का विकास एवं यौन पर नियन्त्रण।
२. विपरीत लिंग को समझने के अवसर।
३. यौन के प्रति अपराध (Guilt) की भावना का न होना।
४. कुप्रवृत्तियों (हस्तमैथुन एवं समलिंगीय सम्बन्धों) का अन्त।
५. सह शिक्षा भावी जीवन के समायोजन में सहायक।
६. स्वस्थ संवेगात्मक विकास के लिए सह शिक्षा आवश्यक।

उपरोक्त सभी कारणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किशोरा-
ा मे लड़के लड़कियों के लिए सह शिक्षा आवश्यक है परन्तु कुछ मनोवैज्ञानिकों
विचार है कि लड़के और लड़कियों की रुचि भिन्न-भिन्न होती है तथा विकास
में बहुत अन्तर है अतः सह शिक्षा का होना उचित नहीं । परन्तु फलेमिंग का
न है कि यह तर्क देना कि लड़के और लड़कियों की रुचि और विकास क्रम
न होना है यह अनर्थ पर आधारित है जबकि सत्यता यह है कि लड़के और
कियों की रुचि और विकास क्रम मे बहुत कम अन्तर है जिसका कोई महत्व नहीं
लड़के और लड़कियाँ एक मानव हैं । उनमें बौद्धिक और रुचि सम्बन्धी अन्तर
माधिक मानवीय अन्तर है ।

Arguments in favour of single-sex schools on the ground of
ferences in the interests and the rate of development of boys and
ls are based on a misinterpretation which over emphasises the
portance of an average score, and fails to note the implications of
wide degree of overlap at each age......Boys and girls are also
rsons. Their abilities and interests very according to their personal
dowment and the treatment they have received. Prediction of
itable training is not possible on the score of sex alone.[1]

सह शिक्षा से सबसे बड़ा लाभ यह भी है कि लड़के और लड़कियाँ भिन्न
िक यौन सम्बन्धों को स्थापित कर भविष्य में सफल माता-पिता बन सकते हैं ।
के अतिरिक्त सह-शिक्षा से नार्सीसिज्म (Narcissism) नहीं पनपने पाता ।
र्सीसिज्म वह स्थिति है जबकि व्यक्ति स्वयं से ही प्रेम करने लगता है और अन्य
ई भी उसे अपने समक्ष सुन्दर नहीं लगता । जहाँ इस प्रकार की स्थिति हो जाती
वहाँ संवेगात्मक कठिनाईयाँ घर कर लेती हैं जिसके कारण पारिवारिक जीवन
व्यवस्थित हो सदैव के लिए कुसमायोजित हो जाता है । अतः फलेमिंग
शब्दों में—

Co-education in a day school is therefore particularly necessary
r healthy emotional development; and it is through contact with
eir own parents in a home which is in whole some relationship
ith a normal human community that a boy or girl can best be
uided to social maturity.[2]

यदि किशोरावस्था मे लड़के और लड़कियों को पृथक पृथक शालाओं में
र दिया गया तो सम्भव है कि वे अपना केन्द्र बिन्दु समलिंगीय व्यक्ति को ही

---

1 C. M. Fleming, The Social Psychology of Education, Routledge & Kegan Paul Ltd., London, 1957, P. 89.

2 C. M. Fleming, Ibid, p. 73

बना सें जो कि सम्भवतः उचित न हो। दूसरे विपरीत लिंग के लिए वे शर्मीले अथवा मचाचले बने रहें। इन समस्त स्थितियों को देखते हुए भी आवश्यक है कि किशोरावस्था में सह शिक्षा का प्रबन्ध किया जाये। फ्रीनि के शब्दों में—

If adolescents are segregated in single sex schools there i danger of a continuance of abnormal concentration of affection one person.. ......and false fears and distorted conceptions may built up as to the characteristics of all person of the opposite sex.

अन्त में हम यह कह सकते है कि किशोरावस्था के लड़के और लड़कियों लिए सह शिक्षा (Co-educational) स्कूल खोलने चाहिये क्योंकि मनोवैज्ञानि रूप से यही उत्तम है। यह शिक्षा के द्वारा किशोर लड़कों और लड़कियों को क वासना पर नियन्त्रण, उसका रूपान्तर एव मार्गान्तरीकरण करने मे सहाय मिलेगी। जिससे उनका भावी जीवन पूर्ण रूपेण व्यवस्थित एवं समायोजित होगा

Q. No. 6.

What are the main emotional difficulties experienced by a adolescent ? What steps in your opinion, should be taken by schoo to over come these difficulties ?

वे कौन कौन सी संवेगात्मक कठिनाईयां है जिनको एक किशोर अनुभ करता है ? आपकी राय में इन कठिनाईयो को दूर करने के लिए शाला क कर सकती है ?

(राजस्थान 1964)

Answer

किशोरावस्था वह काल जिसमें एक विकासमान व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था तक पहुँचता है। (Adolescence is the period through which a growing person makes transition from childhood to maturity) Jersild. बाल्यावस्था से परिपक्वावस्था तक पहुँचने मे उसे अनेकों विकासों को पूर्ण करना होता है। इस आयु में व्यक्ति पूर्णता को प्राप्त करता है जिसके कारण भिन्न भिन्न संवेगों में भी अन्तर दृष्टिगोचर होता है। इस अवस्था मे कामोत्तेजना, सामाजिक स्तर और सामाजिक रूप से व्यवस्थापन आदि के कारण संवेग उत्पन्न करने वाली परिस्थितियां परिवर्तित होती चली जाती हैं। एक संतुलित किशोर परिमार्जित रूप से संवेगो की अभिव्यक्ति करता है और वह जीवन में पूर्ण रूपेण समायोजित होने का प्रयास करता है। दूसरी ओर कुछ इस प्रकार की स्थितियां हैं जहाँ अवांछनीय संवेग दिखाई पड़ते हैं। अतः किशोरावस्था में अनेकों

Loc. cit , p. 72

संवेगात्मक कठिनाईयाँ दृष्टिगोचर होने लगती हैं। वास्तव मे अध्यापक ही इस प्रकार के किशोर और किशोरियों की सहायता कर सकता है क्योंकि उसका अधिकतर समय इन्हीं के बीच व्यतीत होता है। आज समाज का सम्पूर्ण ढाँचा इस प्रकार परिवर्तित हो गया तथा सामाजिक विषमता इस प्रकार फैल हो गई है, कि किशोर अपने चारों ओर समस्याएँ ही देखता है जिसके कारण वह अनेकों संवेगात्मक कठिनाईयो मे फँस जाता है, अध्यापक ही केवल इन किशोर एव किशोरियों की सहायता कर सकता है जिससे वे भावी जीवन मे व्यवस्थित हो सामान्य रूप से जीवन यापन कर सकें। प्रत्येक व्यक्ति विषम परिस्थितियों मे क्रोधित, अव्यवस्थित और कुसमायोजित होता है, बालक और व्यस्क बहुत शीघ्र अपने को व्यवस्थित करने की क्षमता रखते हैं परन्तु किशोरावस्था वह काल है जिसमें संवेगात्मक अस्थिरता (Emotional unstability) अधिक होती है। किशोरावस्था मे निम्नलिखित संवेगात्मक कठिनाईयाँ सम्मुख आती हैं—

किशोरावस्था में संवेगात्मक कठिनाईयाँ
Emtionol Difficulties in Adolescence

किशोरावस्था मे संवेगात्मक कठिनाईयों को जानने के दो तरीके हैं :—

(१) चेतन (Ego) से सम्बन्धित

(२) समस्याओं (Problems) से सम्बन्धित क्योंकि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापक बालको की समस्याओ का निरीक्षण करता है अतः सुविधा की दृष्टि से यही उचित होगा कि व्यक्तित्व की व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं को देखा जाये जिसका कारण संवेगात्मक कठिनाईयाँ होती हैं।

(अ) हीनता की भावना
Feeling of Inferiority

किशोरावस्था मे संवेगात्मक कठिनाई का मूल कारण हीनता की भावना होती है। हीनता की भावना किशोर मे तब आती है जबकि वह अत्यधिक अशक्त (Severe crippling), कुरूप (Ugly), सामाजिक दोष से युक्त (Social handicaps), बोध सम्बन्धी कमी (Slowness of comprehension) आदि हो। हीनता की भावना यद्यपि प्रत्येक अवस्था के व्यक्तियों मे पाई जाती है परन्तु किशोरावस्था मे यह भावना अधिक शीघ्र घर कर लेती है क्योंकि इस अवस्था मे लड़के और लड़कियाँ आत्म मूल्यांकन करना आरम्भ कर देते हैं। प्रायः किशोरावस्था मे देखा गया है कि एक लड़के और लड़कियाँ घंटो शीशे के सामने खड़े रहते हैं। यदि कोई अतिथि घर मे आता है तो वे उसके सम्मुख तभी आते हैं जबकि स्वयं को पूर्णरूप से सजा और सवाँर लेते हैं। इन सब क्रियाकलापों का कारण यही है कि उन्हें अपनी बुद्धि और व्यक्तित्व का भान होने लगता है। वे अपने समाज मे अपने लिए निश्चित

स्थान पाना चाहते हैं। इन सब कारणों से हीनता की भावना आ जाना कोई आश्च र्यजनक बात नहीं।

हीनता की भावना के मूल में आन्तरिक निराशा होती है जो कि पग-पग पर किशोर को विचलित करती है यद्यपि बहुत से क्षेत्रों में जहाँ वह असफल रहा है, सफलता मिल सकती थी परन्तु आन्तरिक निराशा के कारण यह सफलता नहीं मिल सकी। आन्तरिक निराशा के कारण व्यक्ति स्वय का अन्दाजा गलत लगाने लगता है और भविष्य उसे भयानक लगने लगता है जिसके कारण उसे सदैव असफलता ही हाथ लगती है। एक इसी प्रकार के व्यक्ति का इतिहास (Case History) से यह स्थिति बिलकुल स्पष्ट होती है।

भँवरसिंह जिसकी आयु १७ वर्ष थी, हायर सेकेन्डरी का छात्र था। उसका पिता जिसकी आयु ४५ वर्ष थी तथा मासिक वेतन १५०) रु० मासिक था। सी. आई. ई. व्यक्तिक बुद्धि परीक्षा के आधार पर उसकी बुद्धिलब्धि १२० थी। कक्षाओं में वह सदैव प्रथम पाँच छात्रों में रहता था। हायर सेकेन्डरी की परीक्षा में उसे प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण होने की आशा थी। कैमिस्टरी की परीक्षा से पहली रात को वह रात भर पढ़ता रहा। सुबह उसकी मानसिक स्थिति प्रायः ठीक थी परन्तु जब प्रश्न पत्र उसके सम्मुख आया तो सब कुछ याद होते हुए भी वह कुछ भी याद कर सकने में असमर्थ था। परिणामत. उसकी विकृत अवस्था हो गई और वह अचेतन हो गया। उसके पश्चात वह किसी भी प्रश्न पत्र में सम्मिलित नहीं हो सका। दूसरे वर्ष परीक्षा के दिनों में वह फिर मानसिक रूप से विकृत हो गया। अब उसमें धीरे-धीरे यह भावना घर कर गई कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता जब भी उसके सम्मुख कोई परीक्षा का नाम लेता उसके रोंगटे खड़े हो जाते और संवेगात्मक रूप से उसके सामने कई कठिनाई उपस्थित हो गईं। वह अन्य छात्रों से जो उसके सहपाठी थे विद्रोह की भावना रखने लगा। तीसरे वर्ष जब वह परीक्षा के लिए आवेदन पत्र देने आया तो एक शिक्षक ने उसके प्रति सहानुभूति प्रकट की और उसकी सहायता करने को कहा। परीक्षा के दिनों में वह छात्र उसी अध्यापक के साथ रहा। सन्ध्या समय जब वह छात्र घूमने जाता तो सदैव यही कहता कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता क्योंकि कैमिस्ट्री में पास होना उसके वश की बात नहीं है। जिस समय वह बात करता तो ऐसा जान पड़ता जैसे किसी भावी भय से आतंकित है। परन्तु अध्यापक ने उसे सदैव हिम्मत बँधाई और उसके हृदय से हीन भावनाओं को निकालने का प्रयत्न किया। कैमिस्ट्री की परीक्षा से पूर्व रात को छात्र को सोने के लिए कहा परन्तु भँवरसिंह किसी भी प्रकार सोना नहीं चाहता था क्योंकि उसे कैमिस्ट्री के प्रति भय था और परीक्षा में उत्तीर्ण होने के प्रति हीन भावनाएँ उसे घेर लेती थीं।

को सब प्रकार से सांत्वना दी गई कि वह आराम से रात को सोये तथा प्रकार की चिन्ता न करे, जैसे तैसे रात के एक बजे उसे सुलाया गया।

सुबह जब उठा तो प्रसन्न चित्त था। भँवरसिंह ने परीक्षा दी और वह प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

उपरोक्त व्यक्ति इतिहास से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्थायी हीन भावना (Chronic feelings of inferiority) से व्यवहार पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त हीन भावना से शक्ति लोप हो जाती चाहे उस कार्य को करने की सामर्थ्य किशोर में कितनी हो।

(ब) चित्तवृत्ति
Mood

किशोरावस्था में चित्तवृत्ति बहुत बड़ी समस्या है। किसी भी कार्य के प्रति गतिरोधक भाव (Baffled feeling) उत्पन्न होना और किसी कार्य में चित्त न लगना इन दो रूपों में किशोरों के सम्मुख समस्या आती है। चित्तवृत्ति सम्बन्धी संवेगात्मक कठिनाई प्रायः शालाओं में देखी गई है और छात्रों को यह कहते सुना है कि "सर आज पढ़ने का मूड नहीं है।"

प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इस चित्तवृत्ति का कारण क्या है? मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तो यही कहा जा सकता है कि इस प्रकार की चित्तवृत्ति के पीछे किशोरावस्था की अस्थिरता है इसके अतिरिक्त इसके पीछे कोई कारण नहीं है। स्ट्रैंग के शब्दों में।

One of of the difficulties of teen-agers is these moods. Sometimes they get up in the morning feeling wonderful. Instead of talking they feel like singing Other days they feel wretched and depressed They can hardly drag themselves around. These moods come and go in a mysterious way, for just no reason at all.[1]

कभी कभी तो चित्तवृत्ति के कारण किशोर असामान्य व्यक्तियों जैसा व्यवहार करने लगता है और बहुत अधिक उत्तेजित हो जाता है, उत्तेजना में वह जोर जोर से बोलने लगता है, चाहे कोई सुने अथवा न सुने परन्तु वह जबरदस्ती सुनाने का प्रयत्न करता है कभी कभी वह विदूषक की भाँति व्यवहार करता है। इस प्रकार की संवेगात्मक कठिनाई प्राय किशोरावस्था, गप्पी और बातूनी स्त्रियों तथा कवियों में मिलेगी।

वे अध्यापक जो किशोरावस्था के बालकों को पढ़ा रहे हैं इस प्रकार के बालकों की सहायता कर सकते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति कोई असामान्य नहीं है बल्कि शारीरिक विकास तथा यौन विकास के कारण प्राय किशोरवस्था में हो जाती

1. R. Strang, "Adolescent View on One Aspect of Their Development," Journal of Educational Psychology, 43 : 42, 1957.

है । कभी कभी इस प्रवृत्ति का कारण सामाजिक कुसमायोजन भी होता है । इस प्रकार के बालकों को तिरस्कृत करने से भी विरक्ति जैसी संवेगात्मक कठिनाई बालकों में पाई जाती है । इस प्रकार के बालकों को उनकी कक्षा में व्यवस्थित बनाया जा सकता है । अध्यापक को साधारण संवेगात्मक कठिनाइयों में तथा स्थायी मनोविकारक भावों के सामान्य भेदों को समझना अत्यन्त आवश्यक है ।

(स) पारिवारिक पृष्ठ भूमि
Family Background

पारिवारिक पृष्ठभूमि से भी संवेगात्मक कठिनाई उत्पन्न हो जाती है । पिछले कुछ वर्षों में इस सम्बन्ध में पर्याप्त अनुसन्धान हुए हैं । इस तथ्य पर सभी सहमत हैं कि संवेगात्मकता का माता पिता के चरित्र तथा बालक और माता पिता के सम्बन्धों से धनात्मक सहसम्बन्ध है । पारिवारिक पृष्ठभूमि का निम्नलिखित बिन्दुओं पर विश्लेषण किया जा सकता है :—

१. माता पिता में से दोनों अथवा एक मानसिक रूप से अस्वस्थ हों ।

२. एक या अनेक भाई बहन मानसिक रूप से अस्वस्थ हों ।

३. परिवार के अन्य सदस्य मानसिक विकृतिग्रस्त हों ।

४. *माता पिता ने तलाक दे दिया हो ।*

५. माता पिता एक दूसरे से अप्रसन्न हों ।

६. बालक को माता पिता दोनों ने अथवा एक ने तिरस्कृत किया हो ।

७. बालक से कड़ा व्यवहार

८. बालक का भाई बहनों से संघर्ष ।

९. बालक का माता पिता से संघर्ष ।

१०. व्यस्कों द्वारा बालक का तिरस्कार[1] यदि पारिवारिक पृष्ठभूमि दूषित है तो बालक में संवेगात्मक अस्थिरता का आना स्वाभाविक है । कहने का तात्पर्य यह है कि संवेगात्मक कठिनाईयों का कारण शारीरिक दोष ही नहीं है बल्कि पारिवारिक पृष्ठभूमि में माता का व्यवहार बालक और बालिका को विशेष रूप से प्रभावित करता है । कभी कभी तो संवेगात्मक अस्थिरता इतनी बढ़ जाती है किशोरवस्था में कुछ बालक असामान्य व्यवहार तक करने लगते हैं । इस स्थिति में अध्यापक इतनी सहायता नहीं कर सकता जितनी माता पिता स्वयं कर सकते हैं ।

---

1 H. V. Ingham, "A Statistical Study of Family Relationships Psychoneuroses," American Journal of Psychiatry, 106, 1949, 98.

(द) सामाजिक कुसमायोजन
Social Maladjustment

किशोर की अपने समूह द्वारा स्वीकृति पाने की इच्छा स्वाभाविक होती है। जो किशोरी अपने समुदाय द्वारा प्रतिष्ठित मूल्यों के अनुसार नहीं चल पाते वे सामाजिक रूप से कुसमायोजित हो जाते हैं। इस प्रकार के बालकों में शर्मीलापन, डरपोकपन, प्रभावहीनता, उदासी आ जाती है। एक तिरस्कृत में असुरक्षा की भावना आ जाती है। एकाकीपन से स्नायु-विकृति (Neurosis), पिछड़ापन (Backwardness) अपराधशीलता (Delinquency) आ जाती हैं। इस संवेगात्मक कठिनाईयों के कारण वह बालक :—

१. अपने सहपाठियों को पीटता है।
२. अनुशासनहीन और कर्कश हो जाता है।
३. असत्य बोलता है।
४. मित्रों के प्रति वफादार नहीं होता।
५. सहानुभूति हीन होता है।
६. शाला की सामाजिक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेता।
७. साथियों की आवश्यकता के समय सहायता नहीं करता।
८. दूसरो को सताता है।
९. चोरी करता है।
१०. झगड़ालू है।
११. अफवाहों को फैलाता है।
१२. अध्यापकों की आज्ञा का पालन नहीं करता
१३. गन्दी भाषा का प्रयोग करता है।[1]

किशोरावस्था में उक्त लिखित कुछ संवेगात्मक कठिनाइयाँ हैं जिन्हें किशोर और किशोरियाँ अनुभव करते हैं। इन कठिनाइयों को दूर करने का उपाय शाला द्वारा ही किया जा सकता है क्योंकि अध्यापक ही इस स्थिति में हैं जिनके प्रयास से हम कल के भावी नागरिकों की सहायता कर सकते हैं और उन्हें जीवन में व्यवस्थित कर सकते हैं जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल हो। वैसे हम प्रत्येक बिन्दु के साथ अध्यापक के उत्तरदायित्वों की चर्चा कर आये हैं परन्तु फिर भी शाला द्वारा इन कठिनाइयों का निदान हो सकता है।

1 Ratan Lal Sharma, 'Group Discussion Technique for Resolving cases Maladjustment among school students,' Teacher Education, X : 1, 1965, P. 15-19

शाला और संवेगात्मक कठिनाइयाँ
School and Emotional Difficulties

साधारण संवेगात्मक कठिनाईयों को दूर करने में शाला महत्व प्रदान कर सकता है। सर्वप्रथम शाला का कर्त्तव्य है कि संवेगात्मक से ग्रस्त बालकों को चुने, तत्पश्चात प्रत्येक बालक की संवेगात्मक कठि जानने का प्रयत्न करे। समस्त संवेगात्मक कठिनाइयों को जानने के पश्चात परिवार और समाज से सम्बन्धित कठिनाइयों पर अलग-अलग वि निदानात्मक तथ्यों पर विचार किया जाये। शाला यह प्रयास करे कि सहयोग से कौन-कौन सी कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं। संवेगात्मक वि अन्तर्गत संवेगात्मक परिष्कार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यदि संवेगात्मक क को दूर नही किया गया तो चरित्र का निर्माण होना असम्भव हो ज शाला को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर संवेगात्मक कठिनाइयों करना चाहिए:—

१. धार्मिक और नैतिक शिक्षा
Religious and Moral Education

शाला में धार्मिक और नैतिक शिक्षा का दिया जाना अत्यन्त अनिव इस शिक्षा से संवेगों को परिष्कृत किया जा सकता है। परन्तु यह सदैव रक्खा जाय कि विद्यार्थियों को धर्म के संकीर्ण अर्थ से दूर रक्खा जाये नैतिकता पर आधारित व्यापक धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाये। किशोर में धार्मिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना नितान्त आवश्यक है।

२. प्रेम और सहानुभूति पूर्ण शिक्षा
Education with full of Love and Symapthy

शाला के वातावरण को प्रेमपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण बनाना चाहि यदि वातावरण इसके विपरीत हुआ तो बालक शाला से दूर भागने का करेगा जिसके फलस्वरूप उसमें पलायन शीलता आ सकती है। दूसरे प्रेम सहानुभूति के अभाव में वांछित सवेगों का विकास होना असम्भव है अतः स को सही अर्थों में विकसित करने के लिए शाला का वातावरण प्रेम पूर्ण अति आवश्यक है।

३. खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन
To Conduct Games and Cultural Activities

संवेगात्मक कठिनाइयों को दूर करने के लिए स्कूल में विभिन्न प्रकार खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होना अनिवार्य है। कुछ

कठिनाइयों सामाजिक रीतिरिवाजो के कारण होती हैं। शाला में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा बालकों की अभिवृत्तियों को सही दिशा दिखाई जा सकती है।

४. यौन शिक्षा

Sex Education

किशोरावस्था मे संवेगात्मक तनावों को दूर करने के लिए आवश्यक है कि यौन शिक्षा दी जाये। हमारी संस्कृति मे स्त्री पुरुष सवेगात्मक तनाव पैदा हो जाते हैं। इसका मूल कारण यही है कि बालकों को सही समय पर यौन शिक्षा नहीं दी जाती। लड़के लड़कियों को अलग रक्खा जाता है जिसके कारण उनमें कौतूहल बना रहता है। किशोरावस्था में यौन अपराध होने का यही कारण है। यदि शाला यौन शिक्षा को अनिवार्य बना दे और लड़के लड़कियों को अधिक से अधिक मिलने जुलने का अवसर प्रदान करे तो संवेगात्मक तनाव दूर हो सकते हैं।

सीखना

Learning

Q. No. 7

(A) What is learning ? How does it differ from matura
सीखने का क्या अर्थ है ? सीखने और विवृद्धि में क्या अन्तर है ?

(राजस्थान 1

OR

What is learning ? What is the importance of the lear the process of learning ?

सीखना क्या है ? सीखने की प्रिक्रिया में शिक्षार्थी का क्या महत्व है ?

(कर्नाटक 19

OR

Distinguish between learning and maturation. What i place of maturation in learning ?

विवृद्धि और सीखने में अन्तर बताईये ? विवृद्धि का सीखने में स्थान है ?

(आगरा 19

OR

Write short note on—Maturation and Learning.
संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-विवृद्धि और सीखना

(पूना 1959, आगरा एम. ए. 196

Answer

सीखना क्या है ?

What is Learning

सीखने से व्यवहार में परिवर्तन होता है। हम अपने पूर्व अनुभवों के आधा पर व्यवहार में परिवर्तन करते हैं अर्थात् हमारे आचरण में पूर्व अनुभव आधार पर आये परिवर्तन को सीखना कहते हैं-उदाहरणार्थ एक बालक स्टो देखकर वह उसे छूता है और उससे जलता है। बालक के समक्ष जब स्टोव जलता जाता है तो उसकी भी उसका अच्छी लगती है। कौतूहलवश बालक भी पकड़ने का प्रयत्न करता है, जब वह [illegible] को पकड़ने का प्रयास करता है तो उसे [illegible] होता है उस अनुभव से उसे पीड़ा होती है, बालक अपना हाथ पीछे खींच लेता है और [illegible] है। [illegible] स्पर्श कर हाथ का अपना स्वाभाविक

क्रिया है। उसी दिन अथवा दूसरे दिन बालक स्टोव को फिर जलता हुआ देखता है-उसे याद आता है और वह जलते हुए स्टोव को नहीं छूता। प्रश्न उठता है-क्यों? क्योंकि उसने पूर्व अनुभव के आधार पर यह जाना कि जलते हुए स्टोव को छूने से पीड़ा होती है। बालक पहले स्टोव से खेलता था परन्तु उस समय वह स्टोव जला हुआ नही था अतः किसी प्रकार की पीड़ा बालक ने अनुभव नही की थी। उस समय से पूर्व वह स्वाभाविक रूप से स्टोव को छूता था, उससे खेलता था क्योंकि पूर्व अनुभव के आधार पर उसे अच्छा लगता था जो कि बालक की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। परन्तु जलन के अनुभव के पश्चात बालक ने स्टोव नही छुआ क्यों? क्योंकि अनुभव के आधार पर उसने यह सीखा कि स्टोव के हाथ लगाने से जलन अनुभव होती है। अत दूसरी क्रिया अनुभव पर अवलम्बित हुई। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हुआ कि पूर्व अनुभव के आधार पर हमारे व्यवहार में परिवर्तन आया ·· ····· वह व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है। इस तथ्य को और भी स्पष्ट करने के लिए यह उचित होगा कि हम सीखने की परिभाषाओं पर विचार करें।

(१) अनुभव के आधार पर व्यवहार में परिवर्तन ही सीखना है :—

गेट्स के मतानुसार प्रशिक्षण और अनुभव के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन सीखना है।[1] इस परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुभव और प्रशिक्षण से व्यवहार परिमार्जित होता है और जैसे-जैसे हम अनुभव करते हैं उसी के अनुसार हम सीखते चले जाते हैं। कालविन के मतानुसार भी सीखना अनुभव के आधार पर हमारे पहले से बने हुए व्यवहार का परिवर्तन है।[2] गिलफर्ड ने भी अपनी परिभाषा में यही स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि सीखना आचरण के फलस्वरूप, आचरण में कोई भी परिवर्तन है।[3]

(२) सीखना ज्ञान का अर्जन है :—सीखने के आधार पर हमारे ज्ञान में अभिवृद्धि होती है जिसके द्वारा नवीन आदतों का निर्माण और नवीन दृष्टिकोण विकसित होता है। ज्ञान का अर्जन हमारे समस्त जीवन को प्रभावित करता है। इस आधार पर ज्ञान अर्जन ही सीखना है।[4]

(३) मेगोक के मतानुसार—सीखना, जैसा कि हम मानते हैं, व्यवहार मे

1 Learning is the modification of behaviour through experience and training. —Gates

2. Learning is the modification of our ready made behaviour due to experience. —Colvin

3. Learning is any change in behaviorr, resulting from behaviour. —J. P. Guilford

4. Learning is the acquistion of Lnowledge.

स्थायी परिवर्तन है जो अभ्यास का क्रियात्मक स्वरूप है। प्रायः इस परिवर्तन :
एक दिशा होती है जो कि व्यक्ति की प्रेरणात्मक अवस्थाओं को सन्तुष्ट करती है[1]

(४) हिलगार्ड के मतानुसार :—हिलगार्ड ने सीखने की काफी विस्
परिभाषा प्रस्तुत की है जो अपने मे पूर्ण है। हिलगार्ड[2] के अनुसार सीखना व
प्रक्रिया है जिससे कोई क्रिया आरम्भ होती है या सामना की गई स्थिति के द्वा
परिवर्तित की जाती है परन्तु उस क्रिया को परिवर्तन की विशेषताओं परिपक्व
आदि दशाओ के आधार पर न समझाया जा सके।

सीखना और विवृद्धि में अन्तर

Difference between Learning & Maturation

सीखना और विवृद्धि दोनों ही कारणो से व्यवहार में परिवर्तन होता है
परन्तु विवृद्धि आधार शिला के रूप मे कार्य करती है, उदाहरणार्थ एक शिशु ज
अभी दो वर्ष का है लिखना-पढ़ना नही सीख सकता, इसके लिए आवश्यक है कि व
पहले विवृद्ध (Mature) हो। इसीलिए हम कह सकते हैं कि व्यक्ति तभी सी
सकता है जबकि उसमे सीखने की सामर्थ्य आ जाये। सामर्थ्य उसके विकासक्रम प
आधारित है और विकास ही विवृद्धि अथवा परिपक्वता है जो सदैव चलती रह
है। बोरिंग के मतानुसार विवृद्धि का अर्थ है। विकास जो बिना किसी बिना सिखा
व्यवहार से पूर्व अथवा सीखे हुए व्यवहार से पहले विद्यमान होता है।[3] सीखने क
सम्पूर्ण प्रक्रिया तभी समझी जा सकती है जबकि विवृद्धि और सीखने के अन्तर क
समझ लिया जाये। सीखने और विवृद्धि (परिपक्वता) का अन्तर निम्न प्रकार
स्पष्ट किया जा सकता है :

(१) विवृद्धि जन्मजात प्रक्रिया है जबकि सीखना जन्मजात नहीं। सीख
के लिए पूर्व अनुभवों का होना नितान्त आवश्यक है।

(२) सीखने की प्रक्रिया अनुकूल वातावरण में सरलतम होती है प्रतिकू
वातावरण मे कठिन। उदाहरणार्थ सांख्यिकी के प्रश्न को हल करने में शा

---

1. Learning as we measure, it is relatively permanent chang in behaviours as a function of practice. In most cases this chang has a direction which satisfies the current motivational conditions o the individual. —Megeoc

2. Learning is the process by which any activity orignates o is changed through reacting to an encounted situation provided tha the characteristics of the change in activity can not be explained o the basis of native response, tendencies, maturation or temporar status of organism. —E. R. Hilgar

3. Maturation means the growth and development that i necessary either before any unlearned behaviour can occur, or befor the learning of any particular behaviour can take place. —Borin

वातावरण तथा मानसिक तत्परता का होना अनिवार्य है। विवृद्धि के लिए यह सब आवश्यक नहीं यह तो स्वतः होने वाली प्रक्रिया है।

(३) सीखना प्रेरणा (Motivation) पर आधारित है जबकि विवृद्धि के लिए प्रेरणा आवश्यक नहीं।

(४) सीखना चेतना पर आधारित है। विवृद्धि में चेतना आवश्यक नहीं।

(५) सीखना वाह्य उत्तेजनाओं पर आधारित है जबकि विवृद्ध आन्तरिक प्रक्रिया है।

(६) सीखना जीवन-भर चलता है। विवृद्धि अवस्थाओं पर आधारित है।

(७) सीखना विवृद्धि पर निर्भर है जबकि विवृद्धि के लिए सीखना आवश्यक नहीं।

(८) सीखने में मानसिक और शारीरिक विकास आवश्यक है जबकि विवृद्धि में शरीर विकसित होता है।

उपरोक्त अन्तरों के होते हुए भी दोनों प्रक्रियाएँ एक दूसरे पर अवलम्बित हैं। मानव के पूर्ण विकास के लिए दोनों ही प्रक्रियाएँ आवश्यक हैं।

सीखना और विवृद्धि मे घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि विवृद्धि से पूर्व ही सीखना प्रारम्भ किया जाये तो उसका कोई लाभ नहीं होता। अनेकों मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि आयु विशेष से पूर्व दिया हुआ प्रशिक्षण व्यर्थ होता है। वे माता-पिता अथवा अध्यापक जो निश्चित आयु से पूर्व बालकों को पढ़ाना सिखाते हैं, वे बालकों के साथ घोर अन्याय करते हैं। बालक की शिक्षा स्वाभाविक तरीके से निश्चित आयु पर ही प्रारम्भ करनी चाहिए। इसीलिए हमारे देश में सेकेण्डरी और उच्च शिक्षा के लिए आयु निश्चित कर दी गई है, परन्तु प्रतिभाशाली बालकों के साथ इस नियम को लागू करना गलत है क्योंकि वे शारीरिक और मानसिक स्तर पर सामान्य बालकों की अपेक्षा अग्रिम हैं साधारण बालकों के लिए हमें परिपक्वता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

Q. No. 7.

(B) What is learning curve ? What does it indicate ?
सीखने का वक्र क्या है ? इससे हम क्या जान सकते हैं ?

(राजस्थान १९६६)

Answer

सीखने का वक्र

Learning Curve

किसी विषय को सीखने की गति (उन्नति और अवनति) को ग्राफ कागज पर प्रदर्शित करने के लेखे को सीखने का वक्र कहते हैं। वक्र का सबसे बड़ा लाभ यही है कि इससे छात्र की सीखने की गति का पता चलता रहता है।

स्कीनर के मतानुसार किसी दी हुई क्रिया में व्यक्ति की उन्नति अथवा अवनति का ग्राफ कागज पर प्रदर्शन सीखने का वक्र कहलाता है।[1]

सीखने के वक्र की सीमाएँ

Limitation of Learning Curves

वक्र के द्वारा हम समय विशेष में हुई उन्नति अथवा अवनति का प्रद करते हैं परन्तु यह वास्तविक नहीं है। दूसरे सीखने की क्रिया को किसी भी द्वारा नहीं दिखाया जा सकता क्योंकि सीखना विभिन्न प्रकार का होता है।

सीखने के वक्र की अन्य सीमा यही नहीं बहुत से लोगों की उन्नति अथ अवनति को ग्राफ द्वारा दर्शाया जाता है। इन ग्राफों में व्यक्ति विशेष का विव न होकर सम्पूर्ण जनसंख्या का लेखा जोखा होता है जिसके कारण अनेकों सीख की स्थितियों का सही आभास नहीं हो पाता।

वक्र द्वारा सूचना
Indication by Curve

वक्र द्वारा हमें निम्नलिखित सूचनाएँ प्राप्त होती है :—

(१) सीखने में पठार
Plateaues in Learning

वक्र द्वारा हमें सीखने की उस अवस्था का ज्ञान होता है जिस समय छा कोई उन्नति प्रदर्शित नहीं करता अथवा छात्र की उन्नति अवरुद्ध हो जाती है ऐसी स्थिति का ज्ञान अध्यापक के लिए नितान्त आवश्यक है क्योंकि छात्र विशेष व उन्नति से रुकने का कारण पता लगाया जा सकता है।

(२) सीखने में उन्नति
Progress in Learning

वक्र के द्वारा बालकों की उन्नति का पता चलता है। इससे अध्यापक व अपने शिक्षण की सार्थकता का पता चल जाता है।

(३) बालकों के सीखने की सीमा का ज्ञान
Knowledge of children's Capacity to learn

वक्र द्वारा अध्यापक को बालकों के सीखने की सीमा का आभास हो जात है। बहुत से विषयों में ऐसी स्थिति आ जाती है जबकि बालक ज्ञान प्राप्त करने मे असमर्थ हो जाता है अथवा ज्ञान प्राप्ति की सीमा आ जाती है। अध्यापक का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वक्र द्वारा सीखने की सीमा जानकर वह जबरदस्ती ज्ञान

---

1. A learning curve is a graphic represention of a persons improvement or lack of improvement in a given activity.

—Skinner

ने का प्रयत्न न करे। ज्ञान की प्राप्ति वहीं तक सम्भव है जहाँ तक ज्ञान प्राप्त ने वाला तैयार हो अन्यथा समस्त प्रयास निरर्थक होंगे। गेट्स के मतानुसार—

"The physological limit is that degree of ability which a particular person cannot surpass because of absolute inherited limits in the speed or complexity of motor or mental response."

) सीखने की प्रारम्भिक अवस्थाओं का ज्ञान

Knowledge of Early Stages of Learning

वक्र द्वारा अध्यापक को यह सूचना प्राप्त होती है कि प्रारम्भिक अवस्थाओं सीखने की गति कैसी है क्योंकि यदि प्रारम्भ की गलतियों को ठीक नहीं किया या तो भविष्य में वे स्थायी गलतियों का रूप धारण कर लेती हैं, जिनके ऊपर द में सफलता पाना प्रायः असम्भव-सा हो जाता है। वक्र द्वारा हम इस प्रकार गलतियों का पता लगा सकते हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं से हमें यह ज्ञात होता है कि वक्रों का सीखने के निर्देशन महत्वपूर्ण योग है। इनसे हम बालक की सम्पूर्ण शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त र सकते हैं।

. No. 7.

(C) What factors help learning ?

सीखने में कौन-से अंग सहायक होते हैं ? (राजस्थान १९६६)

सीखने में कई अंग सहायक होते हैं जिनमें से प्रमुख-प्रमुख निम्नलिखित हैं।

१) प्रेरणा

Motivation

सीखने की प्रक्रिया में यह केवल प्रेरणा ही है जो महत्वपूर्ण योग प्रदान रता है। उचित प्रेरणा से सदैव सीखने की क्रिया को बल प्राप्त होता है। रणा एक कला है जो बालक में रुचि उत्तेजित करती है।

'Motivation in school learning involves arousing, sustaining nd directing desirable conduct.'[1]

सीखने का उद्देश्य होता है और उद्देश्य की प्राप्ति प्रेरणा की शक्ति र निर्भर है। शिक्षण की सफलता इसी में है कि बालकों में सीखने की प्यास

1. S. S., Educational Psychology, P. 311

जागे और सीखने की प्यास तभी जाग सकती है जबकि बालकों में फूंकी जाये ।

अनेकों प्रयासों से यह सिद्ध हो चुका है कि सीखने की साम इच्छा होते हुए भी प्रेरणा की कमी के कारण सीखना न हो सका सीखने मे प्रेरणा का होना नितान्त आवश्यक है ।

२. सीखने की विधि
Learning Method

सीखने में विधि बहुत सहायक सिद्ध होती हैं। क्योंकि इन विधि द्वारा सीखने की प्रक्रिया को सरलतम बनाया जाता है। यह सही है कि विषयों के लिए सभी विधियाँ कारगर नहीं हो सकती परन्तु कोई न कोई किसी न किसी विषय के लिए सहायक हो सकती है । शिक्षा के क्षेत्र में f को अधिक से अधिक ग्राह्य बनाने के लिए शिक्षण विधियों पर अनेकों अनुस हो रहे हैं। आज सीखने की क्रिया को सुगम बनाने हेतु बालको को प्रत्यक्ष प्र प्रदान किये जाते हैं ।

३. बालक की आयु
Age of the Child

सीखने में बालक की वास्तविक आयु और मानसिक आयु काफी सह होते हैं। यदि बालक शारीरिक रूप से अस्वस्थ है और उसी अवस्था में शिक्षा प्रदान की जा रही है तो वह व्यर्थ होगी। इसी प्रकार यदि बालक मानसिक योग्यता सामान्य स्तर की नहीं है तो भी सीखने की क्रिया नहीं सकती क्योंकि वह बालक सामान्य बालको के पाठ्यक्रम को नहीं समझ पायेगा अतः सीखने मे आयु भी सहायक होती है ।

४. अभ्यास
Exercise

सीखने में अभ्यास सहायक होता है । किसी भी विषय के सीखने में अत्यन्त आवश्यक है कि व्यक्ति उसका अभ्यास करे । कुछ विषयों में अभ्यास बहुत अधिक महत्त्व है जैसे गणित, ड्राइंग, विज्ञान आदि । इन विषयों बालक जितना अभ्यास करेगा उतना ही वह उस विषय को सीख सकेगा । अभ्यास का लाभ तभी है जबकि वह रुचि और योग्यता पर आधारित अन्यथा नहीं ।

५. परिपक्वता
Maturation

जैसा कि हम प्रश्न नं० ३ के (7) भाग में पढ़ चुके हैं कि सीखने लिए परिपक्वता का होना अनिवार्य है । अधिगमकर्ता में सिखाया हुआ

न निरर्थक जाता है। स्ट्रेयर[1] ने जुड़वां बालकों के शब्द भण्डार पर प्रयोग या। उन्होंने "ट" "स" दो जुड़वा बालक लिए। बालक 'ट' को भाषा प्रशिक्षण या गया। परन्तु अट्ठाइस दिनों के प्रशिक्षण के पश्चात बालक "स" की शब्द द्धि बालक "ट" के बराबर थी जिसने पैंतीस दिनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। न्तु बालक "ट" जिसको अधिक प्रशिक्षण मिला था, वह बालक "स" से भाषा क्षेत्र में अधिक अच्छा था। इस उदाहरण से यह स्पष्ट होता है कि सीखने के ए विवृद्धि आवश्यक है।

. बालक की इच्छा और विश्वास

Will and Confidence of the Child

बालक की इच्छा और विश्वास सीखने में काफी सहायक होते हैं। यदि लक सीखने के लिए इच्छुक है और उसे पूर्ण विश्वास है तो निश्चित ही उसे खने में सफलता प्राप्त होगी।

. वातावरण

Environment

सीखने में वातावरण भी एक महत्वपूर्ण अंग है। वातवरण पर हुए नुसन्धानों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुकूल वातावरण से सीखने में बाधा आती । जितना हम शान्त और प्रफुल्लित वातावरण में सीख सकते हैं उतना कोलाहल और दूषित वातावरण में नहीं।

Q. No. 8.

What do you understand by transfer of training ? Give two examples to illustrate transfer of training.

शिक्षण के स्थानान्तरण से आप क्या समझते हैं ? इसकी व्याख्या के लिए दो उदहारण दो। (राजस्थान 1964)

OR

What is transfer of training ? How far it is applicable to various school subjects ?

शिक्षण का स्थानान्तरण क्या है ? यह शाला के विभिन्न विषयों पर कैसे क्रियान्वित होता है ? (बनारस 1957, गुजरात 1958)

OR

Write a critical essay on transfer of training.

शिक्षण के स्थानान्तरण पर आलोचनात्मक निबन्ध लिखो।

(आगरा एम. ए. 1964)

---

1. L C. Strayer, Language and Growth, The Relative Efficiency of Early and Deferred Vocabulary Training Studies by the Method of Co Twin Control.

OR

Is transfer of training possible ? If so describe its uti education.

क्या शिक्षण का स्थानान्तरण सम्भव है ? यदि ऐसा है तो शिक्षा में उपयोगिता बताओ

(पूना 1959, बम्बई

Answer

शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षण के स्थानान्तरण का विशेष महत्व है। इ व्यवहारिक पक्ष तभी है जब प्राप्त ज्ञान का उपयोग दैनिक जीवन में हो यदि शिक्षा को सैद्धान्तिक बना दिया तो शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो उदाहरणार्थ शाला में प्राप्त गणित का ज्ञान यदि बाजार में वस्तुओं को खरी काम आता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि प्राप्त ज्ञान को हमने दूसरी स्थि स्थानान्तरित किया इसका अर्थ यह हुआ कि एक स्थिति में शिक्षण को स्थिति में आंशिक या सम्पूर्ण तरीके से लागू करना शिक्षण में स्थाना कहलाता है।

शिक्षण के स्थानान्तरण की परिभाषायें

Definition of Transfer of Training

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षण के स्थानान्तरण की परिभाषा वि प्रकार से की है। कुछ प्रमुख परिभाषायें निम्न प्रकार हैं:—

हरबर्ट सोरेन्सन के अनुसार एक व्यक्ति स्थानान्तरण से उस सीम सीखता है जबकि एक स्थिति का प्राप्त ज्ञान दूसरी स्थिति में उसे स होता है।[1]

वाल्टर बी० कालसनिक के मतानुसार स्थानान्तरण एक स्थिति से ज्ञान, कौशल, आदतों, अभिवृत्तियों अथवा अन्य प्रयोजनों का अन्य स्थि कार्यान्वन है।[2]

मुनरो के Encyclopedia of Educational Research के अनुसार एक विशिष्ट सीखने का अनुभव जो पहिले से कुछ भिन्न है, ...

---

1. 'A person learns through transfer to the extent that abilities acquired in one situation help in another.'
Hrebert Sorenson, Psychology in Education, P.

2. Transfer is the application on carry over of knowled skills, habits, attitudes or other responses from the situation in wh they were initially acquired to some other situation."
—Walter B. Kolesı

प्रभावशाली ढंग से उत्तेजित करने के लिए नई स्थिति में प्रभावित करता है तो वहाँ शिक्षण में स्थानान्तरण हो जाता है।[1]

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि शिक्षण में स्थानान्तरण के लिए:—

१. पूर्व स्थिति से प्राप्त अनुभव;

२. नवीन स्थिति से आंशिक अथवा सम्पूर्ण मेल; आवश्यक है।

शिक्षण स्थानान्तरण के महत्वपूर्ण प्रयोग
Significant Experiments of Transfer of Training

थार्नडाइक का प्रयोग[2]
Thorndike's Experiment

यह प्रयोग १९२४ में किया गया। शिक्षकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रयोग है। इस प्रयोग में ८५६४ बालक लिए गये जो कक्षा ९, १०, ११ के विद्यार्थी थे। समस्या थी कि स्थानान्तरण समस्त विषयों में किस प्रकार होता है। इस प्रयोग में सांख्यिक विश्लेषण विधि अपनाई गई। उन्होंने सर्वप्रथम बालकों की तार्किक कल्पना परीक्षा (Rational thinking test) ली। यह एक प्रकार से बुद्धि परीक्षा के समान था। उन्होंने बालकों के दो समूह बनाये, समूह अ तथा समूह ब। उन्होंने समूहों के आधार पर यह देखा कि किस विषय का ज्ञान दूसरे विषय में स्थानान्तरित होता है। प्रयोग के परिणाम निम्न लिखित निकले:—

१. हिसाब	२.६६
२. नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन ··· ···	२.८६
३. सामान्य विज्ञान ···· ··· ··· ···	२.७१
४. लेटिन ··· ·· ·· ··· ··	.७६
५. जीव विज्ञान (Biology) ··· ··· ···	.१५
६. कला (Dramatic Art) ··· ··· ···	.४८

थार्नडाइक ने इस सिद्धान्त का नाम समान तत्व सिद्धान्त (Theory of Identical Elements) दिया। इसका अर्थ है कि एक विषय का ज्ञान दूसरे विषय के ज्ञान में तभी स्थानान्तरित हो सकता है जबकि उन विषयों में कुछ

---

1. When a particular learning experience influences an individual's ability to respond effectively to stimuli different in some ways from the past experience transfer of training said have taken place.
Munroe, Encyclopedia of Educational Research.

2. Garret, Experiments in Educational Psychology, P. 93.

समानता हो। हरबर्ट सोरन्स के मतानुसार समान तत्व सिद्धान्त में एक स्थिति ‹ दूसरी स्थिति में स्थानान्तर उसी सीमा तक होता है जब दोनों दशाओं में कुछ तत्व समान होते हैं।[1]

२. स्लेट का प्रयोग
Slaight's Experiment

स्लेट ने स्मरण शक्ति पर प्रयोग किया। उन्होने बालकों के चार समूह बनाये। चारों समूहों को प्रारम्भिक और अन्तिम परीक्षा दी गई जो निम्नलिखित प्रकार थी :—

(i) नामावली और तिथियाँ याद करना (मौखिक रूप से)
Learning series of names and dates (given orally)

(ii) निरर्थक शब्दावली याद करना
Learning a series of non-sense syllables.

(iii) काव्यांश कण्ठस्थ करना (जो कि परीक्षक द्वारा पढ़े जायेंगे और विद्यार्थियों द्वारा दोहराये जावेंगे)
Memorize pieces of poetry (read by examiner repeated by subjects)

(iv) गद्यांश का सार याद करना (मौलिक रूप से)
Getting the substance of prose selection (orally)

(v) नौ शब्दों को याद करना (जो एक साथ पढ़े गये हों)
To learn nine words (Read at one time)

(vi) शब्दावली कण्ठस्थ करना
Memorizing a series of letters read by one.

जो चार समूह बनाये गये उन्हें निम्नलिखित ढंग से प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

(A) नियन्त्रित समूह (Control group) जिसे कोई प्रशिक्षण प्रदान नहीं किया गया।

(B) प्रयोगात्मक समूह (Experimental group) जिसे तीस मिनट रोज बारह दिन तक कविता कण्ठस्थ करनी थी।

(C) प्रयोगात्मक समूह जिसे तीस मिनट रोजाना बारह दिन तक आँकड़े (Data) याद करने थे।

(D) प्रयोगात्मक समूह जिसे तीस मिनट रोजाना बारह दिन तक वैज्ञानिक और ऐतिहासिक गद्यांशों के स्तर याद करने थे।

---

1. 'There is transfer from one situations to another to the that there are elements and common components to the two ons.'

Herbert Sorenson, Psychology in Education, P. 478.

प्रस्तुत प्रयोगों के फल (Result) इस प्रकार थे:—

१. अभ्यास किये हुए क्षेत्र में प्रत्येक समूह ने स्थानान्तर दिखाया।
२. एक प्रकार का सीखना दूसरे प्रकार के सीखने पर कभी अनुकूल तरीके से और कभी प्रतिकूल तरीके से प्रभाव डालता था।
३. कविता कण्ठस्थीकरण अभ्यास ने नामावली याद करने में उत्कर्ष प्रदर्शित किया।
४. जिन्होंने आंकड़े याद किये उन्होंने कविता तथा नौ शब्दों को याद करने में ह्रास प्रदर्शित किया।
५. जिन्होंने वैज्ञानिक और ऐतिहासिक गद्यांश याद किये (समूह न० ४) उन्होंने नौ शब्दों को तो याद रखा परन्तु वे और सभी भागों में पिछड़ गये।

इससे यह स्पष्ट होता है कि एक विषय का ज्ञान दूसरे में तभी स्थानान्तरित होता है बशर्ते उनमें कुछ साम्यता हो।

शिक्षा में शिक्षण का स्थानान्तरण
Transfer of Training in Education

(१) शिक्षकों को चाहिए वे यह सदैव ध्यान रक्खें कि जहां स्थानान्तरण सम्भव नहीं है अथवा निषेधात्मक स्थानान्तरण है वहां व्यर्थ में समय नष्ट न करें।

(२) एक स्थिति में प्राप्त ज्ञान दूसरी स्थिति में तभी स्थानान्तरित हो सकता है जबकि कुछ सामान्य तत्त्व दोनों स्थितियों के मिलते हों। परन्तु इसके साथ-साथ शिक्षक को यह भी ध्यान रखना है कि बालक शारीरिक और मानसिक रूप से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक हों। कहने का तात्पर्य यह है कि स्थानान्तरण के लिए समस्त शैक्षिक घटकों का ध्यान रक्खा जावे।

(३) बालकों को क्रिया प्रधान शिक्षा प्रदान करने के अवसर दिये जावें। यदि हम पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित रक्खेंगे तो उसका बहुत कुछ लाभ होने वाला नहीं है।

(४) बालकों में सृजनात्मक चिन्तन करने की योग्यता का विकास करना अत्यन्त आवश्यक है। यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि बालक स्वयं सामान्यीकरण कर सकें। प्राप्त विषय के ज्ञान तथा अन्य विषय के ज्ञान के सामान्य सिद्धान्तों को ढूंढने की क्षमता स्वयं बालक में विकसित करनी चाहिये।

Q. No. 9.

(A) Explain briefly the following laws of learning with examples :—

(i) The Law of Use
(ii) The Law of Disuse

(iii) The Law of Recency
(iv. The Law of Readiness
(v) The Law of effect.

सीखने के निम्नलिखित नियमों को उदाहरण सहित संक्षिप्त वर्णन करो :-

(i) अभ्यास का नियम
(ii) अनभ्यास का नियम
(iii) नवीनता का नियम
(iv) तत्परता का नियम
(v) परिणाम का नियम

(राजस्थान 1967]

OR

Write short note on the laws of learning.

सीखने के नियमों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

(पूना 1959, इलाहाबाद 1956)

Answer

थार्नडाइक ने एक बार यह लिखा था कि प्रायोगिक एवं सिद्धान्त रूप में यह स्पष्टतया और निश्चित रूप से समझ लेना आवश्यक है कि मनुष्य का सीखना तत्परता, अभ्यास और प्रभाव के नियमों का कार्यान्वित है।[1] थार्नडाइक ने विभिन्न प्रयोगों के आधार पर सीखने के नियम प्रतिपादित किये।

संक्षेप में सीखने के नियम निम्नलिखित हैं।

(१) अभ्यास का नियम

The Law of Exercise

जिस क्रिया का अभ्यास हम बार बार करते हैं। उसे हमें शीघ्र सीख जाते हैं। इस नियम में तीन नियम सम्मिलित हैं।

(अ) उपयोग का नियम (Law of Use)
(ब) पुनः संघटन का नियम (Law of Frequency)
(स) अनुपयोग का नियम (Law of disuse)

उपयोग का नियम

Law of Use

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं कि यह नियम अभ्यास के नियम का ही रूप हैं। उपयोग का नियम यह बताता है कि अन्य बातों के समान होने पर जब स्थिति और प्रति-क्रिया में पुनः संघटन स्थापित हो जाता है तो वह सम्बन्ध उतना ही शक्ति-

---

1. Both theory and practice need emphatic and frequent ...ers that man's learning is frequently the action of the law of exercise and effect. —Thorndike

शाली होता है।[1] गेट्स के मतानुसार अन्य बातों के समान रहते पर सम्बन्ध का जितना अभ्यास होगा उतना सम्बन्ध अधिक शक्तिशाली होगा।[2]

अनुपयोग का नियम (Law of Disuse)

जब स्थिति और प्रतिक्रिया में काफी समय तक सम्बन्ध नही बनता तो सम्बन्ध की शक्ति में कमी आ जाती है। कहने का तात्पर्य यह कि यदि अभ्यास में कमी अथवा समाप्त कर दिया जायेगा तो उसमें सीखने के स्थान पर भूलना प्रारम्भ हो जावेगा। थार्नडाईक के मतानुसार उनुपयोग का नियम यह बताता है कि अन्य बातों के समान होने पर जब स्थिति और प्रतिक्रिया में बहुत समय तक सम्बन्ध नही रहता तो उस सम्बन्ध की शक्ति क्षीण हो जाती है।[3]

संक्षेप में इन दोनों नियमों के आधार पर हम कह सकते हैं कि यदि अन्य बातें समान रहें तो अभ्यास द्वारा स्थिति और प्रतिक्रिया सम्बन्ध बढता है और अभ्यास की कमी के कारण स्थिति और प्रतिक्रिया का सम्बन्ध कमजोर होता है। थार्नडाइक ने **Connection** शब्द का प्रयोग बार बार किया है, यह बहुत महत्वपूर्ण शब्द है। इसका अर्थ है उत्तेजक और प्रतिक्रिया में सम्बन्ध। थार्नडाईक का सीखना यान्त्रिक है सूझ से नहीं।

उदाहरणार्थ एक सामान्य सा पिंजड़ा है और उसके दो रास्ते हैं अर्थात् दो प्रतिक्रियाएँ हैं A और B
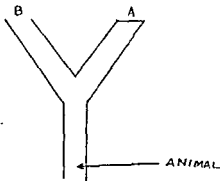
1. The law of use asserts that other things being equal the frequent a madifiable connection between a situation and response is made the stronger is that connection. —Thorndike

2. Other thihgs being equal the more frequently a connection has been exercised the stronger connection. —Gates

3. The law of disuse assert that other things being equal when a modifiable connections between a situation and response is not used over a period of time, the strength of the connection is weakend. —Thorndike

प्रथम प्रयास में वह A रास्ता अपनाता है।
दूसरे प्रयास में वह B रास्ता अपनाता है।
तीसरे प्रयास में वह AB दोनों रास्ते अपनाता है।
चौथे प्रयास में वह AB फिर दोनों रास्ते अपनाता है।
पाँचवें प्रयास में वह B रास्ता अपनाता है।
छठे प्रयास में भी वह B रास्ते को ही अपनाता है।

यदि हम इसकी गिनती करें तो हम इसी निष्कर्ष पर हो पहुँचेंगे कि रास्ते पर अधिक प्रयास हुए।

$$B = 5$$
$$A = 3$$

सही प्रक्रिया (Response) केवल एक है जिसका अभ्यास अधिक है। थार्नडाइक के मतानुसार जिसका प्रयोग अधिक होगा अर्थात् जिसका अभ्यास अधिक होगा वह प्रक्रिया सीखने में सरल होगी।

परन्तु यह केवल मात्र अभ्यास का नियम ही नहीं है बल्कि:—

२. प्रभाव का नियम
The Law of Effect

थार्नडाइक ने सीखने की प्रक्रिया में प्रभाव को महत्वशाली बताया है इस नियम के अनुसार जब किसी क्रिया का फल सन्तोषजनक एवम् सुखात्मक हो है तो हम उस क्रिया को बार-बार दोहराते हैं परन्तु जब क्रिया का फल कष्टदा होता है तो हम उसे नहीं दोहराते। थार्नडाइक[1] के अनुसार प्रभाव का नियम हुआ जब उत्तेजक प्रतिक्रिया परिष्कृत सम्बन्ध हुआ, यदि इसका फल सन्तो हुआ तो वह सबल होगा और यदि इसमें विघ्न हुई तो सम्बन्ध निर्बल जाता है।

उदाहरणार्थ यदि एक चूहे को पिंजड़े में बन्द किया जाये तथा उसे के लिए रोटी दी जाये तो वह सन्तोष अनुभव करेगा परन्तु यदि खाने से उसे बिजली का झटका दिया जाये और उसके पश्चात् उसे खाना मिले तो विघ्न महसूस करेगा जिसके फलस्वरूप वह असन्तोष अनुभव करेगा, यहाँ उत्ते और प्रतिक्रिया में सम्बन्ध निर्बल हो जायेगा।

---

1. The law of effect was when a modifiable connection ween a stimulus and a response has been made. It is strengthened it results in satisfaction and weakened if it leads to annoyance.
—Thorndike
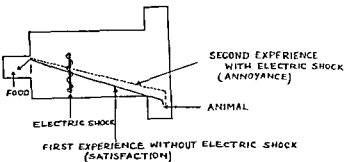
(३) तत्परता का नियम
The Law of Readiness

विद्यार्थीगण क्यों पढ़ते हैं ? इसके पीछे परीक्षा पास करने का उद्देश्य है, एक उद्दीपन (Drive) है। उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तत्पर (Ready) होना आवश्यक है। उद्देश्य की अनुपस्थिति में रुचि (Interest) नहीं होगी, रुचि नहीं होगी तो पढ़ाई नहीं होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि जब एक व्यक्ति किसी कार्य को करने के लिए तत्पर होता है तो उसे करने मे आनन्द आता है और जब वह सीखने को तैयार नहीं होता अथवा उसे सीखने के लिए बाध्य किया जाता है तब वह खिन्न होता है।

१९३५ में थार्नडाइक[1] ने तत्परता के नियम को समाप्त कर दिया क्योंकि तत्परता स्वयं इच्छा, रुचि और अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। क्योंकि जब तक किसी व्यक्ति में तत्पर होने की इच्छा (Want) ही जाग्रत नहीं होगी तो वह तैयार कैसे होगा। इच्छा बहुत कुछ व्यक्ति की अभिवृत्ति (Attitude) तथा रुचि (Interest) पर निर्भर करती है। इसीलिये थार्नडाइक ने बाद मे सीखने के नियमों में तत्परता शब्द का प्रयोग नहीं किया और उसके स्थान पर Want, Attitude, Interest आदि शब्दों का प्रयोग किया।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि थार्नडाइक के अभ्यास, प्रभाव और तत्परता के नियम पृथक पृथक नहीं हैं बल्कि एक दूसरे पर अवलम्बित है।

---

1. E. L. Thorndike, The Psychology of Wants, Interests and Attitudes.

(४) नवीनता का नियम

The Law of Recency

इस नियम का अर्थ यह है कि अभ्यास जितना अधिक नवीनता लि व्यक्ति की रुचि उसमें उतनी ही अधिक होगी और उतनी ही जल्दी सीखेगा। कहने का तात्पर्य यह कि नवीनता के आधार पर स्थिति और प्रति सम्बन्ध सबल होता है जिसके फलस्वरूप सीखने की क्रिया शीघ्र होती है।

Q. No. 9.

(B) What is the modern point of view about transfe training ?

शिक्षण प्रशिक्षण का आधुनिक दृष्टिकोण क्या है ? (राजस्थान 19

Answer

इस प्रश्न के उत्तर के लिए आप Q. No. 8 देखें।

Q. No. 10.

What constitutes the 'social climate' of a school ? What is effect of this climate on learning ?

स्कूल का सामाजिक वातावरण कैसे बनता है ? इस वातावरण का सी पर क्या प्रभाव पड़ता है ? (राजस्थान 196

Answer

शाला मे सम्भवतः अध्यापक अपना ९०% समय छात्रों के साथ व्यतीत क हैं परन्तु बहुत कम अध्यापक ऐसे होंगे जो छात्रो को समझने का प्रयास करते होंगे मनोवैज्ञानिकों,[1] जिन्होंने समूहो का, मानव सम्बन्ध उनके सिद्धान्तों एवं नियमों सामूहिक कार्य प्रणाली तथा उनके फलो का अध्ययन किया है। समाज मनोविज्ञान कक्षा सम्बन्धी प्रयोग बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन प्रयोगों से हमें यह ज्ञात होता कि सामाजिक वातावरण का स्कूल मे क्या महत्व है तथा उसका सीखने की प्रक्रिय पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

शाला का सामाजिक वातावरण
Social Climate of School

शाला का सामाजिक वातावरण निम्नलिखित घटकों द्वारा निर्मित होता है।

(१) अध्यापक छात्र सम्बन्ध

Teacher Pupil Relationship

सबसे पहला घटक जो शाला के सामाजिक वातावरण को बनाता है वह है अध्यापक और छात्रो के सम्बन्ध। शाला के सामाजिक वातावरण में छात्रों और

1. Muzafer Sherif and Carolyn W. Sherif, An outline of ial Psychology, Harper & Brothers, N.Y. 1955, P. 3.

ध्यापकों का सम्बन्ध महत्वपूर्ण योग प्रदान करता है। परन्तु प्रश्न यह उपस्थित होता है कि इन सम्बन्धों को कैसे जाना जाये। इन सम्बन्धो को जानना और उनका मापन करना बहुत कठिन कार्य है परन्तु फिर भी कुछ प्रयास हुए हैं जिनके द्वारा इस सम्बन्ध में कुछ जानकारी की जा सकती है The Minnesota Teacher Attitude Inventory स्वस्थ अध्यापक छात्र सम्बन्धों को तथा निर्बल सम्बन्धो को बताती है। इस प्रश्नावली में अध्यापक के समक्ष प्रत्येक पद पर पाँच प्रकार के समाधान प्रस्तुत किये जाते हैं जो निम्नलिखित हैं :—

SA	(Strongly Agree
A	(Agree)
U	(Uncertain or Undecided)
D	(Disagree)
SD	(Strongly Disagree)

इस प्रश्नावली (Inventory) से हमे यह मालूम हो जाता है कि अध्यापक के अपने छात्रों से किस प्रकार के सम्बन्ध हैं तथा अध्यापक की अभिवृत्ति और विश्वास क्या हैं।

रोचियों और कर्न[1] के अनुसार वे अध्यापक जो छात्रों के साथ अवांछनीय सम्बन्ध रखते हैं, उन्ही का कारण शाला का वातावरण भयावना और खिचावपूर्ण होता है। इस प्रकार के अध्यापक मूलतः यही सोचते हैं कि उन्हें केवल मात्र पाठ्यक्रम को समाप्त करना है, उन्हे बच्चों की आवश्यकताओ, उनकी रुचि एव अनुभव से कोई सम्बन्ध नही। यदि छात्र अध्यापक सम्बन्ध दूषित हैं तो शाला का सामाजिक वातावरण दोषयुक्त है।

(२) अध्यापक का नेतृत्व

Teachers' Leadership

शाला के सामाजिक वातावरण को अध्यापक का नेतृत्व भी निर्मित करता है। लिपिट के प्रयोग द्वारा यह पूर्ण रूपेण सिद्ध होता है कि अध्यापक में जैसी भी नेतृत्व करने की क्षमता होगी—कक्षा का सामाजिक वातावरण वैसा ही होगा। लिपिट ने दस वर्ष के बालको के दो दल बनाये और उन्हे नाटक मे प्रयुक्त होने वाले चेहरे (Theatrical Masks) बनाने का काम दिया। एक दल का नेता तानाशाह था जिसका कठोर व्यवहार था और जबरदस्ती अपने विचारों को थोपता था। दूसरे दल का नेता प्रजातन्त्रिक ढंग से कार्य करता था जो आवश्यकता पड़ने पर मित्रतापूर्वक

1. P. D. Rocchio and N. C. Kearney, 'Pupil-Teacher Attitudes as Related to Nonpromotion Secondry School Pupils,' Educational & Psychological Measurement ; 16; 1960. P. 244-252.

मार्ग निर्देशन करता था। और उत्तम ढंग से आलोचना भी करता था। तं
तक दोनों दलों ने कार्य किया। बारह सताह प्रश्चात् दनों दलों से पूछा गया

(i) क्या कार्य करना जारी रक्खा जाये ?

(ii) बनाये हुए चेहरों का क्या किया जाये ?

तानाशाह दल के समस्त बालकों ने कार्य को बंद करने के लिए कहा
प्रजातान्त्रिक दल के बालकों ने कार्य के प्रति रुचि प्रदर्शित की।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में तानाशाही दल के बच्चे बनाये हुए चहरों को
पास रखना चाहते थे, उन्हें वे अपनी सम्पत्ति समझते थे। इसके अतिरिक्त प्र
न्त्रिक समूह के बालक एक चेहरे को समस्त समूह के नाम पर रखना चाहते थे
एक चेहरा अपने नेता को भेंट स्वरूप देना चाहते थे।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बालक प्रजातान्त्रिक मूल
विश्वास रखने वाले अध्यापकों (नेता) से पढ़ते हैं वे छात्र अधिक प्रसन्नतापूर्वक
करेंगे और शाला के कार्यों में रुचि लेंगे। उस शाला का सामाजिक वातावरण
पूर्ण होगा। जहाँ छात्रों की इच्छाओं को कुचला जावेगा। वे शाला के कार्यों
घृणा की दृष्टि से देखेंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि अध्यापक का नेतृत्व शाला
सामाजिक वातावरण को निर्मित करने में काफी योग प्रदान करता है।

(३) अध्यापक अध्यापक सम्बन्ध

Teacher-Teacher Relationship

शाला के सामाजिक वातावरण में अध्यापक का अध्यापक से सम्बन्ध
महत्वपूर्ण है। अध्यापकों के पारस्परिक सम्बन्धों से शाला के जीवन में नवीन हो
जाता है। अध्यापक के व्यक्तित्व का बालक पर बहुत प्रभाव पड़ता है। यदि अध्या
पकों के आपसी सम्बन्ध अच्छे हैं तो बालकों के लिए यह अनुकरणीय होता है और
वे पारस्परिक प्रेम का पाठ सीखते हैं। यदि अध्यापकों के आपसी सम्बन्ध खराब हैं
तो बालकों के व्यक्तित्व पर इसका कुप्रभाव पड़ता है और बालक भी परस्पर द्वेष
का पाठ सीख लेते हैं जिससे शाला का सम्पूर्ण सामाजिक वातावरण कलहमय हो
जाता है जिससे शाला में सीखने का वातावरण नहीं रहता।

(४) छात्र छात्र सम्बन्ध

Pupil-Pupil Relationship

उपरोक्त तीनों बातों में महत्वपूर्ण शाला के सामाजिक वातावरण के लिए
छात्रों के सम्बन्ध सबसे अधिक महत्वशाली है। लेनियर[1] के मतानुसार छात्रों का
समूह के अतिरिक्त रहने का एक कारण यह है कि उन्हें उनके समूह में स्थान नहीं

---

1. J. A. Lazer, "A Guidance Faculty Study of Student With-
s", Journal of Educational Research, 43, 1949, P. 205.

मिल पाता। लोमिस और ग्रीन[1] ने भी अनुसन्धान मे यही पाया कि जो छात्र शाला में पारस्परिक सम्बन्धो के कारण कठिनाइयाँ अनुभव करते हैं। उनका कारण यही है कि उन्हें शाला में सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं होती। इस प्रकार के बालक सामाजिक कुसमायोजन (Social Maladjustment) के कारण शाला की गतिविधियों में भाग नही ले पाते जिसके कारण उनका भावी जीवन भी बिगड़ जाता है।

बालकों के पारस्परिक सम्बन्धो को जानने का एक सरल तरीका सोसियोमेट्री (Sociometry[2]) है। इस प्रविधि का प्रयोग सर्वप्रथम जे एल. मोरीनो ने किया। इस प्रविधि (Technique) मे बालको की क्रिया सम्बन्धी कुछ स्थितियाँ दे दी जाती है उदाहरणार्थ :—

अपनी कक्षा के उन विद्यार्थियों के नाम लिखिये जिनके साथ आप :—

(अ) भोजन करना पसन्द करेंगें। १………२………

(ब) खेलना पसन्द करेंगें। १………२………

(स) पिकनिक पर जाना पसन्द करेंगे। १………२………

(द) कक्षा मे बैठना पसन्द करेंगे। १………२………

इस प्रकार से बालक प्रत्येक स्थिति मे उन बालकों का नाम लिख देता है जिनका साथ वह पसन्द करता है। छात्रों की पसन्द जानने के लिए कुछ मनोविज्ञानिकों का मत है कि तीन नाम पूछे जा सकते है, परन्तु ध्यान रखने की बात यह है कि न० १ पर छात्र उसका नाम लिखे जिस साथी को वह सबसे अधिक पसन्द करता है और न० २ पर वह उसका नाम लिखे जिसे न० १ से कम पसन्द करता है। इसे हम सोसियोमेट्री परीक्षा[3] कहते हैं। सोसियोमेट्री परीक्षा लेने के पश्चात् सोसियोग्राम[4] (Sociogram) बनाया जाता है। सोसियोग्राम द्वारा छात्रो के पारस्परिक सम्बन्धों

---

1. S. D. Loomis & A. W. Green, "The Pattern of Mental Conflict in a Typical State University," Jounral of Abnormal and Social Psychology, 42, 1947, P. 342-35.

2. Sociometry is the field which is primarily concerned with the quantitative treatment of every kind of inter-human relations and particularly with those involving the expression of prefer nce of rejection of other members of a group with respect to a choice situation.

3. Sociometry Test :

It is a test which elicits the expression of preference or rejection of other member of a group with respect to a choice situation.

4. Sociogram :

The presentation of the structure of choices patterns in the from of a diagram with the group members represented by circles or triangles and the mutual choices are represented by line drawn between the figure.

का ज्ञान हो जाता है। जिस बालक को सबसे अधिक पसन्द (Choices) ... हैं उसे हम लोकप्रिय (Popular) बालक कहेंगे जिसे कोई भी पसन्द न क... एकाकी[1] (Isolate) बालक कहते हैं। इस प्रकार से हम प्रत्येक बालक ... स्तर[2] (Social Status) का पता लगा सकते हैं। जिन छात्रों का ... (Adjustment) ठीक होता है वे प्रत्येक कार्य में आनन्द लेते हैं। ... बालक एकाकी और तिरस्कृत (Rejected) होता है। वह बालक अपने ... सुरक्षित महसूस नही करता जिसके फलस्वरूप उसे शाला का वातावरण भय... प्रतीत होता है।

उपरोक्त चार आवश्यक तत्व मिलकर, शाला के सामाजिक वाताव... को निर्मित करते हैं।

शाला का सामाजिक वातावरण और सीखना
Social Climate of School & Learning

सीखने का शाला के सामाजिक जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। बालक जि... शाला समूह में विचरण करता है उसका प्रभाव बालक पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्य... दोनों ही रूप में पड़ता है। जैसा कि हम उपरोक्त चार आवश्यक तत्वों में दे... चुके हैं कि ये आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और तभी समन्वित रूप से बाल... के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। एक अध्ययन[4] के अनुसार छात्र के... समस्त शाला सम्बन्धी अनुभवों में से ७०% अनुभव ऐसे हैं जो अन्य छात्रों तथा... शाला के समस्त सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित होते हैं और वे अनुभव छात्र... के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालते हैं। जो बालक शाला में कटु-अनुभव प्रा... करते हैं वे दुखी रहते हैं और परिणामतः कुसमायोजित हो जाते हैं। इस... कुसमायोजित के कारण उनके सीखने की प्रक्रिया भंग हो जाती हैं और वे शाला... से भागने का यत्न करने लगते हैं। पहले उनमें पलायनशीलता (Truancy) की आदत... पड़ती है क्योंकि शाला के बाहर का वातावरण उन्हें आकर्षित करता है और वे...

---

1 Isolate :

It is a person who is unchosen on a particular choice criterion.

2. It refers to the total number of choices received by an individual.

3. By self-adjustment is meant that a person is free from disturbing internal conflict, persistent worries, and patho... feelings. Further more he likes and respects himself, ...mself, and can throw himself enthusiastically into the living as well as into the pursuit of goals.

4. H. F. Wright, R. C. Barker, J. Nall and P. Schoggen, "... a Psychological Ecology of the classroom", Journal of ... Research, 45, 1951, P. 187-200.

पने को सुरक्षित महसूस करते हैं। धीरे-धीरे इस प्रकार के बालक अपराधी हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उनके सीखने की प्रक्रिया भग हो जाती है।

यदि शाला का सामाजिक वातावरण अच्छा है जहाँ बालक की इच्छाओं की पूर्ति होती है, अध्यापकों का पारस्परिक सम्बन्ध स्नेहपूर्ण है, अध्यापकों से प्रेम मिलता है वहाँ सीखने की प्रक्रिया को बल प्राप्त होता है। जिन बालकों ने सामाजिक विश्वास सीखा है वे बालक सृजनकारी (Creative) होते हैं।[1]

बालकों को स्वीकृति चाहिए। प्रत्येक बालक में यह स्वाभाविक इच्छा होती है कि उसके साथियों में उसकी प्रशंसा हो। वह सामाजिक ढाँचा जहाँ बालकों को इनकी इच्छाएँ पूर्ण करने का अवसर नहीं मिलता वे सीखने में रुचि नहीं लेते। अनेकों शालायें ऐसी हैं। जहाँ का सामाजिक वातावरण दूषित है। अध्यापकों का कर्त्तव्य है कि वे शाला के सामाजिक वातावरण को इस प्रकार का बनावें जिससे बालकों में ज्ञान प्राप्ति की इच्छा जाग्रत हो सके। यदि बालक की अपने साथियों से स्वीकृति प्राप्त करने की इच्छा सन्तुष्ट हो जाती है तो वह बालक स्वतः ही सीखने में रुचि लेता है और उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।[2] प्रत्येक शाला का यह उत्तरदायित्व है कि अपने सामाजिक वातावरण को ऐसा बनाये जहाँ बालक रुचि पूर्वक सीख सके।

Q. No. 11.

Write short note on—
Plateau in learning
संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-सीखने का पठार

(आगरा 1963, राजस्थान 1965)

Answer

पठार का अर्थ
Meaning of Plateau

जैसा कि हम प्रश्न न० ७ के ब भाग में कह आये हैं कि सीखने के वक्र (Learning curve) से हमें बालक के सोचने की स्थिति का सही ज्ञान होता है। सीखने का पठार, सीखने की प्रक्रिया में वह स्थिति है जब उन्नति का बोध नहीं होता। सीखने का पठार सीखने की गति में वह स्थिति है जब उन्नति रुक जाती

1. L. G. Rivlin, "Creativity and the Self Attitudes and Sociability of High School Students", Journal of Educational Psychology, 59, 1959, P. 147-152.

2. R. L. Sharma, Social Maladjustment : It Causes and Remedies, Unpublished M. Ed. Disseration, University of Rajasthan Jaipur, 1964, P. 1-4.

है। स्कीनर के शब्दों में पठार वह सीमित वृद्धि है जहाँ आगे उन्नति का है नही होता।[1]

सीखने में पठार के कारण
Causes of Plateau in Learning

(१) रुचि की कमी

Lack of Interest

जब बालक को किसी कारणवश सीखने में रुचि नहीं रहती तो सीखने की प्रक्रिया में उन्नति होना बन्द हो जाता है।

(२) विधियों में दोष

Defects in Methods

कभी-कभी ऐसा भी होता है जब बालक किसी दोषपूर्ण विधि को अपना लेते हैं। उदाहरणार्थ यदि विज्ञान का विद्यार्थी गलत तरीके से अनुसन्धान करता है तो उसके सीखने की उन्नति बन्द हो जाती है।

(३) अनुचित वातावरण

Undesirable Environment

यदि सीखने का वातावरण अनुकूल नहीं है तो बालक प्रयास करने पर भी सीखने में उन्नति नहीं कर पाता; जैसे यदि किसी बालक के घर का वातावरण दूषित है, जहाँ माता-पिता मे से एक अथवा दोनो शराब पीते हैं अथवा घर के पास वैश्यालय और मदिरालय हो तो बालक के सीखने की प्रक्रिया में बाधायें उपस्थित हो जाती हैं।

(४) प्रेरणा की कमी

Lack of Motivation

प्रेरणा की कमी के कारण भी सीखने मे पठार आ जाता है क्योंकि छात्र को सीखने में रुचि नही रहती और रुचि की अनुपस्थिति मे एक स्थिति वह आती है जब बालक उस क्रिया में उन्नति प्रदर्शित नही करता।

पठार को दूर करने के उपाय
Remedies to Remove the Plateau

(१) रुचिपूर्ण अध्यापन

Interestful Teaching

अध्यापक को पढ़ाते समय यह सदैव ध्यान रखना चाहिये कि शिक्षण जितना रोचक होगा उतनी ही रुचि से बालक सीखेंगे जिससे पठार की सम्भावनाएँ कम होंगी।

1. A plateau is a horizontal stretch indicative of no apparent —Skinner

(२) उपयुक्त वातावरण
Desirable Environment

यदि वातावरण उपयुक्त होगा तो पठार आने की दशायें उतनी ही कम होंगी।

(३) अध्यापक का सहानुभूतिपूर्ण बर्ताव
Sympathatic

यदि अध्यापक का वर्ताव सहानुभूति होता तो बालकों को सम्बन्धित विषय को सीखने में आनन्द आयेगा। प्रायः ऐसा देखा गया है कि अध्यापक के कठोर वर्ताव के कारण बालक के सीखने की उन्नति अवरुद्ध हो जाती है और यदि प्रेम पूर्वक तरीके से समझाने का प्रयास किया जाये तो बालक उसी विषय को सीखने में रुचि लेने लगता है।

४) समय सारिणी में परिवर्तन
Change in time table

समय सारिणी में परिवर्तन लाने से भी पठार दूर किया जा सकता है। यदि लगातार बालकों को पढ़ने के लिए बाध्य किया जायेगा तो वे ऊब जायेंगे अतः यह नितान्त आवश्यक है कि प्रथम दो कालांश कठिन विषयों के लिए रहें उसके पश्चात शारीरिक शिक्षा हो। कहने का तात्पर्य यह है कि नीरस समय सारिणी न बनाकर उसे सरस बनाया जाये। समय सारिणी के परिवर्तन का अर्थ यह नहीं है कि प्रति दिन परिवर्तन हो बल्कि उसका अर्थ यह है कि बालकों की थकावट को ध्यान मे रखकर समय सारिणी बने।

(५) विभिन्न विधियों का उपयोग
Use of Various Methods of Teaching

विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग सीखने मे पठार को दूर कर सकता है क्योंकि प्रत्येक विधि के अपने गुण और सीमाएँ होती हैं। जैसे योजना विधि से बालकों की अनेकों कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है, परन्तु यह वही सम्भव है जहाँ क्षेत्र कार्य (Field work) आवश्यक है। कुछ विषयों मे समस्या विधि और इकाई विधि काफी महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर सकती है।

(६) प्रेरणापूर्ण शिक्षण
Motivational Teaching

पठार की स्थिति मे यदि बालक को प्रेरित करने का प्रयास किया जाये तो उससे काफी लाभ हो सकता है। बहुत सी बार प्रेरणा की कमी के कारण बालकों की कठिनाई ज्यों की त्यों बनी रहती है और बहुत प्रयास करने पर भी उसमें कोई परिवर्तन नहीं आता। यदि आरम्भ मे ही शिक्षण प्रेरणापूर्ण हो तो पठार की स्थिति ही न आये।

है जैसे सीखने में प्रवीणता, स्वयं को वातावरण के अनुकूल ढालने की योग्यता, समस्या समाधान करने की योग्यता, अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता आदि। ठीक इसी प्रकार से मनोवैज्ञानिकों के भी विभिन्न दृष्टिकोण हैं। अतः यह उचित होगा कि हम विभिन्न मनोवैज्ञानिकों की विचारधारा के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर देखें।

बुद्धि की परिभाषाएं
Definitions of intelligence

बुद्धि की प्रवृति को समझने के लिए यह उत्तम होगा कि मनोवैज्ञानिकों के मतों के आधार को समझा जावे। मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की परिभाषा निम्नलिखित आधारों पर की है।

(१) प्रथम आधार—सामायोजन की योग्यता
Ability to Adjust

कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बुद्धि वातावरण के प्रति समायोजन करने की योग्यता है। इस आधार को मानने वाले मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित प्रकार से बुद्धि की परिभाषा की है:—

(i) वेल्स के मतानुसार 'बुद्धि नवीन स्थिति में अच्छी तरह काम करने तथा अपने व्यवहार को पुनः संगठित करने का गुण है।'[1] अर्थात् नवीन स्थिति-नुसार हम स्वयं को समायोजित कर उसी के अनुरूप व्यवहार करें।

(ii) विलियम स्टर्न का मत है, 'बुद्धि जीवन की नवीन समस्याओं के अनुसार सामान्य समायोजन है।'[2]

(iii) बर्ट के मतानुसार, 'बुद्धि नवीन स्थिति के अनुसार समायोजन की सम्बन्धित क्षमता उत्पन्न करना है।'[3]

(iv) क्रूज के अनुसार, 'बुद्धि नवीन और विभिन्न स्थितियों के अनुसार समायोजन की योग्यता है।[4]

---

1. Intelligence is the property of recombining our behaviour pattern as to act better in novel situation.
—*Wells.*

2. Intelligence is the general ability to adjust to new problems of life.
—William Stern

3. Intelligence is the capacity to adapt to relatively new situations.
—*Burt*

4. Intelligence is the ability to adjust adequately to new and different situations.
—Cruz

(v) कालविन के अनुसार, 'एक व्यक्ति उतनी ही योग्यता रख[illegible] जितना उसने स्वयं को नये वातावरण के अनुसार समायोजन करना सीखा [illegible] सीख सकता है।'[1]

यदि हम उपरोक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करें तो इस निष्कर्ष पर [illegible] है कि समायोजन के आधार पर दी गई परिभाषाएँ अपने में पूर्ण नहीं हैं। समायोजन और बुद्धि का इतना अधिक सम्बन्ध नहीं है जितना इन परिभाषा[illegible] बताया गया है। दूसरे यदि इन परिभाषाओं को पूर्ण माना जाये तो ये पूर्ण[illegible] कसौटी पर खरी नहीं उतरतीं क्योंकि बुद्धि में समायोजन ही सब कुछ न[illegible] बल्कि अन्य अनेकों तत्त्व भी समाहित होते हैं। तीसरे बुद्धि प्राकृतिक हो[illegible] जबकि समायोजन अर्जित। इन आधारों पर हम कह सकते हैं कि उपरोक्त परिभाषाएँ अपूर्ण हैं।

(२) द्वितीय आधार—सीखने तथा अनुभव से लाभ उठाने की योग्[illegible]
Ability to Learn and to Profit by Exper[illegible]

कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि सीखने तथा अनुभव से लाभ उ[illegible] की योग्यता पर आधारित है। एक व्यक्ति गत अनुभव के आधार पर जितना अ[illegible] सीखता है वह उतना ही अधिक बुद्धिमान है। इस आधार को निम्नलिखित म[illegible] वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है:—

(i) थार्नडाइक के शब्दों में, 'गत अनुभव से लाभ उठाकर सीखने[illegible] योग्यता ही बुद्धि है।' अर्थात् पिछले अनुभव के आधार पर सीखने की प्रकिया[illegible] परिमार्जन माना है।

(ii) मैकडूगल के अनुसार, 'बुद्धि जन्मजात प्रवृत्ति के आधार पर पूर्व अ[illegible] भव के प्रकाश में सुधारने की क्षमता है।'[2]

उपरोक्त दोनों ही परिभाषाएँ अपूर्ण हैं क्योंकि इनसे बुद्धि का बहुत [illegible] संकुचित अर्थ स्पष्ट होता है। यह तो ठीक है कि सीखने में गत अनुभव का मह[illegible] पूर्ण योग है परन्तु इसी को बुद्धि की सम्पूर्णता कह देना गलत होगा।

(३) तृतीय आधार—अमूर्त चिन्तन पर बल
Emphasis on Abstract Thinking

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अमूर्त चिन्तन पर बल दिया है। उनके अनुसार व[illegible] व्यक्ति अधिक बुद्धिमान है जिसमें अमूर्त चिन्तन करने की क्षमता है।

---

1. An individual possesses intelligence in so far as he ha[illegible] learned or can learn to adjust himself to his new environment.

—Calv[illegible]

2. Intelligence is the capacity to improve upon native tenden[illegible] in the light of previous experience.

—Mc. Doug[illegible]

(i) बिने के अनुसार, 'समझना, अन्तर्भूत करना, तर्क करना बुद्धि की आवश्यक क्रियाएँ हैं।'[1]

(ii) स्पीयरमैन के शब्दों में, 'बुद्धि तर्कयुक्त चिन्तन है।'[2]

(iii) टरमन के मतानुसार, 'बुद्धि अमूर्त चिन्तन करने की योग्यता है।'[3]

बुद्धि की सर्वमान्य परिभाषा
Comprehensive Definition of Intelligence.

बुद्धि के स्वरूप को समझने के लिए हमने विभिन्न मनोवैज्ञानिकों की परिभाषाओं का विश्लेषण किया। परन्तु कोई भी परिभाषा कसौटी पर खरी नहीं उतरी क्योंकि उनमें समग्रता का अभाव है और किसी विशेष तत्व पर ही ध्यान दिया गया है, इन्हीं आधारों पर हम कह सकते हैं कि पूर्ववर्णित परिभाषाओं से बुद्धि का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता क्योंकि बुद्धि कोई क्षमता विशेष नहीं है, बल्कि विभिन्न क्षमताओं का समन्वित रूप है। इसीलिए यह आवश्यक है कि हम बुद्धि की सर्वमान्य परिभाषा पर ही पर प्रकाश डालें तो अधिक उत्तम होगा।

वैश्लर के अनुसार, बुद्धि व्यक्ति की सगोलीय अथवा सम्पूर्ण क्षमता है जिसके द्वारा सोउद्देश्यपूर्ण क्रिया, तार्किक चिन्तन और वातावरण के साथ भली प्रकार व्यवहार करने में सहायता मिलती है।[4]

इस परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि बुद्धि क्षमता विशेष तक ही सीमित नहीं होती बल्कि यह सम्पूर्ण क्षमता है जो कि व्यक्ति को समन्वित व्यवहार करने के लिये प्रेरित करती है, समन्वित व्यवहार तभी सम्भव है जबकि वातावरण के साथ समायोजन हो। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि बुद्धि में औउद्देश्य पूर्णता, तार्किक चिन्तन करने की क्षमता तथा समायोजन करने की योग्यता आवश्यक तत्व हैं जिन कारणों से यह परिभाषा सर्वमान्य एवं इन्हीं आधारों पर हम परिभाषा को उत्तम समझते हैं।

---

1. To judge well, to comprehand well, to reason well these are the essential activities of intelligence.

—Binet

2. Intelligence is rational thinking.

—Spearman

3. Intelligence is ability to think abstractly.

—Terman

4. Intelligence is the aggregate or global capacity of the individual to act purposefully, to think rationally and deal effectively with his environment.

—Wechsler

क्या बुद्धि का मापन किया जा सकता है ?
Can Intelligence be Measured ?

इस प्रश्न का उत्तर देना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इस उत्तर से पूर्व एक स्वाभाविक प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या कारण है कि बुद्धि लब्धि वाले दो छात्र मानसिक रूप से समान नहीं होते ? एक छात्र विशेष प्रश्न का उत्तर परम्परागत रीति से देता है, दूसरा छात्र उसी प्र उत्तर स्वयं के मौलिक विचारों के आधार पर देता है। इसका अर्थ यह हु समान बुद्धि लब्धि छात्रों की बौद्धिक क्रियाएँ भिन्न हैं।[1]

इस दृष्टिकोण के आधार पर ऐसा आभास होता है कि बुद्धि परी केवल मात्र सही उत्तर देने की क्षमता का ही मापन करती हैं। बुद्धि परीक्षा कल्पनाचातुर्य, आविष्कार-कुशलता और मौलिकता के लिए कोई स्थान नहीं है।

गिलफर्ड[2] के बुद्ध मापन सम्बन्धी प्रयोग सम्भवतः बालकों की कुशा और मौलिकता का मापन कर सकने में अवश्य समर्थ होंगे। परन्तु जो बुद्धि परीः आजकल प्रचलित हैं, वे समग्र बौद्धिक कौशल के मापन में सिश्चित रूप से अस है क्योंकि बुद्धि की एक विशेषता कल्पनाचातुर्य एवं आविष्कार कुशलता भी गिलफर्ड ने पाँच बौद्धिक योग्यताएँ बताई हैं—

(i) Cognition (बोध) —Discovery or Rediscovery
(ii) Memory (स्मृति) —Retention what is cognized
(iii) Convergent thinkiug (परम्परागत चिन्तन) Using info mation in a way that leads to our right answer c conventional answer.
(iv) Divergent thinking (विभिन्नता पर आधारित चिन्तन)— Think ng in different directions.
(v) Evaluation (मूल्यांकन) —Productive thinking, correctness, suitability.

गिलफर्ड के अनुसार बुद्धि परीक्षण में उपरोक्त बौद्धिक योग्यताओं का मापन आवश्यक है। यदि इन समस्त योग्यताओं को मापा जा सके तो निश्चित रूप से बुद्धि का मापन सम्भव है।

---

1. Two Children of similar I. Q. may differ greatly in their intellectual performance and in the way they apply their minds. One moves in a conventional, logical way toward finding the correct answer to a problem; another speculates, introduces new idea of his own and evolves novel solutions.

2. Guilford (1959)

परीक्षण का विकास
elopment of Intelligence Testing

बुद्धि परीक्षण का विकास अनेकों प्रयोगों के पश्चात हुआ है। संक्षेप में रीक्षण का विकास इस प्रकार है—

शारीरिक बनावट और बुद्धि परीक्षण—
Intelligence Testing and Physical Structure.

एक समय था जबकि बुद्धि को शारीरिक बनावट से आँका जाता था। किसी की मुखाकृति को देखकर यह अन्दाजा लगाया जाता था कि वह व्यक्ति बुद्धि- है अथवा नहीं। उस समय व्यक्ति की नाक, चेहरे की बनावट, सिर का विकास को बुद्धि का आधार माना जाता था। परन्तु ये समस्त मान्यताएँ अवैज्ञानिक योंकि इनसे बुद्धि का कोई सम्बन्ध नहीं था।

प्रयोगात्मक अध्ययन और बुद्धि परीक्षण
Experimental Studies & Intelligence Testing

बुद्धि परीक्षण का वास्तविक विकास गाल्टन (Galton) के प्रयोगों से । गाल्टन ने मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक अध्ययनों के द्वारा यह सिद्ध किया कि का शारीरिक बनावट से कोई सम्बन्ध नहीं है। वुण्ड (Wundt) ने यूरोप में कैटिल (Catteall) ने अमेरिका में प्रयोगशालाओं के अध्ययन द्वारा बुद्धि परी- का कार्य प्रारम्भ किया। इंगलैंड में डारविन (Darwin), स्पेन्सर pencer) के प्रयोगों से अनेकों महत्वपूर्ण तथ्य सामने आये। उन्होंने वंशानुक्रम में भी बुद्धि परीक्षण से सम्बन्धित किया। हाल (Hall) और किर्ट पेट्रिक (Kirt trick) ने बालकों पर अध्ययन करना प्रारम्भ किया क्योंकि बुद्धि के विकसित को जानने के लिए बालकों पर अध्ययन करना आवश्यक था।

) बिने और बुद्धि परीक्षण
Alfred Binet and Intelligence Testing

जब इंगलैंड और अमेरिका में बुद्धि परीक्षण के प्रयास किये जा रहे थे, उस मय पेरिस के शिक्षा शास्त्रियों के सम्मुख एक विकट समस्या सामने आई। १६०४ ने, बुद्धि परीक्षण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण योग प्रदान किया, क्योंकि फ्रान्स अधिकतर बालक परीक्षाओं में असफल हो रहे थे बालकों की असफलता ने फ्रान्स शिक्षाविदों के सम्मुख अनेकों प्रश्न उपस्थित कर दिये कि क्या बालकों की असफलता का कारण कठिन परिश्रम का अभाव है? अथवा वे कम बुद्धि के कारण सीखने में असमर्थ हैं? इन समस्याओं का समाधान ही बुद्धि परीक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास सिद्ध हुआ। इन समस्याओं के समाधान हेतु यह निश्चित किया गया कि मानसिक योग्यता को जानने के लिए वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का बनाया जाना

निकाले जिसमें है जिससे यह जाना जा सके कि कौन बालक साधा योग्यता का बालक है अथवा मन्द बुद्धि बालक है। यह कार्य प्रस्तुत कि गया जो कि उस समय शरीर मनोविज्ञान प्रयोगशाला के निदेशक थे। स साथी साइमन जो उस समय चिकित्सक थे, की सहायता से बुद्धि माप प्रयास किया।

बिने—साइमन बुद्धि परीक्षा
Binet—Simon Intelligence Test

१६०५ में प्रथम बुद्धि परीक्षा प्रकाशित हुई जिसमें तीस प्रश्न थे जो के आधार पर बनाये गये। १६०८ में दूसरी परीक्षा तैयार की गई जिसमें निर्धारित की गई। इस परीक्षा की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि इससे आयु (Mental Age) का पता लगाया जा सकता था। उदाहरणार्थ बालक जिसकी वास्तविक आयु (Chronological Age) दस वर्ष की बुद्धि परीक्षा के आधार पर आठ वर्ष तक के निर्धारित प्रश्नों का उत्तर दे दे उस बालक की मानसिक आयु आठ वर्ष हुई क्योंकि उस बालक का मानसि आठ वर्ष के बालक के समान है। बिन का इस बुद्धि परीक्षा का बारह भा अनुवाद हुआ। १६११ में बिने ने इसका अन्तिम संशोधन प्रस्तुत किया वर्ष बिने की मृत्यु हो गई।

स्टेनफोर्ड—बिने परीक्षा
Stanford—Binet Test

१६१६ में एल. एम. टरमन (L. N. Terman) तथा उसके साथि बिने परीक्षा को परिवर्तित किया। यह परिवर्तन स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी में किया और इसीलिए इसे स्टेनफोर्ड बिने स्केल कहते है। टरमन ने कुछ प्रश्नों को संशो किया और कुछ को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया। इस परीक्षा मूल्यों के आधार पर बनाने का प्रयास किया गया। इस परीक्षा की विशेषता बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient) का समावेश था। बुद्धि ल (I. Q.) मानसिक आयु (M. A.) से वास्तविक आयु (C. A.) का माना गया। इस बुद्धि परीक्षा के भी अनेकों संशोधन हुए।

टरमन—मैरिल परीक्षा
Terman—Merrill Scale

१६३७ में टरमन और मैरिल ने संशोधन प्रस्तुत किया। उदाहरणार्थ वर्ष का बालक कुत्ते, बिल्ली, जूता, गिलास आदि की पहचान कर सकता है वह परीक्षक द्वारा पूछने पर इशारा करके इन वस्तुओं के नाम बता ऊँचे स्तर पर परीक्षक बालक से पूछ सकता है, 'यह बताओ कि पैरों

पहना जाता है,' 'हम दूध किसमें पीते हैं,' आदि। चार वर्ष की आयु में बालक ...ों की पहचान कर सकता है। इस प्रकार टरमन और मैरिल ने अनेको स्मृति ...न्धी पद जोड़े जिनको चित्रों, नम्बरों, शब्दों, वाक्यों आदि से स्पष्ट किया जा ...ता था। इसी प्रकार प्रत्येक आयु स्तर के आधार पर बहुत से प्रश्नों को जोड़ा ...। उदाहरणार्थ नौ वर्ष के बालक से यह पूछा जाये कि निम्नलिखित वाक्य में बेवकूफी की बात कही गयी है:—

'स्पेन के पुराने कब्रिस्तान में एक छोटा ढांचा मिला है; यह विश्वास किया ...ता है कि यह ढाचा कोलम्बस का है जबकि वह दस वर्ष का था।'[1] इसी प्रकार ...क ग्यारह वर्षीय बालक निम्नलिखित वाक्य की बेवकूफी समझने में समर्थ होना ...हिए—

'जब कभी गाड़ी की टक्कर होती है तो उसका आखरी डिब्बा क्षतिग्रस्त ...ता है। इसलिए ऐसा निश्चित किया गया है कि गाड़ी के चलने से पूर्व उसका ...ाखरी डिब्बा हटा लिया जाये।'[2]

...रिल - पामर परीक्षा
...errill Palmer Scale

इस परीक्षा में ३८ पद हैं। इससे डेढ़ वर्ष के बालक से लेकर साढ़े पाँच वर्ष ... बालक तक की मानसिक योग्यता का पता लगाया जा सकता है।

...िनीसोटा पूर्व शाला परीक्षा
...Minnesota Pre-School Scale

इस परीक्षा का उपयोग भी डेढ़ वर्ष से पाँच वर्ष तक के बालक की वृद्धि ...ापने के लिए किया जाता है।

...वैशलर - बैलेव्यू परीक्षा
The Wechsler - Bellevue

यह परीक्षा १९३९ में कार्यान्वित हुई। यह परीक्षा स्टेनफोर्ड-बिने की अपेक्षा ...सरल है। इसमें ग्यारह परीक्षाएँ सम्मिलित हैं:—

---

1. What is foolish about this statement : 'In an old graveyard in Spain they have discovered a small skull which they believe to be that of Christopher Columbus when he was about ten years old'.

2. Similarly, an 11 year old should be able to detect the absurdity in the following : 'When there is a collision the last car of the Train is usually damaged most. So they have decided that it will be best if the east car is always taken off ... in starts.'

(i) सामान्य सूचनाएं (General Information). ... अनेकों तथ्यों से सम्बन्धित हैं । इस परीक्षा में किसी शैक्षिक प्रशिक्षण ... नहीं है ।

(ii) सामान्य ज्ञान प्रधान (General Comprehension):- पद हैं जिसमें सामाजिक नियमों की आवश्यकता तथा दैनिक जीवन की से सम्बन्धित पद हैं ।

(iii) गणित सम्बन्धी तर्कता (Arithmatical Reasoning):- समस्याएं हैं । इसमें प्रश्नों को करने की गति एवम् सही उत्तरों को गिना

(iv) अंक विस्तार (Digit Span):—इसके द्वारा स्मृति का किया जाता है । छात्र के सम्मुख ३ से ९ अंकों को पढ़ा जाता है और छा सुनकर दोहराना होता है । दूसरे खण्ड में छात्र को उलटे अंक बोलने पड़े

(v) साम्यताएं (Similarities):—१२ जोड़ियों की साम्य छात्रों से पूछा जाता है ।

(vi) शाब्दिक क्षमता (Voacbulary):—इसमें ४२ शब्दों के जाते हैं ।

(vii) चित्र पूर्ति (Picture Completion):—इसमें १५ अपूर्ण चि है और बच्चे से पूर्ण करने के लिए कहा जाता है ।

(viii) चित्र व्यवस्था (Picture Arrangement).—इसमें चि व्यवस्थित कराकर उनसे कहानी बनवाई जाती है ।

(ix) ब्लाक आलेखन (Block Design):—इसमें छात्रों से चि ब्लाक बनवाये जाते हैं ।

(x) अंक संकेत (Digit Symbol)—

(ix) वस्तु समूह (Object Assembly)

वैश्लर प्रौढ़ बुद्धि परीक्षण

The Wechsler Adult Intelligence Scale (WAIS)

वैश्लर बेलेव्यू (१९३९) बुद्धि परीक्षण की आलोचना हुई और इन के कारण १९५५ में उसका संशोधन प्रकाशित हुआ । इस परीक्षण की वि यह है कि यह प्रौढ़ों की मानसिक योग्यता जानने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है ।

बालकों के लिए वैश्लर बुद्धि परीक्षण

The Wechsler Intelligence Scale For Children (WISC)

१९४९ में बालकों के लिए यह परीक्षा बनाई गई । इस परीक्षा द्वारा [illegible] के बालकों की मानसिक योग्यता का पता लगाया

सकता है। इसके अन्तर्गत भी वे ही पद निर्धारित किये गये जो वैश्लर बेलेव्यू
परीक्षण में निर्धारित किये गये थे। इस बुद्धि परीक्षण के द्वारा बुद्धि लब्धि
निर्धारण तालिका नं० ४ : १ के अनुसार किया गया।

तालिका ४ : १

WISC के आधार पर बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण[1]

विवरण (Description)	बुद्धि - लब्धि (I. Q)	बालकों की प्रतिशत म (Percentage of Chil
अत्यन्त श्रेष्ठ Very Superior	१३० और ऊपर	२·२
श्रेष्ठ Superior	१२० - १२९	६·७
प्रतिभाशाली Bright	११० - ११९	१६·१
सामान्य Average	९० - १०९	५०·०
सामान्य मूर्ख Dull Normal	८० - ८९	१६·१
सीमा रेखा Border Line	७० - ७९	६·७
मानसिक विहृत Mental Defective	६९ और नीचे	२·२

Q. No. 13.

Describe briefly the theories of intelligence as propounde
Thorndike, Spearman and Thurstone.

---

1. Jum C. Nunnally, Tests And Measurements, Mc Graw Hill Book Co., 1959, p. 212

थार्नडाइक, स्पीयरमैन और थर्स्टन की बुद्धि के सिद्धान्तों का संक्षिप्त वर्णन करो।

(राजस्थान १९६७)

OR

Critically examine the important theories of intelligence.

बुद्धि के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

(बड़ौदा १९५१)

Answer

थार्नडाइक का सिद्धान्त
Thorndike's Theory

थार्नडाइक ने बहुशक्ति सिद्धान्त (Multifactor Theory) का प्रतिपादन किया। इनके मतानुसार बुद्धि में सामान्य योग्यता जैसा कोई तत्व नहीं है बल्कि बुद्धि में अनेकों तत्व निहित हैं।

थार्नडाइक ने बुद्धि को तीन भागों में विभाजित किया है—

(१) सामाजिक बुद्धि
Social Intelligence.

व्यक्ति में सामाजिक बुद्धि निहित होती है। सामाजिकता व्यक्ति का महत्वपूर्ण गुण है। सामाजिक कार्यों को करने के लिए बुद्धि का सामाजिक पक्ष अत्यन्त आवश्यक है।

(२) मूर्त बुद्धि
Concrete Intelligence

बुद्धि का मूर्त रूप वह है जिसकी सहायता से व्यक्ति वस्तु विशेष को समझता है। वस्तु विशेष को समझकर उसके अनुरूप कार्य करना बौद्धिक पक्ष का परिचायक है। मूर्त बुद्धि द्वारा व्यक्ति में समझ उत्पन्न होती है और प्राप्त ज्ञान को वह कार्यान्वित करता है।

(३) अमूर्त बुद्धि
Abstract Intelligence

अमूर्तता वह बौद्धिक पक्ष है जिसके द्वारा चिन्तन करने की सामर्थ्यता आती है। किसी विषय की गहराई तक जाना अमूर्त चिन्तन का ही द्योतक है।

स्पीयरमैन का सिद्धान्त
Spearman's Theory

स्पीयरमैन का सिद्धान्त द्वि-शक्ति सिद्धान्त (Two Factor Theory) कहलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि में दो तत्व होते हैं :—

(१) सामान्य तत्व।
General Intellectual Factor (G. Factor)

सामान्य तत्व सभी मानवीय क्रियाओं में उपस्थित रहता है। यह तत्व जन्म जात है। किसी भी कार्य को करने के लिए जो सामान्य बुद्धि क्रियाशील होती है उसे हम बुद्धि का सामान्य तत्व कहते हैं। ये तत्व जन्मजात होते हैं।

(२) विशिष्ट तत्व
Specific Factor (S. Factor)

विशिष्ट तत्व के द्वारा विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। उदाहरणार्थ हस्तकला कला, संगीत, नृत्य अथवा कोई और कौशल ये विशिष्टताएँ विशिष्ट तत्व के कारण होती हैं।

बाद में चलकर स्पीयरमैन ने समूह तत्व (Group Factor) और जोड़ दिया:—

(३) समूह तत्व
Group Factor

स्पीयरमैन के मतानुसार समूह तत्व (Group Factor) सामान्य तत्व से अधिक और विशिष्टतत्व से कम महत्वपूर्ण होता है। अर्थात् G. और S के बीच की दूरी समूह तत्व है। उदाहरणार्थ किसी विशिष्ट योग्यता से विशेष कार्य करने की क्षमता उत्पन्न होती है इस कार्य को करने में सामान्य योग्यता स्वयंमेव कार्य करती है—विशिष्ट और सामान्य योग्यता के बीच में जो योग्यता है वह समूह तत्व के कारण है।

थर्सटन का सिद्धान्त
Thurston's Theory

थर्सटन के सिद्धान्त को बहु तत्व सिद्धान्त भी कहा जाता है। थर्सटन के मतानुसार बुद्धि सात प्रारम्भिक योग्यताओं से मिलकर बनी है। उनका ऐसा विश्वास था कि किसी भी क्रिया को करने में इन सातों योग्यताओं का योगदान अत्यन्त आवश्यक है। सात योग्यताएँ निम्नलिखित हैं:—

१. संख्या की योग्यता	Number Ability	(N. Ability)
२. वाचिक योग्यता	Verbal Ability	(V. Abelity)
३. स्थान सम्बन्धी योग्यता	Spacial Ability	(S. Ability)
४. शब्द प्रवाह योग्यता	Word Fluency Ability	(W. Abiliy)
५. स्मृति प्रधान योग्यता	Memory Ability	(W. Ab'lit)
६. तर्क करने की योग्यता	Reasoning Ability	(R. Ability)
७. प्रत्यक्षीकरण की योग्यता	Perceptual Ability	(P. Ability)

उपरोक्त समस्त योग्यताओं का सम्मिलित रूप ही बुद्धि है।

बुद्धि के मुख्य रूप से ये ही तीन सिद्धान्त हैं। परन्तु कोई भी मनोवैज्ञानिक किसी भी सिद्धान्त को सही नहीं मानता। अभी कुछ वर्षों से गिलफर्ड के प्रयत्न बहुत महत्वशाली होते जा रहे हैं और उन्होंने बुद्धि के पक्षों (Three faces of Intellect) को माना है। गिलफर्ड ने १२० तत्त्व बताये हैं। बुद्धि परीक्षण के क्षेत्र में यह नवीन अनुसन्धान बहुत ही महत्वशाली सिद्ध होगा।

Q. No 14.

What is an I. Q. ? How is it Calculated ?
बुद्धि लब्धि की परिभाषा करो। इसको निकालने की विधि क्या है?

(राजस्थान १९६७)

OR

Write short note on—I. Q.
संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये—बुद्धि लब्धि

(आगरा १९६४)

OR

Write short note on—Mental Age
संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये—मानसिक आयु

(बी.टी. १९६०)

Answer

बुद्धि लब्धि
Intelligence Quotient

मानसिक आयु में वास्तविक आयु का भाग देने से जो भागफल आता है, उसे हम बुद्धि लब्धि कहते हैं। अर्थात् मानसिक आयु और वास्तविक आयु के बीच का अनुपात ही बुद्धि लब्धि है। वास्तविक आयु का अर्थ है जन्म तिथि के आधार पर जो आयु निश्चित की जाये। मानसिक आयु का अर्थ है जो बुद्धि परीक्षा के आधार पर निश्चित की जाये। सामान्यतया यदि किसी बालक की बुद्धि लब्धि सौ है तो हम उसे सामान्य बुद्धि का बालक कहेंगे। सौ से ऊपर बुद्धि लब्धि वाले छात्र को कुशाग्र बुद्धि का तथा सौ से नीचे बुद्धि लब्धि वाले छात्र को कम बुद्धि का बालक कहेंगे।

बुद्धि लब्धि निकालने का सूत्र निम्नलिखित है:—

$$I. Q. = \frac{M. A.}{C. A} \times 100$$

अर्थात्

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times १००$$

इसका यह अर्थ हुआ कि पहले मानसिक आयु को वास्तविक आयु से भाग दो तत्पश्चात् उसे १०० से गुणा कर दो, जो भी उत्तर आये वह उस व्यक्ति की बुद्धि की लब्धि होगी।

उदाहरण १

मान लिया एक बालक की मानसिक आयु ६ वर्ष है और उसकी वास्तविक आयु भी ६ वर्ष है तो उसकी बुद्धि लब्धि १०० होगी।

$$\frac{६ \text{ (मा॰ आयु)}}{६ \text{ (वा॰ आयु)}} \times १००$$

बुद्धि लब्धि = १००

उदाहरण २

एक बालक की मानसिक आयु ३ वर्ष है और वास्तविक आयु ५ वर्ष है तो उसकी बुद्धि लब्धि ६० होगी।

$$\tfrac{३}{५} \times १०० = ६०$$

बुद्धि लब्धि = ६०

उदाहरण ३

एक अन्य बालक की मानसिक आयु ५ वर्ष है और वास्तविक आयु ४ वर्ष है तो उसकी बुद्धि लब्धि १२५ होगी।

$$\tfrac{५}{४} \times १०० = १२५$$

बुद्धि लब्धि = १२५

बुद्धि लब्धि के आधार पर वर्गीकरण
Distribution of I. Q.

बुद्धि लब्धि के वर्गीकरण के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों के भिन्न मत हैं। डा॰ टर्मन के अनुसार बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण निम्नलिखित है:—

वर्गीकरण	बुद्धि लब्धि
१. अति श्रेष्ठ (very Superior)	१४०—१६९
२. श्रेष्ठ (Superior)	१२०—१३९
३. सामान्य से उच्च (High Average)	११०—११९
४. सामान्य (Average)	९०—१०९
५. सामान्य से नीचा (Low Average)	८०—८९
६. निर्बल बुद्धि (Borderline)	७०—७९
७. हीन बुद्धि (Feeble Minded)	६०—६९
८. मूर्ख (Moron)	५०—५९
९. मूढ़ (Imbecile)	२५—४९
१०. जड़ (Idiot)	००—२४

Based on—

Merrill, "I. Q' S on the Revised Stanford-Binet Scale," *Journal of Educational Psychology*, 1938, p. 642.

गैरट के अनुसार बुद्धि लब्धि का विवरण निम्नलिखित है:—

वर्गीकरण	बुद्धि लब्धि	प्रतिशत
१. अति श्रेष्ठ (Very Superior)	१४० से ऊपर	१.३
२. श्रेष्ठ (Superior)	१२०—१३९	११.३
३. कुशाग्र (Bright)	११०—११९	१८.१
४. सामान्य (Average)	९०—१०९	४६.५
५. निम्न सामान्य (Dull Normal or Backward)	८०—८९	१४.५
६. अति मन्द (Very Dull)	७०—७९	५.६
७. निर्बल बुद्धि (Feeble-minded)	०—६९	२.६

Based on—

Garrett, *Great Experiments in Psychology*, p. 37.

माता-पिता के विभिन्न व्यवसायों का बुद्धि लब्धि पर प्रभाव

Effect of Different Professions of Parents on I. Q.

जिन बालकों के माता-पिता उच्च व्यवसायों मे हैं उन बच्चों की बुद्धि लब्धि भी अधिक होती है। कुछ प्रयोगों ने यह सिद्ध किया है कि पिता के व्यवसाय एवम् बुद्धि लब्धि मे सहसम्बन्ध है। निम्नलिखित तालिका से यह स्पष्ट होता है:—

पिता का व्यवसाय और सन्तान की बुद्धि लब्धि

पिता का व्यवसाय और सन्तान की बुद्धि लब्धि

विभिन्न व्यवसाय समूह	औसत बुद्धि लब्धि
१. उच्च व्यवसाय (Professoinal)	११६
२. अर्द्ध व्यवसाय (Semi Professional)	१११
३. क्लर्क तथा सम्बन्धित व्यवसाय (Clerical& Concerning Professional)	११७
४. कौशल समूह (Skilled group)	९८
५. अर्द्ध कौशल (Semi Skilled)	९५
६. ग्रामीण (Farmer)	९१
७. अनिपुण (unsbkilled)	८९

तालिका ४ : ४

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि बुद्धि लब्धि वंशानुक्रम से प्रभावित होता है। परन्तु यदि ध्यान से देखा जाय जो बुद्धि लब्धि पर वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का ही प्रभाव पड़ता है क्योंकि जिस घर का वातावरण और वंशानुक्रम दोनों ही उत्तम है तो निश्चित रूप से बालक की बुद्धि लब्धि अधिक होगी।

वातावरण का बुद्धि लब्धि पर स्पष्ट प्रभाव देखने के लिए तालिका ४ : ५ देखिये। यह तालिका गोर्डन (Gordon) के प्रयोग पर आधारित है। यह प्रयोग जिप्सी बालकों पर हुआ जो अपना जीवन नाव में व्यतीत करते हैं और सदैव एक

स्थान से दूसरे स्थान को जाते रहते हैं। इनके माता पिता का [illegible] उधर जाने के कारण सामाजिक जीवन स्थिर नहीं रह पाता। बहुत कम [illegible] इस प्रकार के होते हैं जबकि इनके सामाजिक सम्बन्ध होते हैं। या [illegible] समय अथवा सामान उतारते समय ही ये लोग अन्य लोगों से मिलते हैं। मोर्डन ने अपने प्रयोग में देखा कि जैसे-जैसे इन बालकों की आयु बढ़ती है वैसे-वैसे बुद्धि कम होती चली जाती है।

Gordon's Study on Canel Boat & Jypsy Children

आयु (Age)	(No. of Cases) बालकों की संख्या	(Average I. Q.) औसत बुद्धि लब्धि	(Decrease in I.Q.) बुद्धि में कमी
१. ४ ७	२१	८४.४	x
२. ८—१०	२७	६६.१	१८.३
२. ११—१४	२८	५५.४	२६.०

तालिका ४ : ५

गार्डन ने इस प्रयोग मे स्टेनफोर्ड–बिने बुद्धि परीक्षा का प्रयोग किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि बालकों की बुद्धि लब्धि जानने में न्याय नहीं हुआ क्योंकि स्टेनफोर्ड – बिने, बुद्धि परीक्षा देने के लिए बालक को स्कूल शिक्षा पाना बहुत आवश्यक है।

बुद्धि लब्धि और सृजनात्मकता
I. Q. And Creativity

बुद्धि परीक्षा बुद्धि का मापन करती है। यदि इसी तथ्य को स्पष्टतया कहें तो यह कहा जा सकता है कि किसी बालक की बुद्धि लब्धि जानने के लिये हमने निम्नलिखित योग्यताओं का मापन किया:–

(१) सीखने की योग्यता
(Ability to Learn)

(२) प्राप्त ज्ञान को नई समस्या में लगाने की योग्यता
(The adility to apply one's knowledge to new problem)

(३) प्रत्यक्षीकरण द्वारा सम्बन्ध ग्रहण करने की योग्यता
(The ability to perceive relationship to identify)

(४) तर्क की योग्यता
(Ability to reason)

उपरोक्त समस्त योग्यताओं में सृजनात्मकता का स्थान कहीं नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि बालक की सृजन शक्ति का बुद्धि लब्धि में कोई स्थान नहीं है क्योंकि बुद्धि परीक्षा के द्वारा एक ही उत्तर देने की योग्यता का मापन किया जाता है, मौलिक और सृजनात्मक उत्तर देने की क्षमता का नहीं। बुद्धि लब्धि के आधार पर कुशाग्रता का मापन करना और अन्तिम रूप में स्वीकार करना श्रेयस्कर नहीं क्योंकि बुद्धि लब्धि में साहसी चिन्तन (Adventurous Thinking Bartlett 1959) का अभाव है। संक्षेप में हम इतना ही कह सकते हैं कि अभी बालकों की मानसिक योग्यता के मापन में अनेकों कठिनाइयाँ हैं। यद्यपि इस दिशा में अनेकों महत्वपूर्ण प्रयोग हुए हैं तथापि वस्तुनिष्ठ होने के लिए अभी और प्रयोगों की आवश्यकता है। बुद्धि परीक्षण की शृंखला में गिलफर्ड (Guilford 1959) के प्रयोग महत्वपूर्ण मोती के रूप में सिद्ध होंगे, हमें ऐसी आशा है। फिर भी बुद्धि लब्धि का उपयोग बालक की शिक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अध्याय ५

प्रतिभावना बालक

Gifted Child

Q. No. 15.

How can gifted children be located in a class by teacher? what plan a teacher should adopt for the education of such children?

अध्यापक कक्षा में प्रतिभाशाली बालकों को कैसे पहचानेगा ? इन बालकों की शिक्षा के लिए अध्यापक क्या योजना अपनायेगा ?

(राजस्थान 1964)

OR

Write short note on 'Gifted Children.'

संक्षिप्त टिप्पणी लिखो— प्रतिभाशाली बालक

(आगरा—1957)

Answer

किसी भी देश की सम्पन्नता और उन्नति उस देश के प्रतिभाशाली बालकों पर निर्भर होती है। भारतवर्ष में प्रतिभाशाली बालकों की कमी नहीं, परन्तु प्रति वर्ष ऐसे अनेकों बालक अपना शैक्षिक जीवन अनेकों कठिनाइयों के कारण नियमित रूप से समाप्त नहीं कर पाते। इसका मुख्य कारण यह है कि ऐसे बालकों की शिक्षा का प्रबन्ध ठीक रूप से नहीं हो पाता। यदि हमें अपने देश को समृद्धिशाली बनाना है तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसे बालकों की बुद्धि का पूर्णरूपेण लाभ उठाया जावे।

प्रतिभाशाली बालक कौन है ?

Who is Gifted Child ?

एक बालक जिसकी योग्यता, बुद्धि परीक्षा के आधार पर जनसंख्या के दो या तीन प्रतिशत उच्च स्तर की हो।

एक बालक जो किसी भी क्षेत्र—उदाहरणार्थ संगीत अथवा कला आदि में असाधारण योग्यता रखता हो।[1]

---

1. "A Child whose ability, as indicated by an intelligence test, is within the range of the upper 2 or 3 percent of the population.

A child having outstanding ability in a given field, for example, music or art."

—Good, Dictionary of Education

डा० अनेस्टेसी ने प्रतिभाशाली बालकों की परिभाषा पर मतभेदों का कारण स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'ब्रिटिश लेखकों का विशेष अनुरोध 'जी फेक्टर' (G. Factor) पर रहा है जबकि अमेरिकन मनोवैज्ञानिक 'ग्रुप फेक्टर' (Group Factor) को मानते हैं और 'जी फेक्टर' को बहुत थोड़ा अथवा नहीं के बराबर मान्यता देते हैं।'[1]

अतः इस आधार पर प्रतिभाशाली बालकों को दो समूहों में विभक्त किया जा सकता है— (१) समग्र प्रतिभा वाले (२) विशिष्ट प्रतिभा वाले

Definitions of Gifted Children

एन. एन. एस. ई. वार्षिक पुस्तक[2] के अनुसार 'बुद्धि विभव अथवा प्रतिभाशाली बालक वह है जो किसी भी क्षेत्र में उचित एवम् निरूपित सम्पन्नता सहित प्रयास करता है। केवल मात्र बौद्धिक रूप से ही प्रतिभाशाली नहीं बल्कि जो संगीत, कला सृजनात्मक लेखक, नाटक, यंत्र सम्पादित क्षमता और सामाजिक नेतृत्व में गति प्रदर्शित करता है वह भी प्रतिभावान बालक है।

प्रतिभाशाली बालक के सम्बन्ध में कालसनिक ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं, "वह प्रत्येक बालक जो अपनी आयु स्तर के बच्चों में किसी योग्यता के अन्तर्गत अधिक हो तथा जो हमारे समाज और उसके कल्याण में महत्वपूर्ण योग प्रदान कर सके।"[3]

पाल विटी के अनुसार प्रतिभाशाली बालक वह है जो महत्वपूर्ण मानवीय क्रिया कलापों के क्षेत्र में अपना योग उचित रूप से निरूपित एवम् सम्पादित करता है।[4]

---

1. 'British writers have put the prime emphasis on G (the general factor) while American pesychologists now a days focus upon 'Group Factor' and regard 'G as minor and secondary or indeed as non-existent.' A. Anstasi, Differential Psychology, p. 328.

2. 'The talent or gifted child is one who shows consistently remarkable performance in any worthwhile line of endeavour. Not only intellectually gifted but also those who show promise in music, the graphic art, creative writing, dramatics, mechanical skills, and social leadership.'

NSSE Year Book—Education for Gifted.

3. The term gifted has been applied to every child who, in an outstanding contributor to the welfare of, and equality of living in our society.

—Kolesnik

4. 'Whose performance is consistently remarkable in any potentially Valuable area of human activity."

Paul Witty, 'Some Considerations in the Education of Gifted Children,' Educational Administration and Supervision, October 1940, 26, p. 516.

परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रतिभाशाली की परिभाषा करना कुछ कठिन है। इसका एक मात्र कारण यह है मनोवैज्ञानिकों ने अपनी मान्यताओं को समक्ष रख कर प्रतिभाशाली परिभाषाएं की हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेकों शब्द प्रयुक्त किये हैं उदाहरण प्रतिभाशाली (Gifted), योग्य (Able), तीव्रबुद्धि (Bright), बुद्धिम (Talented) आदि। कभी-कभी बुद्धि विमद केवल उस बालक के प्रयुक्त कि जाता है जिसमें कुछ सृजनात्मक योग्यताएं (Creative Abilities) हों। कुछ वर्षों से यह शब्द बौद्धिक प्रतिभा (Inltellectually Gifted) के लिए प्रयु किया जा रहा है। जब विद्यार्थी इन शब्दों को पढ़ता है तो विकट परिस्थिति पड़ जाता है और शब्द जाल के कारण अनेकों शकाएं उठ खड़ी होती हैं। आशा है, शीघ्र ही ये शब्द और भी स्पष्ट रूप से सप्रसंग पाठकों के समक्ष जा सकेंगे।

यहाँ सरलता की दृष्टि से हम केवल यही समझ लें कि इन समस्त शब्दों का अर्थ बच्चे की उस योग्यता से जो उसे सामान्य बालक से ऊँचा उठाकर प्रतिभाशाली बालक की श्रेणी में ला देता है

विशिष्ट बालकों में प्रतिभाशाली बालकों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। टरमन और हॉलिंगवर्थ के अनेकों परीक्षणों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ऐसे बालकों का अपने में विशेष महत्व है अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि अध्यापक इन्हें पहचानकर इनकी शिक्षा की योजना बनायें।

प्रतिभाशाली बालकों की पहचान

Indentification (Location) of Gifted Children

हमारे देश में अनेकों शालाएँ ऐसी हैं जिनकी दशा ठीक नहीं है तथा जहाँ साधारण और गरीबों के बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं, इन्हीं शालाओं में अनेकों छात्र इस प्रकार के हैं जो प्रतिभाशाली हैं तथा अनेकों योग्यताओं से सम्पन्न हैं। परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य है कि इन छात्रों को ठीक प्रकार से नहीं पहिचाना जाता।

अतः हमारे सम्मुख सबसे पहला प्रश्न यह है कि इन छात्रों को किस प्रकार पहिचाना जावे? अध्यापक को यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि जिन छात्रों को वह पढ़ा रहा है उनमें से अनेकों छात्र ऐसे हैं जो अनेकों क्षेत्रों में प्रतिभा रखते हैं। इनमें से कुछ छात्र किसी विशेष दशा में प्रवीण हो सकते हैं और कुछ छात्र किसी विशेष दशा में प्रवीण हो सकते हैं उदाहरणार्थ कला, संगीत, नृत्य, हस्तकौशल [illegible]।

इसीलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि ऐसे छात्रों को ढूंढा जावे जिससे उनके लिये विशिष्ट शिक्षा का आयोजन हो सके। यह उत्तरदायित्व आज के शिक्षक का

कि वह प्रतिभा सम्पन्न छात्रों की खोज करे और उन्हें विशिष्ट शिक्षा रूपी पौष्टिक दार्थ प्रदान कर समाज की शक्तिशाली जड़ों को शक्ति प्रदान करे क्योंकि आज वह-समय आ गया है जबकि हमारे राष्ट्र को प्रतिभा सम्पन्न नवयुवकों एवम् नवयुवतियों की आवश्यकता है। आज के बच्चे कल के भावी नागरिक हैं। और इन्हीं के शक्तिशाली कंधों पर हमारे देश का भार है :—ये ही बालक हमारे देश की नौका को पार लगा सकते हैं क्योंकि कल ये ही वैज्ञानिक, दार्शनिक, इंजीनियर्स, और कलाकार बनेंगे। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रतिभाशाली बालकों के बौद्धिक स्रोतों पर ही हमारे देश का भविष्य अवलम्बित है। हमें यदि अपने देश को समृद्धिशाली बनाना है और खोई हुई ख्याति को वापस लाना है तो इन प्रतिभाओं की खोज करनी होगी तथा इनके लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी।

इसके लिए यह आवश्यक है कि बालकों की योग्यता को प्राथमिक कक्षाओं से ही देखा जाये। हेनरी चोन्सी[1] के अनुसार योग्यता एक पौधे के समान है जिसकी देखभाल आरम्भ से ही होनी चाहिए। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान प्राइमरी कक्षाओं से ही आरम्भ हो। प्रतिभाशाली बालकों की पहचान हम निम्नलिखित विधियों से कर सकते हैं:—

(१) बुद्धि परीक्षाएं
Intelligence Tests

बुद्धि लब्धि के आधार पर प्रतिभाशाली बालकों को पहचाना जा सकता है। यद्यपि सभी मनोवैज्ञानिक प्रतिभाशाली बालकों की बुद्धि लब्धि के विषय में एक मत नहीं है। कुछ मनोवैज्ञानिक १२० अथवा इससे अधिक बुद्धि लब्धि को प्रतिभाशाली बालकों के लिए आवश्यक मानते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि १४० बुद्धि लब्धि से ऊपर वाले छात्रों को प्रतिभाशाली कहा जाये। परन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बुद्धि परीक्षाओं के आधार पर प्रतिभावान बालकों का चयन किया जा सकता है।

(२) वस्तुगत सम्प्राप्ति परीक्षा
Achievement Test

इन परीक्षाओं के आधार पर भी प्रतिभाशाली बालकों का पता लगाया जा सकता है।

(३) अध्यापक निरीक्षण
Teacher's Observation

अध्यापकों का निरीक्षण इस दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। चीकागो विश्वविद्यालय में बालक के व्यवहार को देखने के लिए अध्यापकों के लिए निरीक्षण तालिका बनाई है जिसके आधार पर प्रतिभाशाली बालकों का निरीक्षण किया जा सकता है।

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा
Education for Gifted children

मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा के लिए अनेक सुझाव दिये गये हैं —

(१) तीव्र गति
Acceleration

प्रतिभाशाली छात्रों की शिक्षा में तीव्र गति से तात्पर्य है कि की गति को तेज किया जावे। यदि प्रतिभाशाली बालक अपने शैक्षिक जीवन अधिक योग्यता का प्रदर्शन करता है तो उसे एक ही वर्ष में दो कक्षाएँ पास अथवा ग्रीष्म शाला (Summer Schools) में पढ़ाकर अगली कक्षा पास करने अवसर प्रदान किये जायें।

परन्तु इस मत की बहुत आलोचना हुई है तथा आलोचकों का कहना यह विधि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से गलत है क्योंकि उन्नति की गति तीव्र की मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कुछ आलोचकों का मत है कि विधि से सामाजिक (Social) और संवेगात्मक (Emotional) समस्याएँ हैं। सामाजिक दृष्टि से ऐसे बच्चों के सामाजिक विकास में अनेकों कठिनाइ आती हैं और ये बच्चे तिरस्कृत (Rejected) हो जाते हैं। धीरे-धीरे वे एकाकी (Isolated) हो जाते हैं। जहाँ तक संवेगात्मक विकास का प्रश्न इस प्रकार के बालक अनेकों संवेगात्मक कठिनाईयों से ग्रस्त हो जाते हैं। सम्बन्ध में मेक्केन्डलस (McCandless) का विचार है कि बच्चे की शैक्षि गति को अधिक तीव्र गति से नहीं किया जावे—कहने का तात्पर्य यह है कि के शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिपक्वता का पूर्ण रूप से ध्यान र जाये।

टरमन का मत इस दृष्टिकोण से भिन्न है। टरमन के अपने ही शब्दों 'मेरे प्रतिभाशाली समूह में २९% छात्रों ने १६½ वर्ष की अवस्था से पूर्व स्नात उपाधि प्राप्त की। ७१% ने १६½ से १८½ वर्षों के बीच स्नातक डिग्री पास की तीव्रगति छात्रों (प्रतिभाशाली) की तुलना साधारण गति छात्रों (सामान्य छात्रों से की गई। दोनों ही समूहों में बाल्यावस्था के अन्तर्गत बुद्धि लब्धि और स्व स्थ्य में अन्तर था। व्यस्क होने पर प्रतिभाशाली छात्र सामाजिक रूप से पू रूपेण व्यवस्थित थे।'[1]

---

1. "Of my gifted group, 29 percent managed to graduate fro high school before the of 16½ years (62 of these before 15½) bu doubt if so many would be allowed to do now. The other 71 perce between 16½ and 18½. We have com,ared the accel

) पृथक्करण
Segregation

प्रतिभाशाली बालकों को शिक्षा प्रदान करने का दूसरा तरीका क्करण है जहाँ इन छात्रों को साधारण बुद्धि वाले छात्रों से पृथक कर दिया ता है। परन्तु इस पद्धति की दार्शनिक एवम् सवेगात्मक पक्षो पर आलोचना की है। इस पद्धति को अप्रजातान्त्रिक बताया गया है। अप्रजातान्त्रिक बताने का रण यही है कि यदि प्रतिभाशाली बालको की शिक्षा व्यवस्था पृथक शालाओं में थवा पृथक कक्षाओं मे होगी तो यह प्रजातान्त्रिक मूल्यो के विपरीत होगा क्योंकि तन्त्र में सबको समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिये, यह तो है दार्शनिक थ्यों पर आधारित आलोचना। जहाँ तक संवेगात्मक आलोचना का प्रश्न है वह पर्याप्त रुचिप्रद है—जो छात्र इस प्रकार के स्कूलो अथवा कक्षाओ मे प्रवेश नही सकेंगे। उन पर इस पद्धति का सवेगात्मक रूप से बुरा प्रभाव पड़ेगा और नता की भावना घर कर लेगी।

इन समस्याओं के अतिरिक्त एक सबसे बड़ी समस्या जो इस पद्धति के कारण पस्थित हो सकती है तथा जिसमें सत्यता के अश भी विद्यमान हैं वह यह है कि दि प्रतिभाशाली बालकों के लिए पृथक शाला अथवा कक्षा व्यवस्था कर दी जाये तो प्रत्येक माता-पिता अपने बालक का प्रवेश इन्ही शालाओं मे करवाने का यत्न करेंगे। इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि प्रत्येक माता-पिता अपने बालक अथवा बालिका को होनहार पुत्र अथवा पुत्री ही मानते है। इससे शाला के आचार्यों पर अनैतिक प्रभाव भी पड़ सकते हैं।

परन्तु इस पद्धति को अप्रजातान्त्रिक किस आधार पर कहा गया है, यह हमारी समझ में नही आता। हम उन आलोचकों से मात्र एक ही प्रश्न करते हैं और वह यह कि जब शालाओं में खेल-कूद सप्ताह मनाया जाता है, उस समय राज्य स्तर (State level) के लिए अच्छे-अच्छे खिलाड़ियो को चुना जाता है और उनके लिए विशिष्ट कार्यक्रम एवम् सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। सगीत प्रतियोगिता के लिये प्रतिभाशाली सगीतज्ञ छात्र को ही चुना जाता है न कि गूँगे छात्र को। यदि

---

with non accelerated on numerous case history variables. The two groups differed very little in childhood I. Q., their health records are equally good, and as adults they are equally will adjusted socially. More of the accelerates graduated from college, and on the average nearly a year and half earlier than the nonaccelerates, they averged higher in college grades and more often remained for graduate work."

L. M. Terman, Educational Acceleration for the Gifted, P. 207

ये समस्त पद्धत्तियाँ अप्रजातान्त्रिक नहीं हैं और शालाओं में, राज्यों में तथा देश इस प्रकार के बालकों के लिए प्रावधान है तो उन प्रतिभाशाली बालकों के लिए प्रावधान क्यों नहीं है और जो बौद्धिक क्षमता से परिपूर्ण है ? प्रजातन्त्र का वास्तविक मूल्य सबको समान अवसर प्रदान करने से है न कि किसी कि बौद्धिक क्षमता से खेल करने से। हमारी यह निश्चित धारणा है कि यदि प्रतिभाशाली छात्र एवम् छात्राओं के लिए उचित शिक्षा व्यवस्था नहीं होती तो यह हमारे देश का दुर्भाग्य है जिसका परिणाम अन्धकारमय भविष्य है।

(३) विशेष पाठयक्रम
Enrichment of the Curriculum

कालसनिक के मतानुसार विस्तृत पाठ्यक्रम में अनेकों अवसर और उच्च स्तरीय ज्ञान सम्मिलित है।[1] विशेष पाठ्यक्रम से तात्पर्य है कि प्रतिभाशाली बालकों के लिए सामान्य शालाओं में ही विशेष पाठ्यक्रम की, जो इन बालकों के मानसिक और शारीरिक विकास के अनुरूप हो, योजना हो। इससे दो लाभ हैं, एक तो यह है कि पृथक्करण से जो दोष होने की सम्भावना होती है वह इस शिक्षा व्यवस्था द्वारा नहीं होगी, दूसरे तीव्र गति (Acceleration) की व्यवस्था प्रारम्भ करने में अनेकों कठिनाईयाँ हैं--अतः यदि प्रतिभाशाली बालकों का पाठ्यक्रम धनी कर दिया जाये तो इसमें दोनों ही दोषों को दूर किया जा सकता है। आदर्श शिक्षा में आदर्श शिक्षा व्यवस्था तथा अनुभवी अध्यापकों द्वारा विस्तृत पाठ्यक्रम प्रभावशाली बालकों को पढ़ाया जा सकता है और यह सभी को सर्वमान्य है।[2]

(४) शीघ्र शाला प्रवेश
Early School Enrolment

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था का अन्य समाधान शीघ्र शाला प्रवेश है। शीघ्र शाला प्रवेश पर जो अनुसंधान हुआ है वह अत्यधिक महत्वपूर्ण है डा० जेम्स आर हाबसन (Dr. James R. Hobson) ने इस अनुसंधान में प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था पर एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है यह प्रयोग अत्यन्त नवीन है तथा महत्वपूर्ण तथ्यों पर आधारित है। २५ वर्ष तक किन्डरगार्टन स्कूल में दो प्रकार के बालकों को प्रवेश दिया गया। एक समूह प्रकार का था जिसमें ४ वर्ष ६ महीने की आयु वाले छात्रों को प्रवेश दिया गया

1. Enrichment implies that the child is given a greater variety of experience or task at a more advanced level.'

—Kolesnik

2. In an ideal school class, with its ideal small enrolment and with its ideal highly skilled teacher, the enrichment as a programme is one that few would disagree with.

दूसरे समूह में ३ वर्ष ९ महीने अथवा इससे भी छोटी आयु के बालकों को प्रवेश दिया गया, इन बालकों का प्रवेश मनोवैज्ञानिक एवं चिकित्सा परीक्षाओं के आधार पर हुआ। छोटी आयु के बालकों की संख्या ५५० थी तथा सामान्य आयु के बालकों की संख्या ३८६१ थी। डा० हाबसन के मतानुसार छोटे बालकों ने मनोवैज्ञानिक तथा शारीरिक परीक्षाओं में बड़े बालकों की अपेक्षा अच्छा कार्य किया। इसके अतिरिक्त छोटी आयु के बालकों ने स्नातक उपाधि आनर्स के साथ प्राप्त की तथा ये बालक पाठ्य सहगामी क्रियाओं मे भी अच्छे रहे।

इस अनुसंधान से यह स्पष्ट होता है कि प्रतिभाशाली बालको को शीघ्र ही शाला में प्रवेश करा देना चाहिए परन्तु इसके लिए मानसिक और शारीरिक परिपक्वता अत्यन्त आवश्यक है।

उपरोक्त चारो विन्दु प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं। चारों ही व्यवस्थाओं की कुछ न कुछ सीमाएं होती अवश्य हैं परन्तु यह निश्चित है कि इन सीमाओं को ध्यान में रखकर यदि इन बालकों की शिक्षा व्यवस्था की जाये तो अति उत्तम होगा।

अध्याय ६

पिछड़े बालक

Backward Children

Q. No. 16.

How should a teacher treat Ram who at the age of 12 has a mental age of only 10 ? How can he improve him ?

राम की वास्तविक आयु १२ वर्ष है और उसकी मानसिक आयु १० वर्ष है। अध्यापक को राम के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए ? पढ़ाई में उसकी उन्नति के लिए अध्यापक को कौन-कौन साधन अपनाने चाहियें ?

(राजस्थान १९६७)

OR

Who is backward child ? What remedies will you apply for them ?

पिछड़ा हुआ बालक कौन है ? इनके सुधार के लिए आप क्या उपचार करेंगे ?

Answer.

किसी भी बालक के साथ अध्यापक का व्यवहार अनेकों कारकों पर निर्भर है। बुद्धि लब्धि भी एक कारक है। राम एक पिछड़ा हुआ बालक है क्योंकि उसकी बुद्धि लब्धि ८३ है। (प्रश्न संख्या १४ देखें)

हमारे देश में पिछड़े हुए बालकों की समस्या एक गम्भीर समस्या है। यदि हमारे देश के अध्यापक इन बालकों को उपेक्षित करते रहे और उचित शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया गया तो अनिवार्य शिक्षा के समस्त प्रयास केवल मात्र स्वप्न बनकर ही रह जायेंगे। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस गम्भीर एवम् भयानक समस्या के प्रति जागरूकता दिखाई जावे।

पिछड़ापन क्या है ?

What is Backwardness.

साधारणतया पिछड़ापन ज्ञान उपलब्धि में कमजोर होना है। पिछड़ापन शब्द साधारणतया उन बालकों के लिए प्रयुक्त होता है जो ज्ञान उपलब्धि में कमजोर होते हैं अर्थात् जो बालक कक्षा में सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पाते और परीक्षाओं में असफल होते रहते हैं।

पिछड़ा हुमा बालक कौन है ?
Who is an Backward Child ?

सिर्ल बर्ट के मनुसार पिछड़ा हुमा वह बालक है जो वर्ष के मध्य तक भी मपनी मायु स्तर की कक्षा में एक दर्जे नीचे का कार्य करने में भी मसमर्थ रहता है।[1] मत: एक बालक जो शैक्षिक दृष्टि से कमजोर है वह पिछड़ा हुमा बालक कहलाता है।

उदाहरणार्थ यदि एक बालक सातवीं कक्षा में है। यदि यही बालक उस वर्ष के मध्य तक छठी कक्षा का कार्य करने में असमर्थ रहे तो यह बालक पिछड़ा हुमा बालक कहलायेगा।

बालक के पिछड़ेपन की स्थिति जानने के लिए निम्नलिखित सूत्र प्रयोग किया जाता है:—

$$\text{शिक्षा लब्धि} = \frac{\text{शैक्षणिक मायु}}{\text{वास्तविक मायु}} \times १००$$

मर्थात्

$$E.Q. = \frac{E.A.}{C.A.} \times 100$$

यदि किसी बालक की शैक्षणिक बुद्धि (Educational Quotient) ८५ से कम है तो वह बालक पिछड़ा हुमा बालक कहलायेगा।

पिछड़ेपन का पता लगाना
Identification of Backwardness

पिछड़े हुए बालकों की पहचान करना नितान्त मावश्यक है। इस प्रकार के बालकों की पहचान करना बहुत कठिन कार्य नहीं है, यदि शाला के अधिकारी चाहें तो निम्नलिखित विधियों के द्वारा पिछड़े हुए बालकों को पहचाना जा सकता है:—

(१) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षा (Individual Intelligence Test)

(२) सामूहिक बुद्धि परीक्षा (Group Intelligence Test)

(३) उपलब्धि परीक्षा (Attainmment Test)

(४) शब्द भण्डार परीक्षा (Vocubalary Test)

(५) मध्यापक द्वारा निरीक्षण (Observation by the Teacher)

(६) मर्द्धवार्षिक एवम् वार्षिक परीक्षा (Half yearly and Yearly Examination)

---

1. The backward child is one who is unable to do the work of the class next below that which is normal for his age.

Cyrl Burt, Tee Backward Chi.d, p. 3.

पिछड़ेपन के प्रकार
Types of Backwardness

पिछड़ापन दो प्रकार का हो सकता है—

(१) अस्थायी पिछड़ापन (Temporary Backwardness)

(२) स्थायी पिछड़ापन (Permanent Backwardness)

उदाहरणार्थ एक बालक विज्ञान में पिछड़ा हुआ है, यह पिछड़ापन स्थायी भी हो सकता है और अस्थायी भी हो सकता है। यदि पिछड़ापन अस्थायी है तो इसके ऐसे कारण भी हो सकते हैं जो बालक के जीवन में कुछ समय के लिए रहे हों। यदि इन कारणों को समुचित रूप से समझा जाये और समस्या का समाधान किया जाये तो यह सम्भव है कि बच्चे का पिछड़ापन दूर हो सके अथवा उस पिछड़ेपन को कम किया जा सके। परन्तु यदि कोई विषय बालक की अभिवृत्ति के अनुकूल नहीं है अथवा कोई स्थायी कारण है तो पिछड़ापन स्थायी कहलायेगा।

पिछड़े हुए बालकों की शिक्षा
Education of Backward children

पिछड़े हुए बालकों को किस प्रकार से शिक्षा प्रदान की जाये, यह एक समस्या है। समस्या का मूल कारण यह है कि इनकी शिक्षा व्यवस्था कैसी हो? क्या ऐसे बालकों को सामान्य बालकों के साथ शिक्षा प्रदान की जाये, अथवा पृथक रूप से शिक्षा व्यवस्था हो। मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं के आधार पर यदि इस समस्या पर विचार किया जाये तो समाधान सम्भव है।

स्वीडन के अन्तर्गत जिन बच्चों की बुद्धि लब्धि ५०–७० है, उन्हें विशिष्ट कक्षाओं (Special classes) में पढ़ाया जाता है। ये विशिष्ट कक्षाएँ सामान्य शालाओं में भी हो सकती हैं और पृथक शालाओं में भी। जिन बालकों की बुद्धि लब्धि ६५–८५ होती है उन्हें सहायक कक्षाओं में पढ़ाया जाता है जो सामान्यतः साधारण स्कूलों में भी होती हैं।

रूस में ऐसे बालकों के लिए पृथक् स्कूलों की व्यवस्था है जहाँ विशेष पाठ्यक्रम होता है और अध्यापक भी विशेष होते हैं।

इंगलैंड के अन्तर्गत पिछड़े हुए बालकों के लिए भिन्न-भिन्न व्यवस्थाएँ हैं। जिन बच्चों की बुद्धि लब्धि ५०–७० के बीच है उनके लिए विशिष्ट शालाओं एवम् उपचार कक्षाओं (Remedial classes) की व्यवस्था है। परन्तु जो बालक प्रतिभाशाली हैं परन्तु पिछड़े हुए हैं, उनके लिए ट्यूटोरियल कक्षाओं (Tutorial classes) की व्यवस्था होती है। साधारण शालाओं में उपचारात्मक विभागों (Remedial Department) की व्यवस्था की जाती है।

जापान में दोनों व्यवस्थाएं हैं अर्थात् सामान्य शालाओं में विशिष्ट कक्षाएं ...कर और विशिष्ट शालाओं के द्वारा ।

'संयुक्त राज्य अमेरिका के शिक्षा-विशारदों में इस प्रश्न पर एक मत नहीं । वहाँ साधारणतया सामान्य शालाओं में विशिष्ट कक्षाओं की योजना को ...िक मान्यता दी जाती है । बालकों की योग्यता के अनुसार वहाँ पृथक पाठ्यक्रम ...रन्तु सामान्य छात्रों के साथ मिलने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जाते । सामान्य शालाओं में विशिष्ट कक्षाओं का आयोजन इसीलिए आवश्यक है कि ...छड़े हुए बालकों में हीनता के भाव न आएं । पाठ्यसहगामी क्रियाओं तथा ...ला के समस्त जीवन में ऐसे बालकों का सामान्य बालकों के साथ मिल-जुल कर ...ना अत्यन्त आवश्यक है जिससे पारस्परिक सम्बन्धों की अभिवृद्धि हो सके तो वे ...पना वयस्क जीवन सुचारु रूप से बिता सकें ।

उप्पशाला विश्वविद्यालय (Uppsala university) में इस सम्बन्ध में बहुत ...त्वपूर्ण परीक्षण हुआ । ऐसे बालकों के दो समूह बनाए । एक वह समूह था ...से साधारण शालाओं में 'विशिष्ट कक्षा' द्वारा पढ़ाया जाता था और दूसरा वह ...ह था जिसे साधारण कक्षाओं में पढ़ाया जाता था । परिणाम की दृष्टि से यह ...यन्त लाभदायक है कि सामान्य कक्षा में पढ़ने वाले ग्रुप के साथ सामाजिक समा-...जन की कठिनाईयाँ कुछ कम थीं ।

पृथक्करण (Segregation) में विश्वास करने वालों का मत है कि ...क् शालाओं द्वारा पिछड़े हुए बालकों को विशेष प्रकार के वातावरण की ...वश्यकता होती है जहाँ वे सामाजिक रूप से समायोजित हो सकें एवम् अपनी ...तिरिक्त आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें । व्यवसाय और खाली समय के सदुपयोग ... परीक्षण भी पृथक् शालाओं में सम्भव है ।

हल अध्यापक समुदाय (Hull Teacher's Assocation) के मतानुसार यदि ...बालक असामान्य नहीं हैं और इनका व्यवहार सन्तोषप्रद है तो ऐसे बालकों को ...धारण स्कूलों में ही शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ।

सीगल (Segal) का मत है कि बहुत से बालक जो विशिष्ट शालाओं में ...रहे हैं उन्हें प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा विषय सामग्री को रुचिपूर्ण बनाकर छोटी-...टी कक्षाओं में, साधारण स्कूलों का एक रूप बनाकर पढ़ाया जाना चाहिए ।

. No 17

How do mentally gifted children differ from those of mentally ...ta ded ? What schools do to educate both the gifted and the ...tarded children ?

तीव्र बुद्धि और मन्द-बुद्धि वाले वाले बच्चों में क्या अन्तर है ? में दोनों प्रकार के बच्चों के लिए विद्या का क्या कार्यक्रम होना चाहिए ?

(राजस्थान I

Answer

तीव्र बुद्धि छात्र वह है जिसकी बुद्धि लब्धि सामान्य बुद्धि लब्धि परी आधार पर १२० अथवा उससे ऊपर हो । यद्यपि सभी मनोवैज्ञानिक इस सम्ब एक मत नहीं हैं तथापि अनेकों अनुसंधानों में १२० बुद्धि लब्धि वाले प्रतिभाशाली छात्र माना है । प्रतिभाशाली छात्र शैक्षिक दृष्टि से सामान्य की अपेक्षा प्रवीण होते हैं ।

एक मन्द बुद्धि छात्र वह है जिसकी बुद्धि लब्धि परीक्षा के आधार प अथवा इससे अधिक होती है । यद्यपि सभी मनोवैज्ञानिक इस बुद्धि लब्धि सहमत नहीं हैं तथापि सामान्य रूप से इसे ही मान्यता प्राप्त है ।

प्रश्न के अन्य भाग के उत्तर के लिए प्रश्न संख्या १५ और १६ देखें।

अध्याय ७

व्यक्तित्व और उसका मापन

Personality and Its Measurement

. No. 18

What do you understand by Personality? What are the main ethods of assessing personality?

व्यक्तित्व से आप क्या समझते हैं ? व्यक्तित्व मापन की मुख्य विधियाँ कौन-न सी हैं ?

(राजस्थान १९६५)

Or

Give a definition of Personality. Explain any two methods of easuring personality.

(पूना एम० ए० १९६०, इलाहाबाद १९६०)

Or

'Personality in whole man.' Comment on the above and make ut a case for the view that personality can not be measured.

'व्यक्तित्व पूर्ण मनुष्य है।'

उपरोक्त कथन पर टिप्पणी लिखो और इस विचारधारा का समर्थन करो कि व्यक्तित्व का मापन नहीं हो सकता।

(बी०टी० १९६३)

Or

Discuss the more inportant mothods of assessing personality with special reference to their validity and reliability.

प्रामाणिकता और विश्वसनीयता के संदर्भ में व्यक्तित्व मापन की महत्वपूर्ण विधियाँ बतायो।

(बी० टी० १९६०, आगरा १९६४)

Or

What do you understand by 'Integrated Personality?' How can such a personality be developed ?

'समन्वित व्यक्तित्व' से आप क्या समझते हैं ? इस प्रकार के व्यक्तित्व का विकास कैसे किया जा सकता है ?

(राजस्थान १९६१)

Answer

व्यक्तित्व क्या है ?

What is Personality ?

व्यक्तित्व 'पर्सनैलिटी' का शाब्दिक अर्थ है। पर्सनैलिटी शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'पर्सोना' से हुई है पर्सोना का अर्थ भेष बदलना। अतः में व्यक्तित्व का अर्थ बाह्य आवरण समझा जाता था।

व्यक्तित्व की परिभाषाएं

Difinitions of Personality

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व की परिभाषाएं भिन्न-भिन्न आधारित की हैं। मुख्य-मुख्य परिभाषाएं निम्नलिखित हैं।

मन के शब्दों में व्यक्तित्व की परिभाषा व्यक्तित्व की परिभाषा व्यक्ति के व्यवहार के रूपों, रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं और अभिवृत्तियों के संगठित रूप की जा सकती है।[1] इस परिभाषा में व्यक्ति के विभिन्न संकलनों पर विशेष बल प्रदान किया है। प्रत्येक व्यक्ति में विभिन्न तत्वों के संकलन की मात्रा पृथक् पृथक् होती है किन्तु जब ये तत्व एक रूपता ग्रहण करते हैं तो व्यक्तित्व का रूप दृष्टिगोचर होता है।

* वेलन्टाइन के शब्दों में; 'व्यक्तित्व जन्मजात और अर्जित प्रवृत्तियों का सम्पूर्ण योग है'[2] अर्थात् वे समस्त प्रवृत्तियां जिन्हें व्यक्ति जन्म के समय अपने साथ लाता है तथा परिवेश में जिन प्रवृत्तियों को ग्रहण करता है—दोनों के योग से व्यक्तित्व का स्वरुप बनता है।

*गोर्डन आलपोर्ट के मतानुसार, 'व्यक्तित्व व्यक्ति के मनो-शारीरिक क्रियाओं का वह गतिशील संगठन है जिससे वह वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करता है।'[3]

* मयूर हेड के अनुसार, 'व्यक्तित्व सम्पूर्ण व्यक्ति का पूर्ण समावेश है। व्यक्तित्व की परिभाषा व्यक्ति के गठन, रुचियों के स्वरूपों, अभिवृत्तियों, व्यवहारों, क्षमताओं आदि के विशेष संगठन से की जा सकती है।'[4]

---

1. Personality may be defined on the most characteitistic integration of an individual's structures, modes of behaviour, interest, attitudes, capacities, abilities and optitudes.

—N. L. Munn

2 Personality In the sum total of invate and acquired dispositions.

—Valentine

3. Personality is the dynamic organization within the individual of those psycho-physical systems that deternine his unique adjus ment to his environment.

—Gordon Allport.

4. Personality is the whole individual considered as a whole. It may be defined as the most charateristic integration of an individual's structures, modes of inte est, attitudes, behaviours, capacities, abilities. and attitudes.

—Muirhead

यदि उपरोक्त समस्त परिभाषाओं का विश्लेषण करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि व्यक्तित्व अनेकों जन्मजात एवम् परिवेश पर आधारित प्रवृत्तियो का संगठन मात्र है जिसमें व्यक्ति के व्यवहारों, रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओ, अभिवृत्तियों का विशेष स्थान है।

व्यक्तित्व की संगठित परिभाषा
Integrated Definition of Personality

हमारी राय में व्यक्तित्व मानवीय प्रवृत्तियों का आकार है जो जन्मजात और अर्जित होती हैं तथा जिनके आधार पर मानव अपने अनुभवों को समन्वित कर, अपने व्यवहार को रूप प्रदान करता है।'

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ जन्मजात लक्षणों सहित पैदा होता है और जीवनपर्यन्त वह वातावरण से प्रभावित होता रहता है। व्यक्तित्व पर जन्मजात प्रवृत्तियों, विकासात्मक अनुभवों, अचेतन तत्वों, वातावरण, सीखने की प्रक्रिया, सामूहिकता, विकासात्मक प्रक्रिया, सोउद्देश्यता, व्यक्तित्व स्वरूपों आदि का प्रभाव पड़ता है। अतः वुडवर्थ का यह कथन सत्य है कि व्यक्तित्व मानवीय व्यवहार का समग्र गुण है।[1]

व्यक्तित्व मापन
Measurement of Personality

व्यक्तित्व मापन बहुत कठिन कार्य है। अनेको मनोवैज्ञानिको ने व्यक्तित्व मापन हेतु अनेकों प्रकार की विधियों पर बल दिया है। कुछ विधियाँ व्यक्तित्व के एक अशमात्र को ही मापने समर्थ हैं तो अन्य विधियाँ व्यक्तित्व के अन्य पक्ष को मापती हैं। यदि हम यह कहें कि कोई भी विधि व्यक्तित्व का सही मापन नही कर सकती तो अतिशयोक्ति नही होगी। व्यक्तित्व मापन में सबसे बड़ी कठिनाई व्याख्या (Interpretation) की है। यदि हम एक विधि द्वारा मापन किये हुए व्यक्तित्व को तीन या चार मनोवैज्ञानिकों को दें तो सभी मनोवैज्ञानिकों की राय पृथक् पृथक् होगी, क्योकि प्रयत्न रूप से व्यक्तित्व का मापन नही किया जा सकता। हाँ इतना कह देना आवश्यक होगा कि व्यक्तित्व मापन से किसी व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध मे निश्चित धारणा अवश्य बनायी जा सकती हैं।

व्यक्तित्व के मापन के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है:—

(१) प्रश्नावली
(Inventories for Self-Description)

1. Personality is the total quality of an individual's behaviour.
—Woodworth.

(२) प्रक्षेपन विधि
(Projective Technique)

(३) वर्ग क्रम
(Rating Scale)

(४) व्यवहार का अवलोकन
(Observation of Behaviour)

प्रश्नावली
Inventories

(१) वुडवर्थ व्यक्तिक लेखा
Woodworth's Personal Data Sheet

इस प्रश्नावली को संवेगात्मक रूप से अस्थिर लोगों को दिया जाता है इस प्रश्नावली में ११६ प्रश्न हैं जैसे:—

* क्या आपको कार्य सम्बन्धी स्वप्न कष्टकारी होते हैं ?
* क्या आपको घुटन महसूस होती है ?
* क्या आप में आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा जाग्रत होती है।

ये प्रश्न मनोचिकित्सकों की सहायता से बनाये गये हैं। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् इसी व्यक्तिक लेखे के आधार पर अनेकों प्रश्नावलियों का विकास हुआ।

(२) बैल समायोजन प्रश्नावली
Bell Adjustment Inventory

व्यक्तिक लेखे (Personal Data Sheet) के द्वारा यह तो मालूम हो सकता है कि कौन समायोजित (Adjusted) है और कौन कुसमायोजित (Maladjusted) है परन्तु यह मालूम होना कठिन है कि किस प्रकार का कुसामायोजन है। परन्तु बैल समायोजन प्रश्नावली के द्वारा चार समायोजनों का आभास होता है:—

(i) पारिवारिक समायोजन (Home Adjustment)
(ii) स्वास्थ्य समायोजन (Health Adjustment)
(iii) सामाजिक समायोजन (Social Adjustment)
(iv) संवेगात्मक समायोजन (Emotional Adjustment)

इस प्रश्नावली को बनाने से पूर्व बैल ने दस समायोजन क्षेत्रों को चुना था परन्तु धीरे-धीरे बालकों पर परीक्षण कर चार क्षेत्रों को आधार बनाया। इस ...ी में १४० पद हैं।

(३) मिनीसोटा बहुक्षेत्रीय व्यक्तित्व प्रश्नावली

Minnesota Multiphasic personality Inverntory

असामान्यता (Abnormality) तथा मानसिक रोगों के अध्ययन के लिए इस प्रश्नावली का प्रयोग किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित केन्द्र बिन्दुओं का अध्ययन किया जाता है—

(i) Hypochondriasis (शारीरिक क्रिया और काल्पनिक बीमारी से सम्बन्धित)
(ii) Depression (निरर्थकता की भावना से सम्बन्धित)
(iii) Hysteria (संवेगात्मक समस्याओं से बचाव)
(iv) Psychopathio Deviate (दूसरों की भावनाओं का कम ध्यान)
(v) Paranoia (अत्यधिक वहमी होना)
(vi) Psychasthenia (निरर्थक डर)
(vii) Schizophrenia (विचार शक्ति और क्रिया)
(viii) Hypomania (केन्द्रित होने की असमर्थता)
(ix) Masculinity–Femininity (पुलिंग एवम् स्त्रीलिंग रुचियाँ)

इस प्रश्नावली में पदो की सख्या ५५० हैं। इस प्रश्नावली से उपरोक्त ६ मानसिक बीमारियों का अध्ययन किया जा सकता हैं।

(४) बर्नरीयूटर व्यक्तित्व प्रश्नावली

Bernreuter Personality Inventory

यह प्रश्नावली प्रथम बार १६३२ में प्रकाशित हुई और इसके पश्चात् इसका अत्यन्त प्रयोग हुआ है। इसके चार मुख्य पक्षों का मापन किया जा सकता है।

(i) Neuroticism
(ii) Self Sufficiency
(iii) Introversion
(iv) Dominance

उपरोक्त चार पक्षों के आधार पर व्यक्तित्व का स्वरूप स्पष्ट हो सकता हैं।

प्रक्षेपण विधि

Projective Techniques

व्यक्तित्व मापन के लिए प्रक्षेपन विधि प्रश्नावली विधि से पूर्ण रूपेण भिन्न है। प्रक्षेपन विधियाँ इस मान्यता पर आधारित हैं कि व्यक्ति की अव्यवस्थित उत्तेजनाओं से उत्पन्न प्रतिक्रियाएँ उसकी इच्छाओं, मान्यताओं, सम्बन्धों और प्रवृत्तियों के द्वारा प्रभावित होती है।[1]

---

1. The projective techniques are based on the bypothesis that an individual's responses to an 'unstructured' stimulus are influenced by his needs, motives, fears, expectations and concerns.'

Jim C. Nunnally, Tests and Measurements, McGraw Hill Book Co., 1959, p. 338.

प्रक्षेपण (Projection) का अर्थ उस प्रवृत्ति (tendency) से है जिसमें एक व्यक्ति स्वयं के अवांछित भावनाओं, विचारों, सम्बन्धों को दूसरे व्यक्तियों में देखता है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति स्वयं बदमाश अथवा अभद्र है—वह इस बदमाशी और अभद्रता को दूसरे व्यक्ति में देखता है। इसका अर्थ हुआ कि वह व्यक्ति स्वयं की भावनाओं को दूसरे व्यक्ति में प्रक्षेपित करता है।

सामान्यतया हम निम्नलिखित प्रक्षेपण परीक्षणों को मुख्य स्थान देते हैं.—

(१) रोशा विधि

Rorschah Technique

इस विधि का सबसे अधिक प्रयोग होता है। इस विधि का आरम्भ प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् स्विस मनोविश्लेषक हरमन रोशा (Herman Rorschach) ने किया। प्रारम्भ में इस विधि का प्रयोग मानसिक पीड़ा वाले रोगियों पर ही हुआ था। परन्तु बाद में सामान्य लोगों के व्यक्तित्व मापन के लिए भी प्रयोग होने लगा। इस परीक्षण में १० स्याही के धब्बों से युक्त कार्डों का प्रयोग किया जाता है। इस परीक्षण का सही मूल्यांकन परीक्षक की सफलता पर निर्भर करता है। सामान्य रूप से परीक्षक और प्रयोज्य का सम्बन्ध विश्वास पर आधारित होना चाहिए। इसके पश्चात प्रयोज्य (Subject) को आराम से बैठा कर परीक्षक निम्नलिखित वाक्य बोलता है—"लोग सभी चीजों को इन स्याही के धब्बों में देखते हैं; अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम क्या देखते हो, यह इसके द्वारा आप क्या सोचते हैं।" इस प्रकार प्रयोज्य को एक के पश्चात दूसरा और इस प्रकार दसों कार्ड दे दिये जाते हैं। परीक्षक प्रयोज्य को बराबर कार्ड देखने के लिए उत्तेजित करता रहता है।

कुछ वर्गीकरणों का क्रम इस प्रकार होता है:—

(१) मानव सम्बन्धी (Human)

(२) शरीर सम्बन्धी (Human Detail)

(३) पशु सम्बन्धी (Animal)

(४) शारीरिक ढाँचा (Anatomy)

(५) वस्त्र सम्बन्धी (Clothing)

(६) प्रकृति सम्बन्धी (Nature)

(७) यौन सम्बन्धी (Sex)

(८) दृश्यावली सम्बन्धी (Landscape)

(९) भोजन सम्बन्धी (Food)

यदि एक व्यक्ति अपने सभी उत्तर पशु सम्बन्धी दे तो वह व्यक्ति कम बुद्धि का है।

रोशा परीक्षण की विश्वसनीयता सबसे अधिक है। जहाँ तक वैधता का प्रश्न है वह भी अन्य परीक्षणों की तुलना मे अधिक है।

(२) बाल चित्त आत्मज्ञान परीक्षण
The Children's Apperception Test (CAT)

इस प्रक्षेपण विधि से तीन वर्ष से दस वर्ष तक के बालकों का व्यक्तित्व मापन किया जा सकता है। इस परीक्षण को लिओपोल्ड बैलक (Leopold Bellak) ने तैयार किया था। बैलक[1] के शब्दों में यह परीक्षा एक प्रक्षेपण विधि है और इसके द्वारा बालक के व्यक्तित्व का मापन किया जा सकता है। इस परीक्षा में दस चित्र हैं। इन चित्रों में विभिन्न पशुओं को अंकित गया है। इस परीक्षा को इस प्रकार में आलेखित किया गया है जिससे बालक के सम्बन्धों का ज्ञान हो सके। इसके अतिरिक्त बालक की क्रोधी भावनाएँ, प्रौढ़ों द्वारा स्वीकृति, रात्रि के समय भय, हस्तमैथुन, माता पिता का बालक के प्रति व्यवहार आदि सभी तथ्य इस परीक्षा द्वारा मालूम किया जा सकता है।

अत: ऐसा विश्वास किया जाता है कि सी. ए. टी. बालक के व्यवहार को जानने में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है। बालक का परिवार में, समूह मे, शाला में कैसा व्यवहार है और उसे क्या क्या व्यवहारिक कठिनाईयाँ हैं, इन सब तथ्यों का ज्ञान हमें इस परीक्षा द्वारा हो सकता है। इस प्रकार यह परीक्षा मनोवैज्ञानिकों, मनोविश्लेषकों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी है।

इस परीक्षा में बालक को चित्रित जानवरों के आधार पर प्रदर्शित स्थिति पर कहानी बनानी होती है। परीक्षा मे जानवरों पर कहानी इसलिए बनवाई जाती है क्योंकि बालक मानव आकृतियों की अपेक्षा जानवर आकृतियो से अधिक परिचित होता है। बैलक[2] के शब्दों मे, "बालक के मनोविश्लेषणात्मक अनुभव के आधार पर यह माना गया कि बालक जानवरों से जितनी शीघ्र एक रूपता स्थापित करता है उतना मानवीय आकृतियों से नही।

---

1. The Children's Apperception Test is a projective method or as we prefer to call it an apperceptive method of investigating personality by studying the dynamic meaningfulness of individual differences in the perception of standard stimuli.

Leopoled Bellak, The Thematic Apperception Test and the children's Apperception Test in clinical use, p. 149.

2. According to Bellak "On the basis of psychoanalytic experienc with children it was expected that animals would be more readilyidentified with by children than human figures."

वैक[1], गोल्डफर्ब[2] बल्म श्रौर हन्ट[3], वेन्डर, श्रोलने[4] श्रादि सभी का मत है कि बालक जानवरों के श्राधार पर मानवीय श्राकृतियों की अपेक्षा अच्छी कहानी बना सकते हैं ।

बालक के साथ तादात्म्य स्थापित करने के पश्चात् बहुत ही मैत्रीय ढंग से निम्नलिखित निर्देश दिये जाते हैं—

"आज हम एक खेल खेलेंगे। मेरे पास कुछ चित्र हैं। इन चित्रों को मैं तुम्हें एक-एक करके दिखाऊँगा। तुम इन चित्रों को ध्यान पूर्वक देखो और बताओ कि जानवर क्या-क्या कर रहे हैं? पहले क्या हो रहा था? और अब क्या होगा? इस आधार पर तुम प्रत्येक चित्र के ऊपर एक कहानी बनाकर सुनाओ।"

निर्देश देने के पश्चात् बालक को क्रमानुसार समस्त चित्र दिखाये जाते हैं। कुछ आवश्यक बिन्दुओं पर बालक से कुछ प्रश्न भी किये जाते हैं।

तत्पश्चात् कहानी का विश्लेषण किया जाता है जो निम्नलिखित बिन्दुओं पर आधारित होता है:—

* मुख्य प्रसंग
Main Theme

इसके अन्तर्गत बालक द्वारा वर्णित कहानी का आधार देखा जाता है।

* मुख्य अभिनेता
Main Hero

कहानी का मुख्य अभिनेता कौन है।

* स्वयं सम्बन्धिकरण
Identification of Self

बालक स्वयं को किससे सम्बन्धित करता है।

---

1. "Animal pictures could produce richer stories instead of human figures."

—Vuyk

2. "Children are more interested with animals"

—Goldfarb

3. Blum and Hunt believe in the superiority of animal over human figures, because the latter might be 'too close to home,' and that the use of animal figures overcomes the child's resistance.

4. "75 perecent of children's picture books contained animal

—Olney

* परिणाम
Outcome

बालक द्वारा बनाई गई कहानी का परिणाम क्या है।

* व्याख्या
Interpretation

मनोवैज्ञानिक द्वारा सम्पूर्ण कहानी की व्याख्या। उपरोक्त बिन्दुओं को स्पष्ट करने के लिए यदि हम प्रयोग के आधार पर एक व्याख्या करें तो सम्भवतः यह पूर्णरूपेण स्पष्ट हो जायेगा।

PICTURE NO. 10

विवरण (कहानी की वास्तविकता)
Description (Originality of the story)

A baby dog lying accross the knees of an adult dog, both figures with a minimum expre.sive features. The figures are set in the foreground of a bathroom.

कहानी (बालक द्वारा)
Story (By child)

एक कुत्ता और उसका बच्चा है। वह अपने बच्चे से कह रही है कि नल बन्द कर दो क्योंकि बालटी भर चुकी है। थोड़ी देर बाद तुम नहा लेना और उसके बाद कहीं शिकार करने जाना। इतनी देर में मैं भी नहा कर आ जाऊंगी। तुम किसी के बहकावे में मत आ जाना क्योंकि हो सकता है कि वह तुम्हें खा जाये। यदि तुम्हे वह खा गया तो मुझे घर में अकेला रहना पड़ेगा तथा मेरा मन नहीं लगेगा। मैं किससे बातें करूंगी।

मुख्य प्रसंग
Main Theme

There is a dog with its pupy, the baby insists upon to go outside but the mother is very much conscious about the future danger.

मुख्य अभिनेता
Main Hero

The puppy

स्वयं सम्बन्धीकरण
Identification of Self

The child indentifies himself with puppy.

छूटी हुई आकृतियाँ
Figures Omitted

The towl, Soap case etc.

व्याकुलता का स्वरूप
Nature of Anxieties

Wants to go outside but mother apprehends some danger.

परिणाम
Outcome

The feeling of insecurity

व्याख्या
Interpretation

There seems special problem of annual stage of libido development. The child loves play and activities outside home. But there is a feeling of insecurity because the mother senses some danger. She is seen as loving and protective.[1]

अतः उपरोक्त ढंग से हम प्रत्येक कार्ड की व्याख्या कर सकते हैं और उसके पश्चात् बालक का सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मापन किया जा सकता है।

बाल-चित्त आत्म-ज्ञान परीक्षण का भारतीयकरण
Indian Adaptation of C. A. T

इस परीक्षा का भारतीयकरण डा० उमा चौधरी और डा० गुहा ने किया। चित्र संख्या २, ६, ७ में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। चित्र संख्या १, ३, ४, ५, ८, ९, १० में जो परिवर्तन किये गये हैं वे भारतीय दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि हमारे बालक पश्चिमी संस्कृति से परिचित नहीं है। इसके अतिरिक्त जिन आकृतियों को हटाया गया है वे पश्चिमी देशों में तो सामान्य हैं परन्तु हमारे देश के प्रत्येक बालक के लिए सामान्य नहीं हो सकती। अतः इस क्षेत्र में जो कार्य हुआ है वह वास्तविक रूप से भारतीय बालकों के अनुकूल है।

प्रकरणात्मक बोध परीक्षा
The Thematic Apperception Test (TAT)

प्रकरणात्मक बोध परीक्षा मुरे (Murray) और उसके साथियों ने बनाया था। इस परीक्षा के द्वारा बारह वर्ष से लेकर प्रौढ़ावस्था तक के लोगों का व्यक्तित्व

---

1 Based on writer's experiment on an child aged Nine years eleven months.

मापन किया जा सकता है। इस परीक्षा मे ३० चित्र हैं जिनसे १० लड़कों के लिए, १० लड़कियों के लिए तथा १० दोनों के लिए। वास्तव में कुछ चित्र किशोराव के लिए अधिक उपयोगी हैं। कुछ चित्रो की उपयोगिता औरतों के लिए अधिक है। चित्रों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है जिससे सवेगों का परीक्षण हो सके।

प्रयोज्य के व्यक्तित्व मापन के लिए परीक्षा से पूर्व निम्नलिखित निर्देश दिए जाते हैं:—

"I am going to show you some pictures. I want to tell you story about what is going on in each picture. What led up to it, and what will the outcome be ?"

योग और व्याख्या
Scoring and Interpretation

मुरे का योग एवम् व्याख्या करने का ढग सी. ए. टी. की तरह का ही है। कहानी का विश्लेषण निम्नलिखित विन्दुओं पर आधारित होता है:—

* मुख्य प्रसंग
Main Theme

प्रयोज्य द्वारा कहानी का आधार क्या है।

* मुख्य नायक
Main Hero

प्रत्येक चित्र का मुख्य नायक किसको बताया गया है एवम् नायक के सम्मुख क्या क्या समस्याएँ हैं।

* स्वयं सम्बन्धिकरण
Identification of Self

प्रयोज्य स्वयं को किसके साथ सम्बन्धित करता है। कभी कभी प्रयोज्य अपना सम्बन्ध कहानी के अतिरिक्त अन्य किसी से भी स्थापित कर लेता है।

इन कहानियों के आधार पर व्यक्ति के विचारों का स्पष्टीकरण होता है एवम् व्यक्ति के निराशा के भाव, यौन सम्बन्धी भाव, अतृप्त इच्छाओं एवम् सवेगों का पता लगाया जा सकता है।

एक किशोर द्वारा बनाई हुई कहानियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन चित्रों से व्यक्तित्व मापन कहाँ तक सम्भव है:—

Picture No. 6 B.M.

Description:*—*A Short eldery woman stands with her back turned **to a tall young man. The latter is booking downward with a perplexed expression.**

उपरोक्त चित्र जिसका वास्तविक विवरण ऊपर लिखा हुआ है, एक किशोर ने इस चित्र पर आधारित निम्नलिखित कहानी बनाई :—

Story:—बेटा माँ से कहता है कि मुझे मंजिल की ओर जाने दो। मुझे मत रोको। मैं अपनी मंजिल के लिए दुनिया को छोड़ दूंगा। माँ अफसोस में पड़ जाती है और कहती है कि बेटा काफी पैसा है—तू घर पर आराम से रह तुझे क्या चाहिए। परन्तु पुत्र नही मानता है। इस लड़के के पिता की मृत्यु हो चुकी है।

Picture No. 7 B.M.

Description:—A grey-haired man is looking at a younger man who is suddenly staring into space.

Story:—एक पिता पुत्र को पढ़ने जाने के लिए कहता है। परन्तु पुत्र पिता की बात को टालता तो नहीं परन्तु पुत्र की पढ़ने की दिलचस्पी नहीं होती है। पिता कहता है कि इस परीक्षा को पास करलो फिर जो करना चाहते हो कर लेना, मैं तुम्हारी मदद करूंगा।

इस प्रकार से प्रयोज्य द्वारा बनाई गई कहानियों के आधार पर उसके व्यक्तित्व का मापन किया जाता है। उपरोक्त कहानियों में प्रयोज्य (Subject) के हृदयोद्गार, भावना, माता-पिता के साथ सम्बन्ध, भावी जीवन के प्रति विचार, शैक्षिक रुचि आदि अनेक बातों का पता चलता है। इस परीक्षा की पुनः परीक्षा विश्वसनीयता ·८ है। धीरे-धीरे समय के अधिक होने से विश्वसनीयता कम होती चली जाती है।

वाक्य पूर्ति विधि
Sentence Completion Technique

व्यक्तित्व मापन का एक तरीका यह भी है। इसके अन्तर्गत प्रयोज्य के सम्मुख कुछ अपूर्ण वाक्य होते हैं और प्रयोज्य स्वयं उनकी पूर्ति करता है। इस प्रक्षेपण विधि को संक्षेप में (R. I. S. B.) अर्थात् (Rotter's Incomplete Sentence Blank) भी कहते हैं। अन्य प्रक्षेपण विधियों के अनुसार इस विधि में भी बालक अपनी इच्छाओं, अभिवृत्तियों, मत आदि का प्रदर्शन करता है। रोटर्स ने ४८ अपूर्ण वाक्य बनाये हैं उदाहरणार्थ कुछ निम्नलिखित हैं :—

(१) मैं... ......पसन्द करता हूँ।
(२) मेरे सोने का समय........ है।
(३) लड़के मुझसे............ ।
(४) रात को बिस्तर पर मुझे......... ।
(५) मुझे............ परेशान करती है।
(६) मुझे उनसे नफरत है जो........ ।
(७) मैं भविष्य मे .. .. ।
(८) कभी-कभी ... ... ।
(९) मुझे उस समय अफसोस होता है .... ।
(१०) मेरा दिल ... ... ।
(११) स्कूल में ... ... ।
(१२) अच्छा जीवन ... ... ।
(१३) मेरी सबसे बड़ी परेशानी ... ... ।
(१४) मैं चाहता हूँ कि ... ... ।
(१५) मेरे पिता जी मुझे .. .. ।
(१६) मैं छिप कर ... ... ।
(१७) मुझे चिन्ता है कि मेरे ... ... ।
(१८) अधिकतर लड़कियाँ — ... ... ।

इस आधार पर हम पारिवारिक सम्बन्ध, रुचि, आदतों, यौन सम्ब आदि सभी के विषय में मालूम कर सकते हैं।

व्यवहार का निरीक्षण
Observation of Behaviour

व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण भी व्यक्तित्वमापन का एक तरीका है उदाहरणार्थ एक बालक अत्यन्त क्रोधी है, यदि उसके खेलने का निरीक्षण कि जाये तो उसके खेलने के ढग तथा उसका साथियों से व्यवहार यह स्पष्ट कर दे कि वह बालक क्रोधी है और विचलित है। दैनिक जीवन में हम निरीक्षण द्वा बहुत सी बातों को देखते हैं और निश्चित निष्कर्षों पर पहुँचने का प्रयत्न करते हैं

मुख्य रूप से निरीक्षण तीन प्रकार का होता है:—

(i) Participant observation (हिस्सेदार होकर)

(ii) Non Participant observation (बिना भाग लिए)

वर्ग क्रम
Rating Scales

व्यक्तित्व मापन में वर्ग क्रमों का प्रयोग नवीन है। इसके द्वारा कल्पना का मापन एवम् साहस की क्षमता मापी जा सकती है। इसके अन्तर्गत गिलफर्ड-जिमरमन[1] का वर्गक्रम काफी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा व्यक्तित्व के दस लक्षणों का मापन किया जा सकता है:—

(१) सामान्य क्रियाएँ	(General Activity)
(२) सामाजिकता	(Sociability)
(३) संवेगात्मक स्थिरता	(Emotional Stability)
(४) वस्तुनिष्ठता (शकालु प्रवृत्ति)	(Objectivity : Suspiciousness)
(५) मित्रता	(Friendliness)
(६) वैचारिक समता	(Thoughtfullness)
(७) सहनशीलता	(Tolerance)
(८) पौरुषत्व	(Masculinity)
(९) प्रतिबन्ध	(Restraint)
(१०) वाद-विवाद शक्ति	(Power of Conversation)

व्यक्ति इतिहास विधि
The Case History Method

शिक्षा में व्यक्ति इतिहास विधि का बहुत अधिक महत्व है। विशिष्ट बालकों जैसे प्रतिभाशाली, अन्धे, बहरे, मन्द-बुद्धि, अपराधी, पलायनशील आदि का अध्ययन इस विधि द्वारा किया जा सकता है। स्ट्रांग[2] के शब्दों में यह विधि सब विधियों का निचोड़ है। इस विधि को यदि ढंग से प्रयुक्त किया जाये तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सी समस्याओं का पता लगाया जा सकता है और उनके उपचार के विषय में भी सोचा जा सकता है। आलपोर्ट के शब्दों में यदि इस विधि को अकुशल तरीके से प्रयुक्त किया गया तो यह अर्थहीन होगा परन्तु यदि इसे ठीक प्रकार से प्रयोग किया जावे तो यह विधि बहुत उत्तम है।[3]

---

1. J. P. Guilford and W. S. Zimmerman, The Guilford-Zimmerman Temperament Survey, Sheridan Supply Co., 1947.

2. It is a complete method—a synthesis of all methods.

3. "Unskillfully used, becomes a meaningless chronology or a confusion of fact and fiction to guess work and misinterpretation. Properly used it is the most revealing of all methods."
—Allport

व्यक्ति इतिहास की विशेषता
Characteristics of Case History

निश्चित और महत्वपूर्ण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए:—

(i) पूर्णता (Completeness)
(ii) वैधता (Validity)
(iii) निरन्तरता (Continuity)
(iv) गोपनीयता (Confidentiatity)

व्यक्ति इतिहास के महत्वपूर्ण पद
Important Steps of Case Study

(i) समस्या की स्पष्टता (Recognition of the problem)
(ii) समस्या से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्यों की प्राप्ति (Collection of data)
(iii) समस्या के कारण (Causes of the problem)
(iv) उपचार (Remedial Measures)

अध्याय ८

अपराधी बालक

Delinquent Child

Q. No. 19

(A) Define Delinquency

(B) List four delinquent behaviours commonly found in children in the secondary schools. What are the causes of such delinquent behaviour.

(C) Take any one deliquent behaviours out of the four listed by you and suggest some methods to eradicate that delinquent behaviour.

(अ) बाल अपराध की परिभाषा करो।

(ब) अपराधी बच्चों के चार व्यवहार जो कि हमारे माध्यमिक शिक्षा के स्कूल के बच्चों में पाये जाते हैं, लिखो। इन व्यवहारों के क्या कारण हैं ?

(स) आपने जो चार व्यवहार ऊपर लिखे हैं, उनमें से एक को लेकर उसको दूर करने की कुछ विधियाँ लिखो।

(राजस्थान 1967)

OR

Write short note on Delinquency

बालापराध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो

(बी. टी. 1961)

OR

How do parental fondness, indifference and overstrictness case maladjustment in a child ? Illustrable your answer with example of each.

माता पिता का अत्यधिक प्रेम, अवहेलना एवम् अत्यधिक कठोरता बालक में कुसमायोजन किस प्रकार उत्पन्न करते हैं। अपने उत्तर का उदहारण देकर पुष्टि करो।

(बी. टी. 1963)

OR

is the importance of family in the growth of Juvenile ? Discuss

बालापराध के विकास मे परिवार की क्या महत्ता है ? विवेचना करो।

Answer

निश्चित आयु स्तर से कम वह बालक अपराधी है जो राज्य अथवा स्थानीय नियमों को तोड़ता है, (यदि ये ही अपराध किसी प्रौढ़ द्वारा किये जायें तो उसे मृत्यु-दंड अथवा आजीवन कारावास भी हो सकता है।) अशोध्य है, आज्ञा का उल्लघंन करता है, चोरों, अपराधियों, वेश्यावृत्ति करने वालों, बदमाश लोगों के साथ रहता है, बेकारी अथवा अपराध मे विकसित हो रहा है, स्नानागारों होटलों, जुए खेलने के स्थानो, कुख्यात घरों को जानकर जाता है, रात्री के समय गलियों में घूमता है, रेलगाड़ी मे घूमता है, चलती गाड़ियों में चढ़ता है अथवा बिना अधिकार के किसी इन्जिन अथवा कार मे घुसता है, जानबूझकर गन्दी भाषा लिखता है अथवा बोलता है, बिना किसी कारण अथवा बिना माता पिता से पूछे घर से अनुपस्थित रहता है, दुश्चरित, अथवा व्यभिचारी अथवा अन्यायी अथवा पापी व पलायनशील है।[1]

यदि उपरोक्त दृष्टिकोण के अनुसार देखा जाये तो वह बालक जो असामाजिक कार्य करता है, अपराधी है। ऊपर दी गई परिभाषा में समस्त कृत्य असामाजिक हैं अतः *यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने किशोरों और किशोरियों के* उन कार्यों को ध्यान-पूर्वक देखें जिनके कारण वे असामाजिक कार्य करते हैं। आज हम अपने देश में इस प्रकार के बालकों की सख्या बहुत अधिक पाते हैं जो समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा है। अत. शाला के प्रत्येक अध्यापक का यह पुनीत

---

1. A delinquent is one under a certain year of age........ who

Violates a state law or local ordinance (offences which, if committed by an adult, are punishable by death, or life imprisonment, are often expected, is wayward, incorrigible, or habitually disobedient, associates with thieves, criminals, prostitutes, vagrants, or vicious persons, is growing up in idleness or crime, knowingly visits a saloon, pool ,room,' billard room, or gambling place knowingly visits a house of ill fame, wanders about streets at night wanders about railroad yards, jumps on moving trains, or enters any car or engine without authority, habitually uses or writes vile indecent or absence language, absents himself from home without just cause or without the consent of percents or guardian, is immoral or indecent or is a habitual truant.

कर्त्तव्य है कि वह इस समस्या के प्रति जागरूक हो जिससे हम अपने भावी नागरिकों को सभ्य एवम् सुसंस्कृत नागरिक बना सकें ।

बालापराध की परिभाषाएँ

Definitions of Delinquency

(१) हीली के मतानुसार वह बालक जो सामाजिक व्यवहार से विचलित होता है, अपराधी कहलाता है ।[1]

(२) कोल के अनुसार बालापराधी वह है जिसकी मूलप्रवृत्ति शक्तिशाली है और चेतन निर्बल है तथा जिसका ईगो (मन) सामान्य व्यवहार के आदर किये बिना मनोरंजन की ओर झुका हुआ है ।[2]

(३) मार्टिन एच. न्यूमेयर के शब्दों में बालापराधवह असामाजिक व्यवहार है जिसमें व्यक्तित्व और सामाजिक विघटन हो ।[3]

यदि उपरोक्त समस्त परिभाषाओं का विश्लेषण किया जाये तो हम कह सकते हैं कि अपराध वह आचरण है जो समाज के वांछित नियमों के विपरीत हो अथवा जिन कृत्यो से सामाजिक सुरक्षा को क्षति की आशंका हो ।

भारत में बालापराधियों की आयु

Age of Delinquents in India

भारतवर्ष में सामान्य रूप से बालापराध की आयु सीमा १५ वर्ष है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाना, मैसूर, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश मे बालापराधी की आयु १६ वर्ष तक निश्चित की गई है । अन्य राज्यों में बालापराध की आयु सीमा १५ वर्ष है ।

---

1. A child who deviates from the social norms of behaviours is called delinquent

—*Healy*

2. The delinquent is than an individual in whom instinctive drives are strong, conscious is week, and the ago is bent upon immediate pleasure without respects to the accepted norms of behaviour.

—*Cole*

3 Delinquency implies form of anti-social behaviour involving personal and social disorganisation.

—*Mertin H. N.umyer*

बालापराध के सिद्धान्त
Theories of Delinquency

जब कभी अपराधशीलता को जानने का प्रयास किया गया तभी अनेकों विचारधाराएँ सिद्धान्त रूप में सम्मुख आई; परन्तु जैसे-जैसे सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक प्रयोग होते गये वैसे-वैसे मौलिक मान्यताओं में अन्तर स्पष्ट होता गया। इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण मान्यताएँ निम्नलिखित हैं :—

(१) शारीरिक असामान्यता
Physical Abnormality

सर्वप्रथम सिद्धान्त रूप मे इस धारणा पर विश्वास किया जाता था कि अपराधी शारीरिक रूप से असमान्य होते हैं। अनेकों अपराधियों के अध्ययनों के के पश्चात् यह देखा गया कि अपराधी शारीरिक दृष्टि से सामान्य थे।

(२) मानसिक दोष
Mental Defect

दूसरा सैद्धान्तिक दृष्टिकोण मानसिक दोष से सम्बन्धित था। वैज्ञानिक अनुसन्धानों के द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि अपराधी होने का मुख्य कारण मानसिक दोष है। परन्तु बुद्धि परीक्षाओं के प्रयोग से यह स्पष्ट होने लगा कि केवल मात्र एक चौथाई अपराधी ही मानसिक दोषों से युक्त थे।

(३) वातावरण सम्बन्धी सिद्धान्त
Environmental Principle

इसके पश्चात् यह माना जाने लगा कि जिन बालकों को दूषित वातावरण मिलता है, वे ही अपराधी होते हैं। इस सिद्धान्त से अनुरूप उन परिवारों, घरों, मित्रों, शालाओं, पड़ौस, मोहल्लों आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन हुआ जहाँ से अधिक अपराधी आते थे। इस सिद्धान्त से समाज शास्त्रियों को अपराध के मुख्य कारणों को समझने पर्याप्त का बल मिला। परन्तु उसी समय एक महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आया कि क्या कारण है कि दो जुड़वाँ भाइयों में से जिन्हें एक ही प्रकार का वातावरण मिला है—एक अपराध करता है तथा दूसरा सामान्य सामाजिक जीवन व्यतीत करता है। यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर वातावरण सिद्धान्तवादियों के पास नहीं है तथापि इस सिद्धान्त में सत्यता के अंश बहुत हैं। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अपराध की पृष्ठभूमि में केवल वातावरण ही मात्र कारण नहीं है।

(४) व्यक्तित्व सिद्धान्त
Personality Theory

वातावरण सिद्धान्त के पश्चात् यह माना जाने लगा है कि अपराधी का विशेष व्यक्तित्व होता है। परन्तु सम्भवतः यह सिद्धान्त भी अपने मे अपूर्ण है

क्योंकि व्यक्तित्व दोष (Personality defect) के पीछे क्या कारण है—इस का उत्तर इस सिद्धान्त द्वारा प्राप्त नहीं होता।

चाहे हम एक सिद्धान्त को मूल रूप प्रदान करें अथवा अनेकों सिद्धान्तों परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कोई भी अपराधी रूप में पैदा होता है बल्कि अपराधी बनाया जाता है।[1]

अपराधी बालक की विशेषताएं
Characteristics of the Delinquent child

(१) मानसिक क्षमता
Mental Capacity

अपराधी बालक शैक्षिक और मानसिक दृष्टि से पिछड़े हुए होते हैं। साधारणतया ऐसा माना जाता है अपराधी किशोर मानसिक दृष्टि से एक वर्ष और शैक्षिक दृष्टि से तीन वर्ष तक पिछड़े हुए होते हैं। एक प्रयोग के आधार पर यह पता चला कि अपराधी बालक २·८ से ५·५ वर्ष तक शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए थे। उनकी औसत वास्तविक आयु १४·५ वर्ष थी परन्तु उनकी औसत मानसिक आयु १३ वर्ष थी। ग्यूइक (Glueck) के अध्ययनों से भी ये ही बात स्पष्ट होती है। अपराधी बालक शाला से घृणा करता है और उसे यथाशीघ्र छोड़ने का इच्छुक रहता है।

(२) मौखिक योग्यता की कमी
Lack of Mental Abilities

अपराधी बालक में सामान्य बालक की अपेक्षा मौखिक योग्यता की कमी होती है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इस प्रकार के बालक में इस विशिष्ट योग्यता की कमी हो और उनके सीखने की अभिवृत्ति न हो।[2] इस प्रकार के बालक अत्यधिक चंचल होते हैं और शान्त बैठना उनके सामर्थ्य शक्ति के बाहर है।

(३) व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन
Personal and Social Adjustment

अपराधियों को समायोजन सम्बन्धी अनेकों कठिनाइयाँ होती हैं। सामान्य समायोजन की दृष्टि से ये बालक कुसमायोजित होते हैं परन्तु जहाँ तक सामाजिक

---

1. Delinquents are made not born.
Luella Cole, Psychology of Adolescence, Rinehart and Winston, New York, 1961 P. 464.

2. M. Roman, J. B. Margolin and C. Harrai, 'Reading Retardation and Delinquency', National Probation and Parole Association Jonrnal, 1, 1958, P. 1-7.

ाा का प्रश्न है, उस आधार पर अपराधी बालकों में सामाजिक समायोजन की न्य क्षमता अवश्य होती है।[1] इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि राधी बालकों में व्यक्तिगत समायोजन की क्षमता कम तथा सामाजिक समायोजन क्षमता प्रायः सामान्य होती है।

) संवेगात्मक विकास

Emotional Development

अनेकों प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि अपराधी बालकों अथवा शोरों में संवेगात्मक अपरिपक्वता पाई जाती है; इस प्रकार के बालकों की वेगात्मक आयु उनकी मानसिक और वास्तविक आयु से कम होती है।[2] इस कार के बालकों में संवेगात्मक अस्थिरता भी अधिक होती है। इस प्रकार के लक अपने आपको असुरक्षित, तिरस्कृत, प्रेमहीन, हीन, मन्नाशी अपराधी महसूस रते हैं।[3]

४) अपराधी व्यक्तित्व

Delinquent Personality

अपराधी बालक अथवा किशोर में व्यक्तित्व सम्बन्धी कुछ विशेषतायें होती हैं। बालक बागी, शंकालु, स्वयं केन्द्रित, संवेगात्मक रूप से अस्थिर, बहिर्मुखी, नाशक वृत्ति वाले होते हैं। हेथावे तथा मोनाकशी[4] के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अपराधी बालकों के व्यक्तित्व में तथा सामान्य बालकों के व्यक्तित्व के लक्षणों में कितना अन्तर है। इसी अध्ययन के अन्तर्गत व्यक्तित्व मापने के लिए (MMPI) एम. एम. पी. आई. का प्रयोग किया गया। अपराधी किशोर और किशोरियों को पुलिस रिकार्ड के आधार अध्ययन में सम्मिलित किया गया जिसमें लड़कों की संख्या १८२ एवं लड़कियों की संख्या १४० थी; इन अपराधियों की तुलना २०० सामान्य लड़कों तथा २०० सामान्य लड़कियों से की गई, जिनकी व्यवहार सम्बन्धी कोई शिकायत नहीं थी। अपराधी समूह में व्यक्तित्व सम्बन्धी अनेकों लक्षण ज्ञात हुए जैसे बहिर्मुखी, विनाशकारी, शंकालु, उत्तरदायित्वहीन, उद्दत प्रवृत्तियाँ आदि।

1. E. A. Hunkleman, "A Comperative Investigation of Difference in Personality Adjustment of Delinquents and Non-delinquents", Journal of Educational Research, 46, 19658, P. 595.

2. Durea and Assum, "The Relation of Personality Traits as Differentiating Delinquent and Non Delinquent Girls", Journal of Genetic Psychology, 72, 1948, P. 307.

3. F. T. Gatling, "F ... Using Rosenzweig's Classification System ... Social Psychology, 45, 1950, P.

4. S. R. ... in the Study of ... Review, 17, 1952, P.

उपरोक्त अपराधी बालकों की विशेषताओं के आधार पर यह कहा सकता है। अपराधी बालकों तथा सामान्य बालकों में मानसिक, शारीरिक और सामाजिक अन्तर विशेष नहीं होता बल्कि मूल अन्तर संवेगात्मक अपरिपक्वता एवं अस्थिरता, मनाशा (Frustration) आदि में होता है जिसके कारण से अपराधी बालकों में कुसमायोजन हो जाता है और इसी कारण वे घर, शाला और समाज में व्यवस्थित नहीं हो पाते तथा असामाजिक कार्य करते हैं।

बालापराध के कारण
Causes of Juvenile Delinquency

अपराध बहुत ही पेचीदा विषय है, यदि हम इसे बारीकी से देखने का प्रयास करें तो हम यह कह सकते हैं कि यह जीवन का एक तरीका है जो शनैः शनैः बालक में विकसित होता है और धीरे-धीरे बालक को असामाजिक कार्य करने के लिये बाध्य करता है। इसीलिए बालापराध के कारण को किसी निश्चित सीमा में बाँधना अत्यन्त कठिन है फिर भी कुछ मूल कारण इस प्रकार के अवश्य हैं जिन्हें हम बालापराध के कारण कह सकते हैं।[1] बालापराध के कारणों को मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है :—

* व्यक्तिगत कारण
Individualistic Causes

** सामाजिक-वातावरण सम्बन्धीकारण
Social-Environment Causes

अपराध के जितने भी मुख्य कारण हैं उन सभी को उपरोक्त दो मुख्य कारणों में सम्मिलित किया जा सकता है।

* व्यक्तिगत कारण
Individualistic Causes

इस श्रेणी में निम्नलिखित मुख्य-मुख्य कारणों को रखा जा सकता है:—

(१) शारीरिक कारण
Physical Causes

शारीरिक कारण का अर्थ है शरीर-सम्बन्धी कोई भी दोष। यदि बालक में कोई शारीरिक दोष होता है तो बालक अपने में कमी अनुभव करता है। शनैः शनैः बालक में हीनता की भावना घर कर लेती हैं। बालक इन कमियों के लिये समाज को दोषी ठहराता है और परिणामस्वरूप असामाजिक कार्य करने लगता है। दूसरे असामाजिक कार्यों का कारण यह भी है कि समाज बालक के दोषों की

1. पूर्ण विवरण के लिए तालिका नं० ८:१ देखिये।

घर (Home)	शाला (School)	(Neighbourhood)	
१. गरीबी २. परिवार के सदस्य यदि अपराधी हों अथवा रहे हों। ३. विघटित घर ४. यदि परिवार में किसी को सज़ा मिली हो। ५. माता-पिता की संवेगात्मक अस्थिरता। ६. पारिवारिक अनुशासन-हीनता। ७. बालक को परिवार द्वारा तिरस्कार। ८. माता-पिता द्वारा बालक की उपेक्षा।	१. शाला के प्रति अरुचि। २. पलायनशीलता ३. कक्षा द्वारा तिरस्कार ४. अध्यापक का व्यवहार। ५. सहगामी क्रियाओं की कमी ६. दोषपूर्ण शिक्षण विधियाँ	१. अपराधी व्यक्ति का निवासस्थान। २. वेश्यालय। ३. सिनेमागृहों का होना ४. मदिरालयों का होना ५. पड़ौसियों की असामाजिक कार्यों में रुचि।	१. हीनता की भावना २. असुरक्षा की भावना ३. भग्नाशा। ४. संवेगात्मक अस्थिरता ५. माता-पिता, शाला, समाज आदि के प्रति क्रोध। ६. अपराधियों में स्वयं के दर्शन करने की प्रवृत्ति। ७. असामाजिक कार्यों में संवेगात्मक संतुष्टि ८. समाज के प्रति विद्रोह की भावना।

सहानुभूति से नहीं देखता बल्कि उस पर हँसता है जिसके कारण बालक में हीन की भावनाएँ घर कर लेती हैं और वह विनाशकारी प्रवृत्तियों में रुचि लेने लगता है ।

(२) बौद्धिक कारण

Intellectual Cause

मन्द-बुद्धि बालक को असामाजिक कार्य करने के लिये बहुत शीघ्र प्रेरित किया जा सकता है । गोडार्ड (Goddard) के मतानुसार अपराधी होने का सबसे मुख्य कारण मन्द बुद्धि है । यदि अपराधी बालकों को बौद्धिक पक्ष की दृष्टि से देखा जाये तो इन बालकों की औसत बुद्धि लब्धि ८५ से ९० के बीच होती है ।

यहाँ यह समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि मन्दबुद्धि ही केवलमात्र कारण नहीं है जो अपराधी होने के लिए पूर्णरूपेण उत्तरदायी ठहराया जावे क्योंकि सामान्यतया अपराधी बालकों में दो तिहाई बालक इस प्रकार के होते हैं जिनकी बुद्धि लब्धि १०० से १२० अथवा इससे भी ऊपर होती है ।

(३) शारीरिक कारण

Physical Cause

यदि बालक का शारीरिक और गामक (Physical & Motor) विकास की गति तीव्र अथवा कम है तो समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं । विकास की गति तेज होने से बालक अपनी बची हुई शक्ति (Surplus Energy) को असामाजिक कार्यों में लगा सकता है जैसे शाला में मारपीट करना, कुर्सी मेज तोड़ना, बगीचे को नष्ट करना आदि । इन सब कार्यों के करने से शक्ति का निकास (Outlet of energy) होता है तथा सन्तोष मिलता है । यदि बालक का शारीरिक विकास मन्द है तो बच्चे में हीन भावनायें घर कर लेती हैं । कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों ही प्रकार के विकास (मन्द अथवा तेज) बच्चे को अपराधी बनाने में सहायक हो सकते हैं ।

** सामाजिक वातावरण सम्बन्धी कारण

Social Environmental Causes

सामाजिक वातावरण को सुगमता की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

(१) घर का वातावरण
(Home Environment)

(२) समाज का वातावरण
(Social Environment)

(१) घर का वातावरण
Home Environment

ग्लुयक और ग्लुयक (Clueck & Clueck) द्वारा किये गये अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि बालक को अपराधी बनाने का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व घर का है। इन्होंने ५०० अपराधी बालकों तथा ५०० ऐसे बालक जो अपराधी नहीं थे, उन पर अध्ययन किया। दोनों प्रकार के बालकों में आयु, सामान्य बुद्धि, निवास आदि की एकरूपता का ध्यान रक्खा गया। इन दोनों समूहों की ४०० से अधिक लक्षणों (Traits) की तुलना की गई। इस तुलना के आधार पर निम्नलिखित मुख्य साधन भूत तथ्यों का विकास किया गया:—

१. पिता द्वारा पुत्र पर अनुशासन (Discipline of by Father)
२. माता द्वारा देख-रेख (Supervision by Mother)
३. पुत्र द्वारा पिता के प्रति प्रेम (Affection of Father by Boy)
४. माता का प्रेम (Affection of mother)
५. परिवार की एकता (Cohisiveness of Family)

परिवार अपराधी बनाने में कहाँ तक जिम्मेदार है यह तालिका न० ८:२ में स्पष्ट किया गया है।

तालिका न० ८ : २

विवरण (Contents)	योग (Score)
1. Discipline of Boy by Father	
Firm but kindly	9·3
Lax	59·8
Erratic or Over Strict	71·8
2. Supervision by Mother	
Suitable..	9·9
Fair	57·5
Unsuitable..	83·2
3. Affection of Father by Boy	
Warm (Including Over-protective	33·8
Indifferent or Hostile	75·9
4. Affection of Mother	
Warm (Including Over-protective)	43·1
Indiffernnt or Hostile	86·2
5. Cohisiveness of Family	
Marked..	20 6
Some	61·3
None..	96·9

ग्लुयक ने इन पाचों[1] घटकों को सामाजिक पृष्ठभूमि में रक्खा है। तालि
न० ८:२ के आधार पर अध्ययन करके निम्नलिखित तालिका से यह पता ल
जा सकता है कि बालक के अपराधी होने के कितने अवसर हैं

Score Class Chances of Delinquency	Delinquency Rate	Non-Delinquency Rate	Total Num of Case
Low Chances (Less than 200)	8·2 %	91.8 %	293
About Even Chances (200—300)	54·0 %	46·0 %	300
High Chances (300 and Over)	89 2 %	10·8 %	297

यदि योग २०० से कम है तो अपराधी होने के ८·२% अवसर हैं।

यदि योग २००—३०० के बीच हो तो अपराधी होने के ५४·०% अवसर हैं।

यदि योग ३०० से ऊपर है तो अपराधी होने के ८९·२% अवसर हैं।

उदाहरणार्थ यदि एक बालक पिता द्वारा पुत्र पर अनुशासन में ११८ योग प्राप्त करता है। माता द्वारा देख-रेख में ८३·२ योग प्राप्त करता है। पु द्वारा पिता के प्रति प्रेम में ७५·६ योग प्राप्त करता है। माता के प्रेम में ४१ योग प्राप्त करता है। और परिवार की एकता में ६१·३ का योग प्राप्त करता है। अब देखना है कि पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर बालक के अपराधी होने के कितने अवसर हैं? यह जानने के लिए हम ऊपर लिखे योगों को जोड़कर यह अन्दाजा लगा सकते हैं कि बालक अपराधी होगा अथवा नहीं.—

११८ + ८३·२ + ७५·६ + ४१·१ + ६१·३ = ३२३·३ कुल योग

उपरोक्त तालिका के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालक ने ३०० से अधिक योग प्राप्त किया है अतः बालक के अपराधी होने के अवसर ८९·२% अर्थात् बहुत अधिक हैं। इस प्रकार इन तालिकाओं से पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार बालक के अपराधी होने की भविष्यवाणी भी आ सकती है। यह बहुत

---

1. [illegible] T. Glueck "Towards Improving the Identificati (२) कम." The Journal of Criminal Law, Criminology and [illegible] U. S. A., June 1952, p. 165-166.

ही महत्वपूर्ण तथा रुचिपूर्ण बात है कि ग्लुयक यह दावा करते हैं कि ६ वर्ष की आयु में भी यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि वह बालक अपराधी है अथवा होगा और अपराधी होने का अवसर है। ग्लुयक की तालिकाओं को फ्रान्स, जापान, अमेरिका तथा भारतवर्ष (बम्बई) में कार्य रूप मे परिणित किया गया है। इनका मापन ८०% सही है। जापान में इस तालिका ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया, वहाँ ८७% अपराधी बालकों को जो अपराधी नहीं थे, इस तालिका द्वारा जाना गया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि घर का वातावरण बालक को अपराधी बनाने मे काफी सहायक होता है। घर के वातावरण मे निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिन्दुओ को समाविष्ठ किया जा सकता है:—

(घ) विघटित घर
Broken Homes

मे वे घर होते हैं जहा का वातावरण दूषित होता है। इन परिवारो मे निम्नलिखित अवस्थाएँ होती हैं.—

१. सौतेला पिता अथवा माता (Step father or mother)
२. माता पिता में झगड़ा (Quarrals among parents)
३. अपेक्षित घर (Rejected Homes)
४ तलाक (Divorce)
५. भीड़ वाले परिवार (Conjusted Homes)
६. अवैधानिक रूप से विवाहित माता पिता
(Parents illegally married)
७. शराबी माँ (Drunkard mother)
८. शराबी पिता (Drunkard Father)
९. झगड़ालू वातावरण (Quarralled Environment)
१०. पक्षपातपूर्ण व्यवहार (Favouristic Behaviour)

डा० बरनार्ड ग्लुयक के अनुसार घर का वातावरण बालक को अपराधी बनाने मे बहुत सहायक होता है। शैल्डन ग्लुयक के मतानुसार घर का वातावरण बच्चे के व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करता है।

विलियम मेक्कार्ड, जान मेककार्ड इरविंग के कोला[1] के शब्दों मे अपराधशीलता घर से प्रारम्भ होती है। मेककार्ड आदि ने अपराधी बालकों पर

1. William McCa.d, Joan McCard and Irving K. Kola, Origins of Crime, Columbia University Press, N. Y., 1959, p. 153.

अध्ययन किया और उन्होंने माता को उत्तरदायी ठहराया। तालिका न० ८:३ के अनुसार माता की अभिवृत्ति बालक को अधिक प्रभावित करती है।

तालिका न० ८ : ३

माता की अभिवृत्ति (Attitude of Mother)	लड़कों द्वारा किये गये अपराधों की प्रतिशत संख्या			
	सम्पत्ति सम्बन्धी	व्यक्तियों के खिलाफ	यौन सम्बन्धी	यातायात सम्बन्धी
उपेक्षित (Neglecting)	64	16	16	16
सहिष्णु (Passive)	45	0	14	50
क्रूर (Cruel)	32	5	0	27
अत्यधिक देखभाल (Over protection)	31	10	5	42
प्रेमपूर्ण (Loving)	27	2	2	20
अन्य माताएँ (Other Mothers)	34	6	5	28

(ब) निर्धनता
Poverty

व्यक्ति स्वयं अपराधी नहीं होता बल्कि समाज व्यक्ति को अपराधी होने के लिये बाध्य करता है, यह दार्शनिक तथ्य नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक है। मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान इस तथ्य के साक्षी हैं। लोवेल जे. कार (Lowell J. Cart) तथा डेविड बोगन (David Bogen) द्वारा किये गये अनुसन्धानों से यह स्पष्ट होता है कि बालापराध और आर्थिक स्तर में धनात्मक सहसम्बन्ध है।[1]

1. Young, Social Treatment in Probation & Delinquency, P. 17.

(स) माता-पिता की अत्यधिक महत्वाकांक्षायें
High Ambitions of the Parents

ऐसे बहुत से माता-पिता होते हैं जो अपने बालकों से बहुत अधिक आशायें रखते हैं जबकि बच्चे में इतनी क्षमता नहीं होती। जब बच्चा प्रयास करने में भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता तो माता-पिता उसे हीन समझने लगते हैं। इसका बच्चे पर कुप्रभाव पड़ता है और वह घर के वातावरण मे घुटा-घुटा अनुभव करने लगता है। घर से उपेक्षित हो वह बाहरी वातावरण में सन्तोष अनुभव करता है, और शनैः शनैः असामाजिक कार्य करने लगता है।

(द) माता-पिता का तुलनात्मक व्यवहार
Comparing Attitude of Parents

प्रायः माता-पिता अपने बच्चों की तुलना अन्य बच्चो से करते हैं और बालक को सदैव उलाहना देते रहते हैं। जब भी बच्चे से कोई गलती होती है तो सारा परिवार उसके पीछे पड़ जाता है। परिणामस्वरूप बालक मे ग्रन्थियाँ पड़ने लगती हैं और बालक घर के वातावरण से तंग आकर एक दिन भाग खड़ा होता है और इस प्रकार अपराधी हो जाता है।

(२) समाज का वातावरण
Social Environment

घर के बाहर के वातावरण से हमारा तात्पर्य समाज के वातावरण से है। घर के अतिरिक्त कुछ सामाजिक कारण भी हैं जो बालक को अपराधी बनाने में सहायक होते हैं :—

(i) घर के चारों ओर दूषित वातावरण
Defective Environment Around the Home

कुछ घर ऐसे भी होते हैं जिनके चारों ओर दूषित वातावरण होता है। इस दूषित वातावरण का बालक पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है और किशोरावस्था में किशोर और किशोरी इस वातावरण की ओर सरलता से आकर्षित हो जाते हैं।

(ii) कामुक चलचित्र
Films Full of Sexuality

कुछ चलचित्र ऐसे भी होते हैं जिनके अन्तर्गत नग्न प्रदर्शन होते हैं। किशोरावस्था मे बालक और बालिकायें इस प्रकार के चलचित्रों की ओर शीघ्रता से आकर्षित होते हैं क्योंकि इस अवस्था मे यौन विकास अपनी पराकाष्ठा पर होता है। नग्न-चलचित्रों के देखने से बालक और बालिकाओं में कामोत्तेजना जाग्रत होने लगती है। परिणामस्वरूप बालक और बालिकायें यौन-सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न करने लगते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण कुमारी माताओं का होना है,

जिसके कारण उनका भावी जीवन अन्धकारमय हो जाता है। लड़कों में समलिंगी (Homo sexuality) सम्बन्धों का कारण भी कुछ इन्हीं बातों पर निर्भर करता है।

(iii) शालाओं में चेतावनीपूर्ण क्रियाओं की कमी
Lack of challenging Activities in the schools

यदि शालाओं में बच्चों की मानसिक योग्यताओं के अनुरूप क्रियाओं की कमी होती है तो भी बच्चों के अपराधी होने की सम्भावनायें हो सकती हैं अक्सर देखा गया है कि प्रतिभाशाली बालक साधारण स्कूलों में पढ़ने के कारण अपराधी हो जाते हैं। इसका एक मात्र कारण यही है कि शालाओं में चेतावनीपूर्ण क्रियाओं की कमी होती है।

(iv) दूषित परीक्षा प्रणाली
Defective Examination System

दूषित परीक्षा प्रणाली होने के कारण बालक परीक्षाओं में असफल हो जाते हैं। इसके कारण बालकों को आत्महत्या अथवा घर से भागते देखा गया है। बहुत से बालक परीक्षाओं में गलत साधनों का प्रयोग भी करते हैं। इन सभी असामाजिक कार्यों का कारण दूषित परीक्षा पद्धति है।

(v) माता-पिता के मित्रों का आचार सम्बन्धी स्तर गिरा होना
Lack of Ethical standard of Parent's Friends

कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि माता-पिता के मित्र अभद्र मजाक करते हैं। इसके अतिरिक्त वे ऐसी बातें भी करते हैं जो असामाजिक व्यवस्था सम्बन्धी होती हैं जैसे काला बाजारी करना (Black Marketing), सरकार को धोखा देना, चोर बाजारी के चोरी [illegible] आदि। माता-पिता तथा उनके मित्रों के बीच हुए वार्तालाप को बच्चा बहुत ध्यान से सुनता है और इसी कारण वह भी छोटे-छोटे अपराधों को करने में संकोच नहीं करता।

अपराधी व्यवहार को दूर करने की विधियाँ
Methods to Eradicate Delinquent Behaviour

अपने देश में अभी तक बाल अपराधी व्यवहार को दूर करना बहुत कठिन [illegible] है [illegible] कि [illegible] बहुत कमी है। [illegible] बाल अपराधी बालकों का सुधार [illegible] है। [illegible] को दूर करना है [illegible] (Guidance worker) [illegible] (Guidance Laboratory) का [illegible] आवश्यक है। [illegible] (Psychotherapy) [illegible] (Diagn

अध्याय ६

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

Mental Hygiene

Q. No. 20

Define 'Mental Hygiene'. What is its place in Educational Psychology ?

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ क्या है ? इसका शिक्षा मनोविज्ञान में क्या स्थान है ?

(राजस्थान 1967)

OR

What are the fundamental factors of mental hygiene in a school ?

पाठशाला में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के कौन-कौन से तत्वों का पाया जाना आवश्यक है ?

(पंजाब (पूरक) 1957)

OR

Write short note on-Mental Hygiene.

संक्षिप्त टिप्पणी लिखो–मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

(कर्नाटक 1962)
(इलाहाबाद 1959)

Answer

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ

Meaning of Mental Hygiene

साधारणतया मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान् वह विज्ञान है जो व्यक्ति के संतुलित जीवन यापन करने की दशाओं का अध्ययन करता है। क्रो और क्रो के मतानुसार मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के तीन कार्य हैं:—

१. मानसिक रोग की रोक थाम (The Prevention of mental Disorder)

२. मानसिक रूप से स्वस्थ करना (maintenance of mental health)

३. मानसिक रोग का उपचार (Cure of mental Illness)

इस आधार पर हम कह सकते है कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का

अध्याय ६

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

Mental Hygiene

20

:fine 'Mental Hygiene'. What is its place in Educational ogy ?

ानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ क्या है ? इसका शिक्षा मनोविज्ञान में t है ?

(राजस्थान 1967)

OR

hat are the fundamental factors of mental hygiene in a ?

ाठशाला में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के कौन-कौन से तत्वों का पाया वश्यक है ?

(पंजाब (पूरक) 1957)

OR

'rite short note on-Mental Hygiene.

ंक्षिप्त टिप्पणी लिखो–मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान

(कर्नाटक 1962)

(इलाहाबाद 1959)

स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ

'मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानसिक स्वाथ्य रखने का विज्ञान और कला है जो पागलपन और स्नायु रोगों को बढ़ने से रोकता है। सामान्य स्वास्थ्य विज्ञान केवल मात्र शारीरिक स्वास्थ्य—स्वास्थ्य की ही देखभाल करता है परन्तु मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मे मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों सम्मिलित हैं क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य के बिना सम्भव नहीं है'।[1]

संक्षेप मे मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानसिक रोगों का पता लगाता है, भावी रोगों को होने से रोकता है, तथा मानव को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने की समस्त दशाओं का अध्ययन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का स्थान
The Place of Mental Hygiene in Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मनोविवैज्ञानिक परिवेश में शिक्षा प्रक्रिया का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत हम बालकों की उन समस्त दशाओं का अध्ययन करते हैं जो शैक्षिक अनुभूति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालती हैं। अतः शिक्षा मनोविज्ञान छात्रों के शैक्षिक व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करता है।

शैक्षिक व्यवहार में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों का अध्ययन किया जाता है। यदि बालक और अध्यापक दोनो मानसिक रूप से स्वस्थ नही होंगे तो शिक्षा प्रक्रिया नष्ट हो जायेगी। शिक्षा मनोविज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान इसीलिए है कि वह मानसिक बीमारियों, कु-समायोजनों का अध्ययन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान बालक की रुचि, बुद्धि, व्यक्तित्व, संवेगात्मक और मानसिक स्थिति आदि का अध्ययन करता है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मे मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है और मानसिक रोगो की रोक थाम की जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने मे तथा मानसिक रोगों एवं समायोजन दोषों को दूर करने में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की विशेष रुचि होती है। इसी विज्ञान की सहायता से मानसिक रूप से स्वस्थ एवं अस्वस्थ अध्यापकों का पता लगाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनो-

1. Mental Hygiene is the science and are of maintaining mental health and preventing the development of insanity and neurosis. General hygiene cares for physical health only but mental hygiene includes mental health as well as physical health because mental health is not possible without physical health.
—Webster's Dictionary

'मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानसिक स्वाम्य रखने का विज्ञान और कला
े पागलपन और स्नायु रोगों को बढ़ने से रोकता है। सामान्य स्वास्थ्य
ान केवल मात्र शारीरिक स्वास्थ्य—स्वास्थ्य की ही देखभाल करता है परन्तु
सिक स्वास्थ्य विज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनो
मलित हैं क्योकि मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य के बिना सम्भव
है'।[1]

संक्षेप में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानसिक रोगो का पता लगाता है,
ो रोगों को होने से रोकता है, तथा मानव को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने की
त दशाओं का अध्ययन करता है।

ा मनोविज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का स्थान
e Place of Mental Hygiene in Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मनोविवैज्ञानिक परिवेश
िक्षा प्रक्रिया का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत हम बालकों की उन समस्त
ओं का अध्ययन करते हैं जो शैक्षिक अनुभूति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप
भाव डालती हैं। अतः शिक्षा मनोविज्ञान छात्रों के शैक्षिक व्यवहार का
वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

शैक्षिक व्यवहार मे शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों का अध्ययन किया जाता
यदि बालक और अध्यापक दोनो मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होंगे तो शिक्षा
्या नष्ट हो जायेगी। शिक्षा मनोविज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का
वपूर्ण स्थान इसीलिए है कि वह मानसिक बीमारियों, कुसमायोजनों का
यन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान बालक की रुचि, बुद्धि, व्यक्तित्व, सवेगात्मक और मानसिक
ि आदि का अध्ययन करता है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मे मानसिक स्वास्थ्य
करने का प्रयत्न किया जाता है और मानसिक रोगों की रोक थाम की
ी है। इसका अर्थ यह हुआ कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने मे तथा
सिक रोगों एवं समायोजन दोषों को दूर करने में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की
र रुचि होती है। इसी विज्ञान की सहायता से मानसिक रूप से स्वस्थ एवं

कार्यक्षेत्र व्यक्तियों को मानसिक रूप से स्वस्थ रखना, मानसिक रोगों की थाम करना तथा इन रोगों के उपचार करना है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की परिभाषा
Definition of Mental Hygiene

यद्यपि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की परिभाषा भिन्न मनोवैज्ञानिकों भिन्न प्रकार से की है तथापि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानव जीवन को मानसि रूप से स्वस्थ रखने का, सफलता पूर्वक जीवन यापन करने का विज्ञान है। कु हत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:—

[१] शेफर के शब्दो मे मानसिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध सभी व्यक्तियों । विस्तृत दृष्टिकोण से मानसिक स्वास्थ्य का उद्देश्य व्यक्ति का पूर्ण, सुख र्वाङ्गीण और प्रभावशाली जीवन यापन करता है।[1]

[२] क्रो और क्रो के मतानुसार मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञा जो मानव कल्याण और समस्त क्षेत्रों में मानव सम्बन्धों का अध्ययन ता है।[2]

[३] हेड्फील्ड के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य का सम्बन्ध मानसिक स्थ्य की रोकथाम और मानसिक रोगों के उपचार से है।[3]

[४] कालसनिक के शब्दों में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान उन दशाओं पुंज है जो एक व्यक्ति को दूसरों के साथ शांति पूर्ण रहने के योग्य ता है।[4]

[५] वेबस्टर शब्दकोप में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की परिभाषा निम्न- ल प्रकार से की गई है:—

---

1. "Mental hygiene has implications for all person. In the dest sense, the aim of mental hygiene is to assist every indivi- in the attainment of a fuller, happier, more harmonious and effective existence"

'मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानसिक स्वाय्य रखने का विज्ञान और कला है जो पागलपन और स्नायु रोगों को बढ़ने से रोकता है। सामान्य स्वास्थ्य विज्ञान केवल मात्र शारीरिक स्वास्थ्य—स्वास्थ्य की ही देखभाल करता है परन्तु मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों सम्मिलित हैं क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य शारीरिक स्वास्थ्य के बिना सम्भव नहीं है'।[1]

संक्षेप मे मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मानसिक रोगों का पता लगाता है, भावी रोगों को होने से रोकता है, तथा मानव को मानसिक रूप से स्वस्थ रखने की समस्त दशाओं का अध्ययन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का स्थान
The Place of Mental Hygiene in Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मनोविवैज्ञानिक परिवेश में शिक्षा प्रक्रिया का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत हम बालकों की उन समस्त दशाओं का अध्ययन करते हैं जो शैक्षिक अनुभूति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालती हैं। अतः शिक्षा मनोविज्ञान छात्रों के शैक्षिक व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करता है।

शैक्षिक व्यवहार में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनो का अध्ययन किया जाता है। यदि बालक और अध्यापक दोनों मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं होंगे तो शिक्षा प्रक्रिया नष्ट हो जायेगी। शिक्षा मनोविज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का महत्वपूर्ण *स्थान इसीलिए है कि वह मानसिक बीमारियों, कु-समायोजनों का* अध्ययन करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान बालक की रुचि, बुद्धि, व्यक्तित्व, संवेगात्मक और मानसिक स्थिति आदि का अध्ययन करता है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान मे मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है और मानसिक रोगों की रोक थाम की जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने में तथा मानसिक रोगों एव समायोजन दोषो को दूर करने मे मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान की विशेष रुचि होती है। इसी विज्ञान की सहायता से मानसिक रूप से स्वस्थ एवं अस्वस्थ अध्यापकों का पता लगाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनो-

---

1. *Mental Hygiene is the science and art of maintaining* mental health and preventing the development of insanity and neurosis. General hygiene cares for physical health only but mental hygiene includes mental health as well as physical health be- mental health is not possible without physical health.

—Webster's D

विज्ञान मे मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी समस्याओं का निराकरण करता है। दूसरे शब्दों में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान और शिक्षा मनोविज्ञान को पृथक् नहीं किया जा सकता है।

शिक्षा मनोविज्ञान मे मानसिक स्वास्थ्य का स्थान स्पष्ट करते हुए रिवलिन मत है कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान तो एक अभिवृत्ति और दृष्टिकोण है जो सायिक दृष्टि से अध्यापक को प्रभावित करता है। जैसे उसका प्रश्न पूछने का का एवं उत्तर स्वीकार करने का ढंग, परीक्षा लेने की पद्धति, क्रीडास्थल की ाओं का निरीक्षण, कक्षा की क्रियाओं में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रेरित ा, उसका विभिन्न प्रकार के जैसे चोर, उदंड, डरपोक, असामाजिक बालकों ति बर्ताव आदि।[1] इस प्रकार हम देखते है कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा विज्ञान की प्रत्यक्ष रूप से सहायता करता है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान एवम् विधियों का अध्ययन है। वोलक (wollac) के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का सम्बन्ध विज्ञानों जैसे मनोविज्ञान, बाल अध्ययन, शिक्षा, समाजशास्त्र से दो उद्देश्यों रण है :—

(१) व्यक्तिगत और सामाजिक मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा एवं उसका विकास करना।

(२) साधारण तथा गम्भीर मानसिक रोगों और शैक्षिक तथा सामाजिक कु-समायोजन को रोकना तथा उपचार करना।[2]

. "It is rather an attitude and a point of view that should in- everything the teacher does professionally : her method of questions as well as her manner of accepting answers, the ue followed in administering test and that governing her sion of playground activities; the appeals by which she stimu- ure to participate in class room activities and the measures h she resorts to bring the unruly into the line; her attitude

अन्त में हम कह सकते हैं कि मानसिक दृष्टि से स्वस्थ अध्यापक और छात्र ही शैक्षिक प्रक्रिया को सुचारु रूप प्रदान कर सकते हैं। देश का भविष्य योग्य और मानसिक रूप से स्वस्थ नागरिक ही बना सकते हैं। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान उन सभी दशाओं का क्रमिक अध्ययन है जो व्यक्ति को सुखी, सम्पन्न तथा प्रभावशाली जीवन यापन करने के योग्य बनाता है।

Q. No. 21

Why should a teacher know Mental Hygiene ? How can its knowledge help to change the school work so as to be more meaningful ?

एक अध्यापक को मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के जानने की क्यों आवश्यकता है ? इसका ज्ञान विद्यालय की पढ़ाई में क्या परिवर्तन ला सकता है जिससे वह पढ़ाई अधिक लाभदायक हो सके ? (राजस्थान 1966)

OR

What steps should an educator take to ensure mental hygiene in a school ?

मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से शिक्षक को पाठशाला में कौन-कौन से साधन अपनाने चाहिए ? (राजस्थान 1953)

Answer

मानसिक स्वास्थ्य जीवन को आनन्द प्रदान करता है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखना है। मानसिक स्वास्थ्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए आवश्यक है। चाहे घर हो, शाला हो, समुदाय हो अथवा समाज अर्थात् सम्पूर्ण जीवन मानसिक स्वास्थ्य पर आधारित है। परन्तु शाला में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का विशेष महत्व है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान और अध्यापक

Mental Hygiene and the Teacher

आज के अध्यापक का कार्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है बल्कि उसे एक प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता है जिसके द्वारा वह बालकों की समस्याओं को समझने में समर्थ हो सके। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के अध्ययन के बिना, बालकों को समझने की सामर्थ्य अध्यापक में नहीं आ सकती। इसीलिए, अध्यापकों को बालकों की समस्याओं को सही रूप में समझने की अन्तर्दृष्टि प्रदान करना और समस्याओं के समाधान का कौशल प्रदान करना, मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का कार्य है। इसके अतिरिक्त अध्यापक को यह सदैव ध्यान रखना है कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान एक साधन है और मानसिक स्वास्थ्य साध्य है। अतः अध्यापक को मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के अध्ययन द्वारा बालकों को मानसिक रूप से

स्वस्थ बनाना है। इसी कारण से एक अध्यापक को मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के जानने की आवश्यकता है।

दूसरे, अध्यापक के लिए मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का ज्ञान इसलिए भी आवश्यक है कि वह स्वयं को मानसिक रूप से स्वस्थ रख सके। अध्यापक का मानसिक स्वास्थ्य ही शैक्षिक प्रक्रिया की आधार शिला है। यदि अध्यापक मानसिक रूप से स्वस्थ होगा तो निश्चित ही बालक उससे लाभान्वित होंगे।

संक्षेप में हम यही कह सकते हैं कि आधुनिक शिक्षा का विशिष्ट उद्देश्य छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रखना है और यह तभी सम्भव है जब अध्यापक स्वयं मानसिक रूप से स्वस्थ होकर बालकों का भय, निराशा, चिन्ता व कु-समायोजन दूर कर सके। इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि अध्यापक मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन कर उसे क्रियान्वित कर सके।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का ज्ञान और विद्यालय
The Knowledge of Mental Hygiene & School

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान से अध्यापक शाला को बहुत लाभ प्रदान कर सकता है। मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान द्वारा शाला में अग्रलिखित परिवर्तन आ सकते हैं :—

(१) व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन
Personal and Social Adjustment

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान से छात्रों में व्यक्तिगत और सामाजिक समायोजन प्रदान किया जा सकता है। शाला का सम्पूर्ण वातावरण छात्रों के पारस्परिक सम्बन्धों पर ही निर्भर करता है। मानसिक रूप से स्वस्थ छात्र शाला मे समायोजित होता है परन्तु मानसिक अस्वस्थ छात्र शाला में समस्याएं पैदा कर देता है जिससे शाला का वातावरण दूषित होने की सम्भावना रहती है। कुल्हन के मतानुसार समायोजन तभी अच्छा होता है जब वह भग्नाशा अथवा संघर्षों से उत्पन्न तनावों को कम करे और भग्नाशा की दशाओं में रचनात्मक परिवर्तन लाये।[1]

(२) व्यक्तिगत भेद
Individual Differences

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान व्यक्तिगत भेदों पर आधारित समस्याओं को हल करने में सहायता प्रदान करता है। हमारी शिक्षा भी व्यक्तिगत भेदों पर आधारित

---

1. "An adjustment is relatively good if it both reduces the tension created by the conflict or frustration and makes constructive changes in the conditions causing the frustrations".

—Kuhlen

होनी नितान्त आवश्यक है। व्यक्तिगत भेदों के आधार पर शिक्षा प्रदान नहीं करने से बालक मानसिक रूप से व्यथित हो जाता है और समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का शिकार होने लगता है । मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान द्वारा इन समस्याओं की रोकथाम की जाती है। अतः इसका ज्ञान शाला को व्यक्तिगत भेदो के आधार पर शिक्षा प्रदान करने के लिए बाध्य करता है।

(३) अभिव्यक्ति और विकास

Expression and Outlet

बालकों की बची हुई शक्ति (Surplus energy) को अभिव्यक्ति और निकास द्वारा रचनात्मक कार्यों में लगाया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह नितान्त आवश्यक है कि छात्रों को अधिक से अधिक इस प्रकार के अवसर प्रदान किये जायें जिनमें विचारों को व्यक्त किया जा सके। इसके दो लाभ होंगे—प्रथम तो यह कि बची हुई शक्तियों को निकास मिलेगा दूसरा यह कि शाला का कार्य अच्छा होगा।

(४) शिक्षण विधियाँ

Methods of Teaching

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के अध्ययन से शिक्षण विधियों में काफी परिवर्तन आया है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए यह आवश्यक है कि उनके मानसिक स्तर के अनुसार शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाये जिससे वे पाठ्य वस्तु मे रुचि ले सकें। उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं मे छात्रों की मानसिक योग्यता के अनुकूल विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। आधुनिक शिक्षा पद्धति मे पर्याप्त परिवर्तन आया है और इसका श्रेय मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान को ही है।

(५) वातावरण

Environment

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान अच्छे वातावरण पर विशेष बल देता है। यदि शाला का वातावरण सामाजिक दृष्टि से सौहार्दपूर्ण और सहयोगपूर्ण होगा तो बालकों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। बालकों के पारस्परिक सम्बन्ध एवम् उनके शाला के अधिकारियों से सम्बन्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष हैं। शाला के सौहार्द-पूर्ण वातावरण से छात्रों में सुरक्षा की भावनाएँ एवं सामूहिकता की भावना का विकास होता है।

अन्त मे हम कह सकते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान से सीखने की प्रक्रिया को बल मिलता है, विद्यालय के वातावरण एवं व्यवस्था में परिवर्तन आता है, शैक्षिक प्रक्रिया अर्थपूर्ण बनती है और अध्यापक अपने मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सचेत होते हैं।

अध्याय १०

अचेतन का मनोविज्ञान

Psychology of Unconscious

Q. No. 22

What is the unconsciousness ? What part does it play in the behaviour of a person ?

अचेतन क्या है ? व्यक्ति के व्यवहार में इसका क्या कार्य है ?

(राजस्थान 1964)

OR

What bearing has the psychology of the unconsciousness mind on education ? What are the functions of a teacher from the stand point of mental hygiene ?

अचेतन मन के मनोविज्ञान का शैक्षिक दृष्टि से क्या महत्व है ? मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अध्यापक का क्या कर्तव्य है ?

(पंजाब 1954, 1957)
(सागर 1952)

OR

How can we know that unconscious exists ? Prove it briefly.

हमें यह कैसे ज्ञात होता है कि अचेतन का अस्तित्व है ? संक्षेप में प्रमाणित करो।

Answer

जैसा कि हम प्रथम अध्याय में देख चुके हैं कि मनोविज्ञान के अध्ययन केन्द्र बिन्दु अनेकों विषय रहे हैं। एक समय था जबकि मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा जाता था परन्तु फ्रायड की विचारधारा ने मनोविज्ञान में एक नवीन अध्याय जोड़ा और मनोविज्ञान को अचेतन का विज्ञान कहा जाने लगा क्योंकि मानवीय व्यवहार में अधिकतर भाग ऐसा है जो चेतन नहीं है। हम अपने दैनिक जीवन में अनेकों व्यवहार इस प्रकार के करते हैं जिनका कोई चेतन कारण नहीं है। तो प्रश्न उपस्थित होता है कि इस व्यवहार का कारण क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने के अनेकों प्रयास होते रहे परन्तु इसका उत्तर नहीं मिल सका। फ्रायड ने इस व्यवहार का कारण अचेतन मन बताया और वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा यह सिद्ध किया कि मन का एक अज्ञात भाग है जो अचेतन कहलाता है।

अचेतन की परिभाषा
Definition of Unconscious

हम जो भी कार्य करते हैं, वह चेतनावस्था में होता है जैसे पढ़ना, कक्षा में पढ़ाना, खाना आदि। कहने का तात्पर्य यह हुआ कि चेतना के अंशों को याद रखा जा सकता है क्योंकि वह चेतन क्रिया का विषय है। परन्तु जिन अंशों को याद न रखा जा सके और जिनका पुनः स्मरण न हो सके तो वे विषय किस मन के होंगे ? और भी स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि अर्द्धचेतना का कोई भी विषय जो याद न किया जा सके वह अचेतन मन होगा। जिन विषयों की हम इच्छा करते हैं और कल्पना करते हैं परन्तु किसी कारणवश हम उन्हें पूर्ण करने में असमर्थ रहते हैं तो वे समस्त विषय अचेतन मन के विषय में बन्द पड़े रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अचेतन मन वह क्षेत्र है जहाँ मन का कूड़ा करकट पड़ा रहता है और अवसर ढूंढ़कर चेतन में आने का प्रयास करता है।

अचेतन की वैज्ञानिक परिभाषा
Scientific Definition of Unconscious

अचेतन की वैज्ञानिक परिभाषा करने का श्रेय फ्रायड को है। वे बहुत प्रसिद्ध डाक्टर थे। सर्वप्रथम उन्हें यह विचार आया कि हिस्टीरिया की बीमारी किन्हीं कारणों विशेष से होती है, ये मूल कारण रोगी के दुखपूर्ण अनुभव होते हैं जिनका निवास स्थान अचेतन मन होता है। फ्रायड के मतानुसार चेतन अचेतन का बहुत छोटा भाग है और इसीलिए अधिकतर मानवीय क्रियाएँ अचेतन द्वारा ही प्रभावित होती हैं। अचेतन मन का पता लगाने के लिए फ्रायड ने अनेकों विधियों का प्रयोग किया और अन्त में मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) विधि को अपनाया।

फ्रायड के मतानुसार हमारे अचेतन मन में वे इच्छाएँ रहती हैं जिनको दबाया जाता है। हम उन्हीं इच्छाओं को [दबाना चाहते हैं जो दुःखी होती हैं अथवा सामाजिक मूल्यों के प्रतिकूल होती हैं। इनमें से अधिकतर इच्छाएँ यौन सम्बन्धी होती हैं और कुछ चेतन से सम्बन्धित।

युग (Jung) के मतानुसार फ्रायड की अचेतन के सम्बन्ध में सीमित धारणा है क्योंकि अचेतन का बहुत विस्तृत क्षेत्र होता है जिसको वर्णित नहीं किया जा सकता। अचेतन मन विचार की सम्पूर्णता है जिसमें चेतन के गुणों का अभाव होता है।[1]

---

1. Unconscious is the totality of psychic phenomena that lack the quality of consciousness. —Jung

बालकों की इच्छाओं, आवश्यकताओं और रुचियों का ध्यान रखें। अचेतन मन मनोविज्ञान ने शिक्षा प्रक्रिया को निम्नलिखित रूप से प्रभावित किया है :—

(१) आदत का निर्माण

Halbt Formatlon

बालकों में अच्छी आदतों का निर्माण करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है परन्तु अच्छी आदतों का पड़ना सरल नहीं उसके लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता है। यदि बालक में कोई बुरी आदत पड़ गई है तो उसे अत्यन्त प्रेम पूर्ण व्यवहार से छुड़ाया जा सकता है। यदि बालक के साथ बुरा व्यवहार किया तो उसका उसके मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ेगा और वे समस्त दुखद अनुभव उसके अचेतन मन में चले जायेंगे जिससे बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने की आशंका रहेगी। इसीलिए अच्छी आदतों के निर्माण हेतु बालकों के साथ प्रेमपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करके उन्हें अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(२) अपराधी व्यवहार में परिवर्तन

Change in Delinquent Behaviour

शाला में अपराधी बालकों के कारण सदैव समस्याएँ रहती हैं। अपराधी व्यवहार का कुछ न कुछ कारण अवश्य होता है। यदि मनोविश्लेषणात्मक विधि के आधार पर समझने का प्रयास किया जाये तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचते हैं कि बालक को इस प्रकार के दुखद अनुभव मिले हैं जिसके कारण कि वह अपराधी व्यवहार करके सन्तोष प्राप्त करता है। यदि अध्यापक चाहे तो अचेतन की शक्ति को मानवीय व्यवहार मे परिवर्तित किया जा सकता है। सामान्यतया ऐसा देखा गया है कि असामान्य व्यवहार का कारण चेतन और अचेतन का संघर्ष होता है। अपराधी बालक संवेगात्मक अस्थिरता के कारण असामान्य हो जाते हैं परन्तु यदि अचेतन का सहयोग प्राप्त कर लिया जाये और उसे नियन्त्रित कर दिया जाये तो अपराधी क्रियाओं में काफी परिवर्तन किया जा सकता है।

(३) भयातुर वातावरण में परिवर्तन

Change in Fearful Environment

कक्षा का वातावरण यदि भयावना है तो बालकों के सीखने की प्रक्रिया कुण्ठित हो जायगी। प्रायः यह देखा गया है कि जिस विषय का अध्यापक अधिक पिटाई करता है उसी विषय से बालक को भय हो जाता है। बालक सराहनीय प्रयास करने पर भी उस विषय विशेष मे उत्तीर्ण नहीं हो पाता इसका एक मात्र कारण अध्यापक द्वारा भयातुर वातावरण उत्पन्न करना है। चेतनावस्था में बालक उस विषय को अधिक से अधिक सीखने का प्रयास करता है परन्तु अचेतन मे निवास

रने वाली दुखद घटनाएँ, बालक को उस विषय से विमुख कर देती हैं जिसका भाव बालक के भावी जीवन पर पड़ता है। इसीलिए यह नितान्त आवश्यक है कि ाला और कक्षा के भयातुर वातावरण को परिवर्तित किया जाये। जिससे बालक चित ढंग से अध्ययन में आनन्द ले सकें।

उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बालक के व्यक्तित्व को संगठित एवम् संतुलित बनाने के लिए अचेतन का प्रयोग किया जा सकता है। यदि बालक की इच्छाओं का दमन न किया जाये तो बालक मानसिक रूप से स्वस्थ रहता है परन्तु यदि बालक की भावनाओं को कुचला जाता है तो बालक की शैक्षिक प्रक्रिया पर इसका कुप्रभाव पड़ता है और व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। अतः अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह बालक को इस प्रकार के अनुभव प्रदान न करे जो बालक को दुखी बनाने में सहायक हों। अध्यापक को प्रेमपूर्ण वातावरण का सृजन कर सहानुभूतिपूर्ण ढंग से शिक्षण कार्य करना चाहिए।

अध्याय ११.

शिक्षा में सांख्यिकी

Statistics in Education.

Q. No. 23.

What are averages ? Give their characteristics.

औसत से क्या तात्पर्य है ? उसके प्रमुख गुणों का उल्लेख करो।

Answer

What are averages ?
औसत क्या है ?

सांख्यिकी (Statistics) अङ्कों का समूह होता है। यह किसी भी मानसिक शक्ति अथवा दिशा का संख्यात्मक (Numerical) मापन है। आज मनोविज्ञान और विशेष रूप में शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology) का एक आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग बन गया है। इसी के बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग (Intellegent use) से मनोविज्ञान (Psychology), विज्ञान बनने की दिशा में निरन्तर प्रगति (Progress) करता जा रहा है।

सांख्यिकीय सामग्री (Statistical Data) को सहज समझने योग्य (Well comprehensible) एवम् इसका स्मरण (Memorizing), सुलभ (Easier) तथा प्रस्तुतीकरण (Presentation) अधिक स्पष्ट, आकर्षक (Attractive), रुचिकर (Interesting) बनाने के लिये लेखा चित्र सम्बन्धी रेखाचित्र (Diagrams), लेखा (Graphs) तथा वक्र (Curve) का उपयोग करते हैं। किन्तु यहाँ भी इस विज्ञान के युग में संख्यात्मक आवश्यकता की पूर्ति न हो सकी। इसके लिये सम्पूर्ण सांख्यिकीय जनसंख्या (Statistical Population) का प्रतिनिधित्व (Representat on) किसी अङ्क से ही करने की दिशा में कार्य किया गया। सांख्यिकी को इस दिशा में गणित (Arithmat'c) के औसत से मिली।

औसत (Average) किसी सांख्यिकीय जनसंख्या (Statistical population) का प्रतिनिधित्व करने वाला अङ्क है, यह जनसंख्या के विषय में किसी पूर्वाग्रहित (Unbiased), कुल के बारे में संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट सूचना (Information) देता है। इसकी इकाई वही होती है जो कि मूल्यांकन के मापन की इकाई (Unit) है।

श्रौसत के गुण

Characteristics of an Average.

१. यह स्वयं में स्पष्ट होता है (It is well comprehensible)
२. कोई भी श्रौसत निरीक्षक (Observer) पर निर्भर नही रहता। (It does not depend merely on the observer)
३. यह सभी निरीक्षण अंको (Observed data) पर निर्भर करता है। इस प्रकार समूह का उपयुक्त प्रतिनिधित्व करता है।
४. इसकी गणना सुगम है (It is easy to calculate an average)
५. नमूना परिवर्तन का (Change of sample) का इस पर प्रभाव नही पड़ता।
६. यह गणितीय (Mathematical) श्रौर बीजगणितीय (Alegebraic) नियमों तथा सिद्धान्तों का पालन करता है।

Q. No. 24.

(a) Define Mean, Median and Mode.

मध्यमान, माध्यिका श्रौर बहुलांक की परिभाषा दो।

(b) What are the characteristics of Mean, Median and mode.

मध्यमान, माध्यिका श्रौर बहुलांक की क्या विशेषतायें हैं ?

(c) What are the uses of Mean, Median and Mode ?

मध्यमान, माध्यिका श्रौर बहुलांक के क्या उपयोग हैं ?

(d) Classify t..e following data and calculate Mean, Median, Mode for the same.

12	17	39	52	18
28	49	61	22	32
41	26	38	44	23
21	58	25	34	47
36	43	33	42	35
30	31	46	37	48
40	37	54	29	51
56	27	62	24	57

(L. T. 1954)

उपरोक्त की श्रावृति तालिका तैयार कर मध्यमान, मध्यिका श्रौर बहुलांक की गणना कीजिये।

(e) How will the Mean be affected if each score is—(i) increased by 5, (ii) decreased by 3 (iii) divided by 4, (iv) multiplied by 2.

मध्यमान कैसे बदलेगा—यदि प्रत्येक अंक (१) में ५ जोड़ दिया जाय, (२) में से घटा दिया जाय, (३) को ४ से भाग दिया जाय, (४) को २ से गुणा कर दिया जाय।

(राज० बी० एड० १९६६) प्रश्न ६-(ब)

Answer

Define Mean, Median, Mode.

मध्यमान, माध्यिका, बहुलांक की परिभाषा दो।

मध्यमान

Mean

मध्यमान को अंकगणित औसत (Arithmatic average) अथवा औसत (Average) भी कहा जाता है। चल राशि के भिन्न-भिन्न मूल्यों के योग को उसके मूल्यों की कुल संख्या से भाग देने पर भजन-फल को मध्यमान (Mean) कहा जाता है। माना किसी व्यक्ति का पांच दिनों का पारिश्रमिक 3 रु०, 4 रु०, 5 रु०, 2 रु०, 4 रु० हों तो उसके पारिश्रमिक का मध्यमान =

$$\frac{3+4+5+2+4}{5} \text{ रु०} = \frac{18}{5} \text{ रु०} = 3{\cdot}60 \text{ रु०}$$

उपरोक्त में यदि पारिश्रमिक X हो और अलग अलग N दिनों का पारिश्रमिक क्रमश: $X_1, X_2, X_3, X_n \cdots\cdots X_{n-1}, X_4$ हो। तथा मध्यमान 'M' हो तो;

$$M = \frac{X_1+X_2+X_3+\cdots\cdots X_{n-1}+X_n}{N}$$

$$M = \frac{X \text{ के मूल्यों का योग}}{X \text{ के मूल्यों का योग}}$$

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

[Σ—Sigma (सिग्मा) योग शब्द का सूचक है]

सांख्यिका मे हमेशा मध्यमान (Mean) को 'N' से ही प्रदर्शित किया जाता है। अचल राशि के मूल्यों के लिये सामान्य प्रदर्शक अक्षर X और X के मूल्यों की संख्या को कुल आवृति (Total frequency) और उसके लिये सदा N प्रतीक (Symbol) प्रयोग किया जाता है।

माध्यिका

Median

प्राप्त सांख्यिकीय प्रदत्त सामग्री (Statitistical data) को बढ़ते हुये अथवा घटते हुये मूल्यों के क्रम में (In ascneding or descending order) में व्यवस्थित

करने पर चल राशि (Variable) का वह मूल्य जो सम्पूर्ण क्रम को दो बराबर भागों में बाँटता है माध्यिका (Median) कहलाता है। एक भाग में माध्यिका से बड़ी अथवा दूसरे में सभी राशियां इससे छोटी होती हैं।

माना एक छात्र ने 7 साप्ताहिक परीक्षणों (Tests) में निम्नलिखित अंक प्राप्त किये—

7, 12, 9, 7, 11, 8, 10

इस प्रदत्त सामग्री के लिए माध्यिका ज्ञात करने के लिये सर्व प्रथम इसे (i) बढ़ते हुये (ascending) अथवा (ii) घटते हुये (Descending) क्रम मे रखना होगा।

(i) बढ़ते हुये क्रम में यह सामग्री इस प्रकार बन गयी—

12, 11, 10, 9, 8, 7, 7

हम देखते हैं कि अंकों के इस क्रम के मध्य में 9 है। 9 के बायीं ओर सभी संख्यायें इससे बड़ी तथा दायीं ओर सभी इससे छोटी हैं। 9 इस प्रदत्त सामग्री की माध्यिका है।

(ii) घटते हुये क्रम मे सामग्री निम्नलिखित रूप में रखी जा सकती है—

7, 7, 8, 9, 10, 11, 12

यहाँ भी हम देखते हैं कि 9 माध्यिका के रूप मे क्रम को दो बराबर भागों में बाँटता है। बायीं ओर सभी संख्यायें इससे छोटी तथा दायीं ओर इससे बड़ी संख्यायें हैं। सांख्यिकी मे माध्यिका को 'Md' के प्रतीक से प्रदर्शित किया जाता है।

बहुलांक
Mode

किसी आवृति-व्यवस्था मे चल राशि का वह मूल्य जिसकी आवृति (Frequency) सबसे अधिक होती है, उस प्रदत्त-सामग्री का बहुलांक (Mode) कहलाता है, बहुलांक का सांख्यिकीय प्रतीक (Symbol) 'Mo' है।

यदि दी हुयी सांख्यिकीय सामग्री के लिये मध्यमान M, माध्यिका Md और बहुलांक Mo हो तो बहुलांक को गणितीय सूत्र मे निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया जा सकता है;

$$Mo = 3M - 2Md$$

(b) मध्यमान की विशेषतायें

Characteristics of Mean (M)

१. मध्यमान समझने मे आसान है (It is well comprehensible)

२. इसकी परिभाषा स्पष्ट है (It is well defined)

३. मध्यमान की गणना आसान है (Easy to calculate)

४. उसी सामग्री, जो कि किसी जनसंख्या से नमूने के लिये ली गयी हो, निश्चित होता है (It is constant for the some population)

५. यह गणितीय और बीजगणितीय नियमों तथा विधियों का पालन कर (Mean follows the laws and processes of Arithmetic Algebra)

६. यदि किसी जनसंख्या के लिये मध्यमान M, मूल्यों का संख्या N ज्ञात हो कुल मूल्य ज्ञात किया जा सकता है।

कुल मूल्य = मध्यमान X संख्या

अथवा $\Sigma X = M \times N$

$\Sigma X = MN$

माध्यिका की विशेषतायें

Charcteristics of Median (Md)

१. माध्यिका (Median) आसानी से ज्ञात हो सकता है (It can be easily located)

२. इस पर अन्तिम (Last) एवं आरम्भ (Beginning) की राशियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता (They remain unaffected by the items of two extremes)

३. इसकी गणना मे सभी पदों की जानकारी आवश्यक नहीं है (Knowledge of all items is not required)

४. इसे लेखा-चित्र (Graph) के द्वारा आसानी से मालूम किया जा सकता है (It can be calculated with the help of graph)

बहुलांक की विशेपतायें

Characteristics of Mode (Mo)

१. केवल मात्र प्रदत्त सामग्री के निरीक्षण से ही इसकी स्थिति मालूम की जा सकती है (It can be located with these observation of data)

२. इसकी गणना बहुत सरल है (It's calculation is easy)

३. बहुलांक की परिभाषा सरल, स्पष्ट एवं पूर्ण है (It's definitoin is simple, clear and complete)

४. सभी पदों की जानकारी न भी हो, किन्तु यदि मध्यमान और माध्यिका ज्ञात हो तो बहुलांक को आसानी से मालूम किया जा सकता है।

[C] मध्यमान के उपयोग
Uses of Mean

१. किसी विशेष गुण के सन्दर्भ में दो समूहों की तुलना सम्भव है (It is eas to compare two groups from the point of view of a specifi characteristics)
२. यह किसी समूह के सभी गुणों का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करता है (It Prese nts best representation to the characteristies of a popu lation) ।
३. इसी के आधार पर मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक अनुसन्धान सम्भव हो सके हैं It's use has made the advanced researches in psychology and Education possible.) ।
४. यह जनसंख्या का सक्षिप्त किन्तु स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है (It gives clear but precise picture abent a population.) ।

माध्यिका के उपयोग
Uses of Median

१. यदि मध्यमान निकालने के लिये पर्याप्त समय न हो तो उसके स्थान पर माध्यिका को प्रयुक्त किया जा सकता है (In case there is no sufficient time to calculate Mean, Median can be located and used in it's place.) ।
२. वितरण मे दोनों किनारो की सख्यायें ज्ञात न हो तो माध्यिका ही जनसख्या के मूल्य का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करता है (In case the extreme items are not known, Median is the best representative of the population.)
३. किसी विशिष्ट मूल्य के व्यक्ति के लिये जनसंख्या के क्रमिक विवरण में स्थान मालूम करना हो (When it is necessary to find the place of an individual in a ordered sepuence of statistical enquiry.) ।
४. माध्यिका, बहुलोक की गणना के लिये उपयोगी है (Median is useful in the calculation of mode.)

बहुलोक के उपयोग
Uses of Mode (Mo)

१. जब प्रदत्त सामग्री (Data) को देखते ही उसके सांख्यिकीय गुण के स्तर के विषय मे निर्णय देना हो (When judgement is to be given regarding the charateristic of the data by more observation.) ।
२. बहुलांक का उपयोग ऐसे स्थान पर होता है जिसमें उच्चतम आवृत्ति की हो

राशि आवश्यक है (When the item with maximum freque is needed.)।

[D] दी हुई प्रदत्त सामग्री (Data) के लिये आवृत्ति तालिका (Frequency Tables)

प्राप्तांकों के वर्ग Class-Intervals (Scores)	संकेत चिन्ह Tallies	आवृत्तियाँ (F) (Frequencies)
60–64	11	2
55–59	111	3
50–54	111	3
45–49	1111	4
40–44		5
35–39		6
30–34		5
25–29		5
20–24	1111	4
15–19	11	2
10–14	1	1
		Σf=N=60

दी हुई सामग्री के लिये मध्यमान (Mean) ज्ञात करना।

प्राप्तांकों के वर्ग Class-Intervals	आवृत्तियाँ (f) (Frequency)	विचलन (d) Deviation	fd
60-64	2	5	10
55-59	3	4	12
50-54	3	3	9
45-49	4	2	8
40-44	5	1	5
35-39	6	0	0 [+44]
30-34	5	–1	–5
25-29	5	–2	–10
20-24	4	–3	–12
15-19	2	–4	–8
10-14	1	–5	–5 [–40]
	n = 40		Σ Fd = +4

Mean (मध्यमान)—

$$M = Am + \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

M = मध्यमान (Mean)

Am = कल्पित मध्यमान (Assumed Mean)

fd = आवृत्तियाँ (f) और विचलन (d) की गुणा

Σ = योग (Sum of)

N = छात्रों की संख्या (Number of class)

i = वर्गान्तर (class-Interval)

$$M = Am + \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

$$M = 37 + \frac{4}{40} \times 5$$

$$M = 37 + \frac{4}{8} = 37 + \frac{1}{2}$$

M = 37·5 Ans.

दी हुई सामग्री में मध्यांकमान या माध्यिका (Median)

प्राप्तांक वर्ग Class intervals	आवृत्तियाँ (f) Frequencies	संचित आवृत्तियाँ Cumulative Frequencies
60-64	2	40
55-59	3	38
50-54	3	35
45-49	4	32
40-44	5	28
35-39	6	23
30-34	5	17
25-.9	5	12
20-24	4	7
15-19	2	3
10-14	1	1

N = 40

$$Mdn = L + \frac{N/2 - Fc}{fm} \times i$$

Mdn = मध्यांक-मान का संक्षिप्त नाम

राशि आवश्यक है (When the item with maximum frequ is needed.)।

[D] दी हुई प्रदत्त सामग्री (Data) के लिये आवृत्ति तालिका (Frequency Tables)

प्राप्तांकों के वर्ग Class-Intervals (Scores)	अंकन चिन्ह Tallies	आवृत्तियां (F) (Frequencies)
60–64	11	2
55–59	111	3
50–54	111	3
45–49	1111	4
40–44		5
35–39		6
30–34		5
25–29		5
20–24	1111	4
15–19	11	2
10–14	1	1
		Σf=N=60

दी हुई सामग्री के लिये मध्यमान (Mean) ज्ञान करना

प्राप्तांकों के वर्ग Class-Intervals	आवृत्तियां (f) (Frequency)	विचलन (d) Deviation	fd
60-64	2	5	10
55-59	3	4	12
50-54	3	3	9
45-49	4	2	8
40-44	5	1	5
35-39	6	0	0 [+44]
30-34	5	-1	-5
25-29	5	-2	-10
20-24	4	-3	-12
15-19	2	-4	-8
10-14	1	-5	-5 [-40]
	N=40		Σ Fd=+4

Mean (मध्यमान)—

$$M = Am + \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

M = मध्यमान (Mean)

Am = कल्पित मध्यमान (Assumed Mean)

fd = प्रावृतियाँ (f) और विचलन (d) की गुणा

Σ = योग (Sum of)

N = छात्रों की संख्या (Number of class)

i = वर्गान्तर (class-Interval)

$$M = Am + \frac{\Sigma fd}{N} \times i$$

$$M = 37 + \frac{4}{40} \times 5$$

$$M = 37 + \frac{4}{8} = 37 + \frac{1}{2}$$

M = 37·5 Ans.

दी हुई सामग्री में मध्यांकमान या माध्यिका (Median)

प्राप्तांक वर्ग Class intervals	प्रावृतियाँ (f) Frequencies	संचित प्रावृतियाँ Cumulative Frequencies
60-64	2	40
55-59	3	38
50-54	3	35
45-49	4	32
40-44	5	28
35-39	6	23
30-34	5	17
25-.9	5	12
20-24	4	7
15-19	2	3
10-14	1	1

N=40

$$Mdn = L + \frac{N/2 - Fc}{fm} \times i$$

Mdn = मध्यांक-मान का संक्षिप्त नाम

L = मध्यांक वाले वर्ग की निम्न सीमा (Lower-Limit)

Fc = मध्यांक वाले वर्ग से नीचे तक की संचित प्रावृतियाँ (Cumulative Frequency)

Fm = मध्यांक वाले वर्ग की प्रावृतियाँ

i = वर्ग विस्तार या वर्गान्तर (Class-Intervals)

N = समूह के सदस्यों की संख्या (Number of Class)

$$Mdn = L + \frac{N/2 - Fc}{Fm} \times i$$

$$Mdn = 34{\cdot}5 + \frac{20-17}{6} \times 5$$

$$Mdn = 34{\cdot}5 + \frac{3}{6} \times 5$$

$$Mdn = 34{\cdot}5 + \frac{5}{2} = 34{\cdot}5 + 2{\cdot}5$$

Mdn = 37·0 Ans.

बहुलांक मान = Mode

Mode = 3Mdn – 2Mean

Mode = 3 × 37·00 – 2 × 37·5

Mode = 111 0 – 75·0

Mode = 36·0 Ans.

Mean = 37·5

Miden = 37·0

Mode = 36·0

[E]

How the Mean will be affected if–

(i) each score is increased by 5 ?

मध्यमान कैसे बदलेगा यदि प्रत्येक प्राप्तांक में 5 जोड़ दिया जाय ?

हल.—

Solution

[illegible] (Data) में कुल [illegible] (Total Frequency) [illegible] है, तथा N पद (Items) के [illegible] क्रमशः $X_1, X_2, X_3 \cdots\cdots X_n$, [illegible]
[illegible] (Group of Items) के लिए मध्यमान M [illegible] ;

$$M = \frac{X_1+X_2+X_3+\cdots\cdots+X_{n-1}+X_n}{N} \qquad (i)$$

किन्तु इसमें हर अङ्क (पद–item, score) में 5 जोड़ दिया गया है। इसलिये नवीन पदों का मूल्य 5 बढ़ जावेगा। यह पद समूह निम्नलिखित रूप में आजावेगा।

$(X_1+5), (X_2+5), (X_3+5), \cdots\cdots (X_{n-1}+5), (X_n+5)$ 1.

यदि नवीन मध्यमान (New Mean) 'm' हो तो ;

$$m = \frac{(X_1+5)+(X_2+5)+\cdots\cdots (X_{n-1}+5)+(X_n+5}{N}$$

$$m = \frac{X_1+5+X_2+5+\cdots\cdots X_{n-1}+5+X_n+5}{N}$$

$$m = \frac{(X_1+X_2+\cdots\cdots X_{n-1}+X_n)+(5+5+\cdots\cdots N \text{ बार})}{N}$$

$$m = \frac{X_1+X_2+\cdots+X_n+X_n}{N} + \frac{5+5+\cdots\cdots\cdots N \text{ बार}}{N}$$

$$\left[\text{किन्तु I से } \frac{X_1+X_2+\cdots\cdots X_{n-1}+XN}{N} = M\right]$$

$$\therefore m = M + \frac{5N}{N}$$

$$= M+5$$

$$\therefore m = [M+5]$$

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि प्रत्येक अंक में ५ जोड़ दिया जाय तो नया मध्यमान (New Mean) पूर्व मध्यमान (Previous Mean) से ५ अधिक हो जावेगा।

How the mean will be affected if (ii) each score is decreased by 3 ?

मध्यमान कैसे बदलेगा यदि प्रत्येक अङ्क में (ii) से ३ घटा दिया जाय ?

(i) की भांति;

$$M = \frac{X_1+X_2+\cdots\cdots X_{n-1}+X_n}{N} \qquad \ldots I$$

प्रत्येक अंक में से ३ घटा देने पर नये अंक (New Scores)—X_1—3, X_2—3, X_3—3, $\cdots$ X_{n-1}—3, X_n—3 हो जावेंगे, यदि नया मध्यमान m हो तो;

$$m = \frac{(X_1-3)+(X_2-3)+........(X_{n-1}-3)+(X_n-3)}{N}$$

$$m = \frac{X_1-3+X_2-3+\cdots\cdots+X_{n-1}-3+X_n-3}{N}$$

$$m = \frac{X_1+X_2+.........+X_{n-1}+X_n-3-3-3...N\text{बार}}{N}$$

$$m = \frac{X_1+X_2+........+X_{n-1}+X_n}{N} - \frac{3+3+......N \text{ बार}}{N}$$

$$m = M - \frac{3M}{N}$$

$$m = M - 3.$$

अत: प्रत्येक अंक में से ३ घटा देने पर नया मध्यमान (New Mean) पहले से ३ कम हो जावेगा।

How the Mean will be affected if each score is (iii) divided by 4.

मध्यमान कैसे बदलेगा यदि प्रत्येक अंक को (iii) 4 से भाग कर दिया जाय ?

$$M = \frac{X_1+X_2+X_3+......+X_{n-1}+X_n}{N}$$

यदि प्रत्येक अंक को 4 से भाग कर दिया जाय तो नये अंक निम्नांकित हो जावेंगे :

$$\frac{X_1}{4}, \frac{X_2}{4}, \frac{X_3}{4}........\frac{X_{n-1}}{4}, \frac{X_n}{4}$$

यदि नया मध्यमान m हो तो,

$$m = \frac{\frac{X_1}{4}+\frac{X_2}{4}+......+\frac{X_{n-1}}{4}+\frac{X_n}{4}}{N}$$

$$m = \frac{X_1+X_2+......+X_{n-1}+X_n}{4N}$$

$$m = \frac{M}{4} = \frac{1}{4}(M)$$

इसलिये प्रत्येक अंक को 4 से भाग करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान पूर्व मध्यमान का एक चौथाई अर्थात् $\frac{1}{4}$ हो जावेगा।

How will the Mean be affected if each score is (iv) multiplied by 2 ?

मध्यमान कैसे बदलेगा यदि प्रत्येक प्रंक को २ से गुणा कर दिया जाय ?

$$M = \frac{X_1 + X_2 + \ldots\ldots + X_{n-1} + X_n}{N}$$

प्रत्येक प्रंक को 2 से गुणा करने पर प्राप्त नवीन प्रंक $2X_1$, $2X_2$, $2X_3 \ldots$, $2X_{n-1}$, $2X_n$ । यदि नया मध्यमान m हो तो

$$m = \frac{2X_1 + 2X_2 + \ldots\ldots + 2X_{n-1} + 2X_n}{N}$$

$$m = \frac{2(X_1 + X_2 + \ldots\ldots + X_{n-} + X_n)}{N}$$

$$m = 2\frac{X_1 + X_2 + \ldots\ldots + X_{n-} + X_n}{N}$$

$$m = 2M.$$

यदि प्रत्येक प्रंक को २ से गुणा कर दिया जाय तो नवीन मध्यमान पहले के मध्यमान का दुगुना अर्थात् दो गुना हो जावेगा।

उपरोक्त चारों उदाहरण मध्यमान की पांचवी विशेषता, "यह गणितीय और बीजगणितीय नियमों का पालन करती है।" का व्यावहारिक उपयोग तथा उदाहरण (Practical example and application) है। यह निम्नलिखित सामान्य नियमों पर आधारित है :—

१. यदि प्रत्येक प्रंक मे कोई सख्या जोड़ दी जाय तो नयी सख्याओं का मध्यमान पहले के मध्यमान से उसी सख्या के बराबर बढ़ जाता है।

२. यदि प्रत्येक प्रंक मे से एक ही निश्चित संख्या घटा दी जाय तो इस प्रकार प्राप्त नवीन प्रंको का मध्यमान पहले मध्यमान से घटायी गई सख्या के बराबर कम होगा।

३. प्रत्येक प्रंक को जिस निश्चित से गुणा किया जाय नया मध्यमान भी उतने ही गुना हो जाता है।

४. यदि प्रत्येक प्राप्तांक को निश्चित सख्या से भाग कर दिया जाय तो नया मध्यमान पहले मध्यमान मे उसी सख्या से भाग देने पर प्राप्त भजनफल के बराबर होता है।

Q. No. 25

विचलन अथवा विक्षेपण

Variability or Deviation

(a) Define 'variability'. What are different measures of variability ?

'विचलन' की परिभाषा दो, 'विचलन' के विभिन्न माप क्या हैं ?

(b) In what way does S. D. differ from other measures of va
ability, so as to become so popular ?

प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation) मन्य विचलन मापों में कि
गुणों की भिन्नता से इतना उपयोगी हो गया है ?

[राज० 1962 प्रश्न 5 (b)]

(c) Write short note on 'Standard Deviation.'
प्रमाणिक विचलन पर टिप्पणी लिखिये ।

[राज० 1965 प्रश्न 6 (c)]

(d) Calculate Standard Deviation from the following frequency table.

निम्नलिखित आवृति तालिका से प्रमाणिक मध्यमान का मान ज्ञात करो ।

[राज० 1962 प्रश्न 5 (a)]

Class Interval वर्ग अन्तर	Frequency आवृति
130–139....	 1
120–129....	 4
110–119....	30
100–109....	46
90–99....	60
80–89....	44
70–79....	12
60–69....	 2
50–59....	 1

n=200

(e) What are the uses of different measures of variability ?
भिन्न-भिन्न विचलन-मापों के क्या उपयोग हैं ?

Answer

(a) Define Variability.
विचलन की परिभाषा दो ।

विचलन का विवेचन
Variability or Deviation

[illegible] (Frequency distribution [illegible]

(i) चल राशि का केन्द्रीय-मान (Central value) जिसका मापन 'औसत' है।

(ii) सम्पूर्ण राशियों का केन्द्रीय मान के दोनों ओर वितरण-प्रकृति (They differ in the way of values of the variable are distributed around the central value–Mean, Median, Mode of any other workable measure of central tendency.)

केन्द्रीय मान के चारों ओर वितरण-प्रकृति की माप को विचलन (Variability) अथवा Deviation (विक्षेपण) कहते हैं।

दो आवृत्ति-वितरण (*Frequency distributions*) केन्द्रीय मानों की दृष्टि से समान हो सकते हैं, किन्तु वे विचलन अथवा विक्षेपण की दृष्टि से एक दूसरे से बिल्कुल *भिन्न* हो सकते हैं। इस प्रकार हम विचलन की परिभाषा निम्नलिखित रूप में दे सकते हैं।

किसी आवृत्ति वितरण में विचलन केन्द्रीय-मान के दोनों ओर प्रतिनिधि मानों के फैलाव की माप तथा उसकी प्रकृति को बताने वाले सूचक अंक (Indicator statistics) को कहते हैं variability or Deviation is the measure of the distribution of representative values around the Central value. It is an indicator of the nature of this distribution too.) ।"

विचलन की भिन्न भिन्न माप क्या हैं ?
What are the different measures of Variability

विचलन की भिन्न-भिन्न माप
Different Measures of Variability

विचलन या विक्षेपण की माप की चार विधियाँ (मापें) हैं;

१. विस्तार या प्रसार क्षेत्र (Range–R)
२. चतुर्थांश विचलन (Quartile Deviation–Q)
३. औसत विचलन (Mean Deviation–AD)
४. प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation–SD)

१. विस्तार या प्रसार क्षेत्र
Range

किसी आवृत्ति-वितरण (Frequeucy distribution) में विस्तार (Range) चल राशि (Variable) के अधिकतम (Highest value) में से न्यूनतम मान (Lowest value) को घटाने पर प्राप्त किया जाता है इसका सांकेतिक में प्रतीक (Symbol) 'R' है। इसका सूत्र निम्नलिखित है—

R=चल राशि का अधिकतम मान—चलराशि का न्यूनतम मान

R=उच्चतम वर्गांतर की ठीक सीमा (Exact upper limit of the highest class interval) ऋण (Minus) निम्नतम वर्गांतर की लोवर ठीक सीमा (Exact lower limit of the lowest class interval)

२. चतुर्थांश विचलन
Quartile Deviation

किसी आवृत्ति का चतुर्थांश विचलन (Quartial Deviation) उसके तृतीय चतुर्थांश (Third Quartile–Q 3) और प्रथम चतुर्थांश (First Quartile–Q 1) के अन्तर के आधे को कहते हैं। इसे Q. प्रतीक (Symbol) से प्रदर्शित किया जाता है।

$$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

३. औसत विचलन
Mean Deviation

किसी भी प्रदत्त सामग्री के लिये औसत विचलन (Mean Deviation) वह अंक है जो प्रत्येक व्यक्तिगत राशि के मूल्य (Value of the variable) तथा इनके मध्यमान के अन्तरो (Difference with the Mean) का औसत निकालने पर प्राप्त किया जाता है।

माना $X_1, X_2, \cdots\cdots X_{n-1}, X_n$, N प्राप्तांक है। जबकि N कुल आवृत्ति (Total Frequency) है। M इस प्रदत्त-सामग्री के लिये मध्यमान है। M का प्रत्येक से अन्तर = $X \sim M$ (यहाँ हम चिन्ह का कोई ध्यान नहीं देंगे)! X के मान और M में जो भी बड़ा हो, उसमें दूसरी संख्या घटा लेते हैं। इस अन्तर को $[X-M]$ भी लिखते हैं। यदि औसत विचलन (Mean Deviation) AD हो तो;

$$AD = \frac{[X_1-M]+[X_2-M]+\ldots\ldots[X_{n-1}-M]+[X_n-M]}{N}$$

$$AD = \frac{\Sigma X\text{-}M}{N}$$

अथवा $AD = \frac{\Sigma[X]}{N}$ $\left[[X_1-M] = {}_1,\ [X_2-M] = X_2 \cdots\cdots [X_{n-1}-M]=X_{n-1},\ X_n-M=X_n \right]$

$$\therefore AD = \frac{\Sigma[x]}{N}$$

जबकि AD औसत विचलन, N कुल आवृत्ति तथा X, अंक और मध्यमान का अन्तर है।

४. प्रामाणिक विचलन

Standard Deviation (SD या Sd अथवा σ)

प्रथम दो विचलन मापक अधिक उपयुक्त नहीं समझे जाते। उनकी अपनी सीमायें हैं। औसत विचलन इनसे अधिक उपयुक्त समझा गया। किन्तु उसमें एक प्रश्न यह आया कि X~M में चिन्हों का ध्यान न रखने से यह किस प्रकार एक अच्छा सांख्यिकीय मापन हो सकता है। इस बाधा को दूर करने के लिये प्रत्येक अन्तर का वर्ग कर दिया गया। इस प्रकार अन्तर के वर्गों का औसत विचलन मापन के लिये प्रयोग किया गया। इसका नाम प्रमाणिक विचलन दिया गया। इसे सांख्यिकी मे SD अथवा sd या σ से प्रदर्शित किया जाता है।

यदि पूर्व की भांति N प्राप्तांक $X_1, X_2, X_3......X_{n-1}, X_n$ हों और N कुल आवृति (Total frequency) हो तथा σ प्रमाणिक विचलन हो तो;

$$\sigma = \frac{(X_1-M)^2+ X_2-M)^2+ .. .. + (X_{n-1}-M)^2+(X_n-M)^2}{N}$$

$$\sigma = \frac{x_1^2+x_2^2+ ... .. + x_{n-1}^2+x_n^2}{N}$$

$$\sigma = \frac{\Sigma x^2}{N}$$

यदि आवृति-वितरण (Frequency Distribution) दिया हो तो उसके लिये σ प्रमाणिक विचलन (Standard Deviation) निकालने के लिये निम्नलिखित सूत्र का उपयोग होता है;

$$\sigma = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जहाँ कि—

i—वर्ग-अन्तर (Class-interval) है।

f—वर्गाकार की आवृति

d—विचलन

N—कुल आवृति

विस्तार का उपयोग

Uses of Range

१. जब केवल प्राप्तांकों मे उच्चतम और न्यूनतम का अन्तर देखना हो।

२. शीघ्रता से अंकों के वितरण की प्रवृति ज्ञात करनी हो।

चतुर्थांश विचलन के उपयोग
Uses of Quartile Deviation

१. जब मध्य के ५०% छात्रों के वितरण प्रकृति का ज्ञान करना हो।

२. यदि आवृत्ति-वितरण के किनारों की सामग्री उपलब्ध न हो।

३. मध्यिका से वितरण प्रकृति ज्ञात करनी हो।

मध्यमान विचलन के उपयोग
Uses of Mean Deviation

१. मध्यमान से हमें वितरण प्रकृति ज्ञात करना हो।

२. यदि मध्यमान से विचलन अधिक असामान्य हो और प्रामाणिक-विचलन (Standard Deviation) की गणना गणित की विधि से कुछ कठिन प्रतीत हो रही हो।

३. औसत विचलन के सदर्भ में विचलन ज्ञात करने के लिए इसका उपयोग होता है।

प्रमाणिक विचलन के उपयोग
Uses of Standard Deviation

१. यह सर्वोत्तम विक्षेपण (Dispersion) मापक है।

२. इसकी सहायता से सह-सम्बन्ध (Co-relation) की गणना की जाती है।

३. सामान्य सम्भाविता वक्र (Normal probability curve) के उपयोग में यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मापन है।

४. इससे विचलन गुणांक (Variability constant) ज्ञात करने से दो या दो से अधिक समुदायों की तुलना सम्भव है।

५. प्रमाणिक विचलन का शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों (Educational researches) में बहुत बड़ा उपयोग है।

(b) In what way does S. D. differ from other measures of variability, so as to become so popular?

प्रामाणिक विचलन अन्य विचलन मापों में किन गुणों की भिन्नता के कारण उपयोगी हो गया है? [राज० १९६२ प्रश्न ५ (b)]

प्रमाणिक विचलन की विशिष्टतायें
Advantages of Standard Deviation

निम्नलिखित [illegible] के कारण प्रमाणिक विचलन सर्वाधिक उपयोगी [illegible] है :

१. [illegible]

२. इसमें किसी भी प्रकार के गणितीय एवं बीजगणितीय नियम का विरोध नहीं होता।

३. सामान्य सम्भावित वक्र (Normal probability curve) में इनका बहुत महत्व है।

४. सह-सम्बन्ध (Correlation) में इसका विशेष महत्व है।

५. इसका मूल्यांकन और मापन (*Evaluation and measurement*) में विशेष उपयोग है।

(c) Write short note on "SD"

प्रमाप विचलन पर टिप्पणी लिखिए।

[राज॰ प्र॰ 6 (c)]

उत्तर—

परिभाषा :—
उपयोग :— [खण्ड A
विशेषतायें :— खण्ड (b)

प्राप्तांक वर्ग	आवृत्तियाँ f	विचलन d	fd	fd^2 $(d \times fd)$
130—139	1	4	4	16
120—129	4	3	12	36
1 0—119	30	2	6J	1:0
100—109	46	1	4 [122]	46
90—99	60	0	0	0
80—89	44	—1	—44	44
70—79	12	—2	—24	48
60—69	2	—3	—6	18
50—59	1	—4	—4 [—78]	16
N=200			Σfd=44	Σfd^2=34 4

$$S.D \text{ या } \sigma = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जिसमें S. D = प्रमाणिक विचलन (Standard-Deviation)

i = वर्ग विस्तार (Class-Intervals)

d = कल्पित मध्यमान वाले वर्ग प्राप्तांक-वर्ग का विचलन

F = आवृत्तियाँ

N = छात्रों की संख्या

$$S.D = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

चतुर्थांश विचलन के उपयोग
Uses of Quartile Deviation

१. जब मध्य के ५०% छात्रों के वितरण प्रकृति का ज्ञान करना हो।

२. यदि प्राप्तांक-वितरण के किनारों की सामग्री उपलब्ध न हो।

३. मध्यिका से वितरण प्रकृति ज्ञात करनी हो।

मध्यमान विचलन के उपयोग
Uses of Mean Deviation

१. मध्यमान से हमें वितरण प्रकृति ज्ञात करना हो।

२. यदि मध्यमान से विचलन अधिक असामान्य हो और प्रामाणिक-विचलन (Standard Deviation) की गणना गणित की विधि से कुछ कठिन प्रतीत हो रही हो।

३. औसत विचलन के संदर्भ में विचलन ज्ञात करने के लिए इसका उपयोग होता है।

प्रमाणिक विचलन के उपयोग
Uses of Standard Deviation

१. यह सर्वोत्तम विक्षेपण (Dispersion) मापक है।

२. इसकी सहायता से सह-सम्बन्ध (Co-relation) की गणना की जाती है।

३. सामान्य सम्भावित वक्र (Normal probability curve) के उपयोग में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण मापन है।

४ इससे विचलन गुणांक (Variability constant) ज्ञात करने से दो या दो से अधिक जनसंख्याओं की तुलना सम्भव है।

५. प्रमाणिक विचलन का शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों (Educational researches) में बहुत बड़ा उपयोग है।

(b) In what way does S. D. differ from other measures of variability, so as to become so popular ?

प्रमाणिक विचलन अन्य विचलन मापों में किन गुणों की भिन्नता से इतना उपयोगी हो गया है? [राज० १९६२ प्रश्न ५ (b)]

प्रमाणिक विचलन की विशिष्टतायें
Advantages of Standard Deviation

निम्नलिखित विशिष्ट गुणों के कारण प्रमाणिक विचलन सर्वाधिक उपयोगी हो गया है :

१. यह आसानी से

२. इसमें किसी भी प्रकार के गणितीय एवं बीजगणितीय नियम का विरोध नहीं होता।

३. सामान्य सम्भावित वक्र (Normal probability curve) में इसका बहुत महत्व है।

४. सह-सम्बन्ध (Correlation) में इसका विशेष महत्व है।

५. इसका मूल्यांकन और मापन (Evaluation and measurement) में विशेष उपयोग है।

(c) Write short note on "SD"

प्रमाण विचलन पर टिप्पणी लिखिए।

[राज० प्र० 6 (c)]

उत्तर—

परिभाषा :— ⎤ खण्ड A
उपयोग :— ⎦
विशेषतायें :— खण्ड (b)

प्राप्तांक वर्ग	आवृत्तियाँ f	विचलन d	fd	fd^2 $(d \times fd)$
130—139	1	4	4	16
120—129	4	3	12	36
110—119	30	2	60	120
100—109	46	1	46 [122]	46
90—99	60	0	0	0
80—89	44	—1	—44	44
70—79	12	—2	—24	48
60—69	2	—3	—6	18
50—59	1	—4	—4 [—78]	16
N=200			$\Sigma fd = 44$	$\Sigma fd^2 = 344$

$$S.D \text{ या } \sigma = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जिसमें S. D = σ प्रमाणिक विचलन (Standard-Deviation)

i = वर्ग विस्तार (Class-Intervals)

d = कल्पित मध्यमान वाले वर्ग प्राप्तांक-वर्ग का विचलन

F = आवृत्तियाँ

N = छात्रों की संख्या

$$S.D = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

$$S.D = 10 \times \sqrt{\frac{344}{200} - \left(\frac{45}{200}\right)^2}$$

$$S.D = 10 \times \sqrt{\frac{43}{25} - \left(\frac{11}{50}\right)^2}$$

$$S.D = 10 \times \sqrt{1 \cdot 72 - \frac{121}{2500}}$$

$$S.D = 10 \times \sqrt{1 \cdot 72 - \cdot 048}$$

$$= 10 \times \sqrt{1 \cdot 672}$$

$$S.D = 10 \times 1 \cdot 29$$

$$S.D = 11 \cdot 90 \text{ Ans.}$$

Q. No. 26

What do you understand by "co-efficient of variability ?"

In a class there are 50 students Mean and Sd for their marks are 65·5 and 12·5 respectively. They were givenan intelligence test and the average I. Q. and Sd for this measure have been found out to be 115·5 and 15·5 respectively which mental ability is more variable.

विचलन गुणांक से क्या तात्पर्य है ?

एक कक्षा में 50 विद्यार्थी हैं। उनके प्राप्तांकों का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन क्रमश: 65·6 और 12·5 है। उन्हें एक बुद्धि परीक्षा दी गयी। प्राप्त बुद्धि-लब्धियों का औसत और प्रमाणिक विचलन क्रमश: 115·5 और 15·5 है। इन मानसिक योग्यताओं में आप किस मानसिक योग्यता को अधिक विचलित समझते हैं?

Answer

विचलन गुणांक
Coefficient of Variability

किसी जनसंख्या के सांख्यिक गुण को जो कि उसके औसत से अथवा विचलन मापों से प्रदर्शित होता है, काफी नहीं है। उनसे हम दो या दो से अधिक आवृत्ति-वितरणों (Frequency distributions) के विचलन का तुलनात्मक अध्ययन नहीं कर सकते। इसके लिए विचलन गुणांक की गणना की जाती है। इस माप को 'V' से प्रदर्शित करते हैं। इसे गणितीय सूत्र में निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है ;

$$V = \frac{\sigma}{M} \times 100 \qquad \text{—(i)}$$

जहाँ σ, और M क्रमशः प्रमाणिक विचलन और मध्यमान हैं।

यदि माध्यिका के सापेक्ष विचलन गुणांक निकालना हो तो प्रमाणिक विचलन के स्थान पर औसत विचलन का उपयोग होता है।

$$V = \frac{AD}{M} \times 100 \qquad \text{(ii)}$$

प्रथम और द्वितीय में अन्तर के लिए V_{sd} और V_{ad} लिखते हैं, अतः

$$V_{sd} = \frac{\sigma}{Md} \times 100$$

$$V_{ad} = \frac{AD}{Md} \times 100$$

प्रश्न का हल

Solution of the question

$$V = \frac{\sigma}{M} \times 100$$

$$V_{score} = \frac{12{\cdot}5}{62{\cdot}5} \times 100$$

$$V_{score} = 20$$

$$V_{iq} = \frac{\sigma}{M} \times 100$$

$$= \frac{15{\cdot}5}{115{\cdot}5} \times 100$$

$$= \frac{3100}{231}$$

$$= 13{\cdot}4$$

चूँकि प्राप्तांकों और बुद्धि लब्धि के लिए विचलन गुणांक क्रमशः 20 और 13·4 है। इसलिए प्राप्तांक बुद्धि-लब्धि की अपेक्षा अधिक विचलनशील है।

सह-सम्बन्ध

Correlation

Q. No. 27

(a) What do you understand by "*coefficient of correlation*"? To what practical utility can this statistic be put in education?

"सह-सम्बन्ध गुणांक" से आप क्या समझते हैं? शिक्षा में इस ज्ञान को किस व्यवहारिक उपयोग में ले सकते हैं?

[राज० 1963 प्रश्न 5 (a)]

(b) Calculate the coefficient of correlation by the 'Rank Method', between the height and weight from the following data—

	Height in feet & Inches	Weight in Pounds
A	5'6"	150
B	5'5"	145
C	5'5"	155
D	5'4"	140
E	5'3"	140
F	5'2"	120
G	5'2"	130
H	5'2"	140
I	5'2"	110
J	5'1"	115
K	5'1"	100
L	5'0"	110

दी गयी प्रदत्त-सामग्री (data) के आधार पर ऊँचाई और भार में सह-सम्बन्ध -गुणाङ्क को 'रैंक विधि' से गणना कीजिए।

[राज० 1963 प्र० 5 (b)

(c) Calculate the coefficient of correlation for the following ten cases, their scores on tests A and B are given :—

नीचे दिये गये दो परीक्षापत्रों के १० (दस) विद्यार्थियों के अङ्कों का सह-सम्बन्ध (Coefficient of correlation) निकालें :—

विद्यार्थी	पहली परीक्षा में अंक	दूसरी परीक्षा में अंक
क	65	67
ख	75	72
ग	66	72
घ	88	92
ङ	71	76
च	71	72
छ	86	92
ज	75	76
झ	86	92
ह	66	76

[राज० 1966 प्र० 4 (b)]

Answer

सह-सम्बन्ध गुणांक
Coefficient of Correlation

जब दो चल-राशियाँ (variables) इस प्रकार अन्तर्सम्बन्धित (Inter-related) होती हैं कि एक में परिवर्तन (change) दूसरे में परिवर्तन ले आता है, दूसरे शब्दों में एक मे कमी (decrease) दूसरे में वृद्धि (increase) अथवा एक में वृद्धि मे दूसरे कमी अथवा एक मे वृद्धि दूसरे में कमी वा एक मे कमी दूसरे मे कमी ले आती हैं, तो इन चल-राशियों के पारस्परिक सम्बन्ध को सह-सम्बन्ध (Correlation) कहते हैं। इस कथन से हम इनके अन्तर्सम्बन्ध के विषय मे निम्नलिखित निरीक्षण करते हैं।

१. एक में वृद्धि (increase) दूसरे मे वृद्धि (increase)
२. एक मे कमी (decrease) दूसरे में कमी (decrease)
३. एक मे वृद्धि दूसरे में कमी
४. एक में कमी दूसरे मे वृद्धि

अन्तर्सम्बन्ध के विषय मे प्रथम दो उदाहरण समान दिशा में परिवर्तन बतलाते हैं, जबकि अन्तिम दो उदाहरणों में परिवर्तनो की दिशायें एक-दूसरे के विपरीत हैं। इस प्रकार हम सह-सम्बन्ध के निम्नलिखित प्रकार स्पष्ट रूप से देखते हैं।

(i) धन-सह-सम्बन्ध (Positive correlation)
(ii) ऋण-सह-सम्बन्ध (Negauve correltaion)

धन-सह-सम्बन्ध
Positive Correlation

जब दो चल-राशियाँ (Vareables) इस प्रकार अन्तर्सम्बन्धित रहती है कि एक मे वृद्धि दूसरे मे वृद्धि अथवा एक मे कमी दूसरे में कमी ले आती है तो [illegible] राशियों मे धनात्मक सह-सम्बन्ध कहलाता है।

ऋण-सह-सम्बन्ध
Negative Correlation

अन्तर्सम्बन्धित (inter-related) दो चल राशियों का सह-सम्बन्ध जिसमें एक में कमी दूसरे मे वृद्धि अथवा एक मे वृद्धि दूसरे में कमी ले आती है, ऋणात्मक सह-सम्बन्ध कहलाता है।

सह-सम्बन्ध गुणांक
Coefficient of Correlation

आंकिड़ों मे सह-सम्बन्ध की सीमा के मापन के लिए प्रयुक्त माप सह-सम्बन्ध

गुणांक (Coefficient of correlation) कहलाता है। इसके मापन की विधियाँ हैं। इनमें स्थान-क्रम विधि (Rank method) ही इस पुस्तिका को सं है। स्थान-क्रम-सह-सम्बन्ध को P (रो) प्रक्षर के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।

सूत्र
Formula

P की गणना के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है :

$$P = 1 - \frac{6\Sigma d^2}{N(N^2-1)}$$

जबकि—

P = सह-सम्बन्ध गुणांक

d = दो चल राशियों के एक ही व्यक्ति के लिए मापों के स्थान-क्रमों का अन्तर है।

N = जितने व्यक्तियों के लिए प्रचलों को मापा गया है।

सह-सम्बन्ध गुणांक की सीमा
Limits of Correlation

सह-सम्बन्ध गुणांक का मूल्य (Value) +1 और —1 के बीच होता है। जब दो प्रचलों में +1 सह-सम्बन्ध गुणांक होता है तो उन्हें पूर्ण धनात्मक सह-सम्बन्ध (Perfect Possitive Correlation) तथा उनमें —1 सह-सम्बन्ध होने पर उन्हें पूर्ण ऋणात्मक सह-सम्बन्ध में कहा जाता है। किन्तु, शायद इस प्रकार के उदाहरण व्यवहार मे काल्पनिक ही हैं।

Rank विधि से सह-सम्बन्ध गुणांक निकालना

छात्र संख्या	Height in feet & inches	Weight in Pounds	R_1	R_2	D	D^2
A	5'6"	150	1	2	1	1
B	5'5"	145	2·5	3	·5	·25
C	5'5"	155	2·5	1	1·5	2·25
D	5'4"	140	4	5	1	1
E	5'3"	140	5	5	0	0
F	5'2"	120	6 5	9	2·5	6·25
G	5'2"	130	6·5	8	1·5	2·25
H	5'2"	140	6·5	5	1·5	2·25
I	5'2"	110	6·5	11·5	5	·25
J	5'1"	115	10·5	10	·5	·25
K	5'1"	100	10·5	13	2·5	6·25
L	5'0"	110	12	11·5	·5	·25

N=12 $\Sigma D = 47·03$

ρ (रो) $= 1 - \dfrac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$

ρ (रो) = Correlation

D = क्रमान्तर

ΣD^2 = क्रमान्तरों के वर्ग का योग

N = छात्रों की संख्या

ρ (रो) $= 1 - \dfrac{6 \times 47}{12(12^2-1)}$

ρ (रो) $= 1 - \dfrac{6 \times 47}{12 \times 143} = 1 - \dfrac{47}{286}$

$\rho = 1 - \cdot 168$

$\rho = \cdot 832$ Ans.

Rank विधि से सह-सम्बन्ध गुणांक निकालना

विद्यार्थी संख्या	पहली परीक्षा के अंक	दूसरी परीक्षा के अंक	R_1	R_2	D	D^2
A	65	67	10	10	0	0
B	75	72	4·5	8	3·5	12·25
C	66	72	8·5	8	·5	·25
D	88	92	1	2	1	1
E	71	76	6·5	5·5	1	1
F	71	72	6·5	8	1·5	2·25
G	86	92	2·5	2	·5	·25
H	75	76	4·5	5·5	1	1
I	86	92	2·5	2	·5	·25
J	66	79	8·5	4	4·5	20·25

N = 10 $\qquad \Sigma D^2 = 38{\cdot}50$

ρ (रो) $= 1 - \dfrac{6\Sigma D^2}{N(N^2-1)}$

ρ (रो) = Correlation

D = क्रमान्तर

ΣD^2 = क्रमान्तरों के वर्ग का योग

N = छात्रों की संख्या

$\rho = 1 - \dfrac{6 \times 38{\cdot}50}{10 \times (10^2-1)}$

$\rho = 1 - \dfrac{6 \times 38{\cdot}50}{10 \times 99}$

$$\varrho = 1 - \frac{38\cdot50}{165}$$

$$\varrho = 1 - \cdot23$$

$$\varrho = \cdot77 \text{ Ans.}$$

Q. No. 28

सामान्य सम्भावित वक्र
Normal Probability Curve

(a) What do you mean by 'Normal probability curve'? Give it is importance.

Or

Write short note on 'significance of normal probability curve.'

"सामान्य सम्भावित वक्र" से क्या समझते हो ? इसका महत्व बतलाइये।

अथवा

"सामान्य सम्भावित वक्र का महत्व", पर संक्षिप्त टिप्पणी दीजिये।

[राज० 1964 प्रश्न 6(c)]

(b) One thousand candidates appeared in an examination. The mean and standard deviation of scores obtained by there were 38·2 and 12·8 respectively. Assuming normality, find the number of candidates who secured (i) less than 19 marks, (ii) between 35 and 51 marks. Between what scores will the middle 600 cases lie?

एक परीक्षा में 1000 परीक्षार्थी बैठे। उनके अंकों का मध्यमान और प्रमापिक विचलन 38·2 और 12·8 था। यदि अंकों में सामान्यता हो, तो कितने परीक्षार्थियों ने (i) 19 से कम अंक लिये, (ii) 30 और 51 के बीच अंक लिये ? बीच के 600 परीक्षार्थियों ने किन अंकों के बीच में अंक प्राप्त किये ?

[राज० 1967 प्रश्न 5 (c)]

Answer

(a) सांख्यिकीय प्रदत्त सामग्री (Statistical data) से मापन का राशि (Variable) के मूल्य और उनकी आवृत्ति को लेकर लेखाचित्र (Graph) में वक्र प्राप्त किये जाते हैं। इन वक्रों में शिक्षा और मनोविज्ञान (Education and Psychology) के क्षेत्रों में सामान्य सम्भावित वक्र (Normal probability curve) को आदर्श वक्र (Ideal curve) मानते हैं। यह मान्यता इन क्षेत्रों में स्वीकार्य है कि मानसिक मापनों (Mental measurements) में यदि बहुत [illegible] (Large sample) को लिया जाए तो सभी मापन सामान्य सम्भावित वक्र

के नियमों का पालन करते हैं। इसको सांख्यिकी सम्भावना-सिद्धान्त (Theory of probability) से लायी है।

सामान्य सम्भावित वक्र के गुण
Characteristics of Normal probability Curve

१. इसमें मध्यमान (Mean), मध्यिका (Median), बहुलांक (Mode) एक ही अंक होता है (Mean, Median & Mode Coincide)

२. मध्यमान पर तथा उसके निकट आवृत्ति अधिकतम होती है (Frequency at the median and near it is highest)

३. यह मध्यमान उध्वधिर रेखा (Mean verticle line) के सापेक्ष (About) समित (Symmetrical) होता है (It is symmetrical about the Mean axis.)

४. इसमें पूर्ण आवृत्ति का वितरण-क्रम निम्नलिखित प्रकार से होता है ;

(i) M और $M+\sigma$ या $M-\sigma$ के मध्य —34·1%

(ii) $M\pm\sigma$ और $M\pm2\sigma$ के बीच —1346%

(b) M=38·2

σ=12·8

(i) 19 के कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या 50=M और 19
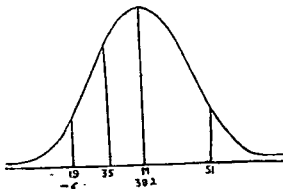
के बीच की सख्या M और 19 के बीच अक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या—

(क) 32·2 और 19 का अन्तर =(19—32·2)

=—12·8

32·2 भ्रौर 19 के बीच σ दूरी $= \frac{12·8}{12·σ}$

$= -σ$

तालिका से M भ्रौर $-σ$ के बीच प्रतिशतता

$= 13·13$

∴ 500 में कुल संख्या $= \frac{34·13}{2}$

व $= 171$

∴ 19 से कम भ्रंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों की संख्या = 50(—171

$= 329$ ।

(ii) 35 भ्रौर 51 भ्रंक प्राप्त करने वाले = 35 भ्रौर 38·2 के बी भ्रंक प्राप्त करने वाले + 38·2 भ्रौर 51 के बीच भ्रंक प्राप्त करने वाले।

35 भ्रौर 38·3 के बीच भ्रंक प्राप्त करने वाले, 35 भ्रौर 38·2 के बीच σ दूरी

$= \frac{35-38·2}{12·8} = -·25\ σ$

(iii) M±2σ भ्रौर M±3σ के बीच —2·14% इसकी बनावट निम्न प्रकार है।

सामान्य सम्भावित वक्र

Normal probability curve
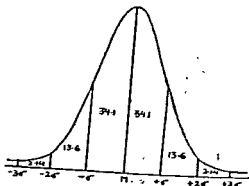
सामान्य सम्भावित वक्र के उपयोग

Uses of Normal probability curve

१. भ्रादर्श के रूप में तुलनात्मक भ्रध्ययन के लिये इसका विशेष महत्व है।

२. नमूना परिवर्तन (Change in sample) से सांख्यिक प्रचलों (Statistics) में सम्भावित त्रुटि (Probable error) के मापन यह बहुत उपयोगी है।

३. वक्र प्रयोग (*Curve Fitting*) में।

४. शैक्षिक (Educational) और मनोवैज्ञानिक (Psychological) मापनों में इसका सर्वाधिक महत्व है।

५. शिक्षा-क्षेत्र तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसन्धानों के अन्तर्गत इसका उपयोग अत्यन्तावश्यक है। इसकी सैद्धांतिक आधाभूत मान्यताओं का मूल्यांकन और मापन (Evaluation and Measurement) में विशेष महत्व है।

तालिका से M और — 25 σ के बीच प्रतिशतता

$$= 9{\cdot}87\%$$

∴ 500 में यह संख्या = 49·35

51 और 38·2 के बीच की σ दूरी

$$= \frac{51-38{\cdot}2}{12{\cdot}8} = \frac{12{\cdot}8}{12{\cdot}8}\ \sigma = \sigma$$

तालिका से M और M+ σ के बीच प्रतिशतता

$$=34{\cdot}13$$

500 में से अभीष्ट संख्या = 170·6

= 171

∴ 35 और 51 के बीच अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों की ...

= 171

= 49·35+171

= 220 परीक्षार्थी।

(iii) मध्य के 600 परीक्षार्थियों में से 300 मध्यमान के बायीं ओर तथा 300 मध्यमान के दायीं ओर होंगे।

मध्यमान के बायीं तथा दायीं ओर क्षेत्रफलों की प्रतिशतता = 30% प्रत्येक तालिका में 30% के लिये σ दूरी

$$= {\cdot}8425\ \sigma$$

शिक्षा सिद्धान्त

PRINCIPLES OF EDUCATION

1967

Principles Of Education

शिक्षा-सिद्धान्त

प्रश्न १

"The most important and urgent reform needed in education is to transform it, to relate it to endeavour to the life, needs and aspirations of the people". Discuss this statement mentioning the important reforms you would like to introduce in the existing system of education in India.

"शिक्षा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण, अति आवश्यक तथा वांछनीय सुधार यह है कि उसको जन-जीवन की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जाय।" इस कथन पर विचार करते हुए लिखिये कि भारत की वर्तमान शिक्षा-पद्धति में क्या सुधार करना पसन्द करेंगे ?

उत्तर :

सदियों की दासत्व की श्रृंखला तोड़कर भारत ने स्वतन्त्रता के स्वच्छन्द मैदान में बीस वर्ष पूर्व ही प्रवेश किया, अंग्रेजी शासन ने हमारे जन-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। हम अभी भी उसके प्रभाव के शिकार हैं। उनकी नीतियों और सांस्कृतिक कुचालों का कीड़ा अब भी भारतीय जन-मन को ग्रसित कर रहा है। हमारे समाज का वर्तमान विक्षिप्त रूप इसी की मायावी चाल है। किन्तु, हमें निराश नहीं होना चाहिये। हमारी संस्कृति पर हजारों वर्षों के [illegible] सभ्यता के प्रहार हुए हैं। किन्तु उसको अभी तक समाप्त कर सकने में कोई भी न हो सका। यह इसकी विशेषता है। इस पर मात लगाने वाला स्वयं इसके खो गया।

आज भारतवासी राजनैतिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक सजग एवं [illegible] शील हो गये हैं। वे आज संसार के विकसित देशों के साथ औद्योगिक एवं [illegible] होड़ के लिए तत्पर हैं। उन्होंने अनुभव कर लिया कि देश के पुनरनिर्माण [illegible] विकास के लिये हमें आवश्यक कदम उठाने होंगे। इस दिशा में सफलता प्राप्ति [illegible] मूल शिक्षा व्यवस्था में वांछित एवं आवश्यक संशोधन प्रमुख एकमात्र घटक है।

वास्तव में यह एक दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद इन दो दशकों में हम वह सब न कर सके जिसकी हमने कल्पना की थी शायद इसका प्रमुख कारण यह है कि हम स्वतन्त्रता का सही अर्थ एवं उसके पोषण की सही विधि को समझने में असमर्थ हैं। उसके उपभोग को सही रीति से कर सकने हेतु

हममें प्रशिक्षण की कमी है। हम अभी तक अपनी शिक्षा को जन-जीवन की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं बना सके। हमारे अपरिवर्तनीय तथा कट्टर विचार, वर्ग भेद, सामाजिक बुराइयों के पोषक तत्व जैसे काला बाजार, भ्रष्टाचार, घूस, रुपया एकत्रित करना, स्वार्थ, भाई-भतीजावाद अब भी इस देश के सामाजिक जीवन को जकड़े हुए हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था इन्हें दूर नहीं कर पायी। देश का सामान्य व्यक्ति गरीबी, निरक्षरता और सामाजिक अन्याय से ग्रसित हैं।

उपरोक्त से छुटकारा पाने के लिये आवश्यक है कि शिक्षा को उचित दिशा दी जाय। जो कि हमारे सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके एवं आकांक्षाओं की तुष्टी की दिशा में रचनात्मक योगदान कर सके। इस नवीन शिक्षा-प्रणाली का ढांचा ऐसा हो जो सामाजिक बुराइयों को दूर कर सके, तथा इस सामाजिक-जीवन में नवीन व्यवस्थाओं के लिये सम्भावनाओं को जन्म दे सके। यह शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जिससे इस देश का नागरिक आर्थिक रूप से सुरक्षित और स्वावलम्बी एवं सुसंस्कृत और योग्य बन सके। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा ऐसी हो जो जीवन के लिये आनन्दमय हो तथा प्रत्येक युवा को अपने साथियों के साथ प्रेम और सहानुभूति के साथ जीवन व्यतीत करने के लिये योग्य बना सके। दूसरे शब्दों में शिक्षा ऐसी हो जो युवकों को जीवन की समस्याओं को सुलझाने में अग्रसर करे। तथा उनको इस योग्य बनाने में समर्थ हो जिससे वे जीवन के कार्य व्यापारों में सफलतापूर्वक क्रियाशील भाग लेकर अपना तथा देश का कल्याण कर सकें। यह कहना उचित होगा कि शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो हमारे चिन्तन और क्रिया के बीच की खाई को दूर कर सके, जो हमारे विचारों और व्यवहारों तथा सिद्धान्त और क्रियाओं के अन्तर को न्यूनतम कर सके तथा उनमें पारस्परिक समन्वय स्थापित करने मे समर्थ हो।

यह एक नग्न सत्य है कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज के बिना व्यक्ति का कोई अस्तित्व ही नहीं है। समाजहीन व्यक्ति न तो अपने व्यक्तित्व का पूर्ण विकास कर सकता है और न ही शैक्षिक सुविधाओं को प्राप्त कर लाभान्वित हो सकता है, अतः सामाजिक जीवन को सफल तथा सुखी बनाने के लिये यह आवश्यक है कि व्यक्ति की शिक्षा-व्यवस्था सामाजिक आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पृष्ठ भूमि पर की जाय। कोहेन (Robert S. Cohen) महोदय ने कहा कि मानव कभी भी स्वयं में नहीं रह सकता है। वह दूसरों के साथ ही रह सकता है। समाज की अनुपस्थिति में न तो उसका विकास और न ही मानवीय अर्थ सम्भव है। उसके व्यक्तिगत रूप में जीवन का अध्ययन अर्थ हीन है। इसकी सार्थकता एवं महत्व तो सामूहिक प्रकृति में ही निहित है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा प्रणाली अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये समुदाय पर आश्रित रहती है। शिक्षा सुधार एकान्त में पूरे नहीं हो सकते, बल्कि वे तो परिवर्तित सामाजिक

व्यवस्था के परिणाम हैं। सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा सम्बन्धी प्रणाली, प्रशासन तथा व्यवस्था और पाठ्यक्रम में परिवर्तन कर देता है, शिक्षा काल तथा स्थान से असम्बन्धित नहीं रखी जा सकती। सामाजिक क्रियायें उनके आदर्श एवं निर्देशन में परिवर्तन करती हैं। सामाजिक परिवर्तन अपना प्रभाव शिक्षा सम्बन्धी प्रणालियों पर डालते हैं। मनुष्य के सोचने में उसके विचारों तथा विधियों को समाज से सम्बन्धित रहना पड़ता है।

"Man never exists in himself, he never lives as a true hermit. Man is the wrong word, we should speak of 'men' and we should ground our every speculation about men on the concrete behaviour and relations of man as we find them. The most conspicuous feature of man and women is that they must be discussed in the plural : they are social by nature. The science of men will be the science of society." —Cohen

वही शिक्षा वास्तविक और व्यावहारिक है जो हमारी भावी पीढ़ी को यह अनुभूति करा दे कि इसका सम्बन्ध समाज से है, तथा उसके अनुरूप कार्य करना उसका प्रथम श्रेणी का दायित्व एवं नैतिक कर्तव्य है। एक योग्य तथा विकसित नागरिक में बागले (Bagly) महोदय के अनुसार निम्नलिखित गुणों का होना परमावश्यक है।

१. आर्थिक कुशलता (Economic Efficiency)—व्यक्ति अपना जीविकोपार्जन कर सकने में समर्थ हो, तथा वह जीवन में स्वावलम्बी बन सके।

२. निषेधात्मक नैतिकता (Negative morality)—संकल्प शक्ति के द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर पूर्ण नियन्त्रण प्राप्त कर ले। वह कोई भी ऐसा कार्य अपनी आर्थिक उन्नति के लिये करे जिससे साथी नागरिकों पर किसी भी सीमा तक अवांछनीय प्रभाव पड़ते हैं।

३. स्वीकारात्मक नैतिकता (Positive morality)—यदि संकल्प शक्ति से अपनी इच्छाओं का बलिदान किया जाय और वह कार्य न किये जायें जिससे दूसरों को हानि होती है तो इससे समाज में अशोभनीय कार्यों को प्रतिरोध प्राप्त होता है। साथ ही यदि व्यक्ति में इस भावना का विकास कि केवल वही कार्य किया जाय जो जन-हित एवं उसकी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की संतुष्टि कर सकता है तो यह स्वीकारात्मक नैतिकता कहलाती है। इससे व्यक्ति सामाजिक बनता है। तथा केवल मात्र अपने हित के लिए कार्य करने में उसका अधिक योग नहीं होता, उसकी ऊर्जा केवल सामाजिक हित के लिए सुरक्षित रहती है।

किन्तु, यह सब हम अभी तक अपने शिक्षा क्षेत्र में न कर सके, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिये आवश्यक है वैयक्तिक और राष्ट्रीय हितों में वांछित समन्वय स्थापित कर शिक्षा को उचित दिशा दी जाय, हम सब अब तक जो कुछ भी किया

वह दूसरों के प्रयोगों एवं उनकी मान्यताओं के आधार पर किया। अभी तक हम अपनी राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था को ठोस तथा मूर्त रूप देने में सफल न हो सके। यही कारण है कि जातिवाद, साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, भाषावाद आदि विघटनकारी तत्व हमारे राष्ट्र की एकता पर आंच लगाये हैं। स्पष्ट है हमारी शिक्षा इस देश के नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत न कर सकी। डा० सम्पूर्णानन्द का विचार, "देश में एकता है और यह एकीकृत रहेगा भी, चाहे इसके निवासियों में कितनी ही विभिन्नतायें क्यों न पायी जायें, पर आज राष्ट्रीय और भावात्मक एकता के लिये जो मांग की गयी है, वह इन विघटनकारी प्रवृतियों को दूर करने के लिये की गई है, जो देश की शक्ति को निर्बल बनाना चाहती हैं "There is unity in the country and it will remain united howsoever great may be the diversities in its inhabitants. But the demand made to-day for the national and emotional integratoin is to do away with those fissiparous tendencies which want to sap the strength to the country " देश के आज के घटनाचक्रों में उसकी पुनःपरीक्षिका प्रतीत करते हैं।

आज न केवल सामाजिक बुराईयां अपितु आर्थिक कठिनाईयां भी हमारे राष्ट्र के विघटन में योग दे रही हैं। शिक्षा व्यक्ति तथा समाज किसी की मांगों को पूरा करने में सफल न हो सकी। अतः इसके स्वरूप और इसकी दिशा में वांछित संशोधन और परिवर्द्धन तथा परिवर्तन राष्ट्रीय दृष्टि से अपेक्षित है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिये आवश्यक सुधार सम्बन्धी सुझाव

1. राष्ट्रीय स्तर पर नियुक्त भिन्न-भिन्न समितियों के शिक्षा-सम्बन्धी नीतियों का अध्ययन कर उन्हें क्रियान्वित करने की दिशा में हमारी सरकार को प्रयत्नशील होना चाहिये। इसके लिये भावात्मक एकता समिति (Emotional integration committee), राष्ट्रीय एकता सम्मेलन (National integration conference) माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondary Education Commission) तथा शिक्षा आयोग (Education Commission) द्वारा दिये गये सुझाव [illegible]

2. [illegible]

[illegible] (Co-operation with home)— [illegible]

प्त करना चाहिये । शिक्षकों को बच्चे की आदतों, रुचियों तथा गुणावगुणों के षय में माता-पिता तथा अभिभावकों से विचार-विनिमय कर वास्तविक तत्वों को नकारी करनी चाहिये । इसके लिये निम्नलिखित आवश्यक हैं ।

(अ) अभिभावक संघ (Parents Association)

(ब) अभिभावक दिवस (*Parents'day*)

(स) प्रगति पत्रों को भरना (Preparation of progress report)

(द) छात्रों के घर जाना (Visit to pupils home)

(ii) सामाजिक जीवन से सम्पर्क (Contact with social life)—प्रायः ह शिकायत की जाती है कि विद्यालय जन-जीवन से दूर होते जा रहे हैं । फलतः क्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी को अपने सामाजिक जीवन में कठिनाईयों का ामना करना पड़ता है । वास्तव मे विद्यालय का समाज से घनिष्ट सम्बन्ध है । सको समाज का लघु रूप बनने की दिशा मे प्रयत्नशील रहना चाहिये । इस उद्देश्य ी पूर्ति के लिए निम्नलिखित उपाय प्रस्तावित किये जाते हैं ।

(अ) समाज सेवा-कार्यों का आयोजन (Planning of social service amps)

(ब) समाज के सदस्यों को निमन्त्रण (Invitation should be extended o the effective members of the Community)

(स) सामाजिक विषयों का शिक्षण (*Teaching of social studies*)

(द) प्रौढ़ शिक्षा के केन्द्रों की व्यवस्था (Arrangement for adult ducation)

(न) *सामाजिक सर्वेक्षण कन्पों का संगठन* (*Organization of social urvery camps*)

(फ) समाज सेवा संघों का निर्माण (Formation of social service eagues)

(iii) राज्य का संरक्षण (State Patronage)—नैपोलियन के अनुसार जन-शिक्षा सरकार का प्रथम और प्रमुख कर्तव्य है (Public instruction *should be the first object of the government*) सरकार को अर्थ तथा व्यवस्था की दृष्टि से विद्यालयों को आवश्यक संरक्षण देना चाहिये । इसके लिये निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं—

(अ) अच्छे विद्यालयों की स्थापना (Establishment of good schools.

(ब) योग्य शिक्षकों की नियुक्ति (Appointment of good teachers)

(स) उदार आर्थिक सहायता (Liberal financial Aid)

(द) विद्यालयों का नियन्त्रण एवं निरीक्षण (Control and supervison of schools)

(य) प्रशिक्षणालयों की उचित व्यवस्था (Organization of effective training colleges for teachers)

३. राष्ट्रीय स्तर पर यह आवश्यक है कि शिक्षा को राजनीति से पृथक रखा जाय। इसके लिये जातियों, साम्प्रदायिक एवं क्षेत्रीय एकता को सुदृढ़ करने में सभी को प्रयत्नशील होना चाहिये।

४. भाषा-विवाद का निपटारा शिक्षकों और शिक्षा-विदों पर छोड़ना ही श्रेयस्कर है। इससे हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति एवं एकता को बहुत हानि उठानी पड़ी है। प्रत्येक अहिन्दी राज्य में हिन्दी को माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य कर देना चाहिये। तथा हिन्दी क्षेत्रों में एक अहिन्दी भाषा अनिवार्य रूप से पढ़ाई जावे। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में छात्र और अध्यापकों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।

५. शिक्षा व्यवस्था मे क्षेत्रीय प्राकृतिक उपलब्धियों, सांस्कृतिक रि[illegible] एवं रहन-सहन को भिन्नता के अनुकूल आवश्यक अन्तर होना चाहिये।

६. शिक्षा मे सामुदायिक उपलब्धियों को ही विशिष्ट स्थान दिया जाना चाहिये। अनावश्यक आडम्बर और अवांछनीय औपचारिकताओं को छोड़ना चाहिये। इसे जन-समुदाय को प्रकृति प्रदान की जाय।

प्रश्न २. "Education is a powerful instrument of economic and cultural transformation." Explain this stat[ement] with a reference to the roll of education in the current cha[nging] pattern of our national life.

"सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन करने के लिये शिक्षा शक्तिशाली साधन है।" इस कथन को व्याख्या राष्ट्रीय जीवन में होने वाले परि[वर्तनों] में शिक्षा के योग पर प्रकाश डालते हुये कीजिये।

उत्तर—शिक्षा गतिशील है। राष्ट्रीय जीवन के इतिहास का विहावलोकन किया जाय तो इसमें समय समय पर परिवर्तन दिखाई देते हैं। इन परिवर्तनों के उद्देश्य भिन्न भिन्न काल की अपनी परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों से विशेष अपेक्षा की जाती है। यह सब समाज की विशिष्ट मांग के आधार पर होता है। समय समय पर शिक्षा विदों ने समय की पुकार के अनुसार शिक्षा के भिन्न भिन्न कार्य बतलाये। विश्लेषणात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय-जीवन में प्रमुख रूप से शिक्षा के निम्नलिखित तीन कार्य हैं :

१. सांस्कृतिक (Cultural)

२. आर्थिक (Economic)

३. सामाजिक (Social)

१. सांस्कृतिक कार्य—शिक्षा सामाजिक संस्कृति का संरक्षण एवं [illegible] है। प्रत्येक समाज अपने रीति-रिवाजों, परम्पराओं, नीति-नियमों [illegible]

धार्मिक विश्वासों भादि को सदियों से सुरक्षित रखे हुये है। इनके भाधार पर वह भपने राष्ट्रीय जीवन के प्रति गर्व का अनुभव करता है। उसके सदस्य किसी भी स्थिति में इनकी भवहेलना को सहन करने के लिये तैयार नहीं हैं। इसके विषय में भोटावे (Ottaway) ने भपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं कि शिक्षा का कार्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों भौर व्यवहार के प्रतिमानों को भपने तरुण भौर कार्यशील सदस्यों को प्रदान करना है (One of the tasks of education is to hand on the cultural values and behaviour patterns of the society to its young and potential members.) यह बात संस्कृति के निम्नलिखित पहलुओं की विवेचना से स्पष्ट हो जाती है :—

(i) मूल-प्रवृत्तियों-का संवेगों पर नियन्त्रण—शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति भपनी मूलप्रवृत्तियों (instincts) भौर संवेगों (Emotions) पर नियन्त्रण कर उनका पुनर्निर्देशन कर शोधन करता है। इससे शिक्षार्थियों में स्थिरता भाती है, भपने सामाजिक व्यवहार मे उसे उपयुक्त कौशल की प्राप्ति होती है। डेनियल [illegible] Webster) के भनुसार; "शिक्षा के द्वारा भावनाओं को भनु- [illegible] :नियन्त्रित भौर भच्छी प्रेरणाओं को प्रोत्साहित किया जाना [illegible] h education the feelings are to be disciplined, the [illegible] be restrained, true and worthy motives are to be

[illegible] त्र एवं नैतिक व्यक्ति—सुसंस्कृत नागरिक का निर्माण राष्ट्रीय [illegible] शक्तियों के विकास मे निहित है। यह विकास कार्य शिक्षा के [illegible] हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ॰ राधाकृष्णनन् ने कहा, "चरित्र [illegible] वस्तु है, जिस पर राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता है। [illegible] ुष्य श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते। यदि हमारे पैरों [illegible] त्तसक रही है तो हम पहाड़ पर नहीं चढ़ सकते।" [illegible] रे भवन की नीवें ही हिल रही हैं, तो हम ऐसी स्थिति में उस [illegible] च सकते हैं जिसको हमने भपना लक्ष्य बनाया ? 'character is [illegible] cter is that on which the distiny of a nation is built. [illegible] ave a great nation with men of small character. We can not climb the mountain when the very ground at our feet is crumbling. When the very basis of our structure is shaky, how can we reach the heights which we have set before Ourselves ?)। इसी प्रकार हरबर्ट का कथन है कि भच्छे नैतिक चरित्र का विकास ही शिक्षा है (Education is the development of good moral character.) नैतिकता की दृष्टि से उच्च मनुष्य का विकास शिक्षा के माध्यम से सम्भव है। व्यक्तित्व का यह पहलू उसमें न्याय, धैर्य, परिश्रम, पवित्रता,

परोपकार, सरलता, आज्ञापालन, स्वच्छता आदि सद्गुणों का सृजन करता है।

(iii) कला प्रेमी – राष्ट्रीय स्तर पर सुसंस्कृत मनुष्य में कला और साहित्य के प्रति प्रेम होना आवश्यक है। उनमें इनके सृजन की क्षमता निहित होती है। साहित्य और कला प्रारम्भ से ही समाज का प्राण रही है। सांस्कृतिक उत्थान की अभिव्यक्ति इन्हीं के माध्यम से होती है।

(iv) सामाजिक अनुशासन—एक सुगठित राष्ट्र के निर्माण को उसके अनुशासित नागरिक ही सम्भव कर सकते हैं। यह गुण राष्ट्रीय संस्कृति का एक प्रमुख अंग है। शिक्षा के द्वारा ही उसका देश के भावी नागरिकों में विकास किया जा सकता है। इस दिशा में हम विद्यालयों में प्रशिक्षण की व्यवस्था कर सकते हैं।

(vi) सांस्कृतिक सामग्री से सम्पर्क—शिक्षा के माध्यम से बालक-बालिकाओं का राष्ट्रीय संस्कृति से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। जो भी उपयुक्त हो उसे सैद्धान्तिक (theoretical) अथवा क्रियात्मक (Practical) किसी भी प्रविधि से इस दिशा में युक्त किया जाता है। किन्तु इनमें सौन्दर्यानुभूति सम्बन्धी बातों का समावेश आवश्यक है। इससे बच्चे को सांस्कृतिक तथ्यों के क्षेत्र में जानकारी के लिये आवश्यक प्रेरणा मिलेगी। शिक्षा के अलावा राष्ट्रीय संस्कृति की सुरक्षा और उसके पुनर्गठन की अन्य कोई विधि नहीं है। डा० जाकिर हुसैन का मत है कि केवल संस्कृति की सामग्री द्वारा ही शिक्षा की प्रक्रिया को गति दी जा सकती है। केवल इसी सामग्री से ही मानव-मस्तिष्क का विकास सम्भव है ('The goods of cutlure are the only means of setting the educational process into motion. They are the only gccd for the naurishment of the human mind.") उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय संस्कृति का पोषण और पुनर्गठन शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है।

२. आर्थिक कार्य—किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था उसके नागरिकों और उसमें उपलब्ध प्राकृतिक साधनों तथा वस्तुओं पर निर्भर करती है। नागरिकों की क्षमता इस दिशा में उल्लेखनीय महत्व रखती है। प्राकृतिक साधनों से राष्ट्र को आवश्यक रूप से लाभान्वित करना नागरिकों की तकनीकी तथा वैज्ञानिक जानकारी पर निर्भर करता है। विज्ञान के युग में हम किसी भी क्षेत्र में तकनीकी जानकारी के बिना उत्पादन नहीं बढ़ा सकते। राष्ट्र की आर्थिक अवस्था में सुधार तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि बढ़ती हुयी जन संख्या के अनुसार हम अपनी औद्योगिक तथा कृषि के उत्पादन को बढ़ा न लें। शिक्षा का इस दिशा में विशेष उत्तरदायित्व है। निम्नलिखित कार्यों को पूर्ण कर शिक्षा राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में वांछित सुधार करने में योगदान करती है।

(i) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of scientific attitude)--आज के युग में प्रत्येक राष्ट्र के लिये वैज्ञानिकों और प्राविधिक

विकास अत्यन्त आवश्यक है। इससे उनमें वैज्ञानिक और तकनीकी अन्वेषणों तथा शोधों के लिये प्रशिक्षण मिलने में आसानी होगी। इन कार्य को करने का एक मात्र साधन शिक्षा है। उसे हम विद्यालय में विज्ञान विषयों के पढ़ाने से पूरा कर सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द का कथन है, कि "हमारे लिये पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। हमें तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है। इससे हमारे देश के उद्योगों का विकास होगा (what we need is to study western science, we need. technical education that will develop our indistries") ।

(ii) अवकाश का उचित प्रयोग (Proper use of leisure)—कार्य के अतिरिक्त हम लोगों के पास बहुत समय बच रहता है। प्रायः जन साधारण सामान्यतया इसे ध्वंसकारी कार्यों में नष्ट कर देता है। हमारे विद्यार्थी जो कि कल के नागरिक है, यही सब करते हैं। किन्तु यदि समुचित व्यवस्था की जाय तो अवकाश के सदुपयोग से छात्रों को कई प्रकार के मनोरंजन और लाभदायक पहलुओं में प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इस प्रकार की व्यवस्था शिक्षा के कार्य-क्रम से आसानी से उच्चतम लाभ के साथ क्रियान्वित की जा सकती है। इससे सामुदायिक उत्पादन में भी योगदान मिल सकता है। साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार का प्रशिक्षण तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति के लिये मार्ग प्रशस्त कर सकता है। नेपोलियन ने एक बार कहा था-"अपने समस्त अवसरों का लाभ उठाना श्रेयस्कर है। प्रत्येक नष्ट किया जाने वाला क्षण भावी दुर्भाग्य को आमंत्रित करता है (Improve your opportuinties Every hour lost now is a chance of future misfortune.)

(iii) जीवन-यापन के साधन में प्रशिक्षण (Training in the field befitting to livelihood)—शिक्षा के द्वारा छात्रों को किसी विशेष व्यवसाय में प्रशिक्षण मिलता है। यदि शिक्षा इस प्रकार के लक्ष्य से वंचित है तो उसे पूर्ण शिक्षा नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार की पूर्व तैयारी से बालक अथवा बालिका अपने भावी जीवन मे आर्थिक क्षमता प्राप्त करने मे समर्थ हो जाते हैं तथा राष्ट्रीय जीवन में रचनात्मक योगदान कर अपने देश की आर्थिक व्यवस्था में वांछित सुधार, संघोजन एवं परावर्द्धन करते हैं। डा० राधाकृष्णन्‌ ने कहा है-"हमें युवकों को यथा सम्भव सर्वोत्तम प्रकार के सर्व-कार्यकुशल व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिये प्रशिक्षित करना चाहिए, उन्हें शिष्टाचार और सम्मान के सभी नियमों को अपनी खुशी से मानना सीखना चाहिए (we must train the going to the best possible all round living, individual and social. They must learn to observe spontaneously the unwritten laws of decency and honour.") शिक्षा के द्वारा हम अपने भावी नागरिकों को न केवल व्यवसाय के लिये ही तैयार करते हैं अपितु उनमे व्यवहार कुशलता लाने की दिशा में भी प्रगति

(iv) व्यवसायिक कुशलता की उन्नति (Improvement of vocational efficiency)—विशिष्ट प्रकार की शिक्षा के प्रावधानों की उपलब्धि से विद्यार्थियों को किसी व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करने से उसकी कार्य-क्षमता में वृद्धि होने से राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ जाता है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था से आर्थिक स्तर का ऊँचा होना सम्भव हो जाता है।

३. सामाजिक कार्य—शिक्षा स्वयं एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसका जन्म और पोषण समाज में ही होता है। किन्तु, साथ ही यह समाज का पोषण भी समान महत्व के साथ करती है, जिस प्रकार का कार्य मनुष्य जीवन में भोजन का है, सामाजिक जीवन में शिक्षा है। शिक्षा अपने निम्नलिखित दायित्वों से समाज का पोषण करती है।

(i) नागरिकता में शिक्षा (Training in citizenship)—शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति नागरिकता में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। इसी के द्वारा उन आर्थिक क्षमता, स्वीकारात्मक नैतिकता तथा निषेधात्मक नैतिकता का विकास होता है।

(ii) समाजवादी समाज की स्थापना (Establishment of socialistic society)—हमारे प्रजातन्त्र की प्रकृति समाजवादी है। वर्गहीन, समाज की प्राप्ति हमारा लक्ष्य है, शिक्षा की समान व्यवस्था तथा आवश्यक आर्थिक अनुदान के माध्यम से राष्ट्र के भावी नागरिकों को समाजवादी विचारधारा में आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री नेहरू ने लिखा है—"मैं समाजवादी राज्य में विश्वास करता हूं और चाहता हूं कि शिक्षा का इस उद्देश्य की ओर विकास किया जाय (I believe in socialistic state and I would wish education to shape itself towards this goal")

(iii) सामाजिक बुराइयों का अन्त (Abolition of social evils)—भारत कई सामाजिक बुराईयों का शिकार बना हुआ है। शिक्षा इन बुराईयों को दूर करने की दिशा में आवश्यक कार्य करती आ रही है। धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ग के आधार पर आज कई राष्ट्रीय एकता को घटनायें हो रही हैं। इन सबका उचित निदान शिक्षा के ही द्वारा सम्भव है।

(iv) सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का समावेश (Inculcation of the spirit of social responsibilities)—प्रत्येक व्यक्ति की अपनी आवश्यकतायें होती हैं। परन्तु उन सबकी पूर्ति करने की क्षमता नहीं होती। इसके लिये [illegible] पर आश्रित रहना पड़ता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामाजिक सहानुभूति, प्रेम, सहनशीलता के गुणों का अर्जन करना चाहिए। इन सामाजिक गुणों का विकास [illegible] शिक्षा के [illegible]

ही सम्भव है। इस विषय में डा० जाकिर हुसैन का निम्नलिखित कथन विशेष महत्व का है।

"सामुदायिक उत्तरदायित्व की शिक्षा देने के लिये स्वयं शिक्षा-संस्थाओं को सामुदायिक जीवन की इकाइयां के रूप में संगठित किया जाना चाहिये। समाज में सेवा करके ही व्यक्ति सेवा करना सीखता है। जब तक यह सिद्धान्त हमारी शिक्षण-संस्थाओं का प्राण नहीं बनेगा, तब तक शिक्षा के अन्य सुधार जोड़-गांठ के काम होंगे (In order is educate per social responsibility, the institutions should themselves be organized as units of community living. One learns to serve by serving in society unless this principle becomes the life breath of our educational institutions, all other reforms would be just patch work".

(v) नि.स्वार्थ कार्य की भावना का समावेश (Inculcation of the spirit of social work) :—आज इस भौतिकवादी युग मे मनुष्य स्वार्थी बन गया है। स्वार्थ की भावना राष्ट्रीय विकास के मार्ग में एक भयंकर बाधा है। आज जब कि देश बाहरी आक्रान्ताओं और आन्तरिक जटिलताओं के दलदल में फंसा हुआ है, भारत की राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था आध्यात्मिक पहलू में उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था कर एक निस्वार्थ समाज प्रेमी तथा राष्ट्र सेवी नागरिक का निर्माण कर सकती है।

(vi) नेतृत्व के गुणों का विकास (Development of the qualities of leadership) :—प्रजातन्त्र मे कुशल नेतृत्व की अत्यन्त आवश्यकता है। जन्मजात नेता बहुत कम महापुरुष होते है। वांछित विधियो और प्रविधियों के अनुसरण से हम अपने विद्यार्थियो मे नेतृत्व के गुणों का विकास कर सकते हैं। शिक्षा के लक्ष्यों का उल्लेख करते हुये माध्यमिक शिक्षा आयोग ने ठीक ही लिखा है, "जनतंत्रीय भारत में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य-व्यक्तियों में नेतृत्व के गुणों का विकास करना है (An important aim of education in democratic India is to develop the qualities of leadership in the individuals".)

(vii) शिक्षा के माध्यम से भावात्मक एकता की प्राप्ति (Realization of emotional integration) तथा अन्तर सांस्कृतिक समन्वय (Inter-cultural coordination) सम्भव है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा का किसी राष्ट्र के आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन मे बहुत बड़ा महत्व है।

यदि हम इतिहास के पन्ने उलटें तो हम देखते हैं कि वैदिक काल से लेकर वर्तमान भारत में शिक्षा ने जो जो परिवर्तन देखे उनका मूल कारण समकालीन

प्रशासक की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक नीतियों में ही निहित है। वैदिक काल के आश्रम, हिन्दूकाल की नालन्दा जैसी शिक्षण संस्थायें, मुगल काल के मकतब और मैकाले की देन स्कूल और कालेज उपरोक्त को प्रतिबिम्बित नहीं करते तो और क्या ?

अन्त में हुमायूं कबीर के कथन से हमें सारी परिस्थिति का सही पता चल सकता है।

"भारत में शिक्षा के द्वारा लोकतन्त्रीय चेतना वैज्ञानिक खोज, और दार्शनिक सहिष्णुता का निर्माण किया जाना चाहिये। तभी हम उन परम्पराओं के उचित उत्तराधिकारी होंगे जिनका निर्माण इस देश के अतीत में हो चुका। तभी हम उस आधुनिक विरासत में अपना भाग पाने के अधिकारी होंगे, जो विश्व के समस्त राष्ट्रों की विरासतों को एक करने का प्रयत्न करती है (Education in India must create the spirit of democracy, scientific inquiry and pholosophical toleration, Thus alone can we be the rightful inheritors of the glorious traditions which have been left in this country in the past. Thus alone can we claim to take our share in the modern heritage which seeks to combine the contributions of people throughout the world")

प्रश्न ३.

What do you understand by the term "Idealism in education"? Explain clearly the basic principles and practices underlying the idealistic philosophy of education, and its impact on our system of education.

'शिक्षा में आदर्शवाद' का आप क्या अर्थ समझते हैं ? शिक्षा के आदर्शवादी दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों तथा प्रकृतियों की व्याख्या कीजिये, तथा लिखिये कि उसका हमारी शिक्षा पद्धति पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर :—

'शिक्षा में आदर्शवाद' का तात्पर्य शिक्षा पर आदर्शवादी दर्शन के प्रभाव तथा शिक्षा के क्षेत्र में उसके सिद्धान्तों की व्यावहारिकता से है। सामाजिक दर्शन के क्षेत्र में शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू रही है। इसी के माध्यम से विशिष्ट दार्शनिक विचारधारा का प्रसारण एवं प्रचलन सम्भव है। दर्शन के लिये शिक्षा एक साधन है। साथ ही शिक्षा प्रक्रिया में दार्शनिक विचारधाराओं का संशोधन एवं परिमार्जन भी किया जाता है। स्पष्ट है आदर्शवाद का शिक्षा पर प्रभाव तथा शिक्षा में इसके मूल्यों की ग्राह्यता दोनों ही 'शिक्षा में आदर्शवाद' में निहित हैं। आदर्शवाद के शिक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख तथा आवश्यक तात्विक सिद्धान्त निम्न-हैं :

१. सच्ची वास्तविकता विचार, प्रयोजन एवं आध्यात्म में निहित है (Ultimate truth lies in spirit, purpose and idea)
२. मानसिक जीवन ही जानने योग्य है (*Only mental life is work to know*)
३. मन मस्तिष्क की क्रिया है। अतः मस्तिष्क की उपज ही वास्तविकता है (Product of mind is the only reality)
४. ज्ञान प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन अन्तर्दृष्टि है (Insight is the best means to acquire knowledge)
५. आध्यात्मिक ज्ञान ही सर्वोत्तम है (Spiritual knowledge is the highest to know ever)
६. सत्य ज्ञान को प्राप्त करने का सच्चा साधन विवेक तथा मन और आत्मा का समन्वय है (True knowledge can be achieved with the real coordination of mind, spirit and thin-*king*)
७. परम मन (Absolute mind) में जो कुछ विद्यमान है, उसके अतिरिक्त जगत् में किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं है। (Nothing has existence in the universe except what is possessed by the Absolute mind)
८. प्रत्येक व्यक्तिगत मन निरपेक्ष मन का अंश है (Every Individual human mind is the unit of the Absolute mind)
९. व्यक्तित्व विचारों और प्रयोजनों का मिश्रण है। यही अन्तिम वास्तविकता भी है (Personality is composed of ideas and purposes and is complete in *itself*)
१०. आत्म-निर्णय ही सच्चे जीवन का सार है (Self judgement is the *essence of human life*)
११. आध्यात्मिक एवं मानसिक विकास में ही व्यक्तित्व का उन्नयन सम्भव है (Development of personality is possible through the intellectual and spiritual development)
१२. बाह्य संसार मिथ्या है (External world is not True)।
१३. इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान सच्ची वास्तविकता नहीं है (Knowledge acquired through human organs is not absolute truth)।
१४. विज्ञान द्वारा प्राप्त विश्व सम्बन्धी जानकारी वास्तविकता की अपूर्ण अभिव्यक्ति है (Knowledge acquired by science

about the universe in the incomplete expression of the truth) ।

उपरोक्त विद्वानों ने शिक्षा की सम्पूर्ण शिक्षा दर्शन को स्थापित किया है। इसके अन्तर्गत उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक, अनुशासन और छात्र पर इसकी छाप स्पष्ट होती है।

आदर्शवाद और शिक्षा के उद्देश्य
(Idealism & Aims of Education)

रास और रस्क के अनुसार शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य व्यक्तित्व का उत्कर्ष अथवा आत्मानुभूति है। "आदर्शवाद से सम्बन्धित शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का उत्कर्ष अथवा आत्मानुभूति अर्थात् 'आत्म' की सर्वोच्च शक्तियों या सम्भावनाओं को वास्तविक कर देना है (The aim of education specially associat with Idealism in education is the exaltation of personality self realization, the making actual or real the highest potenti lities of the self")

प्लेटो के अनुसार शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति को पूर्णता या आदर्श अवस्था में पहुँचाना है। यह पूर्णता आदर्श अवस्था किसी विशिष्ट व्यक्ति की धरोहर नहीं है। इस पर जन-साधारण का समान रूप से अधिकार है। इस अवस्था की प्राप्ति से नागरिक एक आदर्श राज्य को बनाने में समर्थ होते हैं। इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

१—शाश्वत आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति (Realization of External Ideals and Values) :—

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य अमर आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति है। रस्क ने इन मूल्यों को तीन भागों में बाँटा है— (१) मानसिक-जो ज्ञात है, (२) भावात्मक-जिसका अनुभव किया जाता है, (३) संकल्पिक-जिसका संकल्प किया जाता है "The intellectual what is known, the emotional, what is felt, and the volitional, what is willed." । इससे स्पष्ट होता है कि आदर्शवाद सत्यं, शिवं, सुन्दरं की प्राप्ति पर विशेष बल देता है।

२-व्यक्तित्व का उत्कर्ष (Exaltion of personality)—व्यक्तित्व के उत्कर्ष के लिए आत्मानुभूति (self realization) और आत्माभिव्यक्ति (self expression) दोनों ही सम्प्राप्ति समान रूप से महत्वपूर्ण है।

३-सांस्कृतिक धरोहर की समृद्धि (Enrichment of cultural heritage)-आदर्शवाद समाज की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर विशेष बल देता है। मनुष्य ने इनकी संप्राप्ति रचनात्मक कार्यों के द्वारा की। इस विषय में रास का कथन उल्लेखनीय है। "धर्म, नैतिकता, कला, साहित्य, गणित और विज्ञान 'विभिन्न युगों में किये जाने वाले मनुष्य के नैतिक, मानसिक और सौन्दर्यात्मक

कार्यों के परिणाम हैं (Religion, morality, art, literature, mathematics and science are the product of man's moral intellectual and aesthetic activity throughout the ages") । अतः आवश्यक है कि मानव की उपलब्धियों में आवश्यक परिमार्जन और संवर्द्धन करने के लिये प्रयास किये जायें। इन्हीं की समृद्धि के लिये शिक्षा को कार्य करने चाहिए।

४-ब्रह्माण्ड के एकत्व की अनुभूति (Realization of the universal unity)—ऐडम महोदय के अनुसार ब्रह्माण्ड एक विचार प्रक्रिया (Thought process) है। उसकी सभी वस्तुयें उद्देश्यपूर्ण एवं समझने योग्य हैं। ये सब कुछ स्थिर नियमों से नियन्त्रित होते हैं। शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य व्यक्ति को इन नियमों से परिचय प्राप्त करने की दिशा में मार्ग-दर्शन है। इससे उसे ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुओं और घटनाओं में एकत्व की अनुभूति हो सकेगी। मानव को व्यक्तित्व की पूर्णता को प्राप्त करने के लिये इसकी आधारभूत आवश्यकता है।

५-सामाजिक कुशलता (Social Efficiency)—हार्न महोदय के अनुसार आदर्शवाद की शिक्षा का सबसे प्रमुख एकमात्र लक्ष्य सामाजिक कुशलता की प्राप्ति है। इसके लिये व्यक्ति में उत्तम कार्य-कौशल (Industry) चरित्र (character) एवं उत्तम नागरिकता (Splendid Citizenship) का होना आवश्यक है। शिक्षा को इन्हीं दिशाओं में व्यक्ति को प्रशिक्षित करने के प्रयास करने चाहिये।

आदर्शवाद और शैक्षिक प्रक्रिया

(Idealism and Education process)

आदर्शवादी शिक्षक बाल-केन्द्रित शिक्षा के घोर विरोधी हैं। वे तो केवल आदर्श-केन्द्रित शिक्षा (Ideal centered) शिक्षा के ही पक्षपाती हैं। वे ईश्वर चिरन्तन सत्य (Eternal Truth) के अतिरिक्त समस्त ब्रह्माण्ड को अस्थायी और परिवर्तनशील मानते हैं। अतः शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु अस्थायी मानव अथवा समाज न होकर शाश्वत परम होना चाहिए। स्पष्ट है आदर्शवादी शिक्षा ईश्वरीय नगर (City of God) केन्द्रित है।

आदर्शवादी शिक्षा में अध्यापक का स्थान

(Place of Teacher in Idealistic Education)

आदर्शवाद शिक्षा-कार्यों में अध्यापक को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानता है। वह उसी को व्यक्तित्व की पूर्णता एवं सामाजिक और सांस्कृतिक अभिवृद्धि के लिये प्रेरणा का स्रोत मानता है। आदर्शवाद द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों और मूल्यों का प्रसारण एवं जीवन में उन्हें व्यावहारिक रूप देकर मानव का कल्याण अध्यापक के प्रयासों से ही सम्भव है। अध्यापक एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व का मूर्तरूप है। वह बालक के लिये आदर्श है। मेरिल मूर टाम्सन (Merril Moore Thompson) का विचार तो यहाँ तक कहता है कि गुरु बालक के लिए ईश्वर का प्रतिरूप है। भारतीय संस्कृति की तो यह विचारधारा आधार रहा है। हार्न का

कहना है कि अध्यापक को मित्र रूप में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के उन्नयन की दिशा प्रेरणा स्रोत का कार्य करना चाहिये। उनके अनुसार; "अच्छा अध्यापक आवश्यक रूप से एक ऐसा परिश्रमी व्यक्ति है जो विद्यार्थियों को अपना सन्तुलित व्यक्तित्व तथा श्रेष्ठ व्यवहार के प्रति जागृत करे तथा उन्हें स्फूर्ति एवं प्रेरणा प्रदान करे।"

आदर्शवाद में अनुशासन
(Discipline in Idealism)

"प्रकृतिवाद की पुकार 'स्वतन्त्रता' एवं आदर्शवाद की पुकार 'अनुशासन' है (Freedom is the cry of naturalists, while discipline is that of Idealism) इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि आदर्शवादी विचारक बालक की स्वतन्त्रता पर विश्वास नहीं करते। उनका मत है कि स्वतन्त्र वातावरण में उसके पथ-भ्रष्ट होने की आशंकायें बढ़ जाती हैं। वे बड़ों के आश्रय में ही रहकर बालक के कल्याण को देखते हैं। किन्तु, वाह्य दबाव से अनुशासित करने की वि- को भी आदर्शवाद मान्यता नहीं देता। हार्न महोदय के अनुसार-' शासन का आर बाह्य रूप में होता है, किन्तु यह समीचीन होगा कि इसका अन्त आदत, निर्मा तथा आत्म-नियन्त्रण द्वारा आन्तरिक रूप में हो (Authority begins by bei external, it is sufficient if it ends through habit, formatio and self control in becoming internal.") शिक्षक का कर्तव्य है कि विद्या र्थियों में अनुशासन की भावना जागृत करे। विद्यार्थी अध्यापक के उच्च आदर्शों आचरण करना सीखते हैं। आदर्शवादी अनुशासन को अवदमन के रूप में नहीं देखन चाहते। अनुशासन व्यावहारिक आदर्शों को प्रभावोत्पादकता का प्रतिफल होन चाहिए। बालक जीवन के सत्य, मूल्यों और आदर्शों से अनुप्रेरित होकर अच्छ आदतों का निर्माण करे। उसमें आत्म नियन्त्रण (Self Control), आत्मानुभूति (Self realization) और आत्माभिव्यक्ति (Self expression) का विकास हो। इससे वह पूर्ण रूप से वांछित ढंग से अनुशासित हो सकेगा।

आदर्शवाद और पाठ्यक्रम
(Idealism & Curriculum)

आदर्शवादी पाठ्यक्रम का आविर्भाव भावों (Ideas) और आदर्शों (Ideals) के गर्भ से होता है। वे बालक की वर्तमान और भावी किसी भी क्रिया को महत्व नहीं देते। उनके अनुसार पाठ्यक्रम को मानवीय परम्परा के पूर्ण अनुभवों का परावर्तन होना चाहिए। पाठ्यक्रम को मानवीय सभ्यता का परावर्तक बनना चाहिए जिससे बालक अपनी सामाजिक सम्पदा का अनुभवों के रूप को संगठित निधि के रूप में वरणकर सके। (To epitomize and organize the capitalized experience of the race of which the child is a member.) चूँकि मानवीय अनुभव दो प्रकार के -(१) भौतिक जगत सम्बन्धी (Experiences pertaining to the

physical world) और (२) सामाजिक (Social experiences) मानव-मात्र के पारस्परिक कार्य व्यापार सम्बन्धी हैं। प्रतः पाठ्यक्रम में भी भौतिक विज्ञान (Physical sciences) एवं समाज विज्ञान (Humanities) दोनों ही सम्मिलित हैं।

प्लाटों के जीवन के उच्चतम प्रादर्श ईश्वर को प्राप्त करने के लिये छात्रों को आध्यात्मिक मूल्यों में प्रशिक्षण देना आवश्यक है। उनके अनुसार ये मूल्य सत्य (Truth), शिव (Beauty) और सुन्दरम् (Goodness) हैं। ये तीन मूल्य तीन मानवीय क्रियाओं मानसिक (Intellectual), कलात्मक (Aesthetic) और नैतिक (Moral) को प्रेरक हैं। पाठ्यक्रम में इन तीनों ही पहलुओं में छात्रों को प्रशिक्षण के लिये प्रावधान होना चाहिये। प्रतः पाठ्यक्रम की विषय सामग्री निम्न प्रकार की होनी चाहिये—

१. *मानसिक क्रिया सम्बन्धी (Intellectual Activities)—भाषा, साहित्य, विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल।*

२. कलात्मक क्रियायें (Aesthetic Activities)—कला, कविता और संगीत।

३. नैतिक क्रियायें—धर्म, नीति शास्त्र, दर्शन, और आध्यात्मिक क्रियायें।

नन महोदय के अनुसार पाठ्यक्रम में निम्नलिखित दो प्रकार की क्रियाओं के लिये आवश्यक प्रावधान होना चाहिये—

१. वे क्रियायें जिनका सम्बन्ध व्यक्ति और समाज की स्थिति एवं स्तर के सुधार से है—(जो शारीरिक स्वास्थ्य की अभिवृद्धि एवं सुरक्षा के लिये उपयोगी तथा व्यवहार, नैतिकता एवं धर्म से सम्बन्धित हैं)—इसके लिये पाठ्यक्रम में आवश्यक व्यवस्था होनी चाहिये।

२. मानवीय संस्कृति का निर्माण करने वाली क्रियायें – इसके लिये भाषा, साहित्य, कला, संगीत आवश्यक हैं।

उपरोक्त दोनों क्रियाओं के लिये पाठ्यक्रम में हस्तकला, विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास जैसे विषयों का शिक्षण भी आवश्यक है।

आदर्शवादी पाठ्यक्रम के विषय में यह भी स्मरणीय है कि इसमें न होकर गतिशीलता होनी चाहिये, बालकों की आध्यात्मिक आवश्यकता के इसमें परिवर्तन अपेक्षित है।

आदर्शवाद और शिक्षण विधियां
(Idealism and Methods of Teaching)

आदर्शवादी शिक्षक किसी विशिष्ट शिक्षण विधि का पुजारी नहीं होता। "आदर्शवादी अपने आपको विधि के निर्माता एवं निर्धारक मानते हैं। वे किसी एक विधि का दास बनना स्वीकार नहीं करते (*Idealists consider themselves* as the 'creaters' and 'determiners' of method, not devotees of

some one method.)" वे प्रश्नावली और वाद विवाद (Questioning and Discussion) प्रणाली को मान्यता देते हैं। उनका विचार है कि इससे बालकों की चिन्तन शक्ति प्रबल होती है। उनमें तथ्य के विश्लेषण विवेचना एवं संश्लिष्ट निर्णय शक्ति का विकास इस प्रणाली के अनुगमन से सम्भव है।

यह दार्शनिक विचारधारा 'व्याख्यान विधि' को विशेष स्थान देती है। आत्मानुभूति और आत्माभिव्यक्ति की यह परिपक्व अवस्था है। इसी के माध्यम से इन्हें प्राप्त भी किया जा सकता है। साथ ही वे प्रोजेक्ट विधि का भी समर्थन करते हैं। पुस्तकीय ज्ञान के पूरक के रूप में वे इस क्रिया विधि को आवश्यक रूप से महत्व देते हैं।

फ्रोबेल महोदय खेल के द्वारा शिक्षा देने के पक्षपाती रहे हैं। इसी की मान्यता के बल पर उन्होंने खेल-पद्धति (Kinder garten) को जन्म दिया। जो कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की एक सर्वमान्य उत्तम विधि के रूप में शिक्षा की आधार शिला बन गयी है।

आदर्शवादी शिक्षा में विद्यालय का स्थान
(Place of school in Idealisitic Education)

आदर्शवाद विद्यालय को बहुत महत्व देता है। उसके अनुसार यह वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की परम आवश्यकता है। निम्नलिखित बिन्दुओं से इसका महत्व स्पष्ट हो जाता है;

१. विद्यालय बालकों को सांस्कृतिक पहलू में प्रशिक्षण देकर मानव संस्कृति को वंश परम्परा के माध्यम से दूसरी पीढ़ियों में हस्तान्तरित कर सकना सम्भव नहीं है। विद्यालय ही एक ऐसी संस्था है जहां यह महान् कार्य सिद्ध हो सकता है।

२. ऐसी मान्यता है कि सामाजिक संस्कृति में ऐश्वरीय ज्ञान छिपा है। अतः स्कूल सामाजिक ज्ञान के साथ–साथ ऐश्वरीय ज्ञान का प्रावधान भी करता है।

३. विद्यालय से चिन्तन के लिये आवश्यकता एवं लाभकारी अवसर मिल सकते हैं। इसमें सामाजिक पूर्णता का अर्थ होता है।

४. सामाजिक शिक्षा का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान देने के लिये विद्यालय उपयुक्त स्थान है।

५. विद्यालय में एक कुशल तथा प्रशिक्षित आदर्श अध्यापक के निर्देशन में विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व की पूर्णता को अधिक सुविधापूर्वक आसानी से प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा में आदर्शवाद की देन

१. वर्तमान भौतिकवादी युग में मानव समाज द्वेष, कलह, अत्याचारों और पारस्परिक अविश्वास, का एक गढ़ सा आगार बन गया है। इससे भी [illegible] है वह सर्व विदित है। इस रोग [illegible] का एक मात्र

शिक्षा की किरण हमें आदर्शवाद के आध्यात्मिक सिद्धांतों में ही दृष्टिगोचर होती है। विज्ञान के इस युग में मानव कल्याण तथा पारस्परिक सहानुभूति, मैत्री और विश्व शान्ति की प्रेरणा इसी सिद्धांत से निकली है। जो कि ब्रह्माण्ड में एकत्व के दर्शन कराता है।

२. इससे शिक्षा के महान् उद्देश्यों का प्रतिपादन होता है।

३. आज की इस गिरती हुई सामाजिक व्यवस्था में अध्यापक की मर्यादा और उसके मान की सुरक्षा के लिये आदर्शवाद ही किरणपुञ्ज का कार्य कर रहा है।

४. यह स्व-अनुशासन और आत्म-नियन्त्रण के सिद्धान्तों पर बल देता है। स्पष्ट है आदर्शवाद प्रजातान्त्रिक प्रणाली में प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है।

५. आदर्शवाद बालक को भावनाओं और उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं का आदर करता है। जो कि हमारी आज की शिक्षा का आधार है।

प्रश्न ४—

"The essential features of basic eduction,' namely, creative activity and the environment and contact with the local community life, are so important that they should guide and shape the educational system of all levels.' Comment on this statement and give the centents of curriculum you would like to suggest for the socendary schools in your state of Rajasthan.

बुनियादी शिक्षा से मूलभूत तत्व रचनात्मक कार्य, वातावरण तथा स्थानीय सामुदायिक जीवन से सम्पर्क इतने महत्वपूर्ण हैं कि वे प्रत्येक स्तर पर शिक्षा प्रद्धति की रूपरेखा निश्चित करने में मार्ग निर्देशन करें।" इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिये तथा यह भी लिखिये कि अपने राज्य राजस्थान के माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में किन किन बातों का समावेश पसन्द करेंगे।

उत्तर—

जहां बुनियादी शिक्षा (Basic Education) रचनात्मक तथा सृजनात्मक क्रियाओं (Constructive and Creative activities) और वातावरण तथा स्थानीय सामुदायिक जीवन से सम्पर्क का उल्लेख करती है, हमारे सम्मुख स्पष्ट संक्षिप्त रूप में शिक्षा के अर्थ, लक्ष्य, विषय वस्तु, शिक्षण विधियों एवं विद्यालय आवश्यक क्रियाओं की रूपरेखा प्रस्तुत कर देती है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा के लिये एक प्रभावोत्पादक पाठ्यक्रम की रूपरेखा हमें दे देती है। उसकी शिक्षा प्रक्रिया अपने में कुछ विशिष्ट गुण रखती है, इस कार्यक्रम पर यदि चिन्तन किया जाय तो इससे एक नवीन शिक्षा कार्यक्रम (System of education) उत्पन्न हो जाता है। इसमें प्रदत्त उपरोक्त दो सिद्धान्त वास्तव में हमारे राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल प्रभावोत्पादक शिक्षा-व्यवस्था को जन्म देते हैं। जैसी कि आम धारणा है

बुनियादी शिक्षा केवल प्राथमिक स्तर पर ही अधिक उपयोगी है, एक भ्रम है। यदि इस कार्यक्रम पर व्यावहारिक रूप में आचरण किया जाय तो निस्संदेह हमारी शिक्षा जीवनोपयोगी और समाजोपयोगी वास्तविक रूप में बन सकेगी।

जहां "रचनात्मक कार्य" हमें शिक्षा प्रक्रिया की प्रकृति, उसके उद्देश्यों और विषय-वस्तु के ओर निर्देशित करता है, "स्थानीय सामुदायिक जीवन से सम्पर्क" विशिष्ट विधियों और क्रियाओं की ओर इंगित कर पाठ्यक्रम निर्माण के निम्न-लिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर माध्यमिक स्तर के लिये सुन्दर शिक्षा-व्यवस्था का चित्र हमारे सामने रख देते हैं।

I. रचनात्मक कार्य का सिद्धान्त

(Principle of creative Activity)

१. क्रिया का सिद्धान्त (Principle of activity)—उसके अनुसार शिक्षा को क्रिया के द्वारा ही और प्रभावोत्पादक ढंग से ग्रहण किया जा सकता है। ये क्रियायें ऐसी होती हैं जिनमे बालक स्वयं भाग लेता है। इस प्रकार वह शिक्षा प्रक्रिया में एक क्रियाशील घटक होता है। जो कि इस जीवित प्रक्रिया की एक परम आवश्यकता है।

२. रुचि का सिद्धान्त (Principle of interest)—बालक के लिये उस क्रिया का प्रावधान होना चाहिये जो उसकी रुचि के अनुकूल हो। इससे वह उस क्रिया में अधिक से अधिक भाग लेकर विकास की पराकाष्ठा की ओर अग्रसर होता है।

३. सार्थकता का सिद्धान्त (Principle of meannigfulness)—प्रत्येक क्रिया का अपना उद्देश्य होता है। अतः शिक्षा की यह क्रिया सोद्देश्यपूर्ण एवं अपने आप में सार्थक होती है।

४. आनन्दानुभूति का सिद्धान्त (Principle of aesthetic appreciation)—बालक सार्थक क्रिया में क्रियाशील भाग लेकर उसके पूर्ण होने पर उत्पादन फल की प्राप्ति से विशेष आत्मिक आनन्द का रसास्वादन करता है। इस प्रकार की आनन्द की अनुभूति उसके व्यक्तित्व के उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

५. आर्थिक क्षमता का सिद्धान्त (Principle of Economic Efficiency)—उपरोक्त क्रिया में भाग लेने से विद्यार्थी कार्य कर सकने के लिये आवश्यक योग्यता एवं कौशल की संप्राप्ति कर सकता है। यह उसे उद्यमशील (Industrious)—बनने की दिशा में प्रशिक्षित करती है। ये गुण भावी जीवन में उसे आवश्यक क्षमता के साथ आर्थिक स्वावलम्बन प्रदान करती है।

६. वैज्ञानिक अभिवृति के विकास का सिद्धान्त (The principle of the development of scientific attitude)—रचनात्मक तथा सृजनात्मक क्रियाओं में भाग लेने से विद्यार्थी की वैज्ञानिक अभिवृति का विकास होता है। भावी जीवन में प्रभावोत्पादक नागरिक बन सकने के लिये आवश्यक

सामर्थ्य अर्जित कर लेता है।

७. सामाजिकरण का सिद्धान्त (Principle of socialization)—पाठ्य-क्रम में संगठन सामाजिक भावनाओं को प्रोत्साहित करने वाला होना चाहिये। इसमें उन क्रियाओं का समावेश होना आवश्यक हो जो पारस्परिक सहयोग और सहकारिता पर आधारित हों जो कि सामूहिक प्रयासो को अधिक से अधिक आकर्षित करें। इससे छात्रों में सामाजिकरण की क्रिया अधिक तीव्र एवं प्रभावोत्पादक बन सकेगी।

८. नेतृत्व में प्रशिक्षण का सिद्धान्त (Principle of training in leadership)—किसी क्रिया के संगठन मे सामूहिक प्रयासों की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि इन प्रयासों को संगठित एवं सुनियोजित ढंग से उपयोग करने के लिये कुशल नेतृत्व हो। पाठ्यक्रम में सामाजिक क्रियाओं को स्थान देने का अर्थ ही उसके अन्तर्गत नेतृत्व में प्रशिक्षण की व्यवस्था का प्रावधान करना है।

९. योग्य सहचर्या के प्रशिक्षण का सिद्धान्त (Principle of able comradeship)—किसी नेता के नियन्त्रण में पाठ्यक्रम में संगठित क्रियाओं में भाग लेने से विद्यार्थियों को प्रजातान्त्रिक अनुशासन के पाठ के माध्यम से नेता का अनुसरण करने की दिशा में प्रशिक्षण मिल जाता है। वे योग्य सहचर्या प्रदान कर सकने के लिये आवश्यक कौशल को प्राप्त कर लेते हैं।

१०. स्वस्थ स्पर्धा का सिद्धान्त (Principle of healthy competition)—सामूहिक क्रियाओं में सामाजिक हित को लक्ष्य करते हुये विद्यार्थी उसमें सर्वाधिक एवं सर्वोत्तम योगदान देने के लिये तत्पर रहता है। विद्यार्थी मे इस प्रकार की स्वीकारात्मक स्पर्धा समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिये बहुत उपयोगी होती है।

II. वातावरण तथा स्थानीय सामुदायिक जीवन से सम्पर्क

(Environment & contact with the local community)

बुनियादी शिक्षा के उस प्रमुख तत्व से हमें कुछ सामुदायिक क्रियाओं एवं पाठ्य-विधियों के चयन की दिशा में आवश्यक मार्ग-दर्शन प्राप्त होता है। इन पहलुओं के विषय मे इसके गर्भ में निम्नलिखित बातें छिपी हुयी हैं।

१. विद्यालय समुदाय का लघु रूप (School as miniature society) किसी समुदाय में विद्यालय का एक मात्र प्रमुख कर्तव्य उसकी सांस्कृतिक विशिष्टता को बनाये रखना तथा इस दिशा में अधिकतम विकास के लिये प्रयास करना है। यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि हम अपने पाठ्यक्रम में सामुदायिक मूल्यों, आदर्शों, परम्पराओं, उपलब्धियों एवं आवश्यकताओं से सम्बन्धित क्रियाओं का स्थान दें। इन तत्वों के बिना पाठ्यक्रम निरुद्देश्य एवं विद्यालय का अस्तित्व ही निरर्थक है।

२. भौतिक वातावरण से अनुकूलन (Adaptatation to the physi-

cal environment) —विद्यालय में उन्हीं क्रियाओं को स्थान दिया जाना चाहिये जो विद्यालय के भौतिक वातावरण के अनुकूल एवं उसमें अनुकूलता के लिये आवश्यक योग्यता एवं कौशल का विकास कर सकें। यदि पाठ्यक्रम की विषय वस्तु इसके अनुकूल नहीं है तो शिक्षा अर्थहीन एवं निरुद्देश्य है। यह बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व का उन्नयन करने में समर्थ नहीं हो सकती।

३. सामुदायिक उपलब्धियों का उपयोग (*Use of Community reso urces*) —समुदाय में प्राप्त सभी उपलब्धियों को शिक्षण के अन्तर्गत वांछित रूप से प्रयोग किया जा सकता है। साथ जनसाधारण के जीवन से सम्बन्धित आवश्यक क्रियाओं को भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्थान देना चाहिये। इससे हमें निम्नलिखित दिशाओं में सहायता मिलती है—

(अ) सहगामी क्रियाओं का आयोजन (Organization of co-curricular activities) —इसके लिये विद्यालय में आवश्यक रूप से लोक गीत, लोक नृत्य एवं प्रचलित नाटकों का आयोजन किया जाना चाहिये। इसमें भाग लेने एवं इनको रसानुभूति के लिये समुदाय को आवश्यक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये।

(ब) खेलकूद तथा व्यायाम सम्बन्धी प्रतियोगिताओं का आयोजन (Organization of competitions in games, sprots and gymnastics)-विद्यालय में खेल कूद एवं व्यायाम सम्बन्धी क्रियाओं के क्षेत्र में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिये। इनमें भाग लेने के लिये सामुदायिक संगठनों को पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिये।

(स) विद्यालय की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये समुदाय पर निर्भरता (Dependency on community for the fulfillments of the school)-विद्यालय को प्रमुख आवश्यकताओं जैसे भवन फर्नीचर आदि के लिये विद्यालय को किसी अन्य एक की अपेक्षा केवल समुदाय पर निर्भर रहना चाहिये। बाहर से निर्यात किये गये सामान, मजदूरों एवं तकनीकी विशेषज्ञों से इन आवश्यकताओं की पूर्ति में बनावटीपन आ जाता है। वास्तव में इन सबका स्वरूप जन-जीवन के स्तर के अनुरूप होना चाहिये। शिक्षा आयोग (Education commission) ने भी इसी सिद्धान्त को अपनाने एवं क्रियान्वित करने पर बल दिया है। आयोग ने स्थानीय कच्चे माल एवं मजदूरों एवं जानकार विशेषज्ञों की सेवाओं को अधिक से अधिक उपयोग में लाने के लिये जोर दिया है।

(द) समुदाय के माध्यम से शिक्षण (Teaching through the community)-शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में बुनियादी शिक्षा निम्नलिखित विधियों के अनुगमन से सामुदायिक उपलब्धियों का अधिक से अधिक लाभ उठाने की प्रेरणा देती है।

(i) पर्यटन (Excursion)

(ii) फैक्ट्री, फार्म, प्रजायबघर (२००), मत्स्य पालन गृह, कुक्कुट पालन गृह (Paultry) संग्रहालय (Museum), बाग एवं अन्य किसी ऐतिहासिक महत्व के स्थान का भ्रमण।

(iii) समुदाय के विशिष्ट जानकार एवं विद्वान नागरिकों की सेवाओं से लाभान्वित होना।

(iv) सार्वजनिक उपलब्धियों जैसे सूचना विभाग एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं वाचनालयों की सेवाओं को अधिक से अधिक उपयोग मे लाना।

राजस्थान के माध्यमिक विद्यालयों के लिये उपयुक्त पाठ्यक्रम की रूपरेखा

बुनियादी शिक्षा के उपरोक्त तात्विक सिद्धान्तों पर आधारित पाठ्यक्रम, जो कि राजस्थान के माध्यमिक विद्यालयों के लिये प्रभावोत्पादक सिद्ध हो सकता है, की रूपरेखा प्रस्तुत करने से पूर्व हमें इस स्तर पर विद्यार्थियों की रुचियों, आवश्यकताओं एवं समाज की उनसे अपेक्षाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक है। इन पहलुओं से सम्बन्धित माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की निम्नलिखित विशिष्टतायें हैं।

१. माध्यमिक स्तर उनके भावी जीवन की तैयारी का प्रथम चरण है।

२. बालक-बालिकायें अपनी विशिष्टताओं के सम्मान को चाहते हैं।

३. वे सामाजिक क्रिया कलापों में अधिक से अधिक भाग लेना चाहते हैं।

४. समुदाय इन भावी नागरिकों को अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुकूल बनाना चाहता है।

५. विद्यार्थी अपनी तथा अपने वातावरण (भौतिक और सामाजिक) का अन्योन्याश्रितताओं को समझने के प्रति जागरूक हो जाता है।

६. सामाजिक जीवन में अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों की जानकारी के लिये छात्र-छात्रायें मनोवैज्ञानिक रूप से व्यग्र रहते हैं।

७. उन्हें जीवन के प्रत्येक पहलू में निर्देशन की आवश्यकता होती है।

८. बालक-बालिकाओं में कई शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं।

९. अतिरिक्त ऊर्जा के सिद्धान्त के अनुसार इस स्तर पर इसका उत्पादन अधिकतम होता है। अतः विद्यार्थी अधिक से अधिक क्रियाशीलता की मनोवैज्ञानिक मांग करते हैं।

१०. अपनी पूर्व शिक्षा के मूल्यांकन के लिये बालक बालिकाओं में क्षमता विकसित होती है। वे इसी की उपयोगिता को दृष्टिगत करते हुये अपने लिये भावी कार्यक्रमों का निर्माण करते हैं। अतः उनकी शिक्षा उनके पूर्वानुभवों पर आधारित होनी चाहिये।

उपरोक्त तथ्यों तथा सिद्धान्तों से यह स्पष्ट हो जाता है कि माध्यमिक स्तर पर भी शिक्षा को हस्तकला केन्द्रित (Craft centred) होना चाहिये

कला क्रिया पर आधारित है और यह बालक की रुचि और सामाजिक उपलब्धियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप होती है। अतः स्पष्ट रूप से यह शिक्षा व्यवस्था सामाजिक पृष्ठ-भूमि में बाल-केन्द्रित (Child centered) है। उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में निम्नलिखित का समावेश अत्यन्त लाभकारी होगा। ऐसा विश्वास व्यक्त करना न्याय की सीमाओं के ही अन्तर्गत है।

सर्व प्रथम हमें राजस्थान के भावी नागरिकों के लिये उपयोगी बुनियादी हस्तकला का चयन करना होगा। इसके लिये हमें इस विशाल राजस्थान की प्राकृतिक उपलब्धियों की विभिन्नता एवं वैभव को भी देखना होगा। इन्हीं पर इसके किसी क्षेत्र विशेष के उद्यम एवं आवश्यकतायें निर्भर करती हैं। इन्हें मद्य नजर रखते हुये निम्नलिखित विषयों को बुनियादी हस्तकला के रूप में पढ़ाया जा सकता है।

१. कृषि तथा पशुपालन एवं डेयरी फार्मिंग, (Agriculture, Animal husbandry and Dairy farming)।

२. औद्योगिक रसायन शास्त्र (Industrial chemistry)।

३. इन्जीनियरिंग (Engineering)।

४. ऊन उद्योग (Wool Industry)

५. काष्ठ कला (Wood Craft)

६. चर्म कला (Leather Craft)

७. फल संरक्षण (Fruit Preservation)

८. सिलाई कला (Tailoring)

९. मृत्तिका कला (Ceramics)

१०. गृह विज्ञान (Domestic Science)

११. व्यापार कला (Commercial Craft)

इन विषयों को केन्द्रीय मानकर निम्नलिखित विषयों की व्यवस्था अनिवा रूप में होनी चाहिये -

१. तीन भाषायें (हिन्दी, अंग्रेजी और दक्षिणी भाषा) (3 Languages Hindi, English and one South Indian language)

२. संस्कृत अथवा उर्दू।

३. धार्मिक शिक्षा (Religious education as the part of Moral education)

४. सामान्य विज्ञान (General science)

५. अनिवार्य गणित (बालकों के लिये तथा अनिवार्य गृह विज्ञान ([illegible] के लिये)

६. सामाजिक विषय।

७. शारीरिक शिक्षा (क्रीड़ा एवं मनोरंजन)

उपरोक्त विषयों के अतिरिक्त विज्ञान, कला, व्यापार, सौन्दर्यात्मक विभागो अन्तर्गत निम्नलिखित अनुशासनों मे हस्तकला के अनुकूल प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

विज्ञान विभाग—

(अ) भौतिक शास्त्र (Physics)

(ब) रसायनिक शास्त्र (Chemistry)

(स) प्राणीशास्त्र (Biology)

(द) गणित (Mathematics)

(य) भूगोल (Geography)

(फ) भूगर्भ शास्त्र (Zeology)

कला विभाग—

(अ साहित्य (literature) हिन्दी, संस्कृत, अन्य भारतीय साहित्य कोई, विदेशी साहित्य।

(ब) गणित (Mathematics)

(स) भूगोल (Geography)

(द) इतिहास History)

(द) नागरिक शास्त्र (Civics)

(य) अर्थशास्त्र (Economics)

(फ) ड्राइंग (Drawing)

III व्यापार विभाग —

(अ) कॉमर्स सम्बन्धी विषय

(ब) अर्थशास्त्र

(स) गणित

(द) भूगोल

IV सौन्दर्यात्मक विभाग—

इसके अन्तर्गत कला, स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला सभी का समावेश होना आवश्यक है।

इनके अतिरिक्त विशिष्ट रुचि से सम्बन्धित विषयों का भी पाठ्यक्रम में प्रावधान होना चाहिये। इस पहलू में संगीत, नृत्य, वादन, अभिनय आदि की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिये।

प्रश्न ६

"An effective programme of education for democracy involves a training of efficient leadership, provision of equal opportunities to all children of merit and promise and develop-

ment of heatlhy interests and attitudes". Discuss this statement describing the main recommendations of the education commision on the plans and programmes of secondary Education".

"जनतन्त्रीय शिक्षा के प्रभावशाली कार्यक्रम में कुशल नेतृत्व के लिये प्रशिक्षण योग्य तथा प्रतिभाशाली बालकों के लिये समान अवसर तथा स्वस्थ रुचियों और दृष्टिकोणों का विकास, का समावेश होना चाहिये।" इस कथन की विवेचना कीजिये तथा शिक्षा आयोग द्वारा माध्यमिक शिक्षा की योजनाओं तथा कार्य-क्रमों के विषय में दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिये।

उत्तर :—

शिक्षा में प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण अपेक्षाकृत एक नवीन विचार धारा है। शिक्षा सिद्धान्तों की नवीन विवेचना तथा उनके व्यावहारिक पहलुओं पर विचार करना प्रजातन्त्र के एक सफल अध्यापक का प्रथम कर्त्तव्य है। प्रजातन्त्र राजनैतिक विचारधारा के रूप में "जनता की, जनता के द्वारा, जनता के लिये सरकार" के संगठन के रूप में उपस्थित हुयी। अपने सिद्धान्तों में यह सामाजिक पृष्ठ-भूमि में व्यक्ति की सम्पूर्ण स्वतन्त्रताओं का आदर करती है। आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रतायें एवं अभावों से छुटकारा इसके परम लक्ष्य हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति तथा संगठन एवं समुदाय के विकास के लिये समानता के अवसर एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों में सहयोगिता और सहकारिता का ही समर्थन करती है। वर्गहीन समाज की कल्पना करने वाला यह प्रथम और नवीनतम दर्शन है। व्यक्तित्व का आदर इसकी प्रकृति है। विकासात्मक रचनात्मक कार्यों में नेतृत्व का अनुसरण इसके सच्चे समर्थकों की क्रियाशीलता की दिशा है। प्रजातान्त्रिक समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति-नागरिक है। जिसमें चिन्तन, न्यायप्रियता, सहनशीलता, संयम, सहानुभूति, विश्व-बन्धुत्व, समाज-सेवा, श्रम की आदत आदि गुणों का समावेश है। वह कर्म के सिद्धान्त पर विश्वास करता है। तथा अपना सर्वस्व समाज के लिये समझता। वह अपनी सम्पन्नता के लिये अपने समाज पर गौरव की अनुभूति करता है (That all he has and is, he ows to the community)"।

शिक्षा क्षेत्र में प्रजातन्त्र को हम डा० [illegible] महोदय के निम्नलिखित शब्दों से अधिक स्पष्टता से समझ सकते हैं।

"ऐसे समाज में सभी नागरिकों के कल्याण का समान ध्यान रखा जाता है तथा जो परस्पर सम्बन्धित जीवन की विभिन्नताओं को पारस्परिक [illegible] [illegible] पुनर्समायोजन प्राप्त कर सकें [illegible] रहता है। इस प्रकार के समाज में ऐसी शिक्षा-व्यवस्था [illegible] सामाजिक सम्बन्धों तथा नियन्त्रण के प्रति [illegible] (जो [illegible] के लिये सामाजिक परिवर्तन का

सकें) का विकास कर सके (A society which makes provision for participation *in the good of all its member on equal terms* and which secures flexible readjustment of associated life is in so far democratic. Such society must have a type of education which gives individuals a personal interest in soical relationships and control and habits of mind which secure social changes without introducing disorders.)" । इसी प्रकार हम देखते हैं कि जे० डब्ल्यू० एच० हेथरिंगटन (J. W. H. Hetherington) जनतन्त्र के लिये शिक्षा की आवश्यकता बतलाते हुये कहते हैं, "जनतन्त्रीय शिक्षा की परम आवश्यकता शिक्षित जनता है (Democratic government demands educated people).

हमारा देश परिवर्त्तन-काल (Transitional period) से गुजर रहा है। उपनिवेषवाद के शिकन्जे से छूटने के बाद हमने स्वच्छन्द होकर प्रजातान्त्रिक राष्ट्रीय जीवन व्यतीत करने का संकल्प किया। हम इस पथ पर आगे बढ़ने के लिये प्रयास कर रहे हैं। किन्तु इस नवीन जीवन-पथ पर निष्कंटक चलने के लिये आवश्यक है कि *जन-मानस की भावना में परिवर्तन किया जाय।* हमारा देश विभिन्नताओं की धरती है। इसमे भिन्न धर्म भाषायें, वर्ग, वर्ण, जातियाँ एवं समुदाय निवास करते हैं। जनतान्त्रिक भावनाओं का विकास इस स्थिति में महान् योगदान कर सकता है। यह वर्तमान सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक वर्गीकरण के लिये लाभप्रद सिद्ध हो सकेगा। यह कार्य कठिन है फिर भी भाषायी, सांस्कृतिक और धार्मिक सहिष्णुताओं की प्राप्ति से राष्ट्र का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन सुखमय हो सकेगा। पारस्परिक विचार-भिन्नताओं को शान्तिपूर्ण ढंग से सहयोगिता और सहकारिता की भावनाओं से दूर किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में शिक्षा आयोग (Education commision) के निम्नलिखित विचार उल्लेखनीय हैं।

"हमें हार्दिक सहिष्णुता, पारस्परिक लेन-देन, विचार भिन्नताओं की सम्मानीय अनुभूति की भावनाओं को जाग्रत करना है, यही हमारे जीवन के लिये सर्वोत्तम यापन प्रयोग है। हमने इसका चयन किया है और कोई भी शिक्षा जो किसी शिक्षित को इस परिस्थिति के अनुरूप बुद्धिमता और कल्पना से उचित प्रतिक्रिया कर सकने में सामर्थ्य न दे सके, सार्थक शिक्षा नहीं कही जा सकती (We have to cultivate a spirit of large hearted torence, of mutual give and take, of the appreciation of ways in which people differ from one another. This is a very exacting 'experiment in living' that we have launched and no education *will* be worth while if the educated mind is unable to respond to this *situation with intelligence and imagination.* 1"

भारतवर्ष के संविधान की प्रस्तावना में प्रजातान्त्रिक जीवन व्यवस्था की प्रकृति के विषय में निम्नलिखित का उल्लेख है।

"हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिये तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज दिनांक २६ नवम्बर, १९५० (मिति मार्गशीर्ष सप्तमी, सम्वत् २००६ विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मसमर्पित करते हैं।"

स्पष्ट है कि भारतीय संविधान पूर्ण रूप से अपनी प्रकृति में जनतन्त्रीय है। इसका अपने नागरिकों के लिये न्याय, स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व की व्यवस्था के लिये कृत कृत दृढ़ संकल्प है। देश के लिये ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए जो उपरोक्त सिद्धान्तों पर आधारित हो। शिक्षा के क्षेत्र में समानाधिकार, अवसर और सुविधाओं का ध्यान रखना चाहिये।

"जनतन्त्रीय शिक्षा के उद्देश्य "योग्य तथा प्रभावोत्पादक नागरिक" की उत्पत्ति में फलीभूत होते हैं। योग्य और प्रभावोत्पादक नागरिक में तीन आधारभूत गुणों-आर्थिक क्षमता, निषेधात्मक नैतिकता एवं स्वीकारात्मक नैतिकता, का होना आवश्यक है। ऐसा व्यक्ति अपने साथियों और सहयोगियों के प्रति उत्तरदायित्व निभा सकने में समर्थ होता है। वह अपने कर्तव्य तथा अधिकारों के प्रति सजग रहता है। वह समाज की आर्थिक, राजनैतिक एवं सामुदायिक समस्याओं को समझकर उनके समाधान की दिशा में रचनात्मक कार्य कर सकता है। तथा अध्ययन, निरीक्षण और निर्णय लेने की शक्तियों के विकास से सामाजिक विकास के लिये दिशा-निर्देशन एवं पथ प्रदर्शक का कार्य कर सकता है। अतः जनतन्त्र में ऐसी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये जो हमारे बालक-बालिकाओं में उपरोक्त मानवीय गुणों, रुचियों एवं दृष्टिकोणों का विकास कर उन्हें राष्ट्रीय उन्नति के लिये नेतृत्व का सफलता पूर्वक भार वहन कर सकने के लिये अपेक्षित सामर्थ्य प्रदान कर सके। इसी आधार पर माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भारतीय जनतन्त्र में शिक्षा के निम्नलिखित तीन उद्देश्यों पर बल दिया।

१– चरित्र का प्रशिक्षण जो विद्यार्थी को इस योग्य बना दे कि वह उन्नतोन्मुखी सामाजिक व्यवस्था में नागरिक के कर्त्तव्यों का पालन कर सके (The training of character to fit the student to participate creatively as citizens in the emerging democratic social order).

२—राष्ट्र की प्रार्थिक स्थिति के विकास के लिये विद्यार्थी में व्यावहारिक एवं व्यावसायिक कौशल का विकास करना (The improvement of their practical and vocational efficiency so that they may play their part in building up the economic prosperity of their country).

३—राष्ट्र की सांस्कृतिक उन्नति में क्रियाशील भाग लेने की योग्यता की सम्प्राप्ति कर सकने के लिये उनमें साहित्यिक, कलात्मक, सांस्कृतिक रुचियों एवं आत्माभिव्यक्ति की शक्ति और व्यक्तित्व की पूर्णता का विकास करना (The development of their literary, artistic and cultural interests which are necessary for self expression and for the full development of the human personality, without which a living national culture can not come into being).

किन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है हमारे समाज की कई असमान इकाइयाँ हैं। विशेष रूप से प्रार्थिक स्तरों की भिन्नता के कारण हम शैक्षिक अवसरों की उपलब्धि में समानता के सिद्धान्त का पालन नहीं कर सकते। अभाव पीड़ित परिवारों के बच्चे प्रतिभाशाली एवं मेधावी होते हुये भी समुचित शिक्षा प्राप्त कर सकने में असमर्थ रहते हैं। उन्हे स्तर और प्रकार दोनों मे शिक्षा की दृष्टि से वंचित रहना पड़ता है। अतः हमे ऐसी शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिये जिससे हम शिक्षा प्राप्त करने वाले समस्त विद्यार्थियों के लिये समान शिक्षा अवसरों एवं सुविधाओं का प्रावधान कर सकें।

शिक्षा आयोग द्वारा दिये गये सुझाव

(Recommendations of the education commission)

भारत मे प्रजातान्त्रिक समाजवाद की स्थापना हमारा परम लक्ष्य है। किन्तु इसकी प्राप्ति के लिये जन-शिक्षा और शैक्षिक अवसरों की समानता अत्यन्त आवश्यक है। इस बात का अनुभव स्वयं शिक्षा-आयोग ने भी किया है। किन्तु, मानवीय उपलब्धि (Human resources) के विकास में सबसे बड़ी समस्या यह है कि प्राप्त सीमित साधनों को किस प्रकार कैसे उपयोग में लाया जाय कि हम उत्कृष्टतम तथा उच्चतम लाभ के शैक्षिक विकास को उपलब्ध कर सकें? तथा साथ ही प्रश्न उठते हैं कि समाज को किन लोगो के कितनो, किस प्रकार की तथा किस स्तर तक कैसी शिक्षा व्यवस्था करनी चाहिये? शिक्षा आयोग ने इस विषय मे निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है।

"सभी बच्चों के लिए कम से कम ७ वर्ष की अवधि को प्रभावोत्पादक सामान्य अनिवार्य शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था करना और अवर माध्यमिक शिक्षा को हर सम्भव प्रसारित करना (To provide general education of not less then seven years' duration to every child on a free and

compulsory basis, to expand Lower Secondry education on large a scope as possible)।

"—प्रशिक्षित मानव-शक्ति की आवश्यकता के अनुकूल इच्छुक और यो[illegible] व्यक्तियों के लिये उच्च माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्रसा[illegible] करना। जिससे कि आवश्यक स्तर बनाया रखा जा सके तथा आर्थिक सहायता[illegible] व्यवस्था करना (To provide Higher secondry and university educa[illegible]tion to those who are willing and qualified to receive suc[illegible] education, consistent with the demands for trained man powe[illegible] and the need to maintain essential standards', and to provid[illegible] adequate financial assistance to those who are economically handicapped)।

—व्यावसायिक, तकनीकी और आजीविका के लिए आवश्यक शिक्षा का विकास करना तथा कृषि और उद्योग के लिये आवश्यक कुशलता के व्यक्तियों को तैयार करना (To emphasize the development of professional technical and vocational education and to prepare skilled personnel needed for development of agriculture and industry.)।

—मेधाओं को पहिचानना तथा उसे पूर्ण शक्ति से अभिवृद्धि करने की दिशा में सहायता प्रदान करना (To identify talents and to help it grow to its full potential.)

-शैक्षिक अवसरों की समानता के लिये सतत प्रयत्नशील रहना। कम से कम इनमें से असाधारण रूप की असमानताओं को समाप्त करना, (To strike co[illegible]tinuously to equalise educational opportunities, beginning w[illegible] the elimination of at last some of the more glaring inequalities)

उपरोक्त सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिये माध्यमिक स्तर के लिये शिक्षा आयोग ने निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित किये हैं;

1. सामान्य विद्यालय (Common School)—भारत में वर्तमान शि[illegible] यह है कि शिक्षा-संस्थायें शिक्षा के शुल्क के अनुकूल अपना अपना स्तर रखती हैं। [illegible] जन-साधारण की सीमा के अन्दर के ही विद्यालय आते हैं जो कि [illegible] शिक्षण स्तर की दृष्टि से उच्च आर्थिक स्तर के विद्यालयों की अपेक्षा निम्न [illegible] कहे जा सकते हैं। इस स्थिति ने हमारे समाज में वर्ग और निर्धन के बीच [illegible] पैदा कर दी है। यह स्थिति प्रजातन्त्रीय सिद्धान्त के प्रतिकूल है। अतः '[illegible] [illegible] को बढ़ावा दिया जाना चाहिये। उस दिशा में आवश्यक कार्य [illegible] अंकित सुझाव प्रस्तुत हैं। विद्यालय-व्यवस्था (School system)।

"—जो कि जाति, वर्ग, वर्ण, समुदाय, आर्थिक एवं सामाजिक स्तर के प्रभाव बिना सबके लिये हो (which will be open to all children irrespective of caste, creed, community, religion, economic, conditions or social status)।

—जिसमें अच्छी शिक्षा-व्यवस्था प्रतिभा पर न कि धन और वर्ग पर निर्भर हो (where acccess to good education will derend, not on wealth or class, but on talent.)।

--जो कि शिक्षा स्तर को बनाये रखे तथा उपयुक्त अनुपात में संस्थाओं की स्थापना कर सकें (which will maintain adequate standards in all school and provide at least a reasonable proportion of quality institutions)।

--जिसमें कोई शिक्षा शुल्क न लिया जाय (In which no tuition fees is charged)।

-माता-पिता तथा अभिभावकों की औसत आवश्यकता की पूर्ति कर सके जिससे कि वे बच्चे को अधिक खर्चीली शिक्षा के लिये इस व्यवस्था से बाहर भेजने की आवश्यकता का अनुभव न कर सके "(which would meet the needs of the average precent so that he would not ordinarily feel the need to send his children to expensive schools out side the system)।

२-सामाजिक और राष्ट्रीय सेवा (Social and National service)—शिक्षा के सभी स्तरों पर समाज-सेवा सम्बन्धी क्रियाओं का प्रावधान होना चाहिये। इससे विद्यार्थियों में अनुशासन, विश्वास, चरित्र एवं परिश्रम के प्रति आदर की भावनाओं के विकास में सहायता मिलेगी। इसके लिये निम्नलिखित सुझाव उपयुक्त हैं।

(अ) समय समय पर अर्द्ध-समय (Part time) का प्रावधान।

(ब) शिक्षा के किसी स्तर की समाप्ति के बाद पूर्ण-समय (Full time) की समाज-सेवा जो कि निश्चित अवधि की हो।

३-विद्यालय में सामुदायिक जीवन (Community living in school)—सामुदायिक सांस्कृतिक कार्य-क्रमों के अतिरिक्त प्रत्येक विद्यार्थी को अवर माध्यमिक स्तर पर १० दिन तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर २० दिन का पूर्ण समय (१० दिन प्रति वर्ष) सामुदायिक सेवा-कार्य में लगाना आवश्यक है। इसके लिये राज्य सरकार अथवा स्थानीय प्रशासन सेवा उचित ढंग की व्यवस्था करेगा।

४-सैनिक शिक्षा—माध्यमिक स्तर पर एन० सी० सी० में इच्छित सामुदायिक सेवा के बदले प्राप्त किया जा सकता है।

५-शिक्षण का माध्यम (Medium of instruction)—माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा ही होनी चाहिये।

६—अन्तर्राष्ट्रीय संचार का माध्यम (Channels for internal com nication)—इसके लिये विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा सिखाई जा सकती है।

७-प्रान्तरिक संचार का माध्यम (Channel for internal communi tion)—इस कार्य के लिये सभी बच्चों को हिन्दी का ज्ञान दिया जाना चाहिये।

८—शिक्षा शुल्क (Fees) — माध्यमिक स्तर पर शिक्षा निःशुल्क की ज चाहिये किन्तु उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शुल्क तब तक लिया जा सकता है तक कोई अन्य आर्थिक व्यवस्था नहीं हो जाती।

९-पुस्तकों के लिए सहायता (Grant for the purchase books)—निर्धन छात्रों के लिये पुस्तक खरीदने के लिये समुचित आर्थिक सहाय की व्यवस्था की जानी चाहिये।

१०—पुस्तकों के बैंकों की व्यवस्था (Establishment of Book-banks) माध्यमिक स्तर के निर्धन बच्चों को सहायता के लिये राज्य के शिक्षा विभाग सामुदायिक संगठनों एवं यू० जी० सी० द्वारा पुस्तकों के बैंकों का विकास किया जाना चाहिये।

११—छात्रवृत्ति की व्यवस्था (Scholarship)—

(अ) ७-८ कक्षा में इस समय कम से कम ५% बच्चों को छात्रवृति उनकी प्रतिभा के आधार पर पर दी जायं। वह प्रतिशतता १९८५-८६ तक १०% कर दी जानी चाहिये।

(ब) छात्रों के लिये छात्रावासों की भी समुचित व्यवस्था की जानी चा

(स) एक विकास क्षेत्र में एक आदर्श विद्यालय हो जो कि उसके वि के लिये आदर्श बने। इनमें सभी विद्यालयों से चुने गये मेधावी छात्रों को प्रवेश जाय। धीरे धीरे निश्चित कालान्तरों के बाद इनकी संख्या में वृद्धि की जाय।

१२—पाठ्यक्रम (Curriculum)—इस विषय में निम्नलिखित सं विवरण शिक्षा आयोग की रिपोर्ट से प्रस्तुत है।

(क) पाठ्यक्रम के विकास के लिये आवश्यक कदम (Measures nec for the curricular development) – (अ) पाठ्यक्रम में अन्वेषण (Res rch in curriculum), (ब) पाठ्यपुस्तकों और सहायक पुस्तकों का नि (Preparation of text books and teaching aids), (स) अध्यापकों लिये सेवा-काल प्रशिक्षण (In sevrice training for teacher)है।

(ख) विद्यालय को प्रयोगिक पाठ्यक्रम को क्रियान्वित करने की स्वतन्त्र (Freedom to schools to adopt experimental curricula)।

(ग) एडवांस पाठ्यक्रम को धीरे-धीरे क्रियान्वित करना (Grad introduction of advanced curricula)।

(घ) विषय-अध्यापकों के संगठन का निर्माण (Subject Teachers' Association)।

(च) बहुउद्देशीय कार्य-क्रम (Scheme of multipurpose)

(छ) अवर (Lower) माध्यमिक स्तर (कक्षा ८-कक्षा १०) के लिये विषय—

(अ) तीन भाषायें; अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में—(i) मातृभाषा, (ii) हिन्दी, (iii) अंग्रेजी। हिन्दी भाषी क्षेत्र—(i) हिन्दी, (ii) अंग्रेजी, (iii) हिन्दी के अतिरिक्त भारतीय भाषा।

ऐच्छिक रूप में Classical भाषायें सीखने की व्यवस्था भी होनी चाहिये।

(ब) गणित

(स) विज्ञान

(द) इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र

(य) कला

(फ) कार्य-अनुभव (Work experience) अथवा समाज सेवा (Social service)

(थ) शारीरिक शिक्षा

(र) नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा उच्च माध्यमिक स्तर के लिये विषय सूची—

१. कोई दो भाषायें।

२. निम्न लिखित में से कोई तीन विषय--

(अ) एक अन्य भाषा, (ब) इतिहास, (उ) भूगोल, (इ) अर्थशास्त्र, (य) तर्क शास्त्र, (र) मनोविज्ञान, (स) समाज शास्त्र (व) कला, (प) भौतिक शास्त्र (स) रसायन शास्त्र, (९) गणित, (क) जीव विज्ञान, (म) गृह विज्ञान, (म) भूगर्भ विज्ञान।

३. कार्यानुभव और समाज सेवा

४. शारीरिक शिक्षा

५. कला और हस्तकला

६. नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा।

1966

शिक्षा-सिद्धान्त

Principles of Education

Q. 1.

"The education is first for vocation, second for citizenship, and third for leisure and character formation." Offer your comments on this statement with reference to the aims of Basic Education and also discuss how far the basic education is expected to meet the present needs of our socitey.

"शिक्षा प्रथम व्यवसाय के लिए, द्वितीय नागरिता के लिये, तथा तृतीय अवकाश व चरित्र निर्माण के लिये होती है।" इस कथन पर अपने विचार बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों के प्रसंग में प्रकट कीजिये तथा यह भी लिखिये कि बुनियादी शिक्षा हमारे समाज की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति कहाँ तक कर सकती है।

उत्तर—

बुनियादी शिक्षा के प्रतिपादक गांधीजी के द्वारा दी गई शिक्षा की परिभाषा; "सर्वोत्तम को बाह्य रूप प्रदान करना", के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने शिक्षा के प्रमुखतः निम्नलिखित दो उद्देश्यों पर जोर दिया;

१. तत्कालीन लक्ष्य (Immediate aims)

२. अन्तिम लक्ष्य (Ultimate aim)

शिक्षा के तत्कालीन लक्ष्यों की प्राप्ति को अन्तिम लक्ष्य 'निरपेक्ष सत्य' की प्राप्ति के लिये माध्यम के रूप में गांधी जी ने स्वीकार किया। शिक्षा के तत्कालीन निम्नलिखित लक्ष्यों को बुनियादी शिक्षा में प्रमुख रूप से मान्यता प्राप्त हुई,

(१) भरण-पोषण का लक्ष्य (Bread & Butter aim of Education)

(२) सांस्कृतिक लक्ष्य (Cultural aim of education)

(३) अवकाश का लक्ष्य (Aim of leisure)

नैतिक और चारित्रिक लक्ष्य

Moral & Character development of Education

वास्तव में गांधीजी ने शिक्षा के अन्तिम लक्ष्य प्राप्ति के लिये उपरोक्त तात्कालिक लक्ष्यों का निर्धारण किया। साथ ही इनकी संप्राप्ति के लिये व्यक्तित्व के संतुलित चहुँमुखी विकास (All round harmonious development of personality) पर विशेष रूप से बल दिया। इसके साथ-साथ वे शिक्षार्थी (Edu-

ccod) की पूर्ण स्वतन्त्रता (Liberty) के कट्टर पक्षपाती के रूप में शिक्षा-क्षेत्र में आये हुये हैं। इस प्रकार के पवित्र विचारों से गांधीजी के महान् व्यक्तित्व, विस्तृत दृष्टिकोण, जीवन का मानवीय पहलू और पवित्र शिक्षा-दर्शन प्रतिबिम्बित होते हैं।

(१) भरण पोषण का लक्ष्य—यदि थोड़ा सा विचार किया जाय और हम शिक्षा के सामाजिक पहलू पर दृष्टि दौड़ायें तो हम देखते हैं कि शिक्षा का प्रमुखतम लक्ष्य व्यक्ति को आर्थिक क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाना है। स्वावलम्बन का यह पाठ पूर्व योजना और सगठनात्मक कार्यक्रम के बिना पूर्ण कर सकना तर्क संगत नहीं लगता। स्पष्ट है, इस के लिये सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार पद-प्रति पद विकास क्रम में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिये। इसी बात को मध्य नजर रखते हुये गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा के कार्यक्रम को प्रस्तुत किया। यह सामाजिक दृष्टि से एक उत्तम कार्यक्रम है। बच्चा प्रारम्भ से ही किसी हस्तकला के माध्यम से अपने जीवन को उपयोगी तथा रचनात्मक बना सकने में स्वावलम्बन के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्राप्त कर आवश्यक सामर्थ्य प्राप्त करता है। इससे बच्चे को अपनी शिक्षा के स्पष्ट लक्ष्य का ज्ञान हो जाता है। आज जबकि सभी लोग वर्तमान शिक्षा के प्रति निरुद्देश्य होने की भावना से निराश हो गये हैं, बुनियादी शिक्षा का कार्यान्वियन उनकी आशाओं के लिये एक वांछित पुञ्ज का रूप है।

शिक्षा के प्रति लक्ष्यहीन होने की बात केवल शिक्षाविदों और शिक्षकों तथा माता-पिता और अभिभावकों तक ही सीमित नहीं है, आज का विद्यार्थी अपने अन्धकारमय भविष्य के प्रति स्वयं चिन्तित हो गया है। आज हमारे सम्पूर्ण समाज में मानसिक विक्षिप्तता फैल गयी है। भावी नागरिक अपने भविष्य को अन्धकारमय वातावरण में अनुभव कर रहा है। वह शिक्षा की लक्ष्य हीनता के कारण मानसिक द्वन्दों और भग्नाशाओं का शिकार बन गया है। इन सबका परिणाम यह है कि आज हमारे देश का विद्यार्थी समाज राजनैतिक कुचालों के चंगुल में फंसकर पथ-भ्रष्ट हो गया है, वह अमानवीय कृत्य करने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं करता। लूट, आगजनी और सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट करने राष्ट्रीय झंडा तथा संविधान की प्रतियां जलाने जैसे राष्ट्र विरोधी कुकृत्य करने में वे अपनी शान समझते हैं।

यह सब असामाजिक कार्य इसलिये बढ़ रहे हैं कि मनोवैज्ञानिक रूप से (Psychologically) इस देश का भावी नागरिक अपने अस्थिर (Unstable) अनिश्चित (temporary) और असुरक्षित (Insecure) आने वाले 'कल' के प्रति निराश है। क्यों न उनके लिये ऐसे शिक्षा कार्यक्रम को क्रियान्वित किया जाय कि वे अपने भावी जीवन का लक्ष्य-निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिये प्रारम्भिक स्तर से ही प्रयत्नशील हो जाय। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था बुनियादी शिक्षा के ही सिद्धान्तों में निहित है। इससे बालक-बालिका अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों से

ही स्वावलम्बन में प्रशिक्षण प्राप्त कर भविष्य में अपनी आर्थिक कुशलता की संवृद्धि करने के योग्य हो सकेंगे। यह बात गांधीजी द्वारा ११ सितम्बर १९३७ के 'हरिजन' में दिये गये लेख के निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है।

"......इस प्रकार की शिक्षा लोगों के लिये बढ़ती हुई बेरोजगारी के प्रति बीमा सिद्ध होगा। बालक १४ वर्ष की अवस्था में ७ वर्ष की शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज की कमाने वाली एक इकाई के रूप में विद्यालय से निकलेगा...... ......
(.......This education is ought to be for them (the people) a kind of insurance against unemployment. The child at the end of 14 years after he has finished 7 years is to be discharged as an earning unit........)"।

किन्तु यहाँ पर यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिये कि गांधीजी ने कभी भी यह नहीं चाहा कि बालक एक कमाऊ पूत के ही रूप में विकसित हो। वे सीखने के (learning) के साथ कमाना (Earning) और कमाने (Earning) के साथ सीखने (learning) के ही समर्थक रहे हैं।

२. सांस्कृतिक लक्ष्य-नागरिकता का लक्ष्य (Cultural or citizenship aim of education) – सांस्कृतिक लक्ष्य जो कि इस स्वरूप में बुनियादी शिक्षा द्वारा प्रस्तुत किया गया है अपने व्यवहार में नागरिकता के लक्ष्य का समानार्थी है। किसी बालक अथवा बालिका को सांस्कृतिक मूल्यों, आदर्शों एवं व्यवहारों में प्रशिक्षित करने से एक योग्य और प्रभावोत्पादक नागरिक की उत्पत्ति होती है। यही कारण है कि बुनियादी शिक्षा में गांधीजी ने सांस्कृतिक लक्ष्य के ही नाम से इस सम्पूर्ण पहलू की विवेचना की। इसके अन्तर्गत सामाजिक, नागरिकता एवं राष्ट्रीयता और यहाँ तक कि अन्तर्राष्ट्रीयता की शिक्षा का समावेश है।

हस्तकला के माध्यम से वस्तु-जगत का ज्ञान देने के साथ-साथ, जो कि मुख्य रूप से सीखने वाले की उपलब्धि से उसी के आर्थिक लाभ के लिये है, गांधीजी ने देश के भावी नागरिकों को भारत की राष्ट्रीय संस्कृति का ज्ञान देने की बात को भी समान बल के साथ उसके समकक्ष रखा। यह संस्कृति जो कि हमारे रहन-सहन, रीति-रिवाजों, पहिनावे, भाषा, सलीका, व्यक्तिगत व्यवहार और आचरण के द्वारा परावर्तित होता है, संस्कृति से गांधीजी का तात्पर्य आत्मा की शुद्धि और आत्मा के उत्कर्ष से रहा है। सांस्कृतिक पहलुओं में बालक को प्रशिक्षित करने से एक स्वतन्त्र विचारवान न्याय-प्रिय संयमी और कर्तव्य परायण नागरिक देश को प्राप्त हो जाता है।

लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति से हमारी सांस्कृतिक-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी। हमारा भारतीय नागरिक जन्म की प्रकृति से भारतीय रह गया। उसका मानस पटल पाश्चात्य संस्कृति के मन्त्रों से भर गया। हम अपनी परम्परागत आध्यात्मिकता को भूल गये। "अनेकता में एकता (Unity of diversity) जो कि

भारतीय संस्कृति की मानव को अनूठी देन है केवल नारों तथा सफेद कागजों पर काली रेखाओं तक ही सीमित हो गयी। वह संस्कृति जिसने दुनिया को प्रेम, सहानुभूति, आदर, अपनत्व, बल और पौरुष का पाठ विश्व को पढ़ाया हम उसे भूल गये। पाश्चात्य भौतिकवाद की आकर्षक सुरा सुन्दरी पर मोहित हो गये और पथ भ्रष्ट होकर वह कार्य कर रहे हैं जिनसे मानव के शत्रुओं को प्रसन्नता हो रही है।

आज हमारे देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, प्रान्तीयता जिस चरम सीमा पर उससे एक भारतीय का शर्म से सिर झुक जाता है। हमें भारतीय संस्कृति से विमुख करने वाली अंग्रेजों की शिक्षा-पद्धति ने हमारे राष्ट्र में इन दानवीय तत्वों को जन्म दिया और उनका पोषण किया। हमारे कुछ राष्ट्र नायक स्वयं भी इस तथ्य तक पहुँचने में असमर्थ रहे। स्वतन्त्रता के इन बीस सालों में वास्तव में हमने पाया कुछ नहीं अवश्य कुछ खोया है।

आज जब हम भाषा, उत्तर-दक्षिण, आसामी-गैर आसामी, वर्ग वर्ण और सम्प्रदाय के नाम पर अपने विद्यार्थियों को उत्तेजित और रक्तपात तथा अन्य हिंसात्मक कार्यों के लिए तत्पर देखते हैं तो हृदय दहल जाता है' इसका मूल कहाँ है? शिक्षा की वह व्यवस्था जो इस धरती की उर्वरा में पनपने के बजाय इसे उजाड़ बनाने की शक्ति रखती है, इन सब नृशंस कृत्यों के लिए उत्तरदायी है। यदि हमने बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों पर चिन्तन किया होता और राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं की पृष्ठभूमि में अनुकूल शिक्षा व्यवस्था की योजना बना कर उसे व्यावहारिक रूप दिया होता, तो सामाजिक अव्यवस्था का यह बीभत्स रूप देखने का दुर्दिन न आता। बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों में निहित निम्नलिखित सांस्कृतिक तत्वों में हमारे बालकों में भारतीय परम्पराओं का पाठ पढ़ाने की वह क्षमता है जिसकी हमें अपने समाजवादी प्रकृति को प्रजातन्त्रात्मक जीवन में अपेक्षा है।

१—भाषा-विवाद तो बुनियादी शिक्षा में वहीं समाप्त हो जाता है, जहाँ उसने शिक्षा के माध्यम के लिये मातृभाषा का चयन किया है।

२—वर्ग-वाद को कम कर एक वर्गहीन समाज को मूर्तरूप देने की कल्पना गांधीजी ने की। इस स्वप्न को पूरा करने के लिये उन्होंने सजीव शिक्षा प्रक्रिया को बुनियादी रूप में रखकर पूरा होने की कल्पना की। यह सब साकार हो जाता यदि इस शिक्षा व्यवस्था को कार्यान्वित करने के लिये दृढ़ता से कदम उठाये जाते। अमीर-गरीब, कुलीन तथा निम्न परिवारों, प्रत्येक जाति और सम्प्रदाय, प्रत्येक राज्य से आने वाले बालक-बालिका के लिये समान शिक्षा-व्यवस्था में यह प्रकार शक्ति छिपी हुई है। कार्य और परिश्रम के पारस्परिक सम्बन्धों को समझने के बाद विद्यार्थी परिश्रम की महत्ता (Dignity of labour) को समझकर स्वयं

जीवन में उसी के अनुकूल व्यवहार करता। ऐसी व्यवस्था में वर्गहीन समाज की कल्पना वास्तव में ठीक ही है।

३--क्षेत्र-वाद के फैलने का सबसे प्रमुख कारण लोगों में अपने सांस्कृतिक मूल्यों, परम्पराओं, तथा आदर्शों के प्रति मनोवैज्ञानिक भय का आतंक है। वे अपनी स्थानीय संस्कृति को भारतीय संस्कृति से भिन्न मानते हैं। वास्तव में उनका मस्तिष्क यह सोचने में असमर्थ है कि प्रत्येक क्षेत्र की संस्कृति का परावर्द्धन और संवर्द्धन करने में ही भारत की संस्कृति की उन्नति है। किसी भी क्षेत्र की सांस्कृतिक पिछड़ेपन का अर्थ है भारतीय संस्कृति का अपंग होना। बुनियादी शिक्षा व्यवस्था में स्थानीय सांस्कृतिक उन्नति की पूर्ण व्यवस्था है। इसकी क्रियायें और कार्य-व्यापार क्षेत्रीय संस्कृति को उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के ही उद्देश्य से प्रस्तावित किये गये हैं।

४--बुनियादी शिक्षा में उन विधियों का प्रावधान है जिन से व्यक्ति अपने आपको दूसरे से भिन्न नहीं समझता। विद्यार्थी का दैनिक कार्य ही राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय एकता तथा सहयोगिता की भावनाओं को विकसित करने में सहायता देने वाली क्रियाओं से प्राप्त होता है।

५--बुनियादी शिक्षा में उस आधार-भूत विषय को हस्तकला के रूप में केन्द्रीय बनाने की योजना है, जिसमें केवल अथवा अधिक से अधिक उसी कच्चे माल अथवा उपकरणों की आवश्यकता होती है जिन्हें कि स्थानीय सामग्री और तकनीकी से बनाया जा सकता है। इन हस्तकलाओं के माध्यम से छात्र राष्ट्रीय इकाइयों की अन्योन्याश्रितताओं तथा सबकी एकता में ही पूर्णता का आभास कर पाते।

६--विद्यार्थी हस्तकला की क्रियाओं में सामूहिक रूप से भाग लेकर पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति एवं सौहार्द्र के सद्गुणों में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। उनमें सहयोगिता एवं सहकारिता की भावनाओं का सन्तुलित विकास होता है। वे सामूहिक प्रयासों के माध्यम से एक व्यक्ति के लिए अन्य साथियों के महत्व और उनकी आवश्यकता का मूल्यांकन कर सकने में समर्थ हो जाते हैं। इससे उनके सामाजीकरण में योगदान होता है और वे नागरिकता की शिक्षा प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होते हैं।

७--पारस्परिक सहकारिता से काम करते हुए विद्यार्थी में एक योग्य नागरिक के लिए आवश्यक गुणों के निषेधात्मक नैतिकता (Negative morality) तथा स्वीकारात्मक नैतिकता (Positive morality) का विकास होता है। वे कुछ आर्थिक क्षमता (Economic efficiency) प्राप्त करने के लिये [illegible] हैं। आर्थिक क्षमता का [illegible] करते हुए बुनियादी शिक्षा [illegible] जाकर [illegible], यह बात [illegible] की [illegible] के अन्तर्गत स्पष्ट कर दी गई है।

८--एक समूह में कार्य करते हुए नेता की भूमिका निभाते हुए वे [illegible]

के गुणों में प्रशिक्षण मिलता है, जबकि किसी साथी छात्र नेता के निर्देशन और नियन्त्रण में कार्य करने से विद्यार्थियों को नेता का अनुसरण तथा उसे सहयोग प्रदान कर सकने की दिशा में प्रशिक्षण मिलता है। इससे स्पष्ट है कि विद्यार्थी को प्रजातान्त्रिक जीवन-व्यवस्था के लिए नागरिकता की शिक्षा मिलती है।

अवकाश का लक्ष्य
(Aims of leisure)

स्कूल शब्द की उत्पत्ति का मूल ही प्रमुख रूप से अवकाश (Leisure) है। यूरोप में स्कूलों का निर्माण धनीवर्ग ने अपने अवकाश को व्यतीत करने के लिए किया। वास्तव में सफल एवं रचनात्मक जीवन के लिए अवकाश का विशेष महत्व है। इस समय-परिधि में मनुष्य अपने दैनिक कार्य से मुक्त होकर विश्राम चाहता है। इस विश्राम काल को यदि क्रियाशीलता प्रदान की जाय तो यह व्यक्ति के तथा समाज दोनों के ही विकास के लिए लाभप्रद होगा। अक्रियाशीलता विश्राम में व्यक्ति वास्तव में मानसिक रूप से ऐसी बातों में व्यस्त रहता है जिनका वास्तविक जीवन से कोई भी व्यावहारिक सम्बन्ध नहीं रहता। इसलिए अवकाश में मन को क्रियाशील बनाये रखने के लिये किसी रचनात्मक क्रिया का प्रावधान अपेक्षित है।

बुनियादी शिक्षा में इसकी पूर्ण व्यवस्था है हस्तकला स्वयं विद्यार्थी के लिये जीवन पर्यन्त एक शौक (Hobby) के रूप में अवकाश व्यतीत करने का साधन बन सकता है। साथ ही हस्तकला के साथ सम्बन्धित कला (Related art) और संगीत आदि की भी व्यवस्था इस कार्यक्रम में है। ये क्रियायें अवकाश के सुन्दर उपयोग के लिए उत्तम हैं। साथ ही बुनियादी शिक्षा के कार्यक्रम में सामुदायिक क्रिया-कलापों को जो स्थान दिया गया है उसके अन्तर्गत लोकगीत, नृत्य, नाटक, खेल-कूद, वाद विवाद, गोष्ठियां आदि सभी क्रियायें आवश्यक रूप से सम्मलित हैं। इन सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि बुनियादी शिक्षा, शिक्षा के अवकाश के उद्देश्य की पूर्ण रूप से पूर्ति कर सकने में समर्थ है।

नैतिक और चारित्रिक लक्ष्य
(Moral and Character aims)

समाज का एक योग्य और प्रभावोत्पादक नागरिक बनने के लिये व्यक्ति नैतिक और चारित्रिक गुणो से सम्पन्न होना चाहिए। यह शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य है कि विद्यार्थी को इस योग्य बना दे। आज हम देखते हैं कि हमारा राष्ट्रीय चरित्र अधःपतन की ओर जा रहा है। समाज में मिथ्या, पक्षपात, डाकोज, भ्रष्टाचार, हिंसा, द्वेष की भावनायें बढ़ती जा रही हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में इन सबको समाप्त कर सकने के लिये आवश्यक नैतिक और चारित्रिक गुणों में छात्रों को प्रशिक्षित करने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। वास्तव में यदि हम बुनियादी शिक्षा को व्यावहारिक रूप में स्वीकार करलें तो उसमें निम्नलिखित

व्यवस्था से व्यक्तित्व के इस पहलू में विद्यार्थी को प्रशिक्षण के लिए अवसर मिल सकेंगे।

(१) प्रार्थना और राष्ट्रीय गान से विद्यालय के दैनिक कार्यक्रम का शुभारम्भ।

(२) सहयोगिता और सहकारिता के आधार पर क्रियाओं का आयोजन।

(३) हस्तकला के माध्यम से विज्ञान विषयों के अध्ययन से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास करना। जिससे वे सत्य तथ्यों के आधार पर न्याय-प्रिय निर्णय ले सकने में समर्थ हो सकें।

(४) बुनियादी शिक्षा प्रणाली के लिए उपयुक्त विधियों में विद्यार्थियों के लिये समस्याओं का प्रावधान होता है। विद्यार्थी साहस पूर्वक इनके समाधान के लिए आवश्यक हल ढूढ़ते हैं। इससे उनमें साहस, चिन्तन और निरन्तर कर्तव्य-पथ पर प्रगति करते रहने के महान गुणों का विकास होता है।

(५) सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों से उनमे सामाजिक कल्याण की भावनायें विकसित होती हैं।

(६) भिन्न स्तर, जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र के परिवारों से आये हुए छात्रों को एक साथ समान क्रिया करने के प्रावधान से उनमें सामाजिक समानता तथा पारस्परिक प्रेम की भावनाओं का विकास होता है।

(७) पाठ्य-सहगामी कार्यक्रम के अन्तर्गत उन क्रियाओं को प्राथमिकता देने पर बल दिया जाता है जो विद्यार्थी में सत्य-निष्ठा, कर्तव्य-पालन, चारित्र व्यवहार जैसे पवित्र गुणों को विकसित कर सकें।

(८) सामाजिक जीवन के कार्य-व्यापार में प्रभावोत्पादक नागरिक बन सकने के लिए विद्यार्थियों में धनात्मक और निषेधात्मक नैतिकता का विकास किया जाता है।

गांधीजी सैद्धान्तिक ज्ञान तथा प्रशिक्षण को द्वैत (Secondary) और यहाँ तक कि 'नैतिक प्रशिक्षण' की अपेक्षा बलिदान करने पर भी तैयार थे "That he was prepared to relegate to a subordinate position or even sacrifice, litrary training. if the Choice to be made between the two".

गांधीजी ऐसी शिक्षा के पक्षपाती थे जो कि व्यक्ति को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त कर सकने में समर्थ हो। उन्होंने इन्हीं सब को प्राप्ति के प्रयास के रूप में बुनियादी शिक्षा की रूप रेखा हमारे सम्मुख रखी।

गांधीजी आध्यात्मिक बल और आध्यात्मिक स्वतन्त्रता पर विशेष बल देते

थे। उपरोक्त विवेचना से हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियों में बुनियादी शिक्षा जैसी व्यवस्था की ही आवश्यकता है।

हमारे शिक्षा विदों और शिक्षा नीति के निर्धारण करने वाले नेताओं को अब भी एक राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था के लिये प्रयास करने चाहिये। वास्तव में बुनियादी शिक्षा व्यवस्था ही भारत की राष्ट्रीय शिक्षा के रूप मे सर्वोत्तम है।

प्रश्न २

"Education influences the society and in turn, is being influenced by the society." Explain this statement in the light of the changes taking place in our society and the corresponding changes being introduced in our system of secondary education Give examples.

"शिक्षा समाज को प्रभावित करती है तथा उससे प्रभावित होती है।" इस कथन की व्याख्या हमारे समाज में होने वाले परिवर्तनों तथा उनसे सम्बन्धित हमारी माध्यमिक शिक्षा पद्धति में होने वाले परिवर्तनों को दृष्टि मे रख कर कीजिये, उदाहरण भी दीजिये।

उत्तर--

यह एक अटल सत्य है कि कोई भी शिक्षा-व्यवस्था अपने सार्थक अस्तित्व और व्यावहारिक महत्व के लिए उन सामुदायिक मूल्यों और उद्देश्यों पर निर्भर करती है जिसके संवर्द्धन-हेतु उसका संगठन किया गया है। समाज अपने निर्माण और अपनी उन्नति के लिये शिक्षा की व्यवस्था करता है। स्पष्ट है शिक्षा सामाजिक कार्य है। इसका उत्पादन समाज करता है। शिक्षा बदले में अपनी उत्पत्ति के बाद समाज में रचनात्मक कार्यों को प्रोत्साहन देकर उसकी संस्कृति को बढ़ाता और विकसित करता है।

शिक्षा-सुधार की बातें निर्वात में सम्भव नहीं है। सत्य तो यह है कि सामाजिक मूल्यों के परिवर्तन की पृष्ठ-भूमि में सांस्कृतिक पुनर्गठन के सन्दर्भ में ही आवश्यक शिक्षा सुधारों की विवेचना होती है। सामाजिक परिवर्तन ही शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, विधियों, प्रशासन एवं प्रावधानों में परिवर्तन के लिये उत्तरदायी है।

शिक्षा एक सामाजिक क्रिया (Activity) है। इसे अभिवृद्धि की प्रक्रिया (Process of growth) कहा जाय तो अत्योक्ति न होगी। यह तो स्पष्ट ही है कि अभिवृद्धि का लक्ष्य व्यक्ति है और व्यक्ति की अभिवृद्धि तथा विकास भौतिक एवं सामाजिक वातावरण के दोनों ही पहलुओं से समान रूप में प्रभावित होते हैं। ब्राउन महोदय के निम्नलिखित कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

"शिक्षा चेतनापूर्ण से नियन्त्रित प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति में

व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति में परिवर्तन लाये जाते हैं (Education is consciously controlled process whereby the Changes in behaviour are produced in the person within the group."

हम जानते हैं कि समाज परिवर्तनशील (Dynamic) है। अतः इसके प्रयास के रूप में शिक्षा भी स्वयं परिवर्तनशील प्रकृति की है। क्लार्क (Clarke) महोदय ने भी इस विषय में यही विचार प्रस्तुत किये कि "शिक्षा का कोई भी विद्वान चाहे उसने अपने आपको कितना ही विश्व-विचार का बना लिया हो, काल और स्थान के प्रभाव से वंचित नहीं हो सकता (No writer on education, however he may strive after universality of thought, can wholly shake himself free from the influence of time and place.)

यह एक सर्व विदित धारणा है कि निरन्तर सामाजिक अभिवृद्धि और फलस्वरूप तत्सम्बन्धी परिवर्तन (Changes) होते रहते हैं। और इस प्रकार इन सामाजिक परिवर्तनों को न केवल शिक्षा में प्रतिबिम्बित ही होता है अपितु उसे प्रभावित भी करता है। समाज और शिक्षा का एक दूसरे के लिये क्या महत्व है डीवी महोदय द्वारा सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है कि शिक्षा-क्षेत्र में नवीन आन्दोलनों के विषय में सामाजिक दृष्टिकोण से ही सोचा जाना चाहिये। अन्यथा विद्यालय जैसी संस्थाओं और इनकी परम्पराओं को व्यक्ति विशेष की अस्थायी वृत्ति के रूप में देखा जाने लगेगा। शिक्षा के पाठ्यक्रम और उसकी विधियों का परावर्तन (Modification) न केवल परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियों का प्रतिफल है अपितु (Emerging) नवीन स्वरूप से प्रस्फुटित सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उद्योग और व्यापार की परिवर्तित दिशाओं के मार्ग दर्शन का एक उत्तम साधन भी है।

विद्यालय अपने एकाकीपन को केवल सामान्य सामाजिक गति-विधियों से सम्बन्ध स्थापित करने पर ही छोड़ सकता है। इस विषय में अपना मत व्यक्त करते हुये डीवी महोदय ने सुन्दर शब्दों में यह बतलाया कि वैज्ञानिक प्रगति ने किस प्रकार हमारे मानसिक विचारों, रुचियों एवं जीवन-यापन की आदतों को प्रभावित किया। और इन सबने हमारी शिक्षा व्यवस्था, इसकी विधियों एवं प्रणालियों पर प्रभाव डाले। पाठ्यक्रम में शारीरिक प्रशिक्षण, व्यापार-कार्य, गृह कला आदि विषयों का समावेश इन परिवर्तनों की प्रत्यक्ष देन है। इस रूप में विद्यालय बच्चे का [illegible], [illegible] का लघु रूप एवं भ्रूणावस्था में समाज का स्वरूप बन सकने का अवसर प्राप्त करता है (The school as such has chance to become child's habit, to be a miniature community, an embryonic society) इस देखते हैं कि शाला द्वारा [illegible] [illegible] शिक्षा भी इसी वास्तविक रूप को स्वीकार [illegible] है।

समाज के भिन्न-भिन्न घटक शिक्षा को प्रभावित करते हैं तथा उनसे स्वयं प्रभावित होते हैं। विवेचना की दृष्टि से हम निम्नलिखित तीन भागों में अध्ययन कर समाज और शिक्षा की अन्योन्याश्रितता का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

१--आर्थिक पहलू (Economic factor) और शिक्षा,

२--राजनीति और शिक्षा (Political factor in education)

३--धार्मिक और नैतिक पहलू (Religious and moral factor in education).

१--आर्थिक पहलू और शिक्षा

(Economic factor and Education)

शिक्षा और सामाजिक अर्थ-व्यवस्था का घनिष्ट सम्बन्ध है। जहाँ शिक्षा किसी समाज अथवा राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था को प्रभावित करती है, स्वयं भी इससे प्रभावित होती है। उदाहरण के लिये प्रजातन्त्र में हम देखते हैं कि सभी के लिये समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का प्रावधान है। किन्तु, माता-पिता तथा अभिभावकों की आर्थिक स्थिति की भिन्नता के कारण हम इस सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप दे सकने में अभी भी समर्थ नहीं हो सके हैं। हमारे देश में अधिकतर माता-पिता अपनी आर्थिक असमर्थता के कारण अपने बच्चों को वांछित शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं।

शिक्षा व्यवस्था सामाजिक अर्थ-व्यवस्था पर निर्भर करती है। आज प्रत्येक देश की अर्थ-व्यवस्था, चाहे उसकी प्रवृति कुछ भी हो, (कृषि प्रधान, उद्योग प्रधान, व्यापार प्रधान) विज्ञान से प्रभावित है। यही कारण है कि विद्यालयों में व्यावहारिक व्यवसायों एवं विज्ञान और तकनीकी शिक्षा पर बल दिया जाने लगा है। साथ ही विषयों के शिक्षण के लिये प्रयोग (Experimental) तथा प्रयोगशाला (Laboratory) विधियों को प्राथमिकता दी जाने लगी है। यही नहीं शिक्षा-व्यवस्था तथा इसका प्रशासन भी प्रचलित आर्थिक व्यवस्था के अनुरूप होते हैं। हम देखते हैं कि पूंजीवादी समाज में शिक्षा पर पूंजीपतियों का एकाधिकार होता है। उनके लिये विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था है। इसके विद्यालयों में भी प्रतियोगिताओं (Competitions) एवं परीक्षाओं (Examinations) को विशेष महत्व दिया जाता है। ऐसे समाज में इस प्रकार की शिक्षा-व्यवस्था के फलस्वरूप कई वर्गों में समाज का विघटन हो जाता है। तथा इन वर्गों के बीच का अन्तर बढ़ता हो जाता है।

हम देखते हैं कि अर्थ-व्यवस्था के परिवर्तन से शिक्षा के व्यवसायिक लक्ष्य (vocational aim of education) का महत्व बढ़ गया है। तथा हमारे यहाँ तकनीकी प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या में भी काफी वृद्धि हुई है। साथ ही माध्यमिक

स्तर पर विज्ञान विषयों का चयन करने वाले छात्र बहुत बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष चले आ रहे हैं। सामाजिक अर्थ व्यवस्था का प्रभाव अध्यापक तथा विद्यालय की आवश्यक सामग्री पर भी पड़ता है। हमें यह बात अपने देश के माध्यमिक स्तर पर चल रहे भिन्न विद्यालयों के उदाहरणों से स्पष्ट हो जाती है। इन बातों में जो अन्तर है वह प्रचलित केन्द्रीय, राज्य, स्थानीय सरकारों द्वारा संचालित एवं व्यक्तिगत संगठनों द्वारा चलाये जा रहे विद्यालयों एवं पब्लिक स्कूल की भिन्न भिन्न स्थितियों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है।

इतिहास के पन्ने उलटने पर पता चलता है कि ब्रिटिश काल में हमारी स्वतन्त्र अर्थ-व्यवस्था न होने के कारण शिक्षा भी अंग्रेजों के द्वारा निर्देशित होती थी। इस स्थिति को बनाये रखने के लिये उन्होंने हमारे लिये ऐसी शिक्षा-व्यवस्था की जो केवल पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित थी। किन्तु, गांधीजी ने एक स्वतन्त्र अर्थ व्यवस्था की आवश्यकता का अनुभव प्राप्त कर बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमने अपनी आर्थिक व्यवस्था में आवश्यक सुधारों की दृष्टि से 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' की सिफारिशों के अनुसार बहु-उद्देशीय विद्यालयों की स्थापना माध्यमिक स्तर पर की। किन्तु, आर्थिक कठिनाइयों के आ जाने से हमें यह कार्य-क्रम बन्द करना पड़ा। और अब हमने अपनी आर्थिक सीमाओं के अनुसार शिक्षा में आवश्यक परिवर्तन कर लिये हैं। अब हम शिक्षा को वैज्ञानिक प्रभाव के निकट लाने का प्रयास कर रहे हैं। अपनी परीक्षण पणाली में हम वैज्ञानिक प्रभाव से अछूते न रह सके। तथा इस दिशा में भी नवीन प्रयोग करने जा रहे हैं।

२. राजनीति और शिक्षा (Political factor in education)—अपने अस्तित्व के विषय में किसी समाज की अपनी विशिष्ट विचारधारा होती है। यह विचारधारा उसको राजनीतिक दृष्टिकोण को जन्म देती है। यह वास्तव में किसी समाज का अथवा राज्य का अपना जीवन दर्शन है। इसी के अनुकूल वह अपनी आर्थिक, प्रशासनिक एवं शैक्षिक नीतियों का निरूपण करता है।

समाज शिक्षा के माध्यम से अपनी विचारधारा का संचार करने के लिये उसे अनुकूल रूप, व्यवस्था एवं पाठ्यक्रम और विधियाँ प्रदान करता है। हम देखते हैं कि एकतन्त्रीय (monistee) राजनैतिक विचारधार शिक्षा को एकमात्र अपने ही अधिकार क्षेत्र एवं कर्तव्य की सीमा में बांधने का समर्थन करता है, जबकि बहुतन्त्रवादी विचारधारा (Pluralistic view) इस पर राज्य, समाज, परिवार, समुदाय एवं माता-पिता के समानाधिकार का पक्षपाती है। इस प्रकार दोनों ही विचारधाराओं में शिक्षा व्यवस्था बिल्कुल भिन्न है।

भारत में प्राचीन और मध्य कालों की शिक्षा व्यवस्था अध्ययन से हमें इस पर राजनैतिक विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट हो जाता है। इसने न केवल सामाजिक कारकों (Socialogical factor) को ही ढूँढा अपितु उसने सामाजिक शक्तियों का संवर्द्धन कर सामाजिक ढांचे को भी प्रभावित किया। ब्रिटिश काल में क्या हुआ ? हमारी प्राचीन शिक्षा व्यवस्था को जड़ से उखाड़ दिया गया, और लार्ड मैकाले की शिक्षा-नीति को क्रियान्वित कर भारत में आज यह स्थिति लायी जा चुकी है कि हम अपनी संस्कृति के प्रति उदासीन एवं प्राप्त प्रजातान्त्रिक जीवन के सुख को भोगने के लिये तैयार नहीं हैं।

गांधीजी जैसे महान् शिक्षक ने समय की आवश्यकता का आभास किया। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजों के कुचक्र को समझा और यह अनुभव किया कि जब तक भारतीय जन-मानस में अपने राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना को प्राप्त नहीं किया जाय, राष्ट्र के लिये किये जाने वाले प्रयास सफल नहीं हो सकते। इसीलिये उन्होंने राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत होकर बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। असहयोग आन्दोलन तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार यह सब राजनैतिक घटनायें ही तो समाधान के रूप में बुनियादी शिक्षा सिद्धान्तों में फलीभूत हुई। हम देखते हैं कि बुनियादी शिक्षा जहाँ सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त हथियार है, स्वयं में प्रजान्त्रिक प्रकृति को लिये हुए है, साथ ही हम देखते हैं कि पूर्व शिक्षा व्यवस्था की दृष्टि से यह स्वयं एक परिवर्तित रूप है।

हम देखते हैं कि स्वतन्त्रता से पूर्व हमारी माध्यमिक शिक्षा का लक्ष्य केवल मात्र एक ऐसे व्यक्ति को बनाना था जो साधारण स्तर पर कार्य करते हुये विदेशी सरकार की राजनैतिक वांछाओं को पूर्ण कर सके। तदुपरान्त भिन्न भिन्न राज्यों में शिक्षा व्यवस्था को प्रजातान्त्रिक ढंग से पुर्नगठित करने की दृष्टि से शिक्षा आयोगों का गठन हुआ। इसमें उतर प्रदेश में आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में नियुक्त आयोग ने जहाँ इस राज्य की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया राजस्थान की माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था पर भी प्रभाव डाला। राष्ट्रीय स्तर पर नियुक्त माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondry education commission) जो कि मुदालियर शिक्षा आयोग भी कहलाता है, ने अपने प्रतिवेदन में जो सुझाव रखे उनका हमारी शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव पड़ा। आज हम देखते हैं कि हमने अपनी शिक्षा के लक्ष्यों, उसकी विधियों, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन तथा प्रशासन में महान् परिवर्तन कर लिये हैं। तथा आवश्यकतानुकूल इनमें लगातार शोधन एवं परिवर्तन करते जा रहे हैं।

३. धार्मिक तथा नैतिक पहलू (Religious and moral factors in education)—धर्म और शिक्षा का दोनों के प्रादुर्भाव से घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। ये दोनों ही क्षेत्र भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों पहलुओं को स्पर्श करते हैं। ये दोनों मानवीय क्षितिज का विस्तार करते हैं। ये दोनों शक्तिशा व्यक्ति को वाता॰

वरण से स्वतन्त्र करती है किन्तु उससे उसका सम्बन्ध विच्छेद नहीं करती
अवश्य उसके दासत्व से छुटकारा दिलाती है। जीवन के कुछ निर्धारित मूल्यों
पृष्ठ भूमि में शिक्षा प्रक्रिया में क्रमबद्ध परिवर्तन का प्रयास करती है, धर्म जी
के लिये उन आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का प्रतिपादन करता है जो शिक्षा
किसी भी स्थिति में अछूता नहीं रह सकता। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी धर्म औ
शिक्षा एक दूसरे के सन्निकट हैं। धर्म एक सामाजिक परम्परा एवं संस्कृति प
म्पराओं के पुनर्गठन एवं परावर्द्धन के लिये एक आवश्यक सामाजिक प्रयास है
अतः शिक्षा के पाठ्यक्रम में धर्म का स्थान विशेष महत्व का है। जेन्टिल महोदय
निम्नलिखित कथन से हमें यह बात अधिक स्पष्ट हो जाती है।

"मन की उत्कृष्ट आवश्यकताओं जो कि कलात्मक तथा अमूर्त रूप
मानसिक ही नहीं अपितु नैतिक और धार्मिक भी है, के प्रति राष्ट्रीय संस्कृति
जितनी क्रियाशील आज है इससे अधिक पूर्व काल मे कभी भी नहीं। अतः नैतिक
और धार्मिक अचलों के बिना कोई विद्यालय एक हास्यास्पद चीज है। (National
cultures have never been more conscious than now of the higher
needs of the mind, needs that are not only-aesthetic and abstra-
ctly intellectual, but also ethical and religious For a school with
out an ethical and religious constant in an absurdity.") ।

हमारी माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था भी समय-समय पर धार्मिक मूल्यों और
आदर्शों से प्रभावित होती रही है। प्राचीन काल मे तो सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था गुरु
ऋषियों के आश्रम में हुआ करती थी, ये महान् आत्मायें धार्मिक गुरु ही हुआ करती
थीं। उस समय सम्पूर्ण शिक्षा की प्रकृति धार्मिक थी। मध्यकाल के इतिहासकारों
का अवलोकन करने पर हमें ज्ञात होता है कि पंडित और मुल्ला लोग पाठशालाओं
और मकतबों में शिक्षा-दीक्षा का कार्य करते थे। यहां भी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था
धर्म केन्द्रित (Religion centered) थी।

ब्रिटिश काल में देखते हैं कि ईसाई मिशनरियों ने किस प्रकार गिरजों के
माध्यम से भारतीय शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया। इसी काल में प्रतिक्रिया के
रूप में मुस्लिम और हिन्दू समुदायों ने भी अपनी अपनी धार्मिक परम्पराओं की सुरक्षा
के लिये विद्यालय खोले। इसी प्रकार धार्मिक सहिष्णुता तथा संस्कृति के धार्मिक
पहलू का पुनर्गठन करने की दृष्टि से जो कार्य कम से कम उत्तर भारत में आर्य
समाज ने किया उसका सानी दूसरा अन्य कोई समाज नहीं कर सकता। उत्तर
प्रदेश और पंजाब की शिक्षा में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक संस्थाओं ने जो योगदान
किया और जो प्रभाव डाल रही है वह इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।

अब हम स्वतन्त्रता के बाद अपनी शिक्षा नीति का अध्ययन करते हैं। भारत में एक राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था के रूप में बुनियादी शिक्षा हमारे सम्मुख आयी है। उनकी सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था धार्मिक शिक्षा के दृढ़ आधार पर खड़ी है। वे धर्म को साम्प्रदायिकता की संकुचित रूप रेखा नहीं देते। वे धर्म-निरपेक्षता (Secularism) पर विश्वास करने वाले थे। उनके अनुसार सब धर्मों में अच्छाइयाँ हैं। इसलिए सभी धर्मों की अच्छाइयों को धार्मिक शिक्षा के रूप में पढ़ाया जाना चाहिये। उनके विचार हमें १६ जुलाई, १९३८ के "हरिजन" में प्रकाशित लेख से स्पष्ट हो जाते हैं।

"नैतिकता के आधारभूत सिद्धान्त सभी धर्मों में समान हैं। जहाँ तक शिक्षा की वार्धा रूप-रेखा का सम्बन्ध है उन्हें उपयुक्त रूप से धार्मिक निर्देशनों के रूप में आवश्यक रूप से विद्यालयों में बच्चों को पढ़ाया जाना चाहिये। (Fundamental principles of ethics are common to all religions. These should certainly be taught to the children, and that should be regarded as adequate religious instruction so for as schools under the Wardha scheme are concerned)"

इसी प्रकार हम देखते हैं कि सन् १९६० में केन्द्रीय सरकार द्वारा "धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा समिति (committe on Religious and Moral Education) जो कि बम्बई के तत्कालीन गवर्नर श्रीप्रकाश की अध्यक्षता में नियुक्त की गयी, उसने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर धार्मिक शिक्षा के लिये निम्नलिखित बातों को विकसित किया;

१. प्रातःकाल प्रार्थना सभा।

२. संसार के मुख्य धर्मों के महत्वपूर्ण सिद्धान्त।

३. कक्षा के बाद तथा छुट्टियों में संगठित समाज सेवा की सहगामी क्रियायें (Co-curricular activities) आवश्यक अंग हों।

साथ ही इस समिति ने यह सुझाव भी दिया कि चारित्रिक और आचरण सम्बन्धी व्यवहारों के लिये विद्यालय के सम्पूर्ण कार्यक्रम में समुचित व्यवस्था होनी चाहिये।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी धार्मिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। किन्तु इसकी व्यवस्था के प्रति आयोग उदासीन सा दिखाई देता है—"विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा स्वयं सेवा (voluntary) के आधार पर तथा कक्षा समय के बाद दी जा सकती है। इस प्रकार की शिक्षा विद्यालय में ही विद्यार्थियों को उनके माता-पिता की अनुमति से दी जाए (Religious instructions may be given in schools only on a voluntary basis and outside the regular school hours, such instructions being confined to the children of the

१. राजनीतिक जनतन्त्र (Political Democracy)—इस क्षेत्र में जनतन्त्र का लक्ष्य लोक-प्रशासन को व्यवस्था प्राप्त करना है। राष्ट्रपति लिंकन के शब्दों में "जनतन्त्र में शासन जनता का, जनता के लिये, जनता द्वारा होता है (Democracy is the government of the people, by the people and for the people.)" । ब्रायस महोदय ने इसी बात को अपने शब्दों में स्पष्ट करने के लिये कहा, "यह सरकार का वह रूप है जिसमें देश के शासन की बागडोर उसकी जनता के बहुत बड़े भाग के अधिकार में होती है (Democracy is a form of government in which governing body is comparatively large fraction of the entire nation.) व्यावहारिक रूप में यह वयस्क मताधिकार के रूप में प्रत्यक्ष है। देश के नागरिकों को अपने प्रशासकीय प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। इसके लिये उनमें उपयुक्त व्यक्ति का चयन करने की क्षमता होनी चाहिये। वे व्यक्ति को पहिचान सकने में कुशल हों।

२. आर्थिक जनतन्त्र (Economic democracy)—इसके अनुसार देश के सभी नागरिकों को अपनी आर्थिक क्षमता बढ़ाने एवं जीविकोपार्जन के लिये समान अवसर प्राप्त करने का समान अधिकार है। सामाजिक अर्थ व्यवस्था प्रतिस्पर्धा पर आधारित नहीं होती। यह पारस्परिक सहयोगिता एवं सहकारिता पर आधारित होती है। व्यक्ति को इसकी शक्ति, रुचि एवं कौशल के अनुकूल कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहिये साथ ही राष्ट्रीय सम्पत्ति एक व्यक्ति अथवा कुछ ही व्यक्तियों के हाथ में न होकर सम्पूर्ण जनता में समान रूप से वितरित हो। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी जीविका कमाने के लिये अनुकूल प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। तथा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के कार्य में हस्तक्षेप न करे। इसके विपरीत वे एक दूसरे को सहयोग देने के लिये तत्पर रहें।

३. सामाजिक जनतन्त्र (Social democracy)—इस सिद्धान्त के अनुसार सभी व्यक्तियों को चाहे वे किसी भी धर्म लिंग, जाति, वर्ग वर्ण, परिवार अथवा क्षेत्र के हों उन्हें सभी सामाजिक क्रियाओं और कार्य व्यापारों में भाग लेने का समान अधिकार होता है इसके अनुसार व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता (Freedom of expression) किसी भी राजनैतिक दल में सम्मिलित होने की स्वतन्त्रता, सुरक्षा का अधिकार आदि सम्मिलित हैं।

४. शैक्षिक स्वतन्त्रता (Educational Democracy)—प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षा प्राप्त करने का समानाधिकार है। साथ ही शिक्षा के लिये सभी को समान अवसर दिये जाने चाहिये। इस विषय में बाघर महोदय का कथन, "शिक्षा व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है (Education is the birth right of every human being not to the previlege of the few.)" उल्लेखनीय है। —विस्तार के लिये प्रश्न ३ सन् १९६७।

"जनतन्त्र के लिये शिक्षा" में निम्नलिखित गुण आवश्यक हैं :—

I. एजूकेशन पालिसीज कमीशन-यू० एस० ए० (Education policies commission-U. S. A) द्वारा प्रतिपादित गुण : —

१. लोकतन्त्रीय विश्वास का प्रत्यक्षीकरण (Realization of democratic factors) ।

२. सभी सम्बन्धों में एकता और ईमानदारी (Integrity and honesty in all relations) ।

३. परिवर्तित जीवन के प्रति चेतन और उत्तरदायी (Sensitive and responsive to the changing pattern of life.)।

४. संकीर्ण और अस्थायी विभाजन तत्वों के प्रभावों से स्वतन्त्र (Free from the effects of narrow and temporary elements of disintegration) ।

५. नागरिकों के परिवर्तित आदर्शों, आशाओं और समस्याओं के प्रति जागरूक (Conscious of the changing pattern of the ideals, desires and needs of the citizens.) ।

६. व्यक्तिगत तथा व्यक्तिगत संगठनों के कुप्रभावों से स्वतन्त्र (Free from the effects of the private individual and the association of private motives) ।

II. जेम्स तथा मर्सेल (James and Mursell) ने इस विषय में निम्नलिखित विशेषताओं को प्रस्तुत किया—

१. चरित्र का विकास (Development of character) ।

२. विद्यालय सामाजिक यन्त्र के रूप में माना जाय, चलाया जाय एवं इसी रूप में उसके विषय में निर्णय लिये जायें (School should be understand, conducted & all the judgements in its respected should be taken as a social instrument) ।

३. विद्यालय और समुदाय के बीच निरन्तर घनिष्ठ सम्बन्धों की स्थापना (Establishment of continuous and close relations between school and community) ।

४. विद्यालय का समुचित संगठन जिससे सभी के लिये शिक्षा व्यवस्था हो सके (The arrangement of school should be such as to enable all to get the desired education) ।

५. विद्यालय में वैयक्तिक विकास प्रेरणा और निर्देशन का प्रबन्ध (Provision for the stimulation and guidance of the development of personality should be made in the school) ।

६. लोकतन्त्रीय जीवन की समस्याओं को हल करने की क्षमता का विकास कर सकने में समर्थ, पाठ्यक्रम का निर्माण और संगठन (Construction and organization of the curriculum which will develop the skill in the student necessary for solving the problems of democratic living)।

७. शिक्षा का आवश्यक लक्ष्य 'जीवन के अर्थों को समझना' है (The aim of education should to realize the meaning of the life)।

८. विद्यालय जिन लोगों की सेवा कर रहा है, उन्हें समय समय पर प्रगति की जानकारी दी जानी चाहिये (The people, whom the school is serving, should be made aware of the progress regularly)।

९. शैक्षिक नीति के निर्धारण और उसको क्रियान्वित करने के विषय में अध्यापक के दायित्व को मान्यता प्रदान करना (Recognition to responsibitity of the teacher in framing and implementing the curriculum)।

१०. विद्यालय-व्यवस्था, तथा इसके प्रशासन में शैक्षणिक नेतृत्व को मान्यता (to the academic leadership in the field of the managdement and administration of the school)।

III माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondry Education commission) का दृष्टिकोण निम्नलिखित कथन से स्पष्ट हो जाता है।

"शिक्षा व्यवस्था को आदतों, दृष्टिकोणों और चरित्र के गुणों के विकास में योग देना पड़ेगा, जिससे कि नागरिक जनतन्त्रीय नागरिकता के दायित्वों का योग्यता से निर्वाह कर सकें और उन ध्वंसात्मक प्रवृतियों का विरोध कर सकें, जो व्यापक राष्ट्रीय और धर्म निरपेक्ष गुणों के विकास में बाधक हैं (Educational system must make contribution to the development of habits, attitudes, and qualities of character which will enable its citizens to bear worthily the rasponsibilities of democratic citizenship and to counteract all those fissiparous tendencies which hinder the emergency of broad national and secular outlook.)।"

IV. शिक्षा आयोग के विचार

(Education commission)

"इस सन्दर्भ में उन मूल्यों के विकास पर विशेष बल दिया जाना चाहिये जिनसे वैज्ञानिक विचारों, सहनशीलता, दूसरे सांस्कृतिक आदर्शों के प्रति आदर आदि को

बढ़ावा मिले तथा हम जनतन्त्र को न केवल सरकार के निर्माण में ही प्रयोग कर सकें बल्कि इसे जीवन व्यवस्था के रूप में भी स्वीकार करें..........प्रश्न १, १६६७ (In this context, special emphasis has to be laid on the development of the values such as a scientific temper of mind, tolerance respect for the culture of the other national groups, etc. which will enable us to adopt democracy, not only as a form of Government, but also as a way of life.)"

भारत में जनतन्त्रीय शिक्षा-पद्धति की प्रमुख विशेषतायें :—ऐसी सफल व्यवस्था में निम्नलिखित गुणों का होना अत्यन्त आवश्यक है —

१. जन-शिक्षा की व्यवस्था (Provision for the education of masses) :—यह जनतन्त्र की प्रमुख मांग है कि उसका प्रत्येक नागरिक समुचित रूप से शिक्षित हो। इस विषय में स्वामी विवेकानन्द जी का कथन उल्लेखनीय है :—

"मेरे विचार से जनता की अवहेलना महान् राष्ट्रीय पाप है। कोई भी राजनीति उस समय तक सफल नहीं होगी, जब तक कि भारत की जनता एक बार फिर अच्छी प्रकार से शिक्षित न हो जायेगी। यदि हम भारत का पुनरुत्थान चाहते हैं, तो हमें जनता के लिये कार्य करना होगा (I consider that the great national sin is the neglect of the masses. No amount of politics would be of any avail untill the masses in India are once more well educated. If we want to regenerate India, we must work for them.)

२. लोकतन्त्रीय नागरिकता का विकास (Development of Democratic citizenship) :-व्यक्ति में परिस्थिति (राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक) को समझने की क्षमता, वास्तविक तथ्यों की जानकारी के लिये उपयुक्त विधियों के चयन (Selection) एवं उपयोग (Use) आवश्यक कौशल (Skill), घटनाचक्रों का सूक्ष्म निरीक्षण कर निर्भीकता से स्वतन्त्र और निष्पक्ष निर्णय लेने के लिये गुणों के विकास की व्यवस्था समुचित रूप से हो। व्यक्ति निषेधात्मक और स्वीकारात्मक नैतिकता के सिद्धान्तों पर आचरण करने योग्य बन सके। विद्यार्थियों में शिक्षा प्राप्त करने से निस्वार्थ सेवा की भावना जागृत हो सके। इस विषय में सर्वपल्ली डा॰ राधाकृष्णनन का कथन उल्लेखनीय है, "भारत माता आप से यह आशा करती है कि आपका जीवन शुद्ध, श्रेष्ठ और निस्वार्थ कार्य के लिये अर्पित हो (Mother India expects of you that your lives should be clear, noble and dedicated to selfless work.)"

३. नेतृत्व में प्रशिक्षण (Training in leader ship) :— प्रश्न १ सन् १९७।

४. अन्तर सांस्कृतिक भावना का विकास (Development of inter-cultural understanding) :—भारतीय शिक्षा पद्धति इस तरह होनी चाहिये जिससे विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के भिन्न अंगों की अनुभूति प्राप्त कर उसकी एकता के लिये सबके समान विकास की आवश्यकता का महत्व समझ सकें। तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों के विषय में आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकें।

५. भावात्मक एकता की प्राप्ति (Realization of emotional integration) :—भावात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता (National integration) का मनोवैज्ञानिक पहलू है। डा० सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में नियुक्त भावात्मक एकता समिति ने स्पष्ट शब्दों में शिक्षा को इसके लिये प्रयास का सबसे उत्तम साधन माना है।

६. अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान में वृद्धि (Promotion of the international understanding) :—विज्ञान के इस युग में कोई भी समाज अथवा राष्ट्र अकेला नहीं रह सकता। दुनिया के किसी भी स्थल पर धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन से वह किसी न किसी सीमा तक अवश्य प्रभावित होता है अतः हमारा सम्बन्ध क्षेत्र देश की सीमाओं में नहीं बंधना चाहिये। इसके लिये हमें अपने विद्यार्थियों को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का ज्ञान एवं विश्व-बन्धुत्व की भावना का उनमें विकास करने के प्रयत्न करने चाहिये। नेहरूजी का निम्नलिखित कथन इसे स्पष्ट कर देता है :—

"प्राचीन विश्व बदल गया है और उसकी बाधायें समाप्त हो गयी हैं। जीवन अधिकाधिक अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। हमें इसमें अपनी भूमिका निभानी है। इसके लिये विश्व-सम्पर्क आवश्यक है (The old world has changed and the old barriers, are breaking down, life is becoming more international. We have to play our part in the comming internationalism, and for this purpose, contact with world is essential) ।"

(आगे विस्तृत विवेचना के लिये प्रश्न ४, १९६७)

प्रश्न ४—

Give comparative statement of the main principles and practices underlying the naturalism and pragmatism in education. Support your statement by giving concrete examples.

शिक्षा में प्रकृतिवाद तथा प्रयोजनवाद के प्रमुख सिद्धान्तों तथा प्रवृत्तियों की तुलनात्मक विवेचना कीजिये। तथा अपने कथन की पुष्टि उदाहरण देकर कीजिये।

शिक्षा में प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद के सिद्धान्त

सिद्धान्त बिन्दु	प्रकृतिवाद	प्रयोजनवाद
१. अन्तिम सत्य (Ultimate Reality)		
	१. प्रकृति के नियमों—(Laws of nature) की सार्वभौम (Universal) सत्ता है।	१. कोई भी नियम सार्वभौमिक एवं वस्तुगत (objective) नहीं हैं।
	२. प्रकृति ही समस्त पदार्थों (Matters) तथा विचारों का स्रोत है।	२. प्रकृति का स्वयं में कोई अस्तित्व नहीं है। ब्रह्माण्ड के पदार्थ कई तत्वों (Elements) से बने हैं। विचार तो अनुभव-जनित होते हैं।
	३. समानता सत्य की अन्तिम कसौटी है।	३. सत्य की कसौटी पुनर्निरीक्षण (Verification) है।
	४. प्रकृति के नियम निश्चित हैं। ये मानव की शक्ति से बाहर हैं।	४. कोई भी नियम शाश्वत (Eternal) एवं निश्चित नहीं हैं। ये देश (Place), काल (Time) और परिस्थिति (Circumstances) पर निर्भर करते हैं। इसका निर्माता मानव एवं प्रेरक समस्या (Man made motivated by problems)।
शैक्षिक उदाहरण —		
	१. सत्य की जानकारी के लिये आत्मानुभूति (Self Reailzation) और आत्माभिव्यक्ति (Self expression) अत्यन्त आवश्यक हैं। इनके विकास के लिये बालक को स्वतन्त्र रखना चाहिये। इन गुणों की संप्राप्ति केवल 'प्रकृति की ओर लौटो (Back to nature)" के सिद्धान्त का अनुगमन करने पर ही सम्भव । यही कारण है कि यह विचार- मानव द्वारा निर्मित शिक्षा- को वास्तविक शिक्षा प्राप्त	१. कोई भी नियम सार्वभौमिक सत्ता का नहीं है। इसकी सत्यता परिवर्तनशील है, वास्तविक सत्य वह है जो प्रयोगों के निरीक्षणों से सिद्ध किये जा सकते हैं। अतः नियमों का निर्धारण मनुष्य प्रयोगों से प्राप्त आकड़ों के आधार पर करता है। ये नियम पुनर्-परीक्षण की कसौटी पर समय समय पर उतारे जाने चाहिये। अतः ज्ञान अथवा वास्तविक शिक्षा प्राप्त करने के लिये एक व्यवस्थित

करने के लिये उपयुक्त स्थल मानने को तैयार नहीं है। इसके समर्थक प्रकृति की गोद का ही इस प्रक्रिया के लिए सर्वोत्तम और एक मात्र स्थान मानते हैं। महर्षि रवीन्द्र द्वारा विकसित 'शक्ति-निकेतन' में 'विश्व भारती' जो कि आज 'विश्व के सभी शिक्षकों, दार्शनिकों और विद्यार्थियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है, इसी विचार॰ धारा का व्यावहारिक रूप है।

२. बालक को प्रकृति की गोद में अपनी प्रकृति (Nature),-मूल प्रवृत्तियों (Instincts), प्रवृत्तियों (Tendencies), क्षमताओं (Capacities) के अनुसार प्रकृति के नियमों की जानकारी की पूर्ण स्वतन्त्रता दी जानी चाहिये। इन्हीं के प्रयोग से उसका सीखना और जीवन की पूर्णता (Perfection) सम्भव है। यही कारण है कि प्रकृतिवाद विचारक बाल केन्द्रित शिक्षा (Child Centered Education) के समर्थक हैं। रास (Ross) के अनुसार; प्रकृतिवादी शिक्षा के चित्र में बालक का प्रमुख स्थान है, विद्यालय, शिक्षक पाठ्य वस्तु का नहीं (It is child himself rather than the education, the school, the book or the subject of study that is in the fore ground of the educational picture ...)"।

विद्यालय आवश्यक है। इसमें समुचित रूप से प्रयोग (Experiment) करने के लिये आवश्यक सज्जा से पूर्ण (Fully equipped) प्रयोगशाला (Laboratory) होनी चाहिये। प्रकृति इस प्रकार के औपचारिक ज्ञान के लिये प्रेरक एवं पूरक, सहायक बन सकती है।

२. सत्य देश, काल, परिस्थिति पर निर्भर करता है। यह मानवीय कारक (Human factor) पर सबसे अधिक निर्भर करता है। मानव एक व्यक्ति के रूप में नहीं अपितु एक समूह में इसे प्रभावित करती है। स्पष्ट है कि समाज की आवश्यकता, विचारधारा, परम्पराओं एवं मूल्यों से अनुकूल ही 'सत्य' को यह रूप देता है। अतः समाजोपयोगी ही सत्य और वास्तविक है। इसीलिए प्रयोजनवाद समाज-केन्द्रित (Society-Centened) शिक्षा पर विशेष बल देता है। बूबेकर के शब्दों में "प्रयोजनवाद सामाजिक मूल्यों को सर्वाधिक महत्व देता है। समाज सम्मिलित अनुभवों का एक स्वरूप है सामाजिक कार्यों में भाग लेना एक ऐसा महत्वपूर्ण पक्ष है, जिसमें शिक्षा विकसित होती है (The *Pragmatists* rate the social value very highly society is a mode

of shared experience. Participation in society is one of the most important ways in which education takes place)"

१. प्रकृतिवाद द्वारा दी गई शिक्षण विधियां-निरीक्षण (observation), डाल्टन पद्धति (Dalten mothod) मोन्टेसरी (Montessori Method) तथा खेल-पद्धति (Play-way method) हैं। स्पष्ट है कि ये आत्मानुभव (Self experience) और निरीक्षण (obsevation) के सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

१. प्रयोजनवाद द्वारा दी गई विधियों में प्रयोगशाला विधि (Laboratory Method), योजना विधि, तथा वादविवाद (Discussion) प्रमुख हैं। ये विधियां सीखने निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

(अ) उद्देश्यपूर्ण क्रिया के सिद्धान्त (Learning as a purposeful activity)।

(ब) अनुभव एवं करके सीखने का सिद्धान्त (Principle of learning by doing or experience)।

(स) सीखने की प्रक्रिया के एकीकरण का सिद्धान्त (Principle of integration of the process of learning.)"

२. सत्य का ज्ञान देने के लिए आवश्यक साधन (The gate ways to knowledge)

प्रकृतिवादी शिक्षा शास्त्री मानवीय इन्द्रियों को ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन मानते हैं। रूसो के कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है, "शिक्षा में इन्द्रियों के उचित अभ्यास और प्रयोग से ज्ञान के लिये मार्ग प्रशस्त करना चाहिये (Education should prepare

प्रयोजनवादी इन्द्रियों को सूचना प्राप्त करने का साधन (Means for collecting informations) मानते हैं। इन प्रदत्त सूचनाओं को मानसिक क्रियायें-चिन्तन, तर्क, अध्ययन, विचार-विनिमय कल्पना, निर्णय आदि के द्वारा एकीकृत अर्थपूर्ण उपलब्धि (Meaningful

proper exercise of the senses.)।'

उदाहरण

इसीलिए प्रकृतिवादी अपनी शिक्षा-व्यवस्था में उन विषयों जैसे शारीरिक, शिक्षा (Physical education), शरीर विज्ञान (Physiology) गृह विज्ञान (Domestic science). नृत्य, कला, संगीत (Dance, Music and Art), शिशु-पालन (Child up bringing), भोजन (Food), मानव जीवन (Human life) भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, को विशेष महत्व देते हैं। जिनसे इन्द्रियों की पूर्णता प्राप्त होने की अपेक्षा की जाती है। इसके द्वारा प्रतिपादित उपरोक्त विधियां भी इस सिद्धान्त के अनुकूल हैं।

करती हैं।

इस विचारधारा ने जहां इन्द्रियों की सुग्राह्यता को ज्ञान प्राप्ति के लिये महत्व दिया, मानसिक क्रियाओं को विशेष स्थान दिया है। इसीलिए इस वर्ग के विद्वान गणित, विज्ञान, सामाजिक, विज्ञान, शारीरिक शिक्षा जैसे विषयों को पढ़ाने पर बल देता है। इसके द्वारा दी गई शिक्षण विधियां भी इस सिद्धान्त के ही अनुरूप हैं।

· ज्ञान की सार्थकता (Meaningfulness of the knowldge)

१. वही ज्ञान सार्थक है जो विद्यार्थी को प्राकृतिक नियमों की जानकारी देता है।

२. जो व्यक्ति को अपने अस्तित्व के लिये संघर्ष (Struggle for existence) तथा जीवित रहने के लिये उपयुक्त (Befitting to survive) बनाता है।

३. जो बालक की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं (Needs and desires) के अनुकूल हो।

उदाहरण

इन कार्यों के लिये दिये गये विषय विद्यार्थी को प्रशिक्षण का अवसर प्रदान करते हैं।

१. सामाजिक तथा तात्कालिक परिस्थितियों के अनुकूल हो।

२. समाजोपयोगी हो। सामाजिक जीवन की उन्नति एवं विकास में सहायक हो।

३. बालक की शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक हो।

४. बालक की रुचि (Interest), योग्यता (Ability) के अनुकूल हो।

हम देखते है कि उपयुक्त विषय समाजोपयोगी एवं उसकी सांस्कृतिक उन्नति के लिये उत्तम प्रयास है।

४. जीवन में अनुशासन (Discipline in life)

प्रकृतिवाद अनुशासन में भी प्राकृतिक परिणामों (Natural Consequences) को ही महत्व देता है इसमें किसी भी प्रकार की दण्ड-व्यवस्था नहीं है।

इस दर्शन के अनुसार व्यक्ति में सामाजिक गुणों का ही विकास अनुशासनात्मक जीवन का अभ्यास है। यह आत्मानुशासन (Self discipline) पर बल देता है। इसमें आवश्यक सामाजिक दण्ड का प्रावधान है किन्तु यह भी आत्म-स्वीकार्य (Self- imposed) है।

५. अध्यापक का स्थान (Place of a teacher)

अध्यापक का स्थान गौण है। वह एक निरीक्षक होता है। बच्चे के सीखने के लिये पर्दे के पीछे परिस्थितियों का निर्माण करना इसका एकमात्र मूल कर्तव्य है।

अध्यापक एक सामाजिक मार्ग दर्शक के रूप में बालक की शिक्षा-व्यवस्था में प्रमुख भूमिका निभाता है। वह उन समस्याओं एवं परि-स्थितियों का निर्माण करता है जिनसे बालक में सामाजिक रुचियों, आदतों एवं दृष्टिकोणों का विकास होता है।

६. जीवन में आदत का महत्व

'आदत' के निर्माण का कट्टर विरोधी।

प्रयोजनवाद इस बात का पक्ष-पाती है कि बच्चों में सामाजिक आदतों का निर्माण किया जाय।

शिक्षा में व्यावहारिक प्रवृत्तियां

(Tendencies In Educational practices)

व्यावहारिक रूप में शिक्षा को प्रभावित करने वाली प्रमुख प्रवृत्तियां निम्न-लिखित हैं;

१. मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति (Psychological Tendency)
२. वैज्ञानिक प्रवृत्ति (Scientific Tendency)
३. सामाजिक प्रवृत्ति (Socialogical Tendency)
४. नास्त्यात्मक प्रवृत्ति (Tendecny of Negativism)
५. आस्त्यात्मक प्रवृत्ति (Tendency of positivism)

जहाँ तक प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद का प्रश्न है, मनोवैज्ञानिक को बढ़ावा देने में दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। वैज्ञानिक और

सामाजिक प्रवृत्तियों को ओर प्रयोजनवाद का झुकावा विशेष है जबकि इन विचारों में प्रत्यक्ष रूप से प्रकृतिवाद तटस्थ सा दीखता है। किन्तु, यह बात केवल सिद्धान्त तक ही है। व्यवहार में इस विचारधारा का इनसे स्पष्ट सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है। मास्त्यात्मक प्रवृति का जहां प्रकृतिवाद कट्टर समर्थक है वह प्रयोजनवाद समर्थित और प्रतिपादित मास्त्यात्मक प्रवृति का कटु आलोचक भी है।

१. मनोवैज्ञानिक प्रवृति—'प्रकृति' का अर्थ जितना 'नियति' से है उतना ही बालक को प्रकृति से भी लिया जाना चाहिये। इसके अन्तर्गत उसकी मूल प्रवृत्तियां (Instincts) आवश्यकतायें (Needs), इच्छायें (Desires), रुचियां (Interests), *भावनायें (Feelings) सभी का समावेश है। इन्हीं के अनुकूल विद्यार्थी के लिये* शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये। इन पर आयु-स्तर का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। इसी लिये प्रकृतिवादी शिक्षा-शास्त्रियों ने विभिन्न अवस्थाओं-शैशव (Infancy) बाल्य (Childhood), किशोर (Adolescent) के सन्दर्भ में इनके अनुरूप शिक्षा योजनाओं को प्रस्तावित एवं क्रियान्वित किया है। अध्यापक को शिक्षा में गौण स्थान देते हुये भी रूसो (Rouseaue) महोदय उससे यह चाहते हैं कि बालक रूपी पुस्तक को एकाग्रता से आद्यन्त पढ़े (The child is a book which the teacher has to learn from page to Page)।

जब हम प्रयोजनवाद की ओर देखते हैं तो पता चलता है कि वह डीवी (Dewey) महोदय के अनुसार शिक्षा को द्वि-ध्रुवीय (Bipolar) प्रक्रिया मानता है। इसके ध्रुवों में बालक का प्रमुख स्थान है, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उसके लिये ऐसी शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये जो कि उसकी आवश्यकताओं, प्रवृत्तियों, रूझान, शक्तियों एवं अभिरुचि के अनुरूप है। अतः विद्यार्थियों की इन मानसिक शक्तियों और क्रियाओं को समझना किसी भी शैक्षिक प्रयास का प्रथम और प्रमुख कार्य है। इसके बिना बालक-बालिकाओं के लिये लाभदायक शिक्षा की व्यवस्था सम्भव नहीं है।

अतः इन दोनों ही दार्शनिक विचारधाराओं ने विद्यार्थी को शैक्षिक प्रक्रिया में प्रमुख स्थान देकर इस क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक प्रवृति को बढ़ावा देकर शिक्षा मनोविज्ञान (Educational *Psychology) को उत्पत्ति और निरन्तर तीव्र विकास में* योगदान किया।

२. वैज्ञानिक प्रवृति—रूसो ने विषय वस्तु के रूप में प्रकृति के नियमों की जानकारी को ही चुना। वह प्रकृति की छिपी हुई और गुप्त शक्तियों एवं तत्सम्बन्धी नियमों की जानकारी को ही *वास्तविक ज्ञान के लिये विद्यार्थी का सहज बनाना* है। यही विचारधारा शिक्षा क्षेत्र मे ही नहीं अपितु जीवन में वैज्ञानिक प्रवृत्ति को इस रूप में उभारने का श्रेय प्राप्त करने की भागीदार है। प्रकृति की गुप्त निधि को ढूंढने के प्रयासों से ही आज की वैज्ञानिक, औद्योगिक एवं तकनीकी उन्नति सम्भव हो सकी।

प्रयोजनवाद ने तो सोचने की क्रिया को ही वैज्ञानिक बना डाला। उसकी उत्पत्ति स्वयं इस प्रवृत्ति की देन है। उन्नीसवीं सदी तथा उसके बाद जो वैज्ञानिक प्रगति हुई उसका दायित्व इसी विचारधारा के मजबूत कन्धों पर है। इसकी आत्मा वैज्ञानिक अभिवृत्ति (Scientific attitude) में वास करती है। इसके सभी सिद्धांतों और विधियों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति प्रतिबिम्बित होती है।

३. सामाजिक प्रवृत्ति—इस दिशा में प्रकृतिवाद उदासीन दिखायी देता है। वह बालक को समाज से दूर प्रकृति की गोद में शिक्षा देने का पक्षपाती है। उसे शहर का जीवन पसन्द नहीं है, रूसो तो यहां तक कहते हैं, "शहर मानव जाति की कब्र है (Cities are the graves of human species)।" किन्तु जहां यह विचारधारा किसी जाति (Specy) की 'जीवन के लिये संघर्ष' की बात कहती है, समाज स्वयमेव सामने आ जाता है। यहाँ प्रत्यक्ष में नहीं तो परोक्ष रूप में अवश्य ही सामाजिक वांछाओं का पोषण होता है।

इसके विपरीत जब हम प्रयोजनवाद की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं तो ऐसा लगता है मानो इसका जन्म ही सामाजिक अर्थों के पोषण के लिये हुआ हो। प्रयोजनवादी शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया (Social Process) के ही रूप में मान्यता देते हैं। यह बात डीवी महोदय के कथनों से अधिक स्पष्ट हो जाती है।

"शिक्षा अनुभवों का अनुवरत पुनर्निर्माण एवं पुनर्गठन है (Education is the process involving continuous reconstruction and reorganization of experiences)".

"शारीरिक जीवन में जो महत्व प्रजनन और भोजन का है वही सामाजिक जीवन में शिक्षा का है, (What nutrition and reproduction are to the physiological life, education is to the social life.)" "समस्त शिक्षा किसी जाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से प्रारम्भ होती है, (All education proceeds by the participation of the individual in the social consciousness of the race.)।"

४. नास्त्यात्मक प्रवृत्ति—रूसो का नास्त्यात्मक शिक्षा से तात्पर्य उसके पहलू से है जो कि हृदय को पाप और मन को भ्रम से बचाता है। प्रकृतिवादियों की मान्यता है कि बच्चे को 'बड़ों' के आदर्श सिखाना बहुत बड़ी भूल है। वे बच्चे को बच्चे के रूप में न कि बूढ़े के रूप में देखना चाहते हैं। रूसो आस्त्यात्मक (Positive) शिक्षा उसे कहते हैं जो बच्चे को मानवीय आदर्श सिखाये। उसके हृदय में पुण्य एवं मस्तिष्क में विवेक का संचार करने का प्रयास करती है। वे इस प्रवृत्ति के विरोधी हैं। शैशव और बाल्यावस्था को वे बालक की मानसिक-विश्राम की अवस्था मानते हैं। इनमें बालक विवेक ग्रहण नहीं कर सकता। उसे तो केवल इन्द्रियों के कौशलों में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

१. नास्त्यात्मक प्रवृति प्रयोजनवाद ने इसी प्रवृति का पोषण किया, उसे अपनाया तथा अपने व्यवहारों में उसे स्थान दिया। वह प्रारम्भ से ही बालक के लिये सामाजिक वातावरण, आदर्शं एवं आदतों का चयन करता है। नास्त्यात्मक प्रवृति को वह प्रगति में अवरोधक (Resistant) के रूप के देखता है। उसकी नास्त्यात्मक प्रवृति से ही प्रगतिशील शिक्षा (Progressive education) का जन्म हुआ। जो कि शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की प्रवृति (Tendency of change), प्रजातन्त्र (Democracy) एव विस्तारवाद (Expansionism) को पनपाने के लिये प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

प्रश्न १—

"Our secondary school curriculum does not meet fully the present day needs of our society," Offer your comments on this statement with a reference to the curriculum adopted in the secondary and higher secondary schools of Rajasthan and also suggest the modifications you would like to make in the current curriculum.

हमारे विद्यालयों का पाठ्यक्रम हमारे समाज की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ण रूप से पूर्ति नहीं करता है।" इस कथन पर अपने विचार राजस्थान के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम के प्रसंग में प्रकट कीजिये तथा यह भी लिखिये कि आप वर्तमान पाठ्यक्रम में क्या क्या परिवर्तन करना पसंद करेंगे?

उत्तर—

भारत में ही नहीं, विश्व के सभी देशों में शिक्षण संस्थाओं का पाठ्यक्रम आलोचनाओं का लक्ष्य बना हुआ है। इसका सभी शिक्षा विदों को अनुभव है, शिक्षा आयोग ने इस स्थिति के लिये निम्नलिखित घटकों (Factors) को उत्तरदायी ठहराया है,

१. आधुनिकाल में मानव के ज्ञान में अपूर्व विस्तार।

२. सामाजिक (Social), शारीय (Biological), भौतिक (Physical) विज्ञानों (Sciences) की आधारभूत (Basic) अवधारणाओं (Concepts) में परिवर्तन (Reformation)।

३. वर्तमान विद्यालय-व्यवस्था की अनुपयुक्तता।

४. स्कूलीय तथा विश्व-विद्यालीय शिक्षा के बीच बढ़ती हुई खाई।

५. माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों की प्रकृति (Nature) एवं अवधि (Period) में परिवर्तन का पुर्नविचार। सामान्य शिक्षा की अवधि एवं क्षेत्र (Period of field) विशिष्ट योग्यता के विषयों में (Subject of specialization) के मूल्य पर बढ़ाना।

६. विद्यालयों के पाठ्यक्रमों का बोझीला स्वरूप इसी सन्दर्भ में माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondary Education Commission) द्वारा प्रस्तु प्रतिवेदन प्रचलित पाठ्यक्रम के दोषों का संक्षिप्त विवरण देना प्रस्तुत प्रश्न में अधिक उपयुक्त होगा।

१. वर्तमान पाठ्यक्रम बड़ी ही संकुचित मनोवृत्ति का है।
२. वह पुस्तकीय एवं सैद्धान्तिक ज्ञान पर अधिक बल देता है।
३. इसमें असमन्वित एवं साधारण सामग्री का समावेश है।
४. इसमें क्रियात्मक एवं अन्य कार्यों के लिये अपर्याप्त स्थान रखा गया है।
५. यह बालकों की भिन्न आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुसार नहीं है।
६. परीक्षाओं को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया गया है।

७. देश की आर्थिक दशा को सुधारने में सहायक तकनीकी एवं वैज्ञानिक और औद्योगिक विषयों पर आवश्यकता से कम ध्यान देना।

दशांश शताब्दी से भी लम्बी अवधि समाप्त हो गयी। उपरोक्त आलोचना के बिन्दु आज भी उतने ही सत्य हैं, जितने कि प्रतिवेदन के प्रस्तुतीकरण के समय। इस अवधि में जो कुछ भी कार्य किया गया उससे आलोचना के बिन्दुओं की पुष्टि ही हुई। राजस्थान के शिक्षा-क्षेत्र में जो भी कार्य पाठ्यक्रम के क्षेत्र में किये गये उनके प्रयास सराहनीय हैं। किन्तु, जब हम व्यावहारिक पक्ष का सिंहावलोकन करते हैं तो स्थिति अधिक गम्भीर दिखाई देती है। इसका वर्णन करने से पूर्व हमारे लिये उन आधारभूत तथ्यों का उल्लेख करना आवश्यक होगा, जो कि शिक्षा प्रक्रिया के अंग हैं। इस विषय में शिक्षा आयोग ने सुन्दर, तथ्य संक्षिप्त तथा स्पष्ट ढंग से शिक्षा को तीन परतीय (Thrre Folded) प्रक्रिया (Process) के रूप में स्वीकार किया। इसमें निम्नलिखित तीन प्रमुख कार्य हैं।

१—ज्ञान देना (Imparting knowledge)
२—कौशल का विकास (Development of skill)
३—रुझानों, अभिवृत्तियों और मूल्यों को विकसित करना (Inculcation of interests)

इन कार्यों के सन्दर्भ में वर्तमान पाठ्यक्रम की निम्नलिखित कमियों को आयोग ने स्पष्ट रूप से प्रतिवेदन में लिखा है;

(१) हमारे विद्यालय इस प्रक्रिया के प्रथम भाग 'ज्ञान देना' तक ही सीमित हैं।

(२) ज्ञान देने का कार्य भी सन्तोषप्रद नहीं है।
(३) पाठ्यक्रम में पुस्तकीय ज्ञान पर बल दिया गया है।
(४) यह रटने की शिक्षा (Rote learning) को प्रोत्साहन देता है।

(५) व्यावहारिक क्रियाओं और अनुभवों का अनुपयुक्त प्रावधान।

(६) पाठ्यक्रम परीक्षा-केन्द्रित है

"Our schools (and also colleges) are mostly concerned with he first part of the process – the imparting of knowledge—and arry out even this in an unsatisfactory way. The curriculum laces a premium on bookish knowledge and rote learning, akes *inadequate* provision for practical activitities and experiences, and is dominated by *examinations – external or internal.*"

उपयोगी कौशलों और उचित रुझानों एवं अभिवृत्तियों और मूल्यों में आवश्यक प्रशिक्षण के अभाव के कारण पाठ्यक्रम में निम्नलिखित अतिरिक्त एवं और दोष दृष्टिगोचर होते हैं:

(१) आधुनिक ज्ञान के क्षेत्र से बाहर;

(२) देशवासियों की जीवन-व्यवस्था से भिन्न

"Moreover as the development of usefull skills and the ulcation of the right kind of interests, attitudes and values not given sufficient emphasis, the curriculum becomes not y out of step with modern knowledge, but also out of tune h the life of the people. There is thus urgent need to raise, rade and improve the school curriculum."

राजस्थान में सामाजिक आवश्यकताओं के सन्दर्भ में विवेचना करने तथा प्रयुक्त पाठ्यक्रम से उसके सम्बन्ध की विशिष्ट विवेचना से हमें उपरोक्त बातों सत्यता का पता लग सकेगा।

यह राज्य स्वतन्त्र भारत की देन है। इसको कई रियासतों के भारत में विलीनीकरण (Succession) के बाद राज्य पुनर्गठन आयोग (States Reorganisation Committee) ने देश के इस भाग की कई रियासतों का एकीकरण कर भारत में एक नये राज्य का निर्माण किया। सदियों से भिन्न राज्यों के शासन में रहते हुए यहां के लोगों की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक और यहां तक कि राजनैतिक विचारों में भिन्नता का होना अनिवार्य ही है। साथ ही इस विशाल राज्य में प्राकृतिक भिन्नतायें भी कम नहीं है। भौगोलिक दृष्टि से इसकी स्थिति का सही पता लग जाता है। विलीनीकरण के समय प्रत्येक रियासत की अपनी शिक्षा-व्यवस्था एवं पाठ्यक्रम थे किन्तु उसके तुरन्त बाद सारी शिक्षा राज्य के शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत आ गयी। इस प्रकार का अन्तर स्वाभाविक था। राज्य के प्रत्येक भाग के लिए यह शिक्षा-व्यवस्था नवीन थी। सत्य तो यह है यह किसी की सामाजिक, ऐतिहासिक एवं अन्य आवश्यकताओं के अनुरूप भी न थी। इसे तो किसी ने योजना-बद्ध किया और फिर सरकार द्वारा प्रेम आदि

कर दिया गया। शिक्षा जैसी सामाजिक प्रक्रिया का इस प्रकार थोपा जाना सरासर औचित्यपूर्ण नहीं है।

इसके बाद जो भी परिवर्तन इस शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम के अनुसार आये सर्व विदित हैं। किन्तु सुधार आधार-भूत सिद्धान्तों में नहीं हुये। प्रारम्भ में माध्यमिक शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन के अनुसार बहुउद्देशीय विद्यालयों की स्थापना की गयी। किन्तु यह योजना भी सफल नहीं हुई मूल रूप में इसलिये कि वह हमारी सामाजिक आवश्यकताओं, मूल्यों एवं सीमाओं के अनुकूल न थी।

हम देखते हैं कि राजस्थान की शिक्षा नीति मे गतिशीलता (Dynamis
है। किन्तु इसका आधार स्थानीय कारक नही हैं। इसने पाठ्यपुस्तकों, मूल्यां
वर्कशाप एवं सेमिनारों के आयोजन आदि की दिशा में काफी कार्य करने का
प्राप्त कर लिया। किन्तु, व्यवहार में यह सब सैद्धान्तिक आकर्षण के विन
ही है।

पाठ्यक्रम जो कि सम्पूर्ण विद्यालीय जीवन ही नहीं अपितु विद्यार्थी अध्ययन काल की स्वयं में एक जीवनी है, हमारे राज्य में निम्नलिखित दोषों से यु
क्त नहीं है।

(१) जो भी परिवर्तन पाठ्यक्रम में हुये, वे उपयुक्त अनुसन्धानों (Rese
arches) पर आधारित नहीं है।

(२) उन्हें विद्यालय की सीमाओं के सन्दर्भ में नहीं किया गया।

(३) नवीन सुधारों को कभी भी सामाजिक आवश्यकताओं एवं स्थानीय उपलब्धियों के सन्दर्भ में आवश्यकतानुकूल मोड़ने के लिये लोच (Flexibility) का प्रावधान नहीं दिया गया।

(४) अध्यापकों को उचित दिशा देने के लिये प्रशिक्षण नहीं दिया गया।

(५) उच्चशिक्षा से तथा उसकी आवश्यकताओं एवं व्यवस्थाओं से सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास नहीं किये गये।

(६) अध्यापकों तथा प्रधानाध्यापकों को पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में कोई स्वतन्त्रता नहीं है।

(७) पाठ्यक्रम निर्माण के लिए सामाजिक एवं स्थानीय व्यक्तियों को सम्मिलित नहीं किया जाता।

(८) स्थानीय उपलब्धियों (Local resources) एवं उद्योगों (Indus
tries) और अन्य व्यवसायों-कला, कुटीर उद्योग आदि का पाठ्यक्रम में समावेश के लिये किसी भी प्रकार की स्वतन्त्रता विद्यालय का नहीं दी गयी है।

(९) पाठ्यक्रम में उन प्रवृत्तियों का अभाव है जो विद्यालय को समुदाय जीवन से निकटतम सम्पर्क स्थापित करने के लिए प्रेरित करें।

(१०) इसमें केवल विद्यालय में किये जाने वाले कार्यों और क्रियाओं का ही उल्लेख है। समुदाय में विद्यार्थी के क्रिया-कलापों को कहीं भी किसी भी स्तर पर ध्यान में नहीं रखा गया है। इससे स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम विद्यार्थी के पूर्ण जीवन को स्पर्श नहीं करता।

सुझाव:-वर्तमान पाठ्यक्रम जो कि माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए निर्धारित किया गया है, निम्नलिखित बातो के समावेश से अधिक प्रभावोत्पादक बन सकेगा।

(१) *पाठ्यक्रम अनुसन्धानों के आधार पर* (Research based):—*सामुदायिक जीवन की शैक्षिक आवश्यकताओं और जीवन-मूल्यों के क्षेत्र में* आवश्यक अनुसन्धानों की प्रेरणा दी जाय। इससे प्राप्त तथ्यों के ही आधार पर विद्यालय के लिये पाठ्यक्रमों का निर्धारण किया जाय। यह बात भी ध्यान में रखी जाय कि अनुसन्धान कार्य निरन्तर चलता रहना चाहिये जिससे किसी भी प्रकार के परिवर्तन की घड़ी में पाठ्यक्रम को वांछित स्वरूप दिया जा सके।

(२) पाठ्यक्रमों का निर्माणः--सैद्धान्तिक दृष्टि से राजस्थान की यह व्यवस्था ठीक भले ही कही जा सके, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से इसमें कई अनियमितताएँ अपेक्षित हैं। दूसरी ओर किसी विषय में कुछ अवधि के लिए एक या दो विशिष्ट पुस्तकों को ही स्वीकार कर बोर्ड विद्यार्थी और अध्यापक दोनों के ही चुनावों की सीमा को बांध देती है। उन्हें ज्ञान के इस साधन मे उपयुक्त चयन सामग्री उपलब्ध नहीं होती।

(३) सेवा-काल में प्रशिक्षण (In service Trainining for Teachers) पाठ्यक्रम में समय समय पर होने वाले परिवर्तनों को विशिष्ट मांगों के अनुकूल अध्यापकों को निर्देशन करने के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये।

इसमे सन्देह नहीं कि हमारे शिक्षा-विभाग ने शिक्षण-विधियों एवं मूल्यांक (Evalvation) जैसे क्षेत्र में नवीन प्रणालियो मे कार्य करने के लिये पग उठाये हैं। किन्तु इनकी सफलता और प्रभावोत्पादकता अध्यापक पर ही निर्भर करती है। हम अभी तक अपने अध्यापक-वर्ग को इसके लिये तैयार नहीं कर सके। इकाई-योजना (Unit planing) एवं वस्तुगत परीक्षण (Objective tests) जैसे दृढ़ पग पाठ्यक्रम में सम्मलित करना विशिष्ट कौशल (Special skill) का अध्यापकों में विकास करने से पूर्व, तर्क संगत नहीं है। इन्हें क्रियान्वित करने से पूर्व अध्यापक को प्रशिक्षण देना चाहिये था।

(४) माध्यमिक शिक्षा-बोर्ड एवं शिक्षक-प्रशिक्षण विद्यालयों का सम्बन्ध (Coordination between the Secodary and Higher Secondary Beard and Teachers' Trainihg Colleges):—शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक छात्रों के लिये अध्यापक

करते हैं। बोर्ड इस स्तर के लिए पाठ्यक्रम में जो भी पुनर्गठन एवं परावर्तन करता है, उसकी सम्पूर्ण रूप से विवेचना विश्वविद्यालय के शिक्षा-विभाग (Faculty of Education) को भेज देनी चाहिये। यही नहीं वह अधिक उपयुक्त होगा कि वे दोनों विभाग अधिक से अधिक सहयोग और अन्तर्सम्बन्ध से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करें। ये दोनों विभाग एक दूसरे से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं। इन दोनों को यह अनुभूति हो जानी चाहिये। तथा अपने सहयोग। कार्य-रूप में परिणित करें।

(५) विषयाध्यापकों का संगठन (Subject Teacher's association)— र शिक्षा विभाग को चाहिये कि वह इस प्रकार के संगठनों का प्रावधान पाठ्यक्रम i करे, जिससे कि इसे अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की दिशा में कार्य किये ज सकें।

(६) कार्यानुभव का समावेश (Inclusion of work experience):— माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के लिये निर्मित पाठ्यक्रम में आवश्यक रूप से कार्यानुभव का प्रावधान होना चाहिये। इस विषय में शिक्षा आयोग ने भी विशेष बल दिया है। इससे शिक्षा को जन-जीवन के अनुरूप व्यवस्थित एवं संगठित होने के लिए आवश्यक अवसर प्राप्त होंगे। इसके लिए वांछित अवधि का निर्धारण कर दिया जाना चाहिये।

(७) समाज सेवा-कार्य (Social service):—समाज सेवा सम्बन्धी कार्य-क्रम विद्यालयों के पाठ्यक्रम में माध्यमिक स्तर से ही अनिवार्य क्रियान्वित कर दिया जाना चाहिये। इसके लिए भी शिक्षा आयोग ने भिन्न-भिन्न व्यवस्थायें प्रस्तावित की हैं।

(८) लचीलापन (Flexibility):—पाठ्यक्रम में अध्यापक एवं विद्यालय को स्वतन्त्रता हो कि वह स्थानीय आवश्यकताओं एवं उपलब्धियों का उसमें समावेश कर सके।

1965

Principles of Education

शिक्षा सिद्धान्त

प्रश्न १

What are the educational needs of our democratic pattern of society? Describe the role of education in developing democratic citizenship.

हमारी प्रजातान्त्रिक सामाजिक व्यवस्था की क्या शैक्षिक आवश्यकतायें हैं? प्रजातान्त्रिक नागरिकता के विकास में शिक्षा के कार्य की विवेचना कीजिये।

प्रजातान्त्रिक समाज की शैक्षिक आवश्यकतायें (Educational needs of democratic society):—*सत्य तो यह है कि शिक्षा प्रत्येक सामाजिक विचारधारा* से इतनी सम्बन्धित होती है कि उसकी शैक्षिक अथवा अन्य आवश्यकताओं को इस रूप में वर्गीकृत करना सम्भव नहीं। फिर जनतन्त्र तो स्वयं में एक जीवन व्यवस्था (Way to lead life) है। इसकी स्वयं की आवश्यकतायें, जो भी हों, व्यवहार में शैक्षिक ही हैं। शिक्षा स्वयं भी जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह विकास (Development) है, *जबकि जनतन्त्र विकास की एक विशिष्ट दिशा* (Specific direction) है। जिसे आज हमारे समाज ने वास्तविक रूप में मानवीय होने की बात स्वीकार की है। अतः शिक्षा प्रक्रिया में इन कार्यों और क्रियाओं को स्थान देना चाहिये जिससे व्यक्ति का विकास जनतन्त्र की दिशा में सरलता से हो सके। जनतन्त्रीय सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही शिक्षा का प्रमुख एवं एकमात्र कार्य है। इसके आदर्शों एवं *आधारभूत मान्यताओं और सिद्धान्तों* के अनुकूल व्यक्तित्व का विकास करना शिक्षा का पावन कर्तव्य है। जनतन्त्रीय जीवन व्यवस्था के प्रमुख आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

(१) *व्यक्तित्व का आदर* (Respect of the personality):—व्यक्ति समाज के लिए विश्व की सबसे बहुमूल्य निधि है। जीवन के प्रत्येक पहलू में उसे आदर दिया जाना चाहिये।

(२) *समान अवसरों की प्राप्ति* (Equality of opportunities):—व्यक्ति को अपने सामाजिक जीवन में व्यक्तिगत एवं सामाजिक (Individual as well as social) विकास के लिए समान अवसर दिये जाने चाहिये।

(३) *वैयक्तिक स्वतन्त्रता* (Individual freedom):—प्रत्येक व्यक्ति को धार्मिक

(Economic), राजनैतिक (Political), धार्मिक (Religious) अभिव्यक्ति (Expression) की स्वतन्त्रताएँ दी जानी चाहिये।

(४) मानवीय शक्ति पर विश्वास (Faith in human Capability)—व्यक्ति अपने लिये भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता रखता है, उन परिस्थितियों पर नियन्त्रण पाने की पूर्ण क्षमता है। एजुकेशन पॉलिसीज कमीशन यू० एस० (Education Policies Commission U.S.) का निम्नलिखित कथन इस पुष्टि करता है, "मनुष्य को दूसरे पर शासन ही नहीं करना चाहिये, अपितु वह स्व पर भी कर सकता है (It affirms not only that men should b[e] also that they can rule themselves)"

(५) समानाधिकार (Equal Rights):—पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु पर सब मनुष्यों का समानाधिकार है। किसी भी प्रकार के वर्ग-भेद से किसी को (स्वर) प्रदत्त साधनों से वंचित करना एक बहुत बड़ा पाप है। साम्प्रदायिक संकीर्णता कट्टरता, धार्मिक शोषण, जातीयता, पक्षपात एवं भाई भतीजावाद (Nepotism) का जनतन्त्र में कोई स्थान नहीं है।

(६) अहिंसा एवं शान्ति में विश्वास (Faith in Non-Violence and Peace):—जनतन्त्र संघर्ष एवं हिंसा की विधियों का कट्टर विरोधी है। यह सभी प्रकार के सामाजिक तनावों (Social tensions) को शान्तिपूर्ण वार्ता एवं विधियों से समाप्त करने का पक्षपाती है।

(७) विश्व-बन्धुत्व की भावना (Universal Brotherhood):—इस सिद्धान्त एवं आदर्श से जनतन्त्र मानवीय उत्थान की दिशा में प्रगति-पथ पर निरन्तर और अविरल बढ़ना चाहता है।

(८) राजनैतिक चेतना (Political Conciousness):--जनतान्त्रिक व्यवस्था अपनी प्रगति के लिये नागरिकों में राजनैतिक चेतना का पक्षपाती है।

(९) मताधिकार (Right to Vote):--व्यक्ति को चुनाव के लिए अधिक से अधिक इकाइयाँ परिस्थिति-विशेष में मिलनी चाहिये। जिससे वह अपनी शक्ति एव सामर्थ्य और विचार-दर्शन के अनुकूल उपयुक्त चुनाव करने का अवसर प्राप्त कर सके।

(१० स्वतन्त्रता-अनुशासन (Freedom and Discipline):--जनतन्त्र एक स्वतन्त्र तथा विनयशील (Disciplined) नागरिक की कल्पना करता है। इसका विनय सत्ता की शक्ति (Power of authority) से नहीं अपितु स्वच्छन्द वातावरण में आत्मानुभूति (Self realization) से प्रस्फुटित होता है। यह स्वानुशासन (Self-discipline) का ही इच्छुक है।

१२. सह-अस्तित्व (Co-existence) :—जनतन्त्र भिन्न रीति रिवाजों, आचारों, धर्मों, संगठनों, भाषाओं, संस्कृतियों, मूल्यों एवं आदर्शों के सह-अस्तित्व पर

करता है। वह इनकी भिन्नताओं में एकता (Unity in diversity) का रूप साकार करना चाहता है।

11. स्वावलम्बन (Self-sufficient) :—जनतान्त्रिक नागरिक सहकारिता एवं सहयोग के सिद्धान्त पर प्रत्येक नागरिक को आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी देखना चाहता है।

उपरोक्त बिन्दुगत विवरण से हमें जनतान्त्रिक व्यक्ति के गुणों का आभास हुआ। इनका विकास शिक्षा के ही द्वारा सम्भव है। जनतन्त्र की सफलता उसके नागरिकों में विकसित गुणों, आदर्शों एवं मान्यताओं में विश्वास की दृढ़ता पर निर्भर करती है। (अशिक्षित जनतन्त्र सबसे अधिक त्याज्य व्यवस्था है An unenlightened democracy is the worst form of government.) जनतन्त्र को जीवन शिक्षा प्रदान करती है। शिक्षा के ही द्वारा नागरिकों को ज्ञान, गुण, कौशल, आदतों, अभिवृत्तियों तथा मनोवृत्तियों में प्रशिक्षण दिया जाता है।

एक कुशल, योग्य एवं प्रभावोत्पादक नागरिक जनतन्त्र की मूलभूत प्रथम और प्रमुख आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में केवल सैद्धान्तिक विषय-ज्ञान की व्यवस्था मात्र कर देना ही शिक्षा का एक मात्र कर्तव्य नहीं है। विद्यार्थियों को उन अनुभवों एवं क्रियाओं में भाग लेने के अवसर प्रदान करना शिक्षा का अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य है। जिससे वह अपने भावी सामाजिक जीवन में क्रियाशील भाग लेकर समाज-कल्याण की दिशा में रचनात्मक कार्य कर सके। माध्यमिक शिक्षा आयोग (Education commission) ने ठीक ही कहा है, "वह शिक्षा इस नाम की संज्ञा की सर्वथा अनाधिकारिणी है जो जीवन के लिये आवश्यक गुणों, सामञ्जस्य, आत्मभिमान, क्षमता का विकास समाज के सन्दर्भ में न कर सके। इस कार्य के लिये आवश्यक गुणों में अनुशासन, सहयोग, सामाजिक चेतना, सहिष्णुता का विकास प्रमुख है (No education worth the name which does not include the qualities, necessary for living graciously, harmoniously and efficiently with one's fellow man. Among the qualities which should be cultivated for this purpose are discipline, co-operation, *social sensitiveness* and tolerance.)"

व्यक्ति को ज्ञान "ज्ञान के लिये (For knowledge sake)" नहीं बल्कि सामाजिक उपयोगिता के लिये दिया जाना चाहिये। व्यक्ति इसके आधार पर सामाजिक संस्कृति का पुनर्गठन, परिमार्जन एवं परिवर्द्धन कर सकने के लिए आवश्यक सामर्थ्य प्राप्त कर सके। ज्ञान का उपयोग करने की क्षमता के प्रशिक्षण की व्यवस्था शिक्षा में अपेक्षित है।

जे॰ डब्ल्यू॰ एच॰ हेदरिंगटन (J. W. H. Hetherington) के अनुसार; "जनतन्त्रीय शासन-व्यवस्था की परमावश्यकता शिक्षित जनता है (Democratic

government demands educated people) इससे हमें इस बात की ओर संकेत मिलता है कि जनतन्त्र में भावी नागरिक के ही लिये सुचारु शिक्षा आवश्यक नहीं बल्कि वर्तमान नागरिक के लिये भी इसकी आवश्यकता समान रूप महत्वपूर्ण है। प्रो मुखर्जी के शब्दों में, "जहाँ भावी जीवन के लिये बच्चों की शि आवश्यक है, वर्तमान अस्तित्व के लिये प्रौढ़-शिक्षा जनतन्त्र में अनिवार्य आवश्यक है (If the education of the children is important for the futu welfare of the state, education of adult is necessary for the ver existence of democracy.) । इसी प्रकार डा० हुमायूं कबीर का विचार है "यदि जनतन्त्र वास्तविक रूप में प्रभावशाली होना चाहता है तो प्रत्येक व्यक्ति के अपने पूर्ण विकास के आश्वासन के लिये अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था अपेक्षित है (If democracy is to be really effective and guarante to all individuals the right to develop to the fullest extent edu cation has to be universal and free.)" ।

अधिक विवेचना के लिये प्रश्न ५ (१९६७) प्रश्न ६ (१९६६)।

प्रश्न २.

"By Education I mean an all round drawing of the best in the child and man-body, mind and spirit' —Gandhiji. Explain this statement bringing out the basic concepts and principles of Basic Education.

"शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा में उपस्थित उत्कृष्ट को ही बाह्य रूप प्रदान करना है"—गांधी जी। बुनियादी शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्तों और अवधारणाओं के सन्दर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिये।

उत्तर :—

शिक्षा का अर्थ
(Meaning of Education)

गांधी जी के शिक्षा दर्शन में उनका जीवन-दर्शन प्रतिबिम्बित होता है। सत्य (Truth) अहिंसा (Non-violence) निर्भयता (Fearlessness) सत्याग्रह, शारीरिक-परिश्रम (Physical work), समानता (Equality), स्वदेश प्रेम (Love for the country), अस्पृश्यता (Untouchability), उनके जीवन-सिद्धान्त थे। इन्हीं को व्यावहारिक बनाकर गांधी जी ने भारत में राम-राज्य का स्वप्न देखा। अपने इस जीवन-दर्शन को भारत के पुनर्निर्माण तथा विकास के लिये आधारभूत सिद्धान्त बनाने की दिशा में इसे "बुनियादी शिक्षा (Basic Education) का स्वरूप प्रदान किया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यही तत्व भारतीय संस्कृति की आधारशिला के रूप में अनवरत इसे अक्षुण्ण बनाये हुये हैं।

गांधीजी ने शिक्षा को कभी भी संकुचित अर्थों में स्वीकार नहीं किया। यही गांधीजी इसे दैविक चमत्कार के रूप में मान्यता देते हैं। वे शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करते हैं। जिसमे प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से भाग लेने का पूर्ण अधिकार है किन्तु इस प्रकार के कार्य में उसका सहयोग उसके स्वयं के बहुमुखी विकास में फलित होता है तथा उसे इस योग्य बनाता है कि उसके विकास को उत्तेजना एवं उसके व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करने वाला समाज स्वयं भी उसकी सृजन एवं निर्माण की योग्यताओं से लाभान्वित होकर अपनी सांस्कृतिक अभिवृद्धि को उपलब्ध करता है।

गांधीजी शिक्षा को 'साक्षरता' से कहीं अधिक श्रेष्ठ मानते हैं। साक्षरता को तो वे शिक्षा प्राप्ति के एक माध्यम-मात्र के ही रूप में मान्यता देते हैं। 'साक्षरता' (Literacy) से वे नर-नारी की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था चाहते हैं. (Literacy is not the end of education nor ever the beginning. It is only one of the means whereby man and woman can be educated).

श्री महादेव देसाई ने गांधीजी को शिक्षा का अर्थ समझाने का प्रयास करते हुये कहा, "गांधीजी ने प्रायः यह बताया कि शिक्षा को बालक-बालिका के समस्त मानव गुणों का विकास करना चाहिये। वह शिक्षा ठीक नहीं कही जा सकती जो इसमे पूर्ण मानव के गुणों एवं उपयोगी नागरिक की क्षमताओं का विकास नहीं करती।" पूर्ण मनुष्य का तात्पर्य पूर्ण व्यक्तित्व से है। वे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के पक्षपाती हैं। अतः शिक्षा के द्वारा शरीर, मन और आत्मा तीनों के ही विकास में योगदान होना चाहिये। वे बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का शिक्षा के द्वारा विकास चाहते हैं। वे शिक्षा में बालक के अन्दर छिपी हुई पूर्णता को उभारने की शक्ति देखते हैं। गांधीजी प्रायः कहा करते थे, "वास्तविक शिक्षा वह है जो बालकों की शारीरिक, मानसिक, एवं आध्यात्मिक शक्तियों की अभिव्यक्ति की दशा में कार्य करती है।"

बुनियादी शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त (Principles of Basic Education) :—(१) शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है।

(२) यह एक सामाजिक कार्य है, जिसके माध्यम से उत्पादी और प्रभावोत्पादक नागरिकों का निर्माण होता है।

(३) इसके द्वारा बालक-बालिकाओं की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है।

(४) 'साक्षरता' स्वयं शिक्षा नहीं, किन्तु शिक्षा प्राप्त करने के लिये एक

आवश्यकता मात्र है। शिक्षा तो व्यक्ति को उत्कृष्टता (Best) प्रदान करती है जो कि सत्य (Truth) में निहित है।

(५) ७ वर्ष से १४ वर्ष के बच्चों के लिये निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिये तथा इसका माध्यम 'मातृभाषा' को ही रखा जाए।

(६) शिक्षा हस्तकला-केन्द्रित (Craft Centered) होनी चाहिये। के माध्यम से अन्य सामाजिक एवं वैयक्तिक उपयोगिता के विषयों को पढ़ाना अ लाभप्रद एवं आसान है।

(७) हस्तकला विद्यालय तथा विद्यार्थी दोनों को आत्म-निर्भरता (Se sufficiency) के लिये निर्देशित करती है।

(८) 'हस्तकला' बालक तथा समुदाय की आवश्यकताओं एवं उस उपलब्धियों के अनुकूल चुना जाय।

(९) इससे शिक्षा का सम्बन्ध वास्तविक जीवन से सम्भव हो सकेगा।

(१०) शिक्षा सामाजिक वातावरण में अहिंसा के सिद्धान्त पर दी जानी चाहिए।

(११) विद्यालय को अक्रियाशील (Passive) बालक-बालिका को सूचनायें एवं निर्देश (Informations and instruction) नहीं देने हैं। बल्कि विद्यार्थियों की क्रियाशीलता (Activity) को उत्तेजित करते हुये प्रयोग (Experiments) तथा अनुसन्धान (Researches) करने हैं।

(१२) शिक्षा बालक का सामाजीकरण करती है एवं उसकी सामाजिक क्षमता (Social Efficiency) की अभिवृद्धि करती है।

(१३) बालक को उत्पादन (Production) एवं शारीरिक-श्रम की प्रेरणा के लिये शिक्षा में आवश्यक रूप से प्रभावोत्पादक प्रावधान होना चाहिये।

(१४) हस्तकला से बनी हुयी चीजें 'राज्य' को खरीदनी चाहिये।

(१५) इसे बढ़ती हुयी बेरोजगारी की समस्या के कम होने में सहायता मिलनी चाहिये।

(१६) आध्यात्मिक विकास के लिये पाठ्यक्रम में धार्मिक एवं नैतिक (Religious and moral) शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिये।

(१७) १०वीं कक्षा से बाहरी देशों से सम्बन्ध रखने के माध्यम के रूप में अंग्रेजी की शिक्षा देनी चाहिये।

(१८) वास्तविक शिक्षा-क्रिया प्रधान है।

इस संदर्भ में शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, अध्यापक, शिक्षण-विधियों एवं अनुशासन की अवधारणाओं को स्पष्ट करना अधिक उपयुक्त है।

उद्देश्य (Aims)

(१) जीविकोपार्जन का उद्देश्य (Bread and Butter Aim):- शिक्षा

को व्यक्तिगत मानता है। इनका निर्धारण व्यक्ति स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर करता है। चूंकि अनुभव देश (Place) काल (Time), परिस्थिति (circumstances) से प्रभावित होते हैं। अतः लक्ष्य सामान्य, स्थिर, एवं शाश्वत किसी भी सीमा तक नहीं हो सकते। वह व्यक्ति को आवश्यकताओं की पूर्ति को दृष्टिगत करते हुए प्रकृतिवाद की ही भांति कभी भी बाहरी नियन्त्रण (Authority) और विधियों को स्वीकार नहीं करता। वह शिक्षक के मार्ग दर्शन के कार्य को मान्यता अवश्य देता है, किन्तु यह मार्ग दर्शन निश्चित मूल्यों की सम्प्राप्ति तथा निर्दिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में कदापि नहीं होना चाहिये। यह तो व्यक्ति की तत्कालीन वातावरण सम्बन्धी इच्छाओं की पूर्ति के लिये उसकी शक्तियों, रुचियों, को दिशा देने के हेतु है।

प्रयोजनवादी दार्शनिक शिक्षा के माध्यम से, एक ऐसे गतिशील तथा अनुकूलित मस्तिष्क की रचना चाहता है जो प्रत्येक परिस्थिति में साधनों का पहलू के साथ निर्माण कर सके। तथा जो अज्ञात भविष्य में मूल्यों के प्रतिपादन में समर्थ हो सके। (The cultivation of a dynamic, adoptable mind which will be resourceful and enterprising in all situations the mind will have powers to create values in an unknown future)"

यह वह मस्तिष्क है जो सामाजिक पुनर्रचना में सहकारी हो सके। जिससे कि सामाजिक माध्यम से सहयोगिता के सिद्धांत पर मानवीय पिपासाओं की तुष्टि हो सके।

आधुनिक मानवीय संस्कृति पर औद्योगिक एवं तकनीकी क्रान्ति और वैज्ञानिक अभिवृत्ति के बढ़ते हुये प्रभावों के फलस्वरूप हमारी जीवन-व्यवस्था में जो महान् क्रान्तिकारी परिवर्तन आया, वह 'जनयुग' के रूप में हमारे सम्मुख है। हम जानते हैं कि वैज्ञानिक क्रान्ति से हमारे सामाजिक मूल्यों में बड़ी तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। यदि हम ऐसी स्थिति में शिक्षा का कार्य इन परिवर्तनों के साथ-साथ व्यक्ति में उन शक्तियों को भरना है जो उसे नवीन परिवर्तित नवीन परिस्थितियों में समायोजित करने में सफल हो सकें। विज्ञान की प्रगति शून्य में नहीं होती। उसकी अपनी आधार शिला पूर्वानुभवों के रूप में है। ये वैज्ञानिक अनुभव मानव समाज द्वारा वैज्ञानिक सिद्धान्तों, विधियों, प्रयोगों के रूप में हैं। एक वैज्ञानिक विकास और प्रगति के इन्हीं अनुभवों पर कार्य करता है। वह इनका रूप भेदन और परावर्तन, पुनर्गठन और पुनर्रचना कर नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप इन्हें ढालता है। यही बात अन्य सांस्कृतिक अनुभव के साथ भी समान रूप से सत्य है। शिक्षा वे प्रयास हैं जो व्यक्ति को यह सब कर सकने में सामर्थ्य प्रदान करने की *दिशा में आवश्यक अवसरों एवं परिस्थितियों को प्रस्तुत करते हैं।* इसी क्रिया के परिवर्तन और फलस्वरूप विकास सम्भव है।

अनुभवों का नवीनकरण परीक्षण की कसौटी के लिये सदा तत्पर रहता है। इस प्रकार उपयोगिता और फलस्वरूप सत्यता की कसौटी पर सही उतरने के बाद इसे वर्तमान के लिये उपयोगी समझा जाता है। किन्तु अज्ञात भविष्य के लिये इसे हमेशा परीक्षण, पुनंरचना, पुनंगठन के लिये तैयार रखते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा स्वयं एक अविरल अनुभवों के पुनंगठन एवं उनकी पुनंरचना की प्रक्रिया है (Eduction as the processs in volving continuous reconstruction and reorganization of experiences.)

प्रजातान्त्रिक जीवन-व्यवस्था मे भी ठीक उपरोक्त सिद्धान्त लाभप्रद है। यह तभी सम्भव है यदि शिक्षा व्यक्ति में गतिशील चिन्तन, तथ्यों को समझने की क्षमता, सामाजिक त्रुटियों को समझ सकने की योग्यता, वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में अपने पूर्वानुभावों को अनुकूलित कर सकने का कौशल एवं निर्भयता पूर्वक न्यायोचित निर्णय लेने की क्षमता का विकास कर सकने में समर्थ है। इसके लिये ऐसे व्यक्ति का निर्माण अत्यन्त आवश्यक हो जो विचारों में प्रगतिशील हो। तथा सामाजिक परिस्थितियों में समानता, स्वतन्त्रता, स्वावलम्बन, स्वाभिमान, सहानुभूति सहयोगिता, सहिष्णुता के सिद्धान्तों पर जीवन-यापन कर सके। डीवी महोदय के अनुसार "विद्यालय मे बालकों को ऐसी स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये जिससे वे आरम्भिक क्रिया के गुणों, आत्म-निर्भरता तथा योजना-कौशल का विकास प्रजातन्त्र के अवगुणों एवं असफलताओं के विनाश से पहले ही कर लें (Children in school must be allowed freedom ... ...to develop a active qualities of initiative independence and resourcefulness before the abuses and failures of democracy will dissappear.)।"

प्रश्न।—

Explain clearly how changes in the aims and objectives of education have resulted in bringing about changes in the concept and nature of secondary school curriculum, with special reference to your state. Illustrate your answer by giving concrete examples.

यह बताइये कि शिक्षा के उद्देश्य और लक्ष्य किस प्रकार माध्यमिक विद्यालयों की प्रकृति एवं अवधारणा को प्रभावित करते हैं। यह अपने राज्य के सन्दर्भ में विशिष्ट उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये।

उत्तर —

शिक्षा-प्रक्रिया में पाठ्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। यही शिक्षा को आकारिक रूप प्रदान करता है। शिक्षा के सम्पूर्ण कार्यक्रम की रूपरेखा इसी में प्रतिबिम्बित होती है। मुदेलियर कहते हैं, "यह (पाठ्यक्रम) कलाकार (अध्यापक) के

हाथ में एक यंत्र है, जिससे वह अपने कला गृह में विचार (उद्देश्य) के अनुसार वस्तु (शिष्य) को ढालता है (It is thus the tool in the hands of the artist (the teacher) to mould his matereal (the pupil) according to his ideal (objectives) in his studio (school) I" इससे स्पष्ट हो जाता है कि पाठ्यक्रम पर ही सम्पूर्ण शिक्षा निर्भर करती है। किन्तु इसका लक्ष्य एक विशिष्ट कृति का निर्माण है। इस कृति की प्रकृति निर्धारित करने वाला प्रमुख और एक मात्र कारक अध्यापक का विचार का निर्माण करने वाली शक्ति शिक्षा के उद्देश्य है। इस तथ्य का स्पष्टीकरण हम शिक्षा के उद्देश्यों के निर्देशक तत्वों की दिशा तथा राजस्थान के माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में तत्सम्बन्धी परिवर्तनों के सन्दर्भ में करेंगे।

संक्षेप और स्पष्ट रूप में हम शिक्षा के उद्देश्यों के निर्देशक तत्वों को निम्नलिखित दो वर्गों में बांटते हैं:

१— आदर्शवादी विचारधारा (Idealistic point of view)

२— यथार्थवादी विचारधारा (Realistic point of view)

(१) आदर्शवादी विचार:—यह विचारधारा शाश्वत मूल्यों और निश्चित आदर्शों पर विश्वास करती है। यह सत्यं, सुन्दरं, शिवं की प्राप्ति के लिए शिक्षा को एक प्रमुख माध्यम के रूप में स्वीकार करती है। यह विचारधारा सदैव मानवीय गुणों, (Human virtues), चरित्र (Character), नैतिकता (Morality), सांस्कृतिक अभिरुचि और सुरक्षा के विकास पर जोर देती है। इससे व्यक्ति परम सत्य (Absolute Truth) को प्राप्त कर सकने में समर्थ हो जाता है। इस प्रकार की भावना का बाहुल्य प्राचीन भारत में था। किन्तु यह हर काल में किसी न किसी रूप में शिक्षा के उद्देश्यों को प्रभावित करती रही है। इसके लिये भिन्न-भिन्न कालों में माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में न्यूनाधिक प्रावधान औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से अवश्य रहा है। राजस्थान जो कि स्वतन्त्रता के पूर्व भिन्न-भिन्न देशी रियासतों के रूप में था, भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा-व्यवस्थाओं को प्रस्तुत करता है। किन्तु इस विचारधारा से धार्मिक अथवा नैतिक रूप में प्रत्येक शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होती रही। विद्यालयों में ईश प्रार्थना, नैतिक निर्देशन इसी के परिचायक हैं। ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित विद्यालयों में तो नित्य प्रति विद्यालय-चक्र में ईसा के उपदेशों से सम्बन्धित ज्ञान के लिए नियत अति विशिष्ट कालांश की व्यवस्था होती थी।

स्वतन्त्रता के बाद हमारी अपनी देशी रियासतों का एकीकरण हुआ और वर्तमान राजस्थान का स्वरूप हमारे सामने आया। भारतीय संविधान ने इस देश को धर्म निरपेक्ष होने की घोषणा की। इस नाते इसके विद्यालयों में किसी

विशेष की प्रार्थना एवं उनके मूल्यों में शिक्षा नहीं देते। किन्तु आदर्शवाद की परम शक्ति के प्रभाव से ही सर्वमान्य ईश-प्रार्थना, नैतिक सम्भाषणों एवं पाठ्यपुस्त सभी धर्मों और सम्प्रदायों के महान् पुरुषों की जीवनियों और उनकी शिक्षा समावेश का प्रावधान अपने वर्तमान पाठ्यक्रम में देखते हैं।

(२) यथार्थवादी विचारधारा:—इस विचारधारा के अनुसार आदर्श मूल्य स्थिर एवं शाश्वत नहीं हैं। इन पर काल, देश और परिस्थिति का प्र पड़ता है। इनके द्वारा परिवर्तित निम्नलिखित सामाजिक स्थितियां (Circt stacnes) एवं परिस्थितियां (Conditions) शिक्षा के उद्देश्यों को प्रभावित क है। फलस्वरूप पाठ्यक्रम की प्रकृति एवं स्वरूप (Nature and concept curriculum) में परिवर्तन हो जाता है।

१— जीवन-दर्शन (Philosophy of life)

२— राजनैतिक विचार-धारायें (Political ideology)

३— सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां (Social and Econom Conditions)

४— तकनीकी एवं औद्योगिक प्रगति (Technological and Industria Progress)

(१) जीवन-दर्शन (Philosophy of life):— राज्य में प्रचलित जीवन दर्शन शिक्षा के उद्देश्यों को बहुत प्रभावित करता है। राजस्थान की भिन्न-भिन्न देशी रियासतों में भी शेष भारत की भांति अंग्रेजों के जीवन-दर्शन का प्रभाव थे। उसी के अनुकूल उन्होंने भारतीय जनता के लिए शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी नियम बनाये। अंग्रेज स्वयं शासक बनकर भारतीयों पर शासन करने के लिये अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे। उन्हें केवल शासन व्यवस्था में अपना निम्न स्तर का काम करने के लिये भारतीय सेवकों की आवश्यकता थी। इसलिये भारत में विद्यालयों को क्लर्क उत्पादन करने वाले औद्योगिक केन्द्र का रूप दिया गया। केवल भाषा के लिखने, पढ़ने का सामर्थ्य एवं गणित के ज्ञान पर विशेष जोर दिया जाता था। भाषाओं में भी पाठ्यक्रम में तथा व्यावहारिक जीवन में अंग्रेजी को बहुत महत्व प्राप्त थे। इस प्रकार अंग्रेजों ने माध्यमिक शालाओं में अंग्रेजी के अध्ययन तथा गणित के ज्ञान पर जोर देकर पाठ्यक्रम में इन्हीं विषयों पर जोर दिया। इनके समय में शिक्षण विधियां भी 'रटने' तथा परीक्षा पास करने की दृष्टि से ही उपयुक्त थी। मूल्यांकन क्षेत्र में भी अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्ति को ही महत्व प्रदान किया गया था। राजस्थान में कोई परीक्षा बोर्ड न था। इसके सभी विद्यालय 'उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्ड' से सम्बन्धित थे।

स्वतन्त्रता के बाद माध्यमिक शिक्षा पूर्णरूप से राज्य सरकारों के आधीन । राजस्थान ने अपनी स्वतन्त्र-शिक्षा नीति अपने जीवन दर्शन के अनुकूल

समाप्ति के बाद बालक के सामने रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या उसकी सामाजिक अभिव्यक्ति एवं कुशलता में बाधक न बन सके, इस उद्देश्य की पूर्ति के ही लिये शिक्षा को प्रमुख रूप से प्रयास करने चाहिये। ये मनुष्य की आधारभूत आवश्यकतायें हैं। शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उत्तमता के लिये इनकी पूर्ति अनिवार्य है। इसके बिना मानवीय विकास सम्भव नहीं है। गांधीजी के अनुसार, "शिक्षा को बेरोजगारी के विरुद्ध भावी नागरिकों-देश के बालक-बालिकाओं की सुरक्षा करनी चाहिये। १४ वर्ष की आयु में ७ वर्ष की शिक्षा-अवधि समाप्त होने पर विद्यालय से एक विद्यार्थी को कुशल उत्पादक के रूप में बाहर आना चाहिए (*Education ought to be for children a kind of insurance against unemployment. The child at the age of fourteen, that is, after finishing a seven year course should be discharged as an earning unit.*)

(२) व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास (Harmoneous development of Personality) :-- व्यक्तित्व का वास्तविक विकास इसी बात पर निर्भर करता है कि इसके सभी पहलुओं में सन्तुलित विकास हो। बालक के शरीर, मन और आत्मा तीनों पूर्ण रूप से सम्बन्धित (Coordinated) हों। इसी पर शैक्षिक अर्थ निर्भर करता है, "शरीर मस्तिष्क, आत्मा इन तीनों का उचित सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण सम्पूर्ण व्यक्ति की रचना करता है, यही तथ्य शिक्षा को व्यवहारिक मितव्यता भी प्रदान करता है (A proper and harmonious combination of all three body, mind and spirit is required for making the whole man and constitutes the true economics of education". गांधीजी की यह धारणा थी कि आध्यात्मिक विकास के लिये मन का प्रशिक्षण आवश्यक है। किन्तु यह तब तक सम्भव नहीं है, जब तक कि शारीरिक प्रशिक्षण न दिया जाय। इस प्रकार व्यक्तित्व के इन तीनों पहलुओं का 'हस्तकला' के माध्यम से विकास शिक्षा में मितव्यता का अनूठा उदाहरण है। डा. पटेल का इस सम्बन्ध में निम्नलिखित विचार आवश्यक है:

"..........उनका विश्वास था कि जब तक शरीर और मन का विकास साथ-साथ नहीं होता है तथा आत्मा की जागृति नहीं होती, शिक्षा एकाकी है। पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिये इन तीनों का उचित एवं सामंजस्यपूर्ण सम्बन्धित विकास आवश्यक है (Unless the development of body and mind goes hand in hand, Gandhiji believes with a corresponding awakening of the soul, the former alone would prove to be a lopsided affair. A proper and harmonious combination of all the three is required for the making of the whole man."

(३) नैतिक एवं चारित्रिक उद्देश्य (Moral and Character Aim of Education) :--प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री हरबर्ट (Harbert) महोदय का कथन, "शिक्षा की समस्त समस्या एक शब्द 'नैतिकता' में लाई जा सकती है (The whole problem of education may be conspired in a single concept morality)", गांधीजी के निम्नलिखित कथन से कितनी साम्यता रखती है, स्पष्ट हो जाता है: "चरित्र निर्माण के लिये मैंने सदा प्रथम स्थान हृदय की संस्कृति को दिया है (I have always given the first place to the culture of the heart and the building of character)".

(४) सांस्कृतिक उद्देश्य
(५) नागरिकता
(६) आत्मानुभूति का उद्देश्य

} प्रश्न १. १९६६ ।

पाठ्य-क्रम

गांधीजी का पाठ्य-क्रम तो 'हस्तकला-केन्द्रिय' है ही। इसमें निम्नलिखित को सम्मिलित करने के लिये उनके प्रस्ताव सर्वविदित हैं:

(१) आधारभूत केन्द्रित हस्तकला—१-कृषि (Agriculture), २-धातु कला (Metal craft), ३-काष्ट कला (Wood craft), ४-कागज एवं पुस्तक उद्योग (Book craft), ५-कताई-बुनाई (Spinning and weaving), ६-चर्म कला (Leather craft).

(२) मातृभाषा (Mother tongue)

(३) गणित (Mathematics)

(४) सामाजिक विषय-इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र (History, Geography & Civics)

(५) स्वास्थ्य विज्ञान (Hygiene)

(६) सामान्य विज्ञान (General Science), भौतिक शास्त्र (Physics), रसायन शास्त्र (Chemistry), जीव विज्ञान (Biology) शरीर विज्ञान (Physiology), नक्षत्र विज्ञान (Astronomy), प्राकृतिक अध्ययन (Nature study).

(७) कला (Drawing)

(८) संगीत (Music)

शिक्षण-पद्धति

गांधीजी का विश्वास था कि सच्ची शिक्षा शारीरिक अंगों—हाथ पांव, आंखें, कान के समुचित अभ्यास और प्रशिक्षण से ही प्राप्त की जा सकती है ("I hold that true education of the intellect can only come through a proper exercise and training of the bodily organs—hands, feet, eyes etc. In other words an intelligent use of the

odily organs in a child provides the best and the quickest way f developing of intellect)." इसी आधारभूत सिद्धान्त पर गांधीजी शिक्षण विधियों का आयोजन चाहते थे। डा० जाकिर हुसैन समिति के अनुसार गांधीजी शिक्षण पद्धति में सहयोगी क्रिया (*Cooperative activity*), पहल (Initiative), व्यक्तिगत दायित्व, (Individual responsibility) पर बल देते हैं, उनकी शिक्षा पद्धतियां निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

(१) शारीरिक अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग करके सीखना (Learning by rational use of bodily organs).

(२) अनुभव द्वारा सीखना (Learning by experience).

(३) क्रिया द्वारा सीखना (Learning by doing).

(४) सह-सम्बन्ध का सिद्धान्त (Principle of correlation).

(५) वाचन, विचार और कार्य के द्वारा सीखना (Learning by reading, thinking, and *action*).

शिक्षक (Teacher)—गांधीजी का शिक्षक आदर्शवादी शिक्षक से समानता रखता है। वह विद्वान, आकर्षक, व्यक्तित्व एवं उच्च चरित्र का होना चाहिए। उसे विद्यार्थियों और माता-पिता तथा अभिभावकों का विश्वास पात्र बनना चाहिये। वह एक पथ-प्रदर्शक (Guide) का काम करता है। अध्यापक समुचित रूप से प्रशिक्षित होना चाहिये।

अनुशासन (Discipline)—अनुशासन के विषय में गांधीजी 'आत्मानुशासन' (Self discipline) के समर्थक रहे हैं। वे इसीलिये सत्याग्रह को अधिक महत्व देते थे। उनके अनुशासन की कृति 'सच्चा सत्याग्रही' बन सकता है।

सामाजिक वातावरण में उपयुक्त व्यक्ति का निर्माण उनकी शिक्षा व्यवस्था का एकमात्र लक्ष्य है। जो समाज का एक प्रभावोत्पादक नागरिक बनकर उसकी संस्कृति में रचनात्मक योगदान देने में पूर्ण रूप से समर्थ रहता है।

प्रश्न ३—

Dewey describes education as a process involving continuous reconstruction and reorganization of experiences. Discuss this with particular reference to pragmatism in education.

उत्तर—

डीवी शिक्षा-प्रक्रिया को अनुभवों के अविरत पुनर्गठन और उनकी पुनर्रचना की संज्ञा देते हैं। प्रयोगवाद के सन्दर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिये।

डीवी महोदय को प्रयोजनवादी शिक्षा-दर्शन का पिता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। विलियम जेम्स ने भी शिक्षा की इस विचारधारा के लिये बहुत कार्य

किये । उनके अनुसार शिक्षा-प्रयास 'ज्ञान को ज्ञान के लिये' कदापि नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे शिक्षा के सभी पहलुओं-शारीरिक, (Physical), मानसिक Intellectual), कलात्मक (Aesthetic), नैतिक (Moral), धार्मिक (Religious) को मान्यता प्रदान करते हैं; किन्तु इन्हें केवल उन क्रियाओं के ही रूप में देखते हैं जिनसे विद्यार्थी अपने लिये मूल्यों (Values) का निर्माण करते हैं। इन क्रियाओं को केवल इसी शर्त पर स्वीकार किया जाना चाहिये कि वे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति, एवं संतुष्टि के लिये उपयोगी हैं। वे शिक्षा को कभी भी 'दर्शन का गत्यात्मक पहलू (Dynamic phase of philosophy) नहीं मानते। इसके विपरीत वे सामान्य रूप में दर्शन को 'शिक्षा-सिद्धान्त' (Theory of education) होने की मान्यता देते हैं। उनके अनुसार 'दर्शन' शिक्षा प्रक्रिया से निर्मित होता है। शिक्षा ही नवीन मूल्यों (New values) का सृजन (Creation) करती है। रास (Ross) महोदय के अनुसार, "प्रयोजनवादी शिक्षा का सामान्य उद्देश्य मूल्यों की रचना करना है। शिक्षक का प्रमुख कर्तव्य ऐसी परिस्थितियों एवं अवसरों का निर्माण है, जिनमें विद्यार्थी अपने लिए नवीन मूल्यों का निर्माण कर सके (The most general aim of the pragmatist is first creation of new values. The main task of education is to put the educand into position to develop values for himself.

मूल्य (Values) शिक्षा-प्रयास अथवा उद्योग का उत्पादन (Product) है। यह प्रयास व्यक्ति के विकास का स्वरूप (Form) है। इसमें व्यक्तित्व का बहुमुखी—(शारीरिक, मानसिक आध्यात्मिक) विकास सम्मिलित है। विकास परिवर्तन (Change) से ही सम्भव है। अतः मानव-विकास अविरल-गति से होता है। शिक्षा का कार्य इस गति को उत्तेजित एवं वांछित दिशा देना है। इसका मूल्यांकन सामाजिक दृष्टि से ही हो सकता है। क्योंकि 'मूल्य' (Values) सदा समाज के ही सन्दर्भ में व्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण हैं। डीवी के अनुसार "विकास जीवन की विशेषता है। इसलिये शिक्षा विकास से तादात्म्य रखती है। विद्यालय में शिक्षा मूल्य उस प्रभावोत्पादकता से निर्धारित किया जा सकता जिससे वह निरन्तर अभिवृद्धि के लिये बालक में रुचि उत्पन्न करती है। तथा उसके लिये समुचित प्रविधि प्रदान करती है (Since growth is characteristic of life, education is all with growing; it has no end beyond itself. The criterion of value in school education is the extent in which it creates a desire for continued growth and supplies means for making the desire for effective in fact.)"

प्रयोजनवाद कभी भी शिक्षा को लक्ष्य-गान प्रक्रिया नहीं मानता। वह

बनाने का प्रयास किया। आज हम देखते हैं कि "राजस्थान उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड" के नेतृत्व में भारत के नवीन धर्म निरपेक्ष जनतन्त्र (Secular and democratic) के अनुसार हमारे पाठ्यक्रम में समय-समय पर विषय-वस्तु, शिक्षण-विधियों, मूल्यांकन आदि में आवश्यकतानुसार परिवर्तन और सुधार किये जा रहे हैं।

(२) राजनैतिक विचार-धारायें.— हमारी राजनैतिक विचारधारायें जीवन-दर्शन से (अथवा विपरीत), प्रभावित होती हैं। उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है। अधिक विस्तृत विवरण के लिए प्रश्न ४, १९६६ देखें।

(३) सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां (Social and Economic Conditions):—प्रश्न २, १९६६ देखें।

(४) तकनीकी एवं औद्योगिक प्रगति (Technological and Industrial Progress) :—वैज्ञानिक उन्नति के साथ-साथ हम देखते हैं कि हमारे पाठ्यक्रम में परिवर्तन होता जा रहा है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन के बाद हमने उसके अनुकूल अपने माध्यमिक शिक्षा के तत्कालीन पाठ्यक्रम में परिवर्तन किये। तथा विज्ञान और तकनीकी विषयों को सामान्य पाठ्यक्रम में अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया। साथ ही बहुउद्देशीय विद्यालयों तथा विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया।

अभी पिछले वर्षों में प्रकाशित शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में तकनीकी एवं औद्योगिक दृष्टि के साथ-साथ जो सिफारिशें माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम के विषय में की गयीं, उनपर हमारा शिक्षा विभाग गम्भीरता से चिन्तन कर रहा है।

५.

Discuss the details how the study of different school subjects and other activities can effectively be utilized for promoting international understanding. Illustrate your statements by giving concrete of examples

उत्तर—

विस्तार पूर्वक विवेचना कीजिये कि विद्यालय के भिन्न-भिन्न विषय और क्रियायें किस प्रकार प्रभावशाली ढंग से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में योग दे सकती हैं। अपने कथनों को विशिष्ट उदाहरणों से स्पष्ट कीजिये।

विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले भिन्न-भिन्न विषय और क्रियायें किन्हें हम 'अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना (International understanding) के विकास के लिये उपयोग कर सकते हैं, *निम्नलिखित बिन्दुओं पर हम कार्य करते हैं;*

१. स्वतन्त्र चिन्तन-शक्ति का विकास (*Power of independent thi*

king)—इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी किसी भी धूर्त प्रचार (Propaganda) से प्रभावित न हो सके। किसी भी कथन (statement) की वैधता (validity) को परखने की विद्यार्थी में शक्ति विकसित की जा सके। अपना निर्णय लेने के लिये तथा वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करने के लिये उसमें आवश्यक योग्यता हो।

२ अर्जित ज्ञान को प्रयोग करने की क्षमता (Development of the efficiency to use the acquired knowledge)—किसी विद्यार्थी में यह कौशल विकसित करना जिससे वह किसी देश मे काम आने वाले उपयोगी सिद्धांत को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय कल्याण के लिये प्रयोग कर सकने में समर्थ हो सके।

३. संकुचित राष्ट्रीयता से हटकर (Emancipation from narrow nationalism)—'मेरा देश भला या बुरा (My country right or wrong), की भावना से बढ़कर भयंकर बुराई आज के विश्व में कुछ भी नहीं है, अब सम्पूर्ण विश्व इस प्रकार अन्तर्सम्बन्धित है कि कोई भी राष्ट्र अकेले अपने अस्तित्व को नहीं रख सकता। आज संसार में 'विश्व-नागरिकता' की आवश्यकता 'राष्ट्रीय-नागरिकता' के समान महत्व रखती है, इसलिये वास्तविक अर्थों में राष्ट्रीयता की भावना ही अब उपयुक्त नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता को अन्तर्राष्ट्रीयता का स्थान लेना चाहिये, साथ ही हम लोगों को अपने आप को विश्व के एक सदस्य के रूप में स्वीकार करना चाहिये। हमें विश्व नागरिकता के कर्तव्यों को पूर्ण मानसिकता तथा भावात्मक रूप से पूरे करने चाहिये (There is no more dangerous maxim in the wrold of today them "My country, right or wrong." The whole world is now so intemately inter-connected that no nation can or dare to live alone and the development of a sense of world citizenship has become just important the national citizenship. In a very real sense, therefore, patrotism is not enough and it must be supplemented by a lively realization of that fact that we are all members of one world and must be prepared mentally and emotionally to discharge the responsibilities which such membership implies - Report of Secondary Education commission)" इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे लिये विश्व नागरिकता एक देश के नागरिक के रूप में अथवा 'मानव' के रूप में समान रूप से महत्वपूर्ण है।

— राष्ट्रों की पृथ्वी हुयी पारस्परिक निर्भरता का ज्ञान देना (Reali- inter-dependence of the different states on the earth)

४— बड़प्पन एवं तुच्छता की भावनाओं से मुक्ति प्रदान करना (Emancipation from the feeling of superiority and inferiority)

अन्तर्राष्ट्रीयता के लिए पाठ्यक्रम में विषय (Subjects to be included in the curriculum in order to develop international understanding)

१— साहित्य (Literature)—यदि मानवीय भावना पर बल दिया जाय और उपलब्ध साहित्य को ठीक प्रकार से प्रयोग किया जाय तो यह विषय विश्व के विभिन्न विचारों और रूचि वाले मनुष्यों को परस्पर मिलाने का कार्य सफलता से कर लेता है। संसार के महान् साहित्यों में मानव के अनुभवों का भण्डार भरा हुआ है। इनमें समस्त मानवीय क्रियाओं का सुन्दर विवरण होता है। साहित्य किसी व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र के दुःख-सुख, जय-पराजय, सफलता-असफलता, गुण-दोषों तथा मनोभावों और विचित्रताओं का प्रस्तुतीकरण जिस प्रकार वास्तविक रूप में प्रस्तुत करता है वह अपने में कोई सानी नहीं रखता। जीवन की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में नियति जिस प्रकार कोई भेद-भाव नहीं करती, साहित्य हमें भी ऐसा ही करने की प्रेरणा देता है।

साहित्य कोई भी हो, विश्व के प्रत्येक समाज के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। संस्कृत के महाकाव्य जैसे गीता, रामायण, वेद, हिन्दी में रामचरित मानस, पर्लबक की 'द गुड अर्थ', पास्टरनैक का डा० झिवागो, उमरखय्याम की मधुशाला, प्लाटो का रिपब्लिक, रूसो का इमिल, शेक्सपियर, मिल्टन की कृतियां विश्व के किस देश के लिये तथा किस समुदाय के लिये उपयोगी नहीं हैं? यही बात अन्य भारतीय साहित्यों तथा अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यों के लिए समान रूप से सत्य है।

विद्यार्थी इनके माध्यम से मानव को 'मानव' के रूप में देखता है। प्रकृति के वर्गहीन 'मनुष्य-समाज' की नियमावली से वह प्रेरित होकर, विश्व नागरिकता के आधार पर सभी को सहयोग, सहानुभूति देकर तथा प्राप्त कर प्रकृति की विषमताओं पर विजय प्राप्त करने के लिए समाज द्वारा किये गये प्रयासों में योगदान करता है।

२— कला (Art):—साहित्य की भांति कला भी मानव-समाज को अधिक निकट लाकर विश्व शान्ति में रचनात्मक योगदान करने वाला प्रभावशाली विषय है। कला की भाषा सार्वभौमिक है। इसे समझने के लिये किसी को दुभाषिये की आवश्यकता नहीं। इसको रूपान्तर से कोई प्रयोजन नहीं। इसके लिए समय और स्थान की दूरी कुछ भी नहीं। सदियों पुरानी कला-कृतियां तथा समुद्र पार की कृतियां इन दूरियों से किसी भी प्रकार प्रभावित नहीं होतीं। वे हर युग और हर स्थान पर समान प्रभावोत्पादकता से मनुष्य को कलात्मक सौन्दर्य की अनुभूति कराती हैं।

इस युग की नयी विश्व-पीढ़ी को कला के माध्यम से सन्निकट लाया जा सकता है। विभिन्न भाषा और संस्कृति होते हुये कला-प्रदर्शनी इन भिन्नताओं में मानवीय समानता को सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त करती है। 'शंकर्स वीकली' प्रतिवर्ष देहली में 'अन्तर्राष्ट्रीय बाल-कला प्रतियोगिता' का संगठन करता है। इसी प्रकार भारत सरकार तथा विश्व के अन्य देशों के द्वारा भी इसी प्रकार की प्रतियोगिताओं अथवा प्रदर्शनियों का आयोजन होता है। इनसे बच्चों को एक दूसरे की भावनाओं को समझने के अवसर प्राप्त होते हैं। कला द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के क्षेत्र में महान् कार्य किये जा रहे हैं। ऐड्विन ज़ीगफ़ील्ड (Edwin Ziegfeld) द्वारा कला के निम्नलिखित गुणों का उल्लेख किया गया है, जो कि उसको प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द्रता के लिए माध्यम बना सके हैं।

(अ) कला (Non-verbal) है। इसलिये अभिव्यक्ति के लिए भाषा की विकट समस्या इसके पथ पर बाधक नहीं है।

(ब) कला मुख्य रूप से भावनाओं (Feelings) एवं संवेगों (Emotions) का प्रकथन (Statement) है। इसका मूल मानवीय अनुभवों में व्याप्त है।

(स) कला मानवीय जीवन के हर क्षेत्र में प्रविष्ट है। यह किसी न किसी सीमा तक अवश्य ही मानव द्वारा निर्मित वस्तु-जगत में विद्यमान है।

(द) सभी कला-कृतियां स्पष्ट अभिव्यक्ति के स्वरूप हैं। इनका सृजन (Creation) हमें व्यक्ति तथा उसकी संस्कृति का ज्ञान देता है।

(य) यह व्यक्ति और सामाजिक संस्कृति का मूर्त-स्वरूप (Formative) है।

(र) ईमानदारी (Honesty) और प्रत्यक्षता (Directness) सभी स्तरों पर कला की अभिव्यक्ति के सर्वोत्तम गुण हैं। हम देखते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए इनका बहुत महत्व है।

३— इतिहास (History):—इतिहास पाठ्यक्रम में एक ऐसा विषय है जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की दिशा में विद्यार्थियों में उपयोगी विचारों (Opinions) अभिवृत्तियों, आदतों (Habits) चिन्तन की दिशाओं (Mode of thinking) का सृजन एवं विकास करने में रचनात्मक योग दे सकता है। प्रायः यह देखा गया है कि संकीर्ण राजनीतिक विचारों ने 'इतिहास' को संकीर्ण राष्ट्रीयता तथा आक्रामक (Aggressive) भावनाओं को भड़काने के लिये एक यन्त्र (Instrument) के रूप में प्रयोग किया। आज के युग की तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की यह मांग है कि इतिहास का पुनर्गठन किया जाय। राजनीतिक और संघर्षात्मक विवरण के स्थान पर इसे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति के रूप में प्रस्तुत किया जाय। क्यों न राष्ट्रों के पारस्परिक युद्धों तथा मानवीय संसार की कहानियों के स्थान पर हम अपने नौनिहालों को मानव की प्रकृति पर विजय तथा मानव समाज की प्रगति

की कहानियों से अवगत करावें। अच्छा है कि भौतिक तत्वों से प्रेरित युद्धों और सामरिक द्वन्द्व के स्थान पर हम विद्यालयों में नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत करें। इस विषय में अधोलिखित सुझाव उल्लेखनीय हैं।

(अ) इतिहास में वैज्ञानिक, (Scientific), औद्योगिक (Industrial), तकनीकी (Technical) खोजों (Discoveries) और अनुसन्धानों (Researches) का समावेश।

(ब) कला और हस्त कला के विकास की कहानियां।

(स) सांस्कृतिक तत्वों को मानवीय धरोहर के रूप में प्रस्तुत करना।

(द) नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विवरण।

(य) विश्व की महान् आत्माओं की जीवनियां।

(फ) इतिहास की रोमांचकारी घटनायें—दुनिया की खोज, भारत, नई दुनिया, ...ओं की यात्रायें, समुद्री यात्रायें, नभ पर विजय, ऐवरेस्ट विजय, पर्वतारोहण की ...नी इत्यादि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि इतिहास को समुचित रूप से पढ़ाया जाय ...उसकी विषय वस्तु का चयन न्यायोचित ढंग से किया तो यह अन्तर्राष्ट्रीय ...भावना के लिए मार्ग-प्रशस्त कर प्रभावशाली यन्त्र सिद्ध हो सकेगा।

४— भूगोल (Geography):—यह ऐसा विषय है, जो विद्यार्थियों को ...चिन्तन (Right thinking) की ओर प्रेरित करता है। इससे उन्हें विश्व के ...न-भिन्न भागों में रहने वाले मनुष्यों के उद्यम, रहन-सहन, भोजन, संस्कृति, ...साय; परम्परा इत्यादि की भिन्नता के भौगोलिक कारणों की जानकारी हो जाती ... विद्यालयों के 'भूगोल' विषय में मानवीय पक्ष (Human aspect) पर अधिक ... दिया जाना चाहिये। इससे विद्यार्थियों को मानवीय संस्कृति एवं मूल्यों पर ...व में किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, धरातल, वनस्पति, उद्यम ...दि की अन्योन्याश्रित तथ्यों एवं इनके प्रभाव स्पष्ट हो जाते हैं।

भूगोल के उचित शिक्षण से विद्यार्थियों को लोगों के कार्य व्यापारों, शारीरिक ...रूपों, नीतियों परम्पराओं आदि को भिन्नताओं के विषय में वैध भौगोलिक ...रणों में अन्तर्दृष्टि (Insight) के विषय में सहायता मिल सकेगी। साथ ही इससे ...है विश्व के भिन्न-भिन्न देशों की व्यापार, खाद्य वस्तुओं, औद्योगिक एवं तकनीकी ...करणों, कच्चे माल, औद्योगिक उत्पादन आदि की दृष्टि से पारस्परिक अन्त-...र्भरता को समझने की शक्ति में विकास सम्भव हो सकेगा।

भूगोल शिक्षण से विद्यार्थियों में अन्य देशों के लोगों के लिये मैत्री की भाव-...नायें अधिक तीव्र होंगी, यह स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए अनिवार्य रूप

से आवश्यक है। उन्हें इस बात का ज्ञान हो सकेगा कि उनके भोजन, वस्त्र, अन्य औद्योगिक उत्पादन एवं दैनिक जीवन की आवश्यक सामग्री के निर्माण में किस प्रकार कई देशों के कई लोग सहयोग एवं सहकारिता से कार्य करते हैं। इससे उन संकीर्ण राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिकता, जातीयता, भाषायी, क्षेत्रीय आदि तुच्छ भावनाएँ उदासीन हो जावेंगी।

५ – विज्ञान (Science):—यह बात स्पष्ट है कि विज्ञान विश्व के सभी देशों, समाजों एवं मनुष्यों को भौतिक साधनों जैसे हवाई जहाज (Aeroplane), रेडियो, टेलीविजन, टेलीग्राफी, टेलीफून आदि के आविष्कार से एक दूसरे के निकट ले आया है। अब हमें आध्यात्मिक रूप से भी उनकी पारस्परिक दूरी को विज्ञान शिक्षण की सहायता से कम करना है। इस दिशा से निम्नलिखित मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विज्ञान द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी से विद्यार्थियों में विश्व बन्धुत्व की भावना जागृत की जा सकती है।

(क) संचार साधनों का प्रसारण।

(ख) आवागमन के साधनों की प्रगति।

(ग) कृषि एवं खाद्य समस्या में वैज्ञानिक अन्वेषणों द्वारा की गयी क्रांति।

(घ) स्वास्थ्य के क्षेत्र में किये गये कार्य।

(ङ) चिकित्सा में विज्ञान द्वारा तपेदिक, कैन्सर जैसे रोगों के उपचार की क्षमता एवं दिल आदि शरीर अंगों के परिवर्तन तक की शल्य चिकित्सा, प्लास्टिक सर्जरी आदि के कौशलों का विवरण।

(च) औद्योगिक तथा अन्य क्षेत्रों में काम आने वाले उपकरण जो कि कार्य को अधिक सुगम और कम समय में पूर्ण कर सकते हैं।

६. गणित (Mathematics)—गणित नियम, सिद्धान्त, अवधारणाएँ, प्रतीक भाषा (Mathematical laws, theories, concepts, symbols, language) सभी सार्वभौमिक हैं। अपनी अभिव्यक्ति में इसे कला की भाँति भाषा की कठिनाई से अवरोधन नहीं मिलता, तथ्यों और सिद्धान्तों में यह विज्ञान का पूरक है। ज्ञान का कोई क्षेत्र नहीं जिसमें गणित को किसी न किसी रूप में न्यूनाधिक सीमा तक प्रयोग न किया जाता हो। यह युग तो वैज्ञानिक प्रगति की दृष्टि से 'गणित' का युग (Era of Mathematics) कहलाता है।

इसका मानवीय दृष्टिकोण से बहुत बड़ा महत्व है। इसके समुचित शिक्षण के माध्यम से हम विद्यार्थियों में अन्तर्राष्ट्रीयता (Internationalism) की भावना का विकास अधिक सरलता एवं प्रभावशाली ढंग से कर सकते हैं।

७. नागरिक शास्त्र (Civics)—प्रत्यक्ष रूप से विश्व नागरिकता में विद्यार्थियों को इस विषय के शिक्षण से सैद्धान्तिक प्रशिक्षण (Theoretical training)

सकता है। इससे उनमें मानवीय गुणों एवं मानव-संस्कृति के विकास के वाली शक्तियों का विकास सम्भव है।

. अर्थशास्त्र (Economics)—इसके सिद्धान्तों नियमों और अवधारणाओं सत्यता (universal truth) से छात्रों को परिचित करा कर अर्थ के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और पारस्परिक अन्योन्याश्रितता के ज्ञान से विद्यार्थियों राष्ट्रीय भावना को अधिक तीव्रता से विकसित किया जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं आर्थिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामा- ओं से भिन्न विश्व जन-समुदाय की समानता को हम उपरोक्त विषयों के विद्यार्थियों को स्पष्ट कर सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास के यम और प्रमुख दातें है।

विद्यालय में आयोजित क्रियायें

(Activities orgranized in the schools leading to the International understanding)

विद्यालय के पाठ्यक्रम में उपरोक्त विषयों के शिक्षण के अतिरिक्त निम्न- त क्रियाओं के आयोजनों का प्रावधान भी अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास में दान कर सकता है।

. अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों को मानना (Celebrations of the days sign- or international understanding)
. नाटक (Drama)
. वाद-विवाद (Debate)
. पत्र-मित्र की व्यवस्था (Arrangement for pen-friends in other s)।
. अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति से सम्बन्धित कार्यक्रम।
. फिल्म-प्रदर्शन (Film show)।
. संयुक्त राष्ट्र संघ की गतिविधियों का चित्रण।
. विदेशी दूतावासों से सम्पर्क।
. अध्यापकों का आदान-प्रदान (Exchange of Teachers)
10. अभिरुचि प्रोत्साहन (Inculcation of hobbies)

भिन्न-भिन्न देशों के टिकटों, सिक्कों आदि के संग्रह के लिये विद्यार्थियों को ना।

उपरोक्त कार्यक्रमों के सम्पादन एवं संचालन के लिये विद्यालय को शिक्षा सूचना केन्द्रों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों आदि साधनों की सहायता प्राप्त करने करने चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय सहयोगिता तथा सहकारिता को बढ़ावा देने ओं तथा फिल्मों का प्रदर्शन समय-समय पर होना चाहिये।

जो बातें विश्व-बन्धुत्व की भावना के विकास में बाधक हैं, उन्हें समाप्त करने के लिये उठाये जाने वाले यत्नों को लेकर वाद विवाद प्रतियोगिताओं का संगठन करना विद्यालय का परम् कर्तव्य है। सभी अन्तर्राष्ट्रीय दिवस जैसे, स्काउटस के, मानवीय अधिकार दिवस (Human right day), संयुक्त राष्ट्र दिवस (U.N. Day), रेडक्रास, दिवस को विधिवत मानने की प्रथा विद्यालयों के वर्ष के कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग बन जाना चाहिये।

विद्यार्थियों को पत्र मित्र बनने और बनाने की दिशा में व्यावहारिक उठाने के लिये प्रेरणा एवं सहायता देनी चाहिये।

अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं एवं संगठनों में होने वाली गतिविधियों को फिल्मों इसके लघु रूप का सम्पादन कर छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करने की व्यवस्था विद्यालय के कुशल एवं जानकार अध्यापकों के द्वारा होनी चाहिये। विदेशों से यात्रा पर आये हुये शिष्ट मण्डलों को विद्यालय में आमन्त्रित करने के अवसरों खोज में अध्यापकों एवं विद्यालय व्यवस्थापकों को हर समय रहना चाहिये। साथ विदेशी दूतावासों से भी सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाये रखने के लिये हमारे विद्यालयों सदा ही तत्पर रहना चाहिये।

यदि सम्भव हो तो राज्य के शिक्षा विभाग एवं भारत सरकार की सहायता और सहयोग से विद्यालय को अपने योग्य अध्यापकों को विदेशों में उच्च शिक्षा एवं अन्य अनुभवों के लिये भेजने को व्यवस्था करनी चाहिये।

अन्तर्राष्ट्रीय सदभावना के विकास की दिशा में प्रभावपूर्ण कार्य कर सकने के लिये अध्यापकों के लिये पाठ्यक्रम में समुचित प्रशिक्षण की व्यवस्था अपेक्षित हैं। क्योंकि अध्यापक ही इस कार्य के लिये परिस्थितियों एवं अवसरों का सम्पादन करने वाला व्यक्ति है। इस दिशा में उसे स्वयं सुयोग्य और कुशल बनाना विद्यालय का प्रथम कर्तव्य है।

प्रश्न ६—

Describe the various educational activities and studies you would like to organize in your school with a view to develop in children a better understandiug of your cultural heritage and a need for its orientation to meet the demands of our modern society.

उन विभिन्न शैक्षिक क्रियाओं और अध्ययनों का वर्णन करो, जिन्हें आप बच्चों में अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को ठीक प्रकार से समझाने के लिये विद्यालयों में संगठित करना पसन्द करेंगे। साथ ही आधुनिक समाज की मांगों के आधार पर इनके नवीनीकरण की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालिये।

शिक्षा सदा से ही संस्कृति से प्रभावित हुई और स्वयं भी संस्कृति शिक्षा से
स प्रभावित होती रही है। शिक्षा के सांस्कृतिक क्षेत्र में किये जाने वाले कार्यों
वेचना से पूर्व इसकी सीमाओं और क्षेत्र को समझ लेना अधिक लाभप्रद है।

ई० बी० टेलर के अनुसार; "संस्कृति एक जटिल पूर्ण है जिसमें ज्ञान,
र्म, कला, नैतिकता, कानून, रीति-रिवाज और अन्य सामर्थ्य तथा आदतें
लत हैं जिन्हें मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में अर्जित करता है (Culture
at complex whole which includes knowledge, belief, art,
als, laws, customs and many other capabilities and habits
ired by man as a member of the society.)।"

सदर्लैंड और वुड वर्ड (Sutherland & woodward)—"संस्कृति के
त वे सभी बातें आती हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती हैं। समु-
र संस्कृति उसकी सामाजिक परम्परा है। यह एक जटिल पूर्ण है इसमें ज्ञान,
स, कला, नैतिकता, कानून, भोजन और वस्त्र की तकनीकी और उपयोग तथा
-साधन शामिल हैं।"

गेलवुड—सांस्कृतिक-संचार एक सामाजिक कार्य है। इसका प्रसार भाषा
ध्यम से होता है। धीरे धीरे यह सामाजिक परम्परा का रूप धारण कर लेती
तः संस्कृति समूह में चिन्तन और क्रिया करने की वह आदत है, जिसे अन्य
ों के साथ अन्तःक्रिया (Interaction) करने पर सीखा जाता है अथवा प्राप्त
जाता है। इसमें मनुष्य की वे सभी प्रदत्त शक्तियां शामिल हैं जिनसे वह
तथा स्वयं अपने ऊपर नियन्त्रण रख सकता है। स्पष्ट रूप में इसके दो पहलू-
; भौतिक सभ्यता (Material civilization) द्वितीय; आध्यात्मिक सभ्यता
ritual civilization) हैं। प्रथम के अन्तर्गत उपकरण (Tools) यन्त्र
ichine), हथियार (weapon), उद्योग (Industry), तकनीकी (Techn-
gy), आवास-साधन (Shelter) आदि सम्मलित हैं। द्वितीय वर्ग में भाषा
nguage), साहित्य (Literture), कला (Art), नृत्य-संगीत (Music and
ce), नैतिकता (Moral), धर्म (Religion), कानून (Laws) और संस्कार
लित हैं।

उपरोक्त विवरण से हमें यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संस्कृति वह सामा-
निधि है, जिसे समाज पूर्व पीढ़ी से प्राप्त कर उसमें नवीन आवश्यकताओं और
स्थितियों के अनुकूल पुनर्गठन एवं परावर्तन कर भावी पीढ़ी को सौंपता है।
सम्पूर्ण कार्य समाज शिक्षा-प्रक्रिया के द्वारा करता है। इस दृष्टि से शिक्षा के
निर्लिखित तीन कार्य हैं।

१. परम्पराओं का समावेशन (Assimilation of Trades)।
२. नवीन सामाजिक प्रारूपों का विकास (Development of new social pattern)।

१. शिक्षा में रचनात्मक और सृजनात्मक कार्य (The creative an constructive role in education)।

२. परम्पराओं का अवशोषण—इस कार्य को सफलता पूर्वक पूरा करने लिये शिक्षा-व्यवस्था में समुचित रूप से प्रभावोत्पादकता होनी चाहिये। अब तो मा है कि यह कार्य भी दो प्रकार से पूरा होता है—

(अ) जैविक प्रक्रिया द्वारा (By the Biological process)

(ब) सामाजिक प्रक्रिया द्वारा (Social Process)

प्रथम प्रकार का सम्बन्ध वंश-परम्परा के आधार पर प्राप्त परम्पराओं से है। अतः इसका शिक्षा विधि से सम्बन्ध नहीं है। हाँ, दूसरी विधि विशुद्ध रूप में शिक्षा-प्रक्रिया है। इसमें औपचारिक (Fromal) एवं अनौपचारिक (Informal) सभी शिक्षा-साधनों के प्रयास सम्मिलित हैं। व्यक्ति विशेष की दृष्टि से सामाजिक प्रक्रिया द्वारा परम्पराओं का अवशोषण निम्नलिखित दो विधियों से होता है।

(i) अनुकरण (Imitation)

(ii) (Inculcation)

जब व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों में चेतन (conscious) अथवा अचेतन (Unconscious) स्थिति में अपना अनुकूलन (Adaptation) करता है तो यह अनुकरण कहलाती है। इसके विपरीत जब व्यक्ति सामाजिक दबावों (Social pressures), प्रचार (Propaganda), अन्य प्रकार के निर्देशों (Instructions) से अनुकूलन की क्षमता प्राप्त कर अपने आपको सामाजिक संगठन के अनुरूप (Inconformity to) बना लेता है तो परम्पराओं के अवशोषण की यह विधि (Inculcation) कहलाती है।

प्रभावशाली अवशोषण के लिये आवश्यक अध्ययन वस्तु
(Sadjects for effective assimilation)

(अ) भाषा— मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति (Verbal and non-verbal) अभिव्यक्ति के लिये सबसे सरल यन्त्र (Vehicle) भाषा ही है। उसकी जानकारी के बिना परम्पराओं को प्रभावशाली ढंग से नवीन पीढ़ी को हस्तानान्तरित करना आसान नहीं है। इसलिये विद्यालय के पाठ्यक्रम में प्रारम्भ से ही मातृभाषा का होना अनिवार्य है। भाषा-ज्ञान इसकी प्रथम और प्रमुख मांग (First and foremost demand) है।

(ब) साहित्य (Literature)—साहित्य सामाजिक संस्कृति का दर्पण है। इसमें सभी सांस्कृतिक मूल्य, आदर्श एवं परम्परायें आकर्षित ढंग से संचित की

। (Art)– कला पक्ष संस्कृति का सौन्दर्यानुभूति का महत्वपूर्ण की संवेदनात्मक अभिवृत्ति (Emotional attitide) एवं

ध्यात्मिक शक्ति (Spiritual power) प्रतिबिम्बित होता है। साथ ही यह रचनात्मक शक्ति (Creative energy) का स्रोत भी है।

(ह) इतिहास (*History*)—ज्ञान के इस पहलू में पूर्व पीढ़ी के दुःख-सुख, उत्थान-पराजय, उतार-चढ़ाव, आराम-तनाव आदि सभी घटनाओं एवं घटना-चक्रों का विवरण होता है। इससे सांस्कृतिक विशिष्टताओं एवं विशिष्टताओं की भी पूरी जानकारी होती है।

(क) नैतिकता और धर्म (Moral and Religion) :—इसकी संस्कृति के आध्यात्मिक पहलू पर सबसे अधिक गहरी छाप है। तथा ये उसके निकटतर भी हैं। किसी समाज के मानवीय गुणों की पावन-धारा इन्हीं से प्रवाहित होती है। ये समाज के लिये शाश्वत मूल्यों एवं आदर्शों का प्रतिपादन करते हैं।

(ख) विज्ञान और गणित (Science and Mathematics) :—भौतिक विज्ञान (Physical sciences) समाज को पार्थिव संस्कृति (Material culture) के आधार स्तम्भ हैं। इसका भौतिक पहलू इन्हीं की देन है। अतः विद्यालयों में इन विषयों का ज्ञान बहुत आवश्यक है।

इनके अतिरिक्त अन्य सामाजिक विज्ञान (Social sciences) जैसे भूगोल (Geography), नागरिक शास्त्र (Civics), अर्थशास्त्र (Economics) को भी इस कार्य के लिये पाठ्यक्रम में सम्मलित करना लाभप्रद हो होगा।

(ग) प्रमुख क्रियायें (Important activities) :—सांस्कृतिक अवशोषण के लिये निम्नलिखित क्रियाओं को विद्यालय के पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए—

(i) शारीरिक शिक्षा (Physical Education) :—भिन्न भिन्न खेलों, व्यायामों, कुश्ती आदि क्रियाओं के कौशलों एवं तकनीकी (Skills and techniques) में विद्यार्थियों की अन्तर्दृष्टि (Insight) का विकास होता है।

(ii) कला एवं हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन (Organization of Art & Craft Exhibition)।

(iii) नाटकों का आयोजन।

(iv) अभिनय, संगीत एवं नृत्य।

(v) कवि सम्मेलन।

(vi) पर्यटन एवं यात्रायें।

समाज की आधुनिक मांगों के अनुसार शैक्षिक अध्ययनों एवं क्रियाओं का नवीनीकरण

इस विषय में कोई निर्णय लेने के लिये हमें अपने समाज की विशेषताओं, आवश्यकताओं तथा अपूर्व परिस्थितियों का अध्ययन करना चाहिए।

प्रमुख विशेषतायें (Important characteristics)

१. प्रगतिशील निरन्तर परिवर्तन (Continuous and regular changes) ।

२. शीघ्रगामी परिवर्तन (Rapid changes)

३. वातावरण को समझने एवं नियन्त्रित करने की निरन्तर बढ़ती हुई क्षमता (Continuous increase in the efficiency to comprehand and control the environment)

४. औद्योगिक, तकनीकी और वैज्ञानिक साधनों में क्रान्तिकारी प्रगति प्रसारण, परिवहन, सम्वाद आदि साधन (Revolutionary progress in the industrials technological and scientific means—means of broadcasting transportation and communication) ।

सांस्कृतिक-परिवर्तन की उपरोक्त विशेषताओं में निम्नलिखित कारणों का उल्लेख भी विशेष रूप से महत्वपूर्ण है—

१. जनसंख्या मे अतिवृद्धि (Overlapping of generation) ।

२. सांस्कृतिक अवस्थित्व (Cultural Inertia)

३. रुचि-निहित्व (Vested interests)

४. एकाकीपन का स्तर (Degree of isolation)

इन सभी कारणों से जो सबसे गम्भीर बात हमारी ही नहीं अपितु विश्व की सभी सास्कृतियों में हुई, वह सामाजिक पिछड़ेपन (Culturalage) की घटना है। यही सांस्कृतिक असामान्यता हमारे देश में भिन्न भिन्न राजनैतिक, भाषायी, साम्प्रदायिक जातिवादी क्षेत्रीय कुत्सित भावनाओं से प्रेरित होकर पारस्परिक अविश्वास, भय, आतंक, आशंकायें, विद्रोह, आगजनी और हिंसात्मक वृत्तियाँ हमारे राष्ट्रीय जीवन को अस्त-व्यस्त कर रही हैं।

सांस्कृतिक पिछड़ेपन का मूल कारण भौतिकवादिता में निहित है। यह वैज्ञानिक विकास के फलस्वरूप प्रयोजनवाद के बढ़ते हुए प्रभाव की देन है। हम लोग अपनी संस्कृति की अमूल्य निधि 'अध्यात्मवाद Spiritualism)' को भूल गये हैं। इसके विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसलिये वर्तमान सामाजिक विकृति स्वाभाविक ही है।

अत अब आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृति के आध्यात्मिक पहलू पर भी भौतिक पहलू के ही समान शिक्षा के क्षेत्र में महत्व दिया जाय। इसके लिये विद्यालयों के पाठ्यक्रम में नैतिकता (Moral), धर्म (Religion), साहित्य (Literature), तर्क-शास्त्र (Logic), कला (Art), गायन और नृत्य (Music and dance), दर्शन (Philosophy) जैसे आध्यात्मिक विषयों के शिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। इस विषय में शिक्षा आयोग द्वारा दिये गये निम्नलिखित उल्लेख महत्वपूर्ण है—

१. विश्व विद्यालय आयोग (डा० राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में नियुक्ति-१९४८) तथा केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड द्वारा नियुक्त 'धार्मिक और नैतिक शिक्षा समिति (श्री श्रीप्रकाश की अध्यक्षता-१९५९) द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदनों में सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में शिक्षा की जो व्यवस्था की गयी है, उसे केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के द्वारा अविलम्ब क्रियान्वित किया जाय।

२. प्राइवेट संस्थाओं के लिए भी इसी प्रकार का आचरण अनिवार्य हो।

३. नैतिक शिक्षा के लिये समय विभाजन चक्र (Time Table) में प्राव-धान होना चाहिए। किन्तु, इसके शिक्षण के लिए इसी क्षेत्र में प्रशिक्षण योग्य तथा कुशल अध्यापक की व्यवस्था होनी चाहिए।

४. विश्व विद्यालयों में धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के लिये एक अलग विभाग खोला जाय। इसी को इस दिशा में कार्य करने का दायित्व स्वीकार करना चाहिए।

५. नैतिक शिक्षा के लिये प्रत्यक्ष (Direct) और परोक्ष (Indirect) दोनों विधियों को एक दूसरे के पूरक के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

६. सभी धर्मों के मूल तत्वों को विषय वस्तु के रूप में पढ़ाना लाभप्रद है।

७. आध्यात्म-ज्ञान से सम्बन्धित कहानियों से विद्यार्थियों को अवगत कराना चाहिए।

1964

शिक्षा-सिद्धान्त

Principles of Education

Q. 1.

Describe in brief the changing soical order in the country and show how far the present system of education is able to cater for it.

संक्षेप में बतलाइये कि देश में परिवर्तित सामाजिक व्यवस्था का क्या स्वरूप है। साथ ही यह भी बतलाइये कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था कहाँ तक इसका पोषण कर सकने में समर्थ है।

उत्तर—

भारत में परिवर्तित समाज की प्रमुख विशेषतायें—प्रश्न ६, १९६१

१. प्रगतिशील और निरन्तर (Regular and continuous)—आज हमारे समाज में परिवर्तन अविरल गति से हो रहे हैं। किसी भी प्रकार की छलांग (Jump) अथवा आकस्मिक खाई (Drift) का इसमें स्पष्ट अभाव है।

२. शीघ्रगामी परिवर्तन (Repid changes)—पहले सामाजिक परिवर्तन मन्द गति से होते थे। पूर्वानुभव तथा प्रचलित सामाजिक मूल्य और आदर्श समाज में अपना घर कर लेते थे। उनमें किसी प्रकार का नवीनीकरण किसी व्यक्ति के लिये आसान नहीं होता था। समाज किसी भी परिवर्तन को अवरुद्ध करने के लिये तत्पर रहता था। इस तरह रूढ़ियों में कुछ स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होते थे, धीरे धीरे विज्ञान के विकास के साथ-साथ परिवर्तन की गति में तीव्रता आने लगी। परिवर्तन कुछ दशाब्द शताब्दियों (Few decades), दशाब्द शताब्दी, थोड़े वर्षों और अब स्थिति यहां तक है कि प्रतिवर्ष होने वाला परिवर्तन भी स्पष्ट और सांस्कृतिक जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।

३. वातावरण को समझने एवं नियन्त्रित करने की निरन्तर बढ़ती हुई क्षमता—आज वैज्ञानिक आविष्कारों एवं अनुसन्धानों के बल पर व्यक्ति में अपने वातावरण (भौतिक तथा सामाजिक दोनों) को समझने की तत्परता (Readings) एवं कौशल का सराहनीय विकास हुआ है। साथ ही मनुष्य में उस पर नियन्त्रण (Control) प्राप्त करने की योग्यता (Ability) एवं शक्ति और सामर्थ्य की [illegible] हुई है। यही कारण है कि वह नवीन परिवर्तन को स्वीकार करने में अव- (Resistance) उपस्थित नहीं करता।

४. औद्योगिक (Industrial) तकनीकी (Technological) एवं वैज्ञानिक (Scientific) साधनों (Means) में क्रान्तिकारी प्रगति—शक्ति (Energy), परिवहन (Transportation), संचार (Communication) और प्रसारण (Broadcasting) के साधनों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। पिछले पच्चीस वर्षों की प्रगति का भी यदि सिंहावलोकन किया जाय, तो इन साधनों के क्रान्तिकारी परिवर्तन पर आश्चर्य होता है। इसके कारण पृथ्वी पर मनुष्य जीवन परिवर्तनशील हो गया है। उसके सामाजिक मूल्यों (Social values) और आदर्शों (Ideals) भी प्रभाव पड़ते हैं। वह उन्हें निश्चित (Definite) एवं शाश्वत (Eternal) कहने अथवा समझने के लिये तैयार नहीं है। व्यक्ति दिन प्रतिदिन प्रयोजनवादी दर्शन (Pragmatic philosophy) का अनुयायी होता जा रहा है। उसकी अभिवृत्तियाँ (Attitudes) जीवन-मूल्यों (values of life) के सन्दर्भ में अधिकाधिक भौतिकवादी (Matierialistic) होती जा रही हैं। विज्ञान अब मानव जीवन के प्रत्येक बिन्दु को स्पर्श करता हुआ उसे प्रभावित करता है।

५. जनसंख्या में अतिवृद्धि—भारत की जनसंख्या स्वतन्त्रता के दिनों में लगभग ३६ करोड़ थी। इन बीस वर्षों में यह आज ५० करोड़ की रेखा पार कर चुकी है। यदि यही प्रगति इस दिशा में रही तो आने वाली बीस वर्षों में यह संख्या ७५ करोड़ हो जावेगी। यह युवकों का देश है। जनसंख्या का ५०% लगभग १८ वर्षीय युवक युवतियाँ ही हैं। इस समय विद्यार्थियों की संख्या ६ करोड़ है, जिसकी कि १९८५ तक १८ करोड़ होने की सम्भावना है (जो के सम्पूर्ण यूरोप की जनसंख्या के बराबर होगी।) ऐसी स्थिति में सामाजिक विचारों और भावनाओं के विषय में आसानी से अटकलें लगायी जा सकती हैं।

६. सांस्कृतिक अवस्थिति—यह वह गुण है जो संस्कृति की गत्यात्मक (Dynamic) स्थिति को बनाये रखने में सहायता देता है। हम देखते हैं कि संस्कृति का भौतिक पहलू तीव्र गति से प्रगति कर रहा है तो वह निरन्तर यह सब करता ही जा रहा है दूसरी ओर इसका आध्यात्मिक पहलू प्रगति की दृष्टि से स्थिर है तो वह स्थिर (Static) ही है। इस प्रकार हम देखते हैं हमारी वस्तुगत संस्कृति गति की अवस्थिति (Inertia of motion) तथा आध्यात्मिक संस्कृति स्थिरता की अवस्थिति (Inertia of Rest) से प्रभाव में हैं। सांस्कृतिक पिछड़ेपन का मूल कारण यही अन्तर है।

७. निहित स्वार्थ (Vested interests)—नवोदित, हमारे इस देश में जिसमें हमने धर्म निरपेक्ष (Secular) तथा जनतन्त्र के सिद्धान्तों पर समाजवाद को लाने का स्वप्न संजोया, आज अपने प्रगति-पथ पर कई बाधाओं का अनुभव कर रहा है। इसके लिये राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथाः शक्ति कोष उत्तरदायी हैं। सामाजिक नैतिकता (Social moral) का निम्न स्तर एवं चारित्रिक पतन का परिणाम है।

८. एकाकी का स्तर (Degree of isolation)—आज न तो कोई व्यक्ति और न ही समाज अकेला रहता है। अब तो वह वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण पराश्रयी अधिक हो गया है। वह सामाजिक अन्तर्क्रिया में हर क्षण भाग लेता है। उसके स्वतन्त्र जीवन यापन के स्तर का लघु अंश रह गया है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक परिवर्तन

हमारे समाज में परिवर्तन की गति में अविरल अधिकाधिक वेग-वृद्धि (Acceleration) होती जा रही है। इसमें नवीन सामाजिक ढांचों को स्वरूप प्राप्त हो रहे हैं। प्रत्येक सामाजिक संगठन का इस दिशा में अनुकूल योगदान होना चाहिए। ब्राउन (Brown) के अनुसार, "नवीन सामाजिक आकृतियों (Social patterns) की आवश्यकता है और हमारे शिक्षा साधनों (Agencies of education) को इस दिशा में नेतृत्व प्रदान करना चाहिए।"

जैसा कि उपरोक्त विवरण से पता चलता है हमारी वर्तमान शिक्षा-पद्धति में सांस्कृतिक परिवर्तन की दृष्टि से निम्नलिखित गम्भीर दोष हैं—

(अ) नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा का अभाव (Lack of moral and (spiritual training)

(ब) यह पाठ्यक्रम लचीला नहीं है (Curriculum is not felxible)

(स) पाठ्यक्रम सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ शिक्षा-प्रक्रिया करने में असमर्थ है।

इन कमियों के कारण शिक्षा समाज में उन अव्यवस्थाओं तथा अनियमितताओं को रोकने में असमर्थ नहीं हो पा रही है, जो कि हमारे देश की प्रगति के लिये किये जाने वाले प्रयासों के लिये चुनौती बन गये हैं। इस दृष्टि से शिक्षा को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने के लिये शिक्षा आयोग द्वारा दिये गये सुझावों के सन्दर्भ में निम्नलिखित सुधार प्रस्तावित किये जाते हैं।

(i) शिक्षा को सामाजिक यन्त्र के रूप में स्वीकार किया जाय।
(ii) विज्ञान को शिक्षा एवं संस्कृति का बुनियादी पहलू बनाया जाय।
(iii) पाठ्यक्रम कार्यानुभव को स्थान।
(iv) समाज सेवा शिक्षा का एक भाग बने।
(v) व्यावसायिक शिक्षा की दिशा में रचनात्मक कार्य किये जायें।
वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र में अनुसन्धान।
...ीय एकता के लिये शिक्षा-व्यवस्था।
...सांस्कृतिक आवश्यकताओं के विकास में प्रशिक्षण।
... सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं में प्रशिक्षण।
... धर्म, निरपेक्षता के सिद्धान्तों का आदर करते हुए धार्मिक शिक्षा की

प्रश्न २—

How does the Basic Education compare with the Project method and *the activity school of education ? What are the* precise aims of Basic-Education ?

बुनियादी शिक्षा की योजना-पद्धति एवं 'शिक्षा में क्रियाशीलता' की विचार धारा से तुलना कैसे करेंगे ? संक्षेप में बुनियादी शिक्षा के क्या लक्ष्य हैं ?

उत्तर—

बुनियादी शिक्षा (Basic-Education)—बुनियादी-शिक्षा एक भिन्न शिक्षा व्यवस्था (System of Education) है। गांधीजी इसके प्रतिपादक हैं। यह पाश्चात्य (Western matercalism) भौतिकवाद तथा भारतीय आध्यात्मवाद (*Indian spiritualism*) का सुन्दर संश्लेषण (*Synthesis*) है। इसी दार्शनिक सिद्धान्त की पृष्ठ भूमि में इस शिक्षा-व्यवस्था का सृजन हुआ। इसके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-सिद्धांत, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधियाँ, अनुशासन, अध्यापक, विद्यालय की अपनी ही भिन्न अवधारणायें हैं। विस्तार के लिये प्रश्न ४ (१९६७), प्रश्न १ (६६), प्रश्न (६५)।

योजना पद्धति (Project Method)—यह कक्षा में विषय को प्रस्तुत करने की एक विधि है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते है कि यह एक शिक्षण-विधि (Method of teaching) है। यह विधि उपयोगिता के सिद्धान्त (Principle of use) पर आधारित है। किलपैट्रिक (Kilpatrick) महोदय ने योजना की परिभाषा बतलाते हुए कहा; "सामाजिक वातावरण में पूरे मन से की गई उपयोगी क्रिया ही 'योजना' है।" प्रोफेसर बेलार्ड 'योजना' को जीवन का एक अंश मानते हैं। स्टीवेंसन महोदय के अनुसार योजना "बालक द्वारा अपने प्राकृतिक वातावरण में पूरी की गई समस्या है।"

बालक किसी काम को तभी सीख सकते हैं यदि वे उसका अभ्यास करें। किन्तु, क्रिया या अभ्यास तभी सम्भव है यदि बालक उसमें रुचि रखते हों। रचनात्मक वही क्रिया हो सकती है, जिसका बालकों के जीवन में व्यावहारिक उपयोग हो। इस विषय में किलपैट्रिक महोदय का निम्नलिखित कथन महत्वपूर्ण है:

"जीवन में उठने और उपस्थित होने वाली समस्या के समाधान को प्राप्त करने लिये योजना पद्धति का उपयोग होता है। अपने व्यापक अर्थों में यह एक पद्धति-मात्र एवं विधि ही नहीं, अपितु शिक्षण के प्रति व्यापक दृष्टिकोण है। यह इस मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है कि बच्चा अभ्यास (Exercise) के बिना किसी चीज को नहीं सीख सकता। इसलिए प्रत्येक विषय-वस्तु को इस व्यवस्थित करना चाहिए कि बच्चे को क्रियाओं के अधिक से अधिक के अवसर प्राप्त हो सकें।"

क्रिया को शैक्षिक विचारधारा (Activity school of education)—प्रत्येक शिक्षा व्यवस्था की अपनी शिक्षण-पद्धतियाँ होती हैं। ये पद्धतियाँ कुछ सामान्य सिद्धान्तों पर आधारित होती हैं। शिक्षण-पद्धति की प्रभावोत्पादकता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके प्रतिपादन तथा व्यावहारिक उपयोग में किन सामान्य-सिद्धान्तों को ध्यान में रखा गया है। रायबर्न के अनुसार, "शिक्षण-पद्धति के सामान्य-सिद्धान्त खोजते समय बालक के स्वभाव के सम्बन्ध में अपने समस्त ज्ञान का सदैव ध्यान रखा जाय। यही ज्ञान सही पद्धति के निर्माण की दिशा में हमारा मार्ग-दर्शन करती है (In seeking to understand the general principles that should be the foundation of methods we, use we must always keep in mind what we have learned about the nature of child. This knowledge will be our chief guide in framing methods.)।" आज की बाल-केन्द्रित (Child centered) शिक्षा में "क्रियाशीलता का सिद्धान्त (The principle of Activity) प्रमुख स्थान रखता है।

बालक के व्यवहार (Behaviour) का क्रम-बाद्ध अध्ययन करने पर उसकी क्रियाशीलता के विषय में हमें जानकारी प्राप्त हो जाती है। वह स्वभाव से ही ऐसा होता है। इसी तथ्य के आधार पर उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्रियाशीलता के द्वारा उसे विषय-वस्तु का समुचित ज्ञान दिया जा सकता है। फ्रोबेल ने इस सिद्धान्त का महत्व बतलाते हुए कहा "क्रिया के द्वारा ही बालक किसी कार्य को सीखता है। जहाँ तक सम्भव हो बालक को 'करके सीखने (Learning by doing)' के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जायँ। कोमेनियस का कथन है. "जो कुछ भी ज्ञान दिया जाय, उसकी पुष्टि अभिव्यक्ति के द्वारा कर लेनी चाहिये तथा जो कुछ भी सीखा जाय वह करके सीखा' जाय (Impression must be insured by expression and what has to be done must be leant by doing)।" इसी प्रकार रूसो (Rouseau) क्रिया के सिद्धान्त पर बल देते हुये कहते हैं: "मैं बालकों को पुस्तकों में लगाये रखने की अपेक्षा वर्कशाप (Workshop) में व्यस्त रखना चाहता हूं। जहाँ वे मन के साथ साथ हाथ से कार्य कर सकें।"

आधुनिक शिक्षण-विधियों में इसी सिद्धान्त को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। निम्नलिखित पद्धतियाँ इससे विशिष्ट रूप में लाभान्वित हुई। उनके लिये यही आधारभूत सिद्धान्त है।

१. किंडरगार्टन
२. माण्टेसरी
३. योजना (Project)
४. खोज-विधि (Heuristic)

५. डाल्टन पद्धति ।

६. वर्कशाप

७. प्रयोग और प्रदर्शन (Experiment and demonstration)

८. प्रयोगशाला विधि (Laboratory method)

बुनियादी शिक्षा में प्रयुक्त शिक्षा विधियों में योजना विधि तथा सिद्धान्तों में क्रियाशीलता का सिद्धान्त प्रमुख स्थान रखते हैं ।

प्रश्न ३

"The pattern of education need not be the same in the whole country, it should change with different patterns of society and culture." Discuss the above statement.

"सम्पूर्ण देश में शिक्षा का समान ढाँचा होना आवश्यक नहीं है इसे भिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के अनुसार भिन्न होना चाहिए ।" उपरोक्त कथन की विवेचना कीजिये ।

उत्तर—

भारत विभिन्नताओं की भूमि है इसमें भिन्न भिन्न लोग, जातियाँ, वर्ग भाषायें, धर्म और संस्कृतियां गंगा-यमुना की पावन धाराओं के साथ-साथ पल रहे हैं । 'शिक्षा की आकृति' (Pattern) के विषय में (जब हम सम्पूर्ण देश के लिये समान व्यवस्था के सन्दर्भ में सोचते हैं) कभी-कभी हम अनावश्यक रूप से चिन्तित हो जाते हैं । भारत संविधान में प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और संस्कृति को जनतान्त्रिक विधि से विकसित होने की पूर्ण स्वतन्त्रता है । यह तो नवीनतम राजनीतिक दृष्टिकोण है जिसे हमने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लिखित संविधान के रूप में विश्व के सम्मुख रखा । किन्तु, सदा से ही भारत की परम्परा विभिन्नताओं को स्वीकार कर उसे एकत्व (Unity) प्रदान करने की रही है । उसकी यह प्रकृति आध्यात्मवाद (Spiritualism) की देन है । जो भारतीय संस्कृति को जन्म देकर विकसित करती चली आ रही है । सदियों से ही इस पर विदेशी संस्कृतियों ने कुठाराघात किये, किन्तु, यह अक्षण्य है । इससे उन्हें भी अपने में सभा कर अपना अंग बना दिया ।

भौगोलिक दृष्टि से भी यह विशाल है । जलवायु, धरातल, वनस्पति, निवासियों का रहन-सहन सब भिन्न भाषाओं की भिन्नतायें भी सर्वविदित हैं । रीति-रिवाज भारतीयों को पारस्परिक दूरी की ओर अधिक बढ़ा देती है । यह सब होते हुए भी इस उप-महाद्वीप (Sub-continent) का प्रत्येक व्यक्ति 'भारतीय संस्कृति (Indian culture) के गीत गाता है । हम प्रायः भारतीय संस्कृति की बात करते हैं । क्या यह सभी क्षेत्रीय एवं सामुदायिक संस्कृतियों का औसत है ? या किसी विशेष क्षेत्र की संस्कृति अपने एकाधिकार से इसका प्रतिनिधित्व करती

है। इनमें से कुछ भी सत्य नहीं। भारतीय संस्कृति विशाल है। इसकी भिन्न भिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियाँ तथा भिन्न-भिन्न सामाजिक मूल्य राष्ट्रीय संस्कृति के अंग हैं। इसकी पूर्णता सभी के सन्तुलित विकास में निहित है। जिन आधारभूत सिद्धान्तों (principles) पर इन संस्कृतियों का विकास हुआ, वे परम तत्व ही भारतीय संस्कृति की भिन्न-भिन्न धाराओं की जननी है। भारतीय संस्कृति वह निर्मल सरिता है जिसमे कई धारायें मिलकर उसको स्वरूप (Form) प्रदान करती हैं।

हम देखते हैं कि शिक्षा का संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। शिक्षा मनुष्य को सामाजिक (Social) और सामुदायिक (Community) जीवन के कार्यव्यापारों में प्रभावशाली ढंग से निर्वाह करने की योग्यता प्रदान करती है। इसके लिये वह अनेकानेक विधियों के द्वारा व्यक्ति को सामाजिक आदर्शों, नियमों, रीति-रिवाजों, मूल्यों और उसके विधान से परिचित कराता है। किन्तु ये सब सामुदायिक संस्कृति के तत्व हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा का प्रमुख सामाजिक कार्य विद्यार्थी सांस्कृतिक ज्ञान में प्रशिक्षण देकर समाज का योग्य नागरिक बनाना है।

महान् शिक्षक का प्रमुख कार्य विद्यार्थी को एक प्रभावोत्पादक सामाजिक इकाई (Social element) का स्वरूप प्रदान करना है। जिससे रचनात्मक (Construction) कृतियों का सृजन (Creation) करने में समर्थ हो कर सांस्कृतिक-उन्नयन में बहुमूल्य योगदान दे सके।

संस्कृति मानव मस्तिष्क की क्रियाशीलता (Activity of human mind) है। इससे मनुष्य को मानवीय गुणों का विकास करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। औपचारिक सूचनाओं (Formal informations) से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। निष्क्रिय सूचनायें (Passive information) अव्यवस्थित (Disorder) विचारों से मस्तिष्क का भण्डार भर देती हैं। इनका स्वस्थ चिन्तन पर निषेधात्मक (Negative) प्रभाव पड़ता। वही सूचनायें मस्तिष्क और चिन्तन को क्रियाशीलता में योगदान कर सकती हैं जो तत्कालीन सामाजिक वातावरण के सन्दर्भ में व्यक्ति के लिये उपयोगी हों क्योंकि उसकी वर्तमान आवश्यकता समाज में समायोजन (Adjustment in the society) इसी से सम्भव है। अतः विद्यार्थी वर्ग के लिये सामाजिक-संस्कृति का अध्ययन ही वास्तविक शिक्षा है।

समाज में अक्रियाशील और प्रभावहीन व्यक्ति अनुपयोगी है। वह धरा पर भार स्वरूप है। समाज में उसका अस्तित्व निरर्थक है। संस्कृति का निम्नलिखित श्लोक इस दृष्टि से वास्तविकता का सही चित्र प्रस्तुत करता है।

येषां न विद्या, न तपो न दानं।
ज्ञानं न शीलं, न गुणो न धर्मः॥
ते मर्त्यलोके, भुवि भार भूता।
मनुष्य रूपेण, मृगाश्चरन्ति॥

वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने मे समर्थ हो सके। जो उसमें रचनात्मक कार्यों (Constructive works) के लिए उपयुक्त कौशल (Skill) का विकास कर सके। प्रत्येक विद्यार्थी की अपनी रुचि एवं वैयक्तिक सामर्थ्य होती है। हर व्यक्ति हर कार्य नहीं कर सकता। अतः प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उसकी रुझान (*Interest*) और अन्तर्निहित शक्तियो के अनुसार ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र में प्रशिक्षण का प्रावधान (*Provision*) होना चाहिये। जिससे वह सामाजिक संस्कृति के अनुरूप कार्य कर उसके भौतिक पहलू मे रचनात्मक कार्य कर सके। इसके लिए विद्यालयों में सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी व्यावसायिक कार्य-व्यापार (Vocational Trade) में प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये। इससे विद्यार्थी सामान्य सांस्कृतिक प्रशिक्षण प्राप्ति के साथ-साथ सृजनात्मक (Creative) कार्य-व्यापार में विशेष योग्यता (Specialization) प्राप्त कर सकता है।

*जहाँ कार्य-व्यापार (Trade) में प्रशिक्षण व्यक्ति को अपने जीवन में आत्म-*निर्भरता (Self-sufficiency) तथा सामाजिक प्रभावोत्पादकता और निर्माण-शक्ति प्रदान करता है, सांस्कृतिक-ज्ञान उसमें सामाजिक और नैतिक गुणों का विकास कर उसे दार्शनिक गहराई और कला की ऊंचाई पर ले जाती है। इससे वह नवीन नैतिक नियमों, मूल्यों, आदर्शों और दार्शनिक विचारो का सृजन कर संस्कृति के आध्यात्मिक पहलू का विकास कर सकने मे समर्थ हो जाता है।

इन गुणों की संप्राप्ति से व्यक्ति अपने व्यावहारिक जीवन मे अपने चारों ओर उपस्थित सामाजिक और भौतिक वातावरण को अनुकूलन (Adaptation) की दृष्टि से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष (Direct or indirect) रूप में प्रभावित करता है। इस दिशा में उसके प्रयास न केवल चेतन (Conscious) ही, बल्कि, अचेतन (Unconscious) भी होते हैं। वह भौतिक वातावरण को नयी योजनाओं अथवा पुनर्योजनाओं के सृजन से अपने अनुकूल बनाता है। वहीं वह सम्भव नहीं वह अपने व्यक्तित्व को वांछनीय ढंग से उसके अनुरूप बना लेता है। यही विधि सामाजिक वातावरण में भी समान रूप से वैध (*Valid*) है। व्यक्ति अपने साथी नागरिकों को प्रभावित करता है तथा स्वयं भी उनसे प्रभावित होता है। ब्रूबेकर (Brubacher) महोदय का निम्नलिखित कथन इस विषय में उल्लेखनीय है:

"किसी व्यक्ति को उन विधियों और साधनों को जानना चाहिए जिससे वह मानवीय व्यवहार (अपना और अन्य साथी नागरिकों का) को नियन्त्रित कर सके। As never before, man must learn the ways and means of controlling human behaviour—his own and others)"

व्यक्ति के सोचने की क्षमता तथा इसकी दिशा उसके पूर्वाग्रहों पर आधारित

होती है। इसलिये विद्यार्थी का शिक्षा-कार्य उसके सामाजिक-अनुभवों (Social experiences) पर आधारित होना चाहिये।

विद्यार्थी के अनुभव, जिनपर उसकी शिक्षा-व्यवस्था करनी है, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में अन्तःक्रिया से उपलब्ध होते हैं। इसलिये विद्यालय में पाठ्यक्रम में विषय वस्तु और अन्य क्रियाओं का आयात विद्यार्थी के सामाजिक वातावरण से होना अनिवार्य है। इसके लिए मातृभाषा (Mother tongue), नागरिक शास्त्र (Civics), भूगोल (Geography), इतिहास (History), संगीत और नृत्य (Community songs and community dances), नाटक और अभिनय (Drama and Acts) सामुदायिक संस्कृति की परम्पराओं के ज्ञान की व्यवस्था विद्यालय के पाठ्यक्रम में होनी चाहिये।

हम देखते हैं कि उपरोक्त सांस्कृतिक पहलू भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के लिये भिन्न हैं। बालक-बालिकाओं के समुचित विकास के लिये इन विषयों के शिक्षण की परम आवश्यकता स्पष्ट ही है। इसलिये भारत में प्रत्येक क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्परा के ही अनुरूप उसके भावी नागरिकों के लिये शिक्षा-व्यवस्था होनी चाहिये। इसी प्रकार की व्यवस्था के लिये शिक्षा आयोग (Education commission) ने विशेष रूप से बल दिया है। उसने शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले सुधारों में इसी को प्रमुखता दी है। यह बात हमें प्रतिवेदन के प्रारम्भिक (Biginning) और अन्तिम शब्दों से स्पष्ट हो जाती है जो कि निम्न प्रकार हैं।

"शिक्षा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण और अति आवश्यक तथा वांछनीय सुधार यह है कि उसको जन-जीवन की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जाय (The most important and urgent reform needed in education is to relate it to the life, needs and aspiration of the people)

सामुदायिक संस्कृति के इन तत्वों तथा इनकी अभिवृद्धि के प्रयासों को हमें एकाकी स्वरूप में (In isolated form) प्रस्तुत नहीं करना है। इनको पृष्ठ-भूमि में भारतीय संस्कृति के आधार-भूत तत्वों का होना आवश्यक है। ऐसी ही व्यवस्था में विद्यार्थियों को अपनी सामुदायिक संस्कृति की वास्तविक सुन्दरता की अनुभूति हो सकेगी। वे उसका अर्थ समझ सकेंगे। तथा अपनी क्षेत्रीय (Regional) और सामुदायिक संस्कृति का अन्य भारतीय संस्कृतियों तथा पूर्ण भारतीय संस्कृति (Indian culture as a whole) से सम्बन्ध देखकर उनके समान विकास की आवश्यकता के लिए प्रयासों को महत्व दे सकेंगे। इसी प्रकार की व्यवस्था भारत के लिए वास्तविक और व्यावहारिक रूप में राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था का आधार है।

शिक्षा-क्रम में उच्च स्तर की ओर अग्रसर होते हुए विद्यार्थियों को भिन्न-भिन्न

संस्कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन (Comparative study) के अवसर भी प्रदान किये जायेंगे। उन्हें भारतीय भाषाओं, साहित्यों, दर्शन, स्थापत्य कला, मूर्तिकला, निर्माण कला, संगीत नाटक आदि का ज्ञान देना अधिक आसान होगा। वे इस व्यवस्था में अपनी सामुदायिक संस्कृति और क्षेत्रीय मातृ-भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के सौन्दर्य की अनुभूति कर सकेंगे तथा उसके पर वर्द्धन के लिए रचनात्मक कार्य कर सकने में समर्थ हो सकेंगे।

हमारे देश के इन भावी नागरिकों को अपनी स्थानीय संस्कृति के माध्यम से ही भारत-दर्शन सम्भव है। सामुदायिक संस्कृति में विकास ही पूर्ण राष्ट्रीय सांस्कृतिक विकास को सम्भव कर सकता है। प्रत्येक संस्कृति के विकास से ही हम अपने परम लक्ष्य 'भारतीय-संस्कृति का विकास' पर पहुंचने के लिए सरल, सुगम, न्याय-पूर्ण एवं एक मात्र मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इस सन्दर्भ में शिक्षा शास्त्री डा० जाकिर हुसैन का कथन स्मरण हो आता है;

"सभी मार्ग सांस्कृतिक जीवन के 'रोम' में पहुंचते हैं। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को वही पथ अपनाना है जो उसकी रुचि के अनुकूल उसके तथा उसके समान अन्य व्यक्तियों के लिए निर्मित किया गया है। शिक्षा वैयक्तीकृत पुनर्निमित वस्तुगत संस्कृत है (All roads lead to the Rome of Cultured life, but each individual must approach in along the road designed for him and his like Education in nothing but the individualized revivification of objective culture.)"

प्रश्न ४—

What do you understand by International understanding? Chalk out a scheme to in culcate this understanding among the students of middle schools and Higher secondary schools

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना से क्या अभिप्राय है? माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिये कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये?

उत्तर—

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना
(International understanding)

इस शब्द-युग्म से स्पष्ट हो है कि यह व्यक्ति विशेष की वह भावना है जिसका सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पारस्परिक प्रेम, सहानुभूति एवं सहयोगिता और सहकारिता से है 'मेरा देश भला या बुरा (My country right or से राष्ट्रीयता (Nationalism) की पराकाष्ठा स्पष्ट होती है। इस मानवीय ने अपनी चरम सीमा पर प्रथम और द्वितीय विश्व-युद्धों (First and

world wars) की हृदय-विदारक विभीषिकाओं को सम्भव किया। नागासा और हीरोशिमा के आणविक विनाश ने मानव की नर-संहारक प्रवृतियों का प्रत्य और मूर्त्त रूप दुनियां के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। किन्तु, इसके बाद मानवी वृतियों ने दुनियां के राजनीतिज्ञों को राष्ट्रों के पारस्परिक मेल-जोल तथा शान्तिपूर जीवन-यापन की दिशाओं में रचनात्मक कदम बढ़ाने के लिये बाध्य किया। संयुक्त राष्ट्र-संघ इसी भावना की देन है। आज इस बात की अनुभूति सभी को हो गई है कि 'राष्ट्रीयता' का अस्तित्व और सार्थकता इसी बात पर निर्भर करते हैं विश्व के राष्ट्रों में पारस्परिक मेल जोल और सहानुभूति का वातावरण बना रहे। इसकी अनुपस्थितीय मे कोई भी देश सुरक्षित नहीं रह सकता। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने इस बात को स्वीकार किया। वह आज की दुनियां में युद्ध के दुष्परिणामों को मानवीय संहार को बचाने का एक मात्र उपाय 'विश्व-नागरिकता' की भावना में देखता है।

आज विश्व की प्रमुख शक्तियों ने बहुत भयंकर शस्त्रों का निर्माण कर लिया है। ईश्वर ऐसा न करे यदि आगामी दिनो में कभी विश्व युद्ध हुआ तो उसके परिणाम क्या होंगे, कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनिस्टीन (Einstein) को किसी ने प्रश्न पूछा कि तृतीय विश्व युद्ध (3rd world war) में क्या होगा। उन्होने बड़ी गम्भीरता से कहा कि वे यह सब बताने में तो समर्थ नहीं किन्तु इतना अवश्य बता सके कि चतुर्थ विश्व-युद्ध यदि हुआ तो ईंट पत्थर और लाठियों से होगा। उनके कहने का स्पष्ट अर्थ यह था कि पृथ्वी मानव रहित हो जावेगी सारा विश्व नष्ट हो जावेगा।

राष्ट्रों के पारस्परिक संघर्षों की चर्चा करते हुए के० जो० सार्डन कहते हैं, "जब विश्व में युद्ध के बादल मडराते हैं तब वहां न स्वास्थ्य, न आर्थिक लाभ, न आराम और न साहित्य, संस्कृतिक और कला ही रह पाते हैं। (There can neither by health, nor economic prosperity nor the leisured pursuit of art and literature and Culture in a world that is either plunged in or over shadowed by war)।"

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् जहाँ विज्ञान, तकनीकी और औद्योगिक उन्नति के प्रवर्तक है, साथ ही आधुनिक युद्धास्त्रों के विषय में समान गम्भीरता से चिन्तित हैं। वे आणुविक युद्ध को मानव का वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसन्धानों से असमायोजित होने की स्थिति का उदाहरण मानते हैं।

"आज के अपने युग में हमें मानवीय चेतना का आणुविक युग से समन्वय है जब यह स्पष्ट हो गया है कि मानव आणुविक युद्ध और यहाँ लिये तैयारी मात्र से अपने आपको नष्ट कर देगा। यदि यह सब तो यह मानवीय चेतना का तकनीकी क्रान्ति से समायोजन करने में असफलता

का कारण होगा (We need to day an adjustment of the human co cloiusness to the nuclear age in which we live. It is now conce able, that the human race may put an end to it self by nucl warfare or prepartion for it. This, if it happens, will be, result of the failuer of man's consciousness to adjust itself the technological revolution.

इससे यह बात स्पष्ट हो गयी है कि प्रत्येक राष्ट्र को अपने देश में अन्तर्रा सहानुभूति और प्रेम की भावना जागृत करनी चाहिए। इसी प्रकार के चिन्तन विचार से विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना (International understandin की अवधारणा (Concept) का उदय हुआ। यह विश्व बन्धुत्व (Univer brotherhood), विश्व मैत्री (International friendship), विश्व-नागरिक (World citzienship) के आधारभूत सिद्धान्तों पर निर्मित है।

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना गुणों से पोषित हुई है। डा० वाल्टर एच० लोविस (Doctor H. C. Lewis) के अनुसार, "संक्षिप्त में अन्तर्राष्ट्रीय स भावना का अर्थ वह योग्यता है जिससे कि व्यक्ति एक दूसरे के सन्दर्भ में अथवा दूसरे के आचरणों का आलोचनात्मक तथा वस्तुगत स्थिति के रूप राष्ट्रीयता एवं संस्कृति को ध्यान में न रखते हुये निरीक्षण एवं मूल्यांकन कर सके इसके लिये व्यक्ति को अपनी संस्कृति एवं राष्ट्र के प्रति पक्षपातों को दूर कर धरा के सभी राष्ट्रों, संस्कृतियों, वर्गों एवं मनुष्यों को समान महत्व देते हुए अपन अध्ययन वस्तु बनाना है (In short, international under. standing is th ability critically and objectively to observe and appraise h coduct of the men, every where to each other, irrespective o the nationality or culture to which they may belong. To do thi one must be able to detach opeself from ons's own particula *cultural and national prejudices and to observe men of nation* alities, cultures and races as equally important varieties of huma beings inhabiting this earth.) ।"

प्रोलिवर गोल्ड स्मिथ का कथन है कि यह (अन्तर्राष्ट्रीयता) वह भावना है जिससे व्यक्ति अपने ही राज्य की नहीं वरन् अपने आप में विश्व-नागरिकता दर्शन करता है, वास्तव में इसकी अनुपस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ते हैं। इसक अभाव में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति अविश्वास, आर्थिक एवं युद्ध की से परिपूर्ण हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक, सांस्कृतिक संगठन (U nations educational, *scientific and cultural organization.)* बात को स्पष्ट किया कि युद्ध की भावना मानव मस्तिष्क में प्रारम्भ होती है

world wars) की हृदय-विदारक विभीषिकाओं को सम्भव किया। नागासा और हीरोशिमा के प्राणविक विनाश ने मानव की नर-संहारक प्रवृत्तियों का प्रत्य और मूर्त रूप दुनिया के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। किन्तु, इसके बाद मानवी वृत्तियों ने दुनिया के राजनीतिज्ञों को राष्ट्रों के पारस्परिक मेल-जोल तथा शान्तिपू जीवन-यापन की दिशाओं में रचनात्मक कदम बढ़ाने के लिये बाध्य किया। संयु राष्ट्र-संघ इसी भावना की देन है। आज इस बात की अनुभूति सभी को हो गई है कि 'राष्ट्रीयता' का अस्तित्व और सार्थकता इसी बात पर निर्भर करते हैं विश्व के राष्ट्रों में पारस्परिक मेल जोल और सहानुभूति का वातावरण बना रहे। इसकी अनुपस्थितोय मे कोई भी देश सुरक्षित नहीं रह सकता। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने इस बात को स्वीकार किया। वह आज की दुनिया में युद्ध के दुष्परिणामों को मानवीय संहार को बचाने का एक मात्र उपाय 'विश्व-नागरिकता' की भावना में देखता है।

आज विश्व की प्रमुख शक्तियों ने बहुत भयकर शस्त्रों का निर्माण कर लिया है। ईश्वर ऐसा न करे यदि आगामी दिनों में कभी विश्व युद्ध हुआ तो उसके परिणाम क्या होंगे, कोई कल्पना भी नही कर सकता। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टीन (Einstein) को किसी ने प्रश्न पूछा कि तृतीय विश्व युद्ध (3rd world war) में क्या होगा। उन्होंने बड़ी गम्भीरता से कहा कि वे यह सब बताने में तो समर्थ नहीं किन्तु इतना अवश्य बता सके कि चतुर्थ विश्व-युद्ध यदि हुआ तो ईंट. पत्थर और लाठियों से होगा। उनके कहने का स्पष्ट अर्थ यह था कि पृथ्वी मानव रहित हो जावेगी सारा विश्व नष्ट हो जावेगा।

राष्ट्रों के पारस्परिक संघर्षों की चर्चा करते हुए के० जी० साईदन कह हैं, "जब विश्व में युद्ध के बादल मंडराते हैं तब वहां न स्वास्थ्य, न आर्थिक लाभ, न आराम और न साहित्य, संस्कृतिक और कला ही रह पाते हैं। (There can neither by health, nor economic prosperity nor the leisured pursuit of art and literature and Culture in a world that is either plunged in or over shadowed by war) ।"

डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् जहाँ विज्ञान, तकनीकी और औद्योगिकते उन्नति के प्रशंसक हैं, साथ ही आधुनिक युद्धास्त्रों के विषय में समान गम्भीरता से चिन्तित हैं। वे प्राणुविक युद्ध को मानव का वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसन्धानों से असमायोजित होने की स्थिति का उदाहरण मानते हैं।

"आज के अपने युग में हमें मानवीय चेतना का आणुविक युग से समन्वय करना आवश्यक है अब यह स्पष्ट हो गया है कि मानव आणुविक युद्ध और यहां तक की उसके लिये तैयारी मात्र से अपने आपको नष्ट कर देगा। यदि यह सब होता है तो यह मानवीय चेतना का तकनीकी क्रान्ति से समयोजन करने में असफलता

का कारण होगा (We need to day an adjustment of the human co clousness to the nuclear age in which we live. It is now conce able that the human race may put an end to it self by nucle warfare or prepartion for it. This, if it happens, will be, t result of the failuer of man's consciousness to adjust itself the technological revolution.

इससे यह बात स्पष्ट हो गयी है कि प्रत्येक राष्ट्र को अपने देश मे अन्तर्राष्ट्री सहानुभूति और प्रेम की भावना जागृत करनी चाहिए। इसी प्रकार के चिन्तन औ विचार से विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय सद्‌भावना (International understanding की अवधारणा (Concept) का उदय हुआ। यह विश्व बन्धुत्व (Univers brotherhood), विश्व मैत्री (International friendship), विश्व-नागरिकत (World citizenship) के आधारभूत सिद्धान्तों पर निर्मित है।

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना गुणों से पोषित हुई हैं। डा० वाल्टर एच० लेविस (Doctor H. C. Lewis) के अनुसार, "संक्षिप्त मे अन्तर्राष्ट्रीय स भावना का अर्थ वह योग्यता है जिससे कि व्यक्ति एक दूसरे के सन्दर्भ में अप अथवा दूसरे के आचरणों का आलोचनात्मक तथा वस्तुगत स्थिति कि रूप राष्ट्रीयता एवं संस्कृति को ध्यान में न रखते हुये निरीक्षण एवं मूल्यांकन कर सके इसके लिये व्यक्ति को अपनी संस्कृति एवं राष्ट्र के प्रति पक्षपातों को दूर कर इ धरा के सभी राष्ट्रों, संस्कृतियों, वर्णों एवं मनुष्यों को समान महत्व देते हुए, अपन अध्ययन वस्तु बनाता है (In short, international under standing is th ability critically and objectively to observe and appraise h coduct of the men every where to each other, irrespective o the nationality or culture to which they may belong. To do thi one must be able to detach oneself from ons's own particula cultural and national prejudices and to observe men of nationalities, cultures and races as equally important varieties of human beings inhabiting this earth.) ।"

ओलिवर गोल्ड स्मिथ का कथन है कि यह (अन्तर्राष्ट्रीयता) वह भावना है जिससे व्यक्ति अपने ही राज्य को नहीं वरन् अपने आप मे विश्व नागरिकता के दर्शन करता है, वास्तव में इसकी अनुपस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ते हैं। इसके अभाव में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति अविश्वास, धार्मिक एवं युद्ध की ... से परिपूर्ण हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक, सांस्कृतिक संगठन (U : nations educational, scientific and cultural organization.) ने बात को स्पष्ट किया कि युद्ध की भावना मानव मस्तिष्क में प्रारम्भ होती है।

शान्ति-सुरक्षा का विकास भी मानव मस्तिष्क से ही होना चाहिए ("Since wars begin in the minds of men; it is in the minds of men that the defences of peace must be constructed.)" और इसका एक मात्र माध्यम अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास है।

प्रश्न २—

Write short notes on any two of the following—

(a) Three languages formula in secondary education. (b) Pragmatism in education. (c) Sociaty as a agency of education. (d) Formal discipline.

निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये—

(क) माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषीय सूत्र,

(ख) शिक्षा में प्रयोजनवाद,

(ग) समाज, शिक्षा-साधन के रूप में,

(घ) औपचारिक अनुशासन,

उत्तर २ (क) —

माध्यमिक स्तर पर त्रिभाषीय सूत्र (Three language formula in Secondary Education)—भाषा आज शिक्षा की इतनी जटिल समस्या नहीं रही जितनी कि यह हमारे देश की राजनीतिक क्षितिज पर छायी हुई है। वास्तव में भाषा की समस्या का समाधान निष्पक्षता से शिक्षा ही कर सकती है। इसके समाधान की चर्चा हम माध्यमिक शिक्षा सन्दर्भ में इस सूत्र के अर्थ, महत्व एवं क्रियान्वयन और वर्तमान स्थिति पर विचार करेंगे।

त्रिभाषा सूत्र का अर्थ (Meaning of three language formula)—बहु-भाषी (Multi lingual) भारत में भाषा की समस्या का समाधान ढूंढना विषम और जटिल कार्य है। इससे कई प्रकार के सामाजिक और राजनैतिक तनावों के बढ़ने में सहायता मिली। हिन्दी के राष्ट्र भाषा बनने के बाद कुछ छिछोरे राजनीतिज्ञ अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में अपनी क्षेत्रीय भाषा के नाम पर जनता का ध्यान केन्द्रित तथा आकर्षित करने में सफल हुए हैं। आज विद्यालयों में शिक्षा के क्षेत्र में हमारे सामने त्रिभाषा सूत्र (Three language formula) है।

त्रिभाषा सूत्र का उद्भव (Origin of the formula)—सन् 1956 में केन्द्रीय परामर्शदात्री समिति (Central Advisory Board) ने इस समस्या का परीक्षण किया। इसने इसका अध्ययन विस्तृत तथा देश और संविधान की आवश्यकताओं में किया। इस प्रकार इस क्रिया ने 'त्रिभाषा सूत्र (Three language
सरल समाधान सामने आया। इस सूत्र को सन् 1961 के मुख्य मंत्री (Chief ministers coference) ने इस सूत्र को सर्वसम्मति से

पारित किया गया। इसके अनुसार—

१. क्षेत्रीय भाषा का शिक्षण,

२. अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी तथा हिन्दी क्षेत्रों में एक अहिन्दी भाषा।

३. अंग्रेजी (एक कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा) को विद्यालयों के पाठ में क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

त्रिभाषी सूत्र का अर्थ (Purpose of the formula)—इस सू अन्तर्गत रखी हुई भाषाओं के माध्यमिक स्तर पर निम्नलिखित कार्य हैं—

१. क्षेत्रीय भाषा (Regional language)—यह सामाजिक आवश ताओं एवं वांछाओं की दृष्टि के लिये आवश्यक है। शिक्षण इसके ही माध्य सरल, सुगम तथा उत्पादक हो सकता है।

२. हिन्दी का राष्ट्रीय भाषा के रूप में शिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। ही राष्ट्रीय स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय (Inter state) सम्बन्धों तथा राज्य केन्द्र सम्ब (State center communication) के लिये इसे माध्यम के रूप में स्वी किया गया। यह सम्बन्ध भारतीय अखण्डता एवं पारस्परिक सम्बन्धों को मधु के लिये आवश्यक है। अतः माध्यमिक स्तर (VI-XI) के शुरू से ही इसके शि पर बल दिया गया।

३. अंग्रेजी (अन्य भाषा) को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तथा संचार (Co munication) के लिये आवश्यक समझा गया। विश्व के राष्ट्रों की अन्यो श्रितता (Inter dependence) सभी को स्पष्ट है। इस युग में कोई भी अकेला (Isolation) में नहीं रह सकता।

त्रिभाषा सूत्र के क्रिया वयन में बाधायें (Difficulties in the imp mentation of the formula) अभी तक कोई भी राज्य इस सूत्र का सफल पूर्वक क्रियान्वित नहीं कर सका। इस सर्वेक्षण (Survey) को शिक्षा आय (Education commission) ने किया। तथा इसके कारणों में निम्नलिखित उल्लेख किया—

१. माध्यमिक स्तर पर भाषाओं का अधिक भार (Heavey load languages in carriculum for secondary schools.)

२. हिन्दी क्षेत्रों में अन्य भारतीय अहिन्दी भाषा के सीखने के लिये प्रेरा की कमी (Lack of motivation for study of an additional mode Indian language in Hindi speaking areas.)

३. इस सूत्र को क्रियान्वित करने के लिये आवश्यक भारी धन एवं प्रय का अभाव (Heavy cost and effort involved in providing for teaching of second and third languages for 5-6 years (.. class VI to X or XI)

४. अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी पढ़ने के मार्ग में प्रतिरोध (The resistance to the study of Hindi in some non Hindi areas.)।

यदि त्रिभाषा सूत्र को क्रियान्वित कर दिया जाय तो इस बात में राय नहीं हो सकती कि भारत की जनता के बीच की खाई, जो कि राजनीतिज्ञ डाल चुके हैं, समाप्त हो जावेगी। क्या शिक्षा मात्र यह कार्य कर सकने में समर्थ हो सकेगी ?

शिक्षा में प्रयोजनवाद

(Pragmatism in Education)

शिक्षा में प्रयोजनवाद का अर्थ इस जीवन प्रक्रिया में प्रयोजनवादी जीवन दर्शन के प्रभाव तथा पोषण दोनों से ही है। प्रयोजनवाद विज्ञान के युग की देन है। इसका संक्षिप्त वर्णन हम शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्यों, विधियों, अनुशासन, अध्यापक आदि के सन्दर्भ में करेंगे।

शिक्षा का अर्थ (Meaning of Education)—डीवी महोदय ने शिक्षा को निम्नलिखित रूपों में देखा—

१. दर्शन की प्रयोगशाला (Education is the Laboratory of Philosophy)।

२. सामाजिक प्रक्रिया जो कि सामाजिक जीवन की परम आवश्यकता है (Education as the social process which is the essential need to social survial)

३. पूर्वानुभवों एवं परम्पराओं का नव-निर्माण (Reconstruction of previous experiences and traditions)।

४. प्रजातान्त्रिक समाज की परम आवश्यकता (Essential need of democratic society)

शिक्षा के सिद्धान्त

(Principles of Education)

(i) शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित होनी चाहिए (Education is based on psychological)

(ii) शिक्षण-विधियों में प्रयोग (Experiments) एवं अभ्यास क्रियाओं को प्रमुखता।

(iii) शिक्षा बाल केन्द्रिय (Child centered)

(iv) उपयोगी तथा सामाजिक क्रियाओं, कलाओं को ही पाठ्यक्रम में स्थान।

(v) पूर्वानुभवों की सहायता की जाँच की जाय।

(iv) निश्चित तथा शाश्वत सत्य का बहिष्कार।

शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education): -

१. पूर्वानुभवों को प्राप्त करना।

२. पूर्वानुभवों की उपयोगिता की दृष्टि से जांच।

३. नवीन सामाजिक मूल्यों, आदर्शों एवं परम्पराओं का नव निर्माण।

४. सामाजिक व्यवस्था का पुनर्गठन।

५. व्यक्ति में नागरिकता के गुणों का विकास कर उसमें सामाजिक क्षमता का विकास करना।

६. शिक्षा को अधिकाधिक रचनात्मक एवं सृजनात्मक बनाना।

पाठ्यक्रम (Curriculum)

१. व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान।

२. व्यक्ति में चिन्तन, अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक कौशल का विकास।

३. पूर्वानुभवों की जानकारी।

४. प्रजातान्त्रिक नागरिकता में शिक्षण।

इसके लिये विज्ञान, गणित, गृह विज्ञान, कृषि, उद्योग, तथा तकनीकी, भाषा, साहित्य, इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र जैसे विषयों के शिक्षण पर बल दिया गया। साथ ही शारीरिक शिक्षा के प्रावधान के लिये भी यह विचारधारा बल देती है।

शिक्षण विधियाँ (Method of teaching) —

१. योजना पद्धति (Project method)

२. खोज पद्धति (Henrestic method)

३. प्रयोग विधि (Experimentation)

४. प्रदर्शन विधि (Demonstration)

५. प्रयोगशाला विधि (Laboratory)

अनुशासन (Discipline) — आत्मानुशासन (Self Discipline) पर ही प्रयोजनवाद विश्वास करता है।

अध्यापक (Teacher) — प्रयोजनवाद निम्नलिखित भूमिकाओं में अध्यापक को महत्वपूर्ण स्थान देता है;

१. मार्गदर्शक (guide)।

२. पूर्वानुभवों का ज्ञाता।

३. आदर्श वर्तमान नागरिक।

विद्यालय (School) — १. समाज का लघु रूप।

२. सामाजिक कार्यों के लिये उपयोगी प्रयोगशाला।

३. सामुदायिक योजनाओं का केन्द्र।

४. सांस्कृतिक विकास का साधन।

उत्तर— (ग)

समाज शिक्षा का साधन

(Society as our agency of Education)

समाज शिक्षा के अनौपचारिक सिद्धान्तों में प्रथम तथा प्रमुख स्थान रखता है। प्रारम्भ में समाज ही शिक्षा का एक मात्र साधन था। इसी से सभी संस्थाओं का विकास हुआ। शिक्षा साधन के रूप में समाज के निम्नलिखित स्वरूप हैं:—

1. परिवार (Family)
२. स्थानीय एवं सामुदायिक संगठन (Local and community organizations)
३. खेल-समूह (Play groups)
४. युवक-संगठन (Youth organizations)
५. राज्य (The state)

१. परिवार (Family)—परिवार बच्चों की प्राथमिक शाला है। यह बहुत महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह (Primary group) है। इसका बच्चे की अभिवृत्ति (Attitudes), व्यवहार प्रकृति (Behaviour pattern) तथा अन्य व्यक्तित्व के पहलुओं पर छाप पड़ती है। फॅक के अनुसार "वही एकमात्र संस्था है जिसमें बच्चे का सामाजीकरण (Socialization) होता है। बच्चे को सांस्कृतिक मूल्यों का ज्ञान देकर उसके आचरण तथा व्यक्तित्व को परिवार में ही शिक्षा मिलती है (It is the only institution which is an essential agency for child rearing, socialization and for introducing the child to the culture of society, thereby shaping the basic character structure our culture and forming the child's personality.)"

यह वह प्राथमिक समूह है जिसमें बच्चा अनुभव और अन्तर्क्रिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करता है। यह पारस्परिक सौहार्द्रता (Rappert) की प्रभावोत्पादक परिस्थिति में बच्चे को सीखने की प्रेरणा प्रदान करता है। साथ ही परिवार में उनके संवेगात्मक घटनाओं (Emotional moments) का भी प्रभाव नहीं होता, जो बच्चे के सीखने के मार्ग में बाधा डालते हैं। निम्नलिखित कार्यों में परिवार जीवन-भर शिक्षा का प्रभावशाली साधन बना रहता है।

१. नैतिक और धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था।
२. पारस्परिक प्रेम, सद्भावना, बन्धुत्व एवं सहयोग और सहकारिता में प्रशिक्षण।
३. अन्य परिवारों एवं सामुदायिक संगठनों से सम्बन्ध एवं व्यवहार।
४. सामाजिक व्यवस्था में अपने उचित स्थान का बालक को पथ-प्रदर्शन कराना। जिससे वह अपनी ही वांछित भूमिका अधिक से अधिक प्रभावशाली ढंग से निभा सके।

१. वांछित शिक्षा में व्यावसायिक अभियोग्यता का विकास करना।

२. स्थानीय एवं सामुदायिक संगठन (Local and community orgoni-ation) —इनमें बच्चे सामाजिक अन्तर्क्रियाओं की जटिलताओं को समझने के ये आवश्यक सामर्थ्य प्राप्त करते हैं। वे समाज के प्रति अपनत्व (Belongingness) भावना को अपने व्यक्तित्व का अंग बनाते हैं। तथा भिन्न सांस्कृतिक एवं म्परागत मूल्यों के अन्तर्सम्बन्धों और अन्तर्क्रियाओं को समझने में सामर्थ्य प्राप्त रते हैं। यहीं उनमें नागरिकता के गुणों का विकास होता है। तथा बाह्य संसार उनको परिचय मिलता है।

३. खेल-समूह (Play-groups) —खेल-समूहों में बच्चों के संवेगात्मक कास को आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इनमें उन्हें नेतृत्व, (Leadership), मूहिक अभिवृत्तियों तथा मान्यताओं एवं अनुसरण की दिशाओं में व्यावहारिक क्षा मिलती है। यहीं उनमें आत्माभिव्यक्ति (Self-expression) का विकास ता है।

४. युवक संगठन (Youth organization)—इनमें किशोरों की आव-यकताओं में वांछित विकास की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है उनमें समाज-वा की भावनायें जाग्रत होती हैं। साथ ही इस प्रकार संगठन मनोरंजन, अवकाश सदुपयोग, नागरिकता एवं सहिष्णुता मे प्रशिक्षण देते हैं। इनमें बालक आत्म-विश्वास एवं नेतृत्व के गुणों को विकसित करते हैं।

राज्य (State)—राज्य सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा-साधन है। इसके अन्तर्गत भी अन्य साधन सम्मिलित हैं। यह शिक्षा-सिद्धान्तों, उद्देश्यों, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण योग देता है। राज्य शिक्षा-नीति का निर्धारण रता है। अपनी राजनैतिक (Political), आर्थिक (Economic) नीतियों के नुसार ही शिक्षा-नीति का निर्धारण करता है। हर देश के हर युग में शिक्षा ाज्य की प्रकृति का दर्पण रही है।

त्तर ५ (घ)

औपचारिक अनुशासन (*Formal Discipline*)

[विद्यालय संगठन में अध्याय-"अनुशासन" में देखें।"]